विदेह VIDEHA

UGC NET/JRF मैथिली

UGC NET-JRF Maithili

विदेह ई-लर्निङ्ग प्रश्नोत्तरी शृंखला · Videha eLearning Quiz Book Series

खण्ड ४ / ९ · Volume 4 of 9

सम्पादक / लेखक: गजेन्द्र ठाकुर

VIDEHA — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

विदेह ई-लर्निङ्ग: https://www.videha.co.in/videha-elearning.htm

© Gajendra Thakur, Editor — Videha eJournal [Beta Version; suggestions invited]

विषय-सूची / Contents

१. नाटक — विदेह क्विज ५०० प्रश्न

२. मुक्तककाव्य — विदेह क्विज १००० प्रश्न

३. महाकाव्य एवं खण्डकाव्य — विदेह क्विज १००० प्रश्न

प्रत्येक अध्यायक प्रश्न-खण्डक बाद ओहि अध्यायक उत्तरमाला (उत्तर ओ व्याख्या) देल गेल अछि।

In each chapter, the answer key with explanations (उत्तरमाला) follows the questions.

अध्याय १ : नाटक — विदेह क्विज

शंकरदेव आ अंकिया नाट

१. शंकरदेवक भूमिका सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।
(B) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।
(C) शंकरदेवक भूमिका कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।
(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

२. शंकरदेवक भूमिकाक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।
(B) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।
(C) शंकरदेवक भूमिका कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।
(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

३. शंकरदेवक भूमिकाक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।
(B) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।
(C) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।
(D) शंकरदेवक भूमिका कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

४. शंकरदेवक भूमिका पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।
(B) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।
(C) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।
(D) शंकरदेवक भूमिका कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

५. शंकरदेवक भूमिकाक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।
(B) शंकरदेवक भूमिका कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।
(C) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।
(D) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

६. अंकिया नाट रचना सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) अंकिया नाट रचना कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।
(B) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।
(C) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।
(D) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

७. अंकिया नाट रचनाक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) अंकिया नाट रचना कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।
(B) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।
(C) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।
(D) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

८. अंकिया नाट रचनाक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।
(B) अंकिया नाट रचना कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।
(C) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।
(D) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

९. अंकिया नाट रचना पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(C) अंकिया नाट रचना कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(D) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

१०. अंकिया नाट रचनाक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) अंकिया नाट रचना कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

११. सूत्रधार व्यवस्था सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(B) सूत्रधार व्यवस्था कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

१२. सूत्रधार व्यवस्थाक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(B) सूत्रधार व्यवस्था कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

१३. सूत्रधार व्यवस्थाक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) सूत्रधार व्यवस्था कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(D) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

१४. सूत्रधार व्यवस्था पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(D) सूत्रधार व्यवस्था कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

१५. सूत्रधार व्यवस्थाक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(B) सूत्रधार व्यवस्था कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

१६. ब्रजावली भाषा सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(D) ब्रजावली भाषा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

१७. ब्रजावली भाषाक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(B) ब्रजावली भाषा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

१८. ब्रजावली भाषाक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(B) ब्रजावली भाषा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(D) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

१९. ब्रजावली भाषा पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(B) ब्रजावली भाषा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

२०. ब्रजावली भाषाक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(D) ब्रजावली भाषा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

२१. भाओना प्रस्तुति सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(B) भाओना प्रस्तुति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

२२. भाओना प्रस्तुतिक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) भाओना प्रस्तुति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(D) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

२३. भाओना प्रस्तुतिक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(C) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(D) भाओना प्रस्तुति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

२४. भाओना प्रस्तुति पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) भाओना प्रस्तुति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

२५. भाओना प्रस्तुतिक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(C) भाओना प्रस्तुति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(D) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

२६. नामघर-संस्कृति सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(C) नामघर-संस्कृति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(D) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

२७. नामघर-संस्कृतिक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) नामघर-संस्कृति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(B) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(C) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

२८. नामघर-संस्कृतिक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) नामघर-संस्कृति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(D) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

२९. नामघर-संस्कृति पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(B) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(C) नामघर-संस्कृति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(D) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

३०. नामघर-संस्कृतिक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) नामघर-संस्कृति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(D) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

३१. कृष्ण-कथा सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(D) कृष्ण-कथा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

३२. कृष्ण-कथाक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) कृष्ण-कथा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(B) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(C) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

३३. कृष्ण-कथाक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(C) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(D) कृष्ण-कथा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

३४. कृष्ण-कथा पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) कृष्ण-कथा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

३५. कृष्ण-कथाक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(B) कृष्ण-कथा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

३६. मंच-संरचना सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(B) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(C) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) मंच-संरचना कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

३७. मंच-संरचनाक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(B) मंच-संरचना कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

३८. मंच-संरचनाक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(C) मंच-संरचना कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(D) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

३९. मंच-संरचना पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) मंच-संरचना कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(B) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(C) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(D) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

४०. मंच-संरचनाक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) मंच-संरचना कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(D) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

४१. मुखौटा आ रूप सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(D) मुखौटा आ रूप कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

४२. मुखौटा आ रूपक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(B) मुखौटा आ रूप कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(D) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

४३. मुखौटा आ रूपक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(D) मुखौटा आ रूप कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

४४. मुखौटा आ रूप पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(B) मुखौटा आ रूप कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(D) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

४५. मुखौटा आ रूपक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(C) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(D) मुखौटा आ रूप कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

४६. संगीत-नृत्य सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) संगीत-नृत्य कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(D) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

४७. संगीत-नृत्यक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(D) संगीत-नृत्य कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

४८. संगीत-नृत्यक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) संगीत-नृत्य कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(B) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(C) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(D) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

४९. संगीत-नृत्य पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(B) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(C) संगीत-नृत्य कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(D) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

५०. संगीत-नृत्यक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) संगीत-नृत्य कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(B) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(C) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

५१. नैतिक शिक्षा सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(B) नैतिक शिक्षा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

५२. नैतिक शिक्षाक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(C) नैतिक शिक्षा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(D) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

५३. नैतिक शिक्षाक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(B) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(C) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) नैतिक शिक्षा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

५४. नैतिक शिक्षा पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(B) नैतिक शिक्षा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(D) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

५५. नैतिक शिक्षाक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) नैतिक शिक्षा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(D) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

५६. दर्शक सहभागिता सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(B) दर्शक सहभागिता कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(D) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

५७. दर्शक सहभागिताक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) दर्शक सहभागिता कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

५८. दर्शक सहभागिताक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(B) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(C) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) दर्शक सहभागिता कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

५९. दर्शक सहभागिता पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(B) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(C) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) दर्शक सहभागिता कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

६०. दर्शक सहभागिताक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(B) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(C) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) दर्शक सहभागिता कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

६१. सत्रीय प्रभाव सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(D) सत्रीय प्रभाव कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

६२. सत्रीय प्रभावक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(C) सत्रीय प्रभाव कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

६३. सत्रीय प्रभावक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) सत्रीय प्रभाव कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

६४. सत्रीय प्रभाव पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) सत्रीय प्रभाव कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(D) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

६५. सत्रीय प्रभावक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(D) सत्रीय प्रभाव कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

६६. भाषा-मिश्रण सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(C) भाषा-मिश्रण कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

६७. भाषा-मिश्रणक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) भाषा-मिश्रण कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(D) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

६८. भाषा-मिश्रणक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(C) भाषा-मिश्रण कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(D) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

६९. भाषा-मिश्रण पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(B) भाषा-मिश्रण कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(D) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

७०. भाषा-मिश्रणक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(B) भाषा-मिश्रण कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

७१. कथा-संघनन सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) कथा-संघनन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

७२. कथा-संघननक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(B) कथा-संघनन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

७३. कथा-संघननक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) कथा-संघनन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(D) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

७४. कथा-संघनन पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(B) कथा-संघनन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

७५. कथा-संघननक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) कथा-संघनन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(D) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

७६. भक्ति-आन्दोलन सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) भक्ति-आन्दोलन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(B) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(C) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(D) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

७७. भक्ति-आन्दोलनक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(C) भक्ति-आन्दोलन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(D) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

७८. भक्ति-आन्दोलनक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) भक्ति-आन्दोलन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

७९. भक्ति-आन्दोलन पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) भक्ति-आन्दोलन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

८०. भक्ति-आन्दोलनक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(D) भक्ति-आन्दोलन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

८१. सूत्रधारक वाणी सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(B) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(C) सूत्रधारक वाणी कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(D) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

८२. सूत्रधारक वाणीक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(B) सूत्रधारक वाणी कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

८३. सूत्रधारक वाणीक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(C) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(D) सूत्रधारक वाणी कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

८४. सूत्रधारक वाणी पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(D) सूत्रधारक वाणी कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

८५. सूत्रधारक वाणीक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) सूत्रधारक वाणी कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(B) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(C) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

८६. कृष्ण लीला सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) कृष्ण लीला कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

८७. कृष्ण लीलाक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(B) कृष्ण लीला कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

८८. कृष्ण लीलाक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) कृष्ण लीला कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(D) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

८९. कृष्ण लीला पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(B) कृष्ण लीला कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

९०. कृष्ण लीलाक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(D) कृष्ण लीला कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

९१. तुलनात्मक दृष्टि सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(D) तुलनात्मक दृष्टि कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

९२. तुलनात्मक दृष्टिक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) तुलनात्मक दृष्टि कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

९३. तुलनात्मक दृष्टिक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) तुलनात्मक दृष्टि कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

९४. तुलनात्मक दृष्टि पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(D) तुलनात्मक दृष्टि कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

९५. तुलनात्मक दृष्टिक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) तुलनात्मक दृष्टि कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

९६. परीक्षा-उत्तर सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) परीक्षा-उत्तर कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

९७. परीक्षा-उत्तरक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

(C) परीक्षा-उत्तर कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(D) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

९८. परीक्षा-उत्तरक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) परीक्षा-उत्तर कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(B) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

९९. परीक्षा-उत्तर पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(B) परीक्षा-उत्तर कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

१००. परीक्षा-उत्तरक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) अंकिया नाटमे सूत्रधार आ भाओना अप्रासंगिक अछि।

(B) परीक्षा-उत्तर कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि।

(C) शंकरदेवक भक्ति आ नाटकसँ कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) ब्रजावली नाट्य-भाषा नहि, केवल औजारक नाम अछि।

उमापति आ ईशनाथ झा

१०१. उमापति-परम्परा सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(C) उमापति-परम्परा कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(D) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

१०२. उमापति-परम्पराक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(C) उमापति-परम्परा कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(D) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

१०३. उमापति-परम्पराक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(B) उमापति-परम्परा कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(D) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

१०४. उमापति-परम्परा पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(B) उमापति-परम्परा कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(D) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

१०५. उमापति-परम्पराक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(C) उमापति-परम्परा कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

१०६. कीर्तनिया सम्बन्ध सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) कीर्तनिया सम्बन्ध कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

१०७. कीर्तनिया सम्बन्धक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) कीर्तनिया सम्बन्ध कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

१०८. कीर्तनिया सम्बन्धक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(B) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(C) कीर्तनिया सम्बन्ध कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(D) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

१०९. कीर्तनिया सम्बन्ध पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(C) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(D) कीर्तनिया सम्बन्ध कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

११०. कीर्तनिया सम्बन्धक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(C) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) कीर्तनिया सम्बन्ध कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

१११. भक्ति-भाव सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(B) भक्ति-भाव कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

११२. भक्ति-भावक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) भक्ति-भाव कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(B) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

११३. भक्ति-भावक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(B) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(D) भक्ति-भाव कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

११४. भक्ति-भाव पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) भक्ति-भाव कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

११५. भक्ति-भावक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) भक्ति-भाव कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(B) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

११६. गीत-संरचना सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(B) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(D) गीत-संरचना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

११७. गीत-संरचनाक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) गीत-संरचना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

११८. गीत-संरचनाक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) गीत-संरचना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(B) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

११९. गीत-संरचना पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(C) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(D) गीत-संरचना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

१२०. गीत-संरचनाक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(C) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) गीत-संरचना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

१२१. कृष्ण-नाट्य सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(C) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) कृष्ण-नाट्य कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

१२२. कृष्ण-नाट्यक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(B) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(C) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) कृष्ण-नाट्य कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

१२३. कृष्ण-नाट्यक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(B) कृष्ण-नाट्य कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

१२४. कृष्ण-नाट्य पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(B) कृष्ण-नाट्य कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

१२५. कृष्ण-नाट्यक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) कृष्ण-नाट्य कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(D) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

१२६. मैथिली भाषा सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) मैथिली भाषा कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

१२७. मैथिली भाषाक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) मैथिली भाषा कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(B) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

१२८. मैथिली भाषाक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(C) मैथिली भाषा कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(D) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

१२९. मैथिली भाषा पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) मैथिली भाषा कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

१३०. मैथिली भाषाक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(C) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) मैथिली भाषा कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

१३१. ईशनाथ झा सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) ईशनाथ झा कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

१३२. ईशनाथ झाक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(C) ईशनाथ झा कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(D) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

१३३. ईशनाथ झाक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) ईशनाथ झा कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

१३४. ईशनाथ झा पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(C) ईशनाथ झा कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

१३५. ईशनाथ झाक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) ईशनाथ झा कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

१३६. आधुनिकता सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(C) आधुनिकता कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(D) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

१३७. आधुनिकताक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) आधुनिकता कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

१३८. आधुनिकताक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) आधुनिकता कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(B) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(C) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(D) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

१३९. आधुनिकता पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(B) आधुनिकता कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

१४०. आधुनिकताक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) आधुनिकता कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

१४१. संवाद-निर्माण सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) संवाद-निर्माण कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(B) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(C) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

१४२. संवाद-निर्माणक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(B) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(C) संवाद-निर्माण कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(D) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

१४३. संवाद-निर्माणक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(B) संवाद-निर्माण कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(D) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

१४४. संवाद-निर्माण पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) संवाद-निर्माण कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(B) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

१४५. संवाद-निर्माणक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) संवाद-निर्माण कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

१४६. लोकजीवन सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) लोकजीवन कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

१४७. लोकजीवनक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) लोकजीवन कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(B) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

१४८. लोकजीवनक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(B) लोकजीवन कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(D) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

१४९. लोकजीवन पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(B) लोकजीवन कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(D) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

१५०. लोकजीवनक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) लोकजीवन कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

१५१. परम्परा-आधुनिकता सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) परम्परा-आधुनिकता कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(B) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(C) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

१५२. परम्परा-आधुनिकताक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) परम्परा-आधुनिकता कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(B) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(C) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

१५३. परम्परा-आधुनिकताक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) परम्परा-आधुनिकता कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(D) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

१५४. परम्परा-आधुनिकता पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(C) परम्परा-आधुनिकता कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(D) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

१५५. परम्परा-आधुनिकताक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(B) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(D) परम्परा-आधुनिकता कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

१५६. मंचीयता सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(B) मंचीयता कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

१५७. मंचीयताक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) मंचीयता कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

१५८. मंचीयताक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(B) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(C) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) मंचीयता कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

१५९. मंचीयता पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) मंचीयता कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(B) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

१६०. मंचीयताक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) मंचीयता कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(B) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

१६१. चरित्र सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(B) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(C) चरित्र कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(D) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

१६२. चरित्रक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) चरित्र कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(D) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

१६३. चरित्रक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) चरित्र कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(B) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(D) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

१६४. चरित्र पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(B) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(C) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) चरित्र कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

१६५. चरित्रक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) चरित्र कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(D) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

१६६. मिथिला-परिवेश सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(B) मिथिला-परिवेश कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

१६७. मिथिला-परिवेशक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) मिथिला-परिवेश कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

१६८. मिथिला-परिवेशक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) मिथिला-परिवेश कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(D) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

१६९. मिथिला-परिवेश पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) मिथिला-परिवेश कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

१७०. मिथिला-परिवेशक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(B) मिथिला-परिवेश कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(D) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

१७१. रंग-समीक्षा सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) रंग-समीक्षा कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(B) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(D) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

१७२. रंग-समीक्षाक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) रंग-समीक्षा कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

१७३. रंग-समीक्षाक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) रंग-समीक्षा कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(B) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(C) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

१७४. रंग-समीक्षा पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(C) रंग-समीक्षा कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(D) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

१७५. रंग-समीक्षाक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) रंग-समीक्षा कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

१७६. शैक्षिक मंचन सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(C) शैक्षिक मंचन कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(D) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

१७७. शैक्षिक मंचनक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(B) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(C) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) शैक्षिक मंचन कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

१७८. शैक्षिक मंचनक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) शैक्षिक मंचन कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

१७९. शैक्षिक मंचन पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) शैक्षिक मंचन कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

१८०. शैक्षिक मंचनक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) शैक्षिक मंचन कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

१८१. भाषा-अनुशासन सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(B) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(C) भाषा-अनुशासन कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(D) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

१८२. भाषा-अनुशासनक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(C) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(D) भाषा-अनुशासन कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

१८३. भाषा-अनुशासनक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) भाषा-अनुशासन कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(B) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

१८४. भाषा-अनुशासन पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(B) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) भाषा-अनुशासन कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

१८५. भाषा-अनुशासनक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(C) भाषा-अनुशासन कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(D) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

१८६. सामाजिक चेतना सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) सामाजिक चेतना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

१८७. सामाजिक चेतनाक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(C) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(D) सामाजिक चेतना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

१८८. सामाजिक चेतनाक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) सामाजिक चेतना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

१८९. सामाजिक चेतना पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(C) सामाजिक चेतना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(D) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

१९०. सामाजिक चेतनाक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(C) सामाजिक चेतना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

१९१. तुलना सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(C) तुलना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(D) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

१९२. तुलनाक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) तुलना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(D) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

१९३. तुलनाक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(C) तुलना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

१९४. तुलना पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) तुलना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(B) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

१९५. तुलनाक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(B) तुलना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

१९६. उत्तर-लेखन सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) उत्तर-लेखन कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(D) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

१९७. उत्तर-लेखनक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(B) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(C) उत्तर-लेखन कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(D) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

१९८. उत्तर-लेखनक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) उत्तर-लेखन कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(D) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

१९९. उत्तर-लेखन पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

(B) उत्तर-लेखन कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(C) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(D) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

२००. उत्तर-लेखनक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) उमापति आ कीर्तनिया नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि।

(B) ईशनाथ झाक चर्चा मैथिली नाटकमे अप्रासंगिक अछि।

(C) उत्तर-लेखन कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि।

(D) परम्परा आ आधुनिकता कैँ साथे नहि पढ़ल जा सकैत।

सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झा

२०१. सुधांशु 'शेखर' चौधरी सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(B) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) सुधांशु 'शेखर' चौधरी कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

२०२. सुधांशु 'शेखर' चौधरीक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(B) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(C) सुधांशु 'शेखर' चौधरी कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(D) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

२०३. सुधांशु ‘शेखर’ चौधरीक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(B) सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

२०४. सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(B) सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(D) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

२०५. सुधांशु ‘शेखर’ चौधरीक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(B) सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

२०६. रामदेव झा सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) रामदेव झा कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(B) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(C) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(D) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

२०७. रामदेव झाक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(B) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) रामदेव झा कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

२०८. रामदेव झाक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(B) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) रामदेव झा कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

२०९. रामदेव झा पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(B) रामदेव झा कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

२१०. रामदेव झाक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(B) रामदेव झा कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

२११. बौद्धिक संवेदना सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(B) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(C) बौद्धिक संवेदना कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(D) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

२१२. बौद्धिक संवेदनाक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) बौद्धिक संवेदना कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(B) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(C) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(D) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

२१३. बौद्धिक संवेदनाक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) बौद्धिक संवेदना कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(B) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

२१४. बौद्धिक संवेदना पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(B) बौद्धिक संवेदना कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(D) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

२१५. बौद्धिक संवेदनाक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(B) बौद्धिक संवेदना कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(D) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

२१६. परिवार-कथ्य सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(B) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(C) परिवार-कथ्य कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(D) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

२१७. परिवार-कथ्यक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(B) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(C) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(D) परिवार-कथ्य कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

२१८. परिवार-कथ्यक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) परिवार-कथ्य कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(B) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(C) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(D) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

२१९. परिवार-कथ्य पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(B) परिवार-कथ्य कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

२२०. परिवार-कथ्यक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(B) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(C) परिवार-कथ्य कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(D) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

२२१. ग्राम्य जीवन सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(B) ग्राम्य जीवन कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(D) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

२२२. ग्राम्य जीवनक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) ग्राम्य जीवन कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(B) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

२२३. ग्राम्य जीवनक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(B) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(C) ग्राम्य जीवन कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(D) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

२२४. ग्राम्य जीवन पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(B) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(C) ग्राम्य जीवन कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(D) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

२२५. ग्राम्य जीवनक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(B) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) ग्राम्य जीवन कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

२२६. नगर अनुभव सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(B) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(C) नगर अनुभव कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(D) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

२२७. नगर अनुभवक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(B) नगर अनुभव कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(D) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

२२८. नगर अनुभवक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(B) नगर अनुभव कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(D) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

२२९. नगर अनुभव पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) नगर अनुभव कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(B) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(C) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(D) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

२३०. नगर अनुभवक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(B) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(C) नगर अनुभव कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(D) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

२३१. चरित्र-गतिरोध सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(B) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(C) चरित्र-गतिरोध कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(D) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

२३२. चरित्र-गतिरोधक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(B) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) चरित्र-गतिरोध कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

२३३. चरित्र-गतिरोधक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(B) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(C) चरित्र-गतिरोध कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(D) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

२३४. चरित्र-गतिरोध पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(B) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(C) चरित्र-गतिरोध कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(D) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

२३५. चरित्र-गतिरोधक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(B) चरित्र-गतिरोध कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(D) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

२३६. संवाद-लय सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(B) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(C) संवाद-लय कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(D) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

२३७. संवाद-लयक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) संवाद-लय कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(B) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(C) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(D) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

२३८. संवाद-लयक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(B) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) संवाद-लय कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

२३९. संवाद-लय पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(B) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(C) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(D) संवाद-लय कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

२४०. संवाद-लयक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(B) संवाद-लय कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(D) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

२४१. हास्य-करुणा सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(B) हास्य-करुणा कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

२४२. हास्य-करुणाक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(B) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(C) हास्य-करुणा कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(D) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

२४३. हास्य-करुणाक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) हास्य-करुणा कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(B) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(C) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(D) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

२४४. हास्य-करुणा पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) हास्य-करुणा कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(B) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

२४५. हास्य-करुणाक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(B) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(C) हास्य-करुणा कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(D) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

२४६. मंच-निर्देश सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(B) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(C) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(D) मंच-निर्देश कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

२४७. मंच-निर्देशक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(B) मंच-निर्देश कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

२४८. मंच-निर्देशक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(B) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) मंच-निर्देश कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

२४९. मंच-निर्देश पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(B) मंच-निर्देश कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(D) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

२५०. मंच-निर्देशक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) मंच-निर्देश कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(B) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

२५१. एकांकी प्रयोग सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(B) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(C) एकांकी प्रयोग कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(D) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

२५२. एकांकी प्रयोगक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(B) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(C) एकांकी प्रयोग कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(D) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

२५३. एकांकी प्रयोगक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(B) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(C) एकांकी प्रयोग कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(D) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

२५४. एकांकी प्रयोग पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(B) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(C) एकांकी प्रयोग कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(D) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

२५५. एकांकी प्रयोगक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(B) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(C) एकांकी प्रयोग कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(D) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

२५६. शिक्षण-सुलभता सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(B) शिक्षण-सुलभता कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(D) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

२५७. शिक्षण-सुलभताक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(B) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(C) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(D) शिक्षण-सुलभता कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

२५८. शिक्षण-सुलभताक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(B) शिक्षण-सुलभता कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

२५९. शिक्षण-सुलभता पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(B) शिक्षण-सुलभता कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(D) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

२६०. शिक्षण-सुलभताक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(B) शिक्षण-सुलभता कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

२६१. स्त्री-स्वर सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) स्त्री-स्वर कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(B) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

२६२. स्त्री-स्वरक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(B) स्त्री-स्वर कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

२६३. स्त्री-स्वरक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(B) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(C) स्त्री-स्वर कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(D) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

२६४. स्त्री-स्वर पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(B) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(C) स्त्री-स्वर कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(D) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

२६५. स्त्री-स्वरक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(B) स्त्री-स्वर कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

२६६. भाषिक सरलता सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(B) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(C) भाषिक सरलता कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(D) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

२६७. भाषिक सरलताक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(B) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(C) भाषिक सरलता कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(D) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

२६८. भाषिक सरलताक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(B) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(C) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(D) भाषिक सरलता कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

२६९. भाषिक सरलता पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(B) भाषिक सरलता कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(D) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

२७०. भाषिक सरलताक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(B) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(C) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(D) भाषिक सरलता कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

२७१. लोक-विन्यास सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(B) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(C) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(D) लोक-विन्यास कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

२७२. लोक-विन्यासक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(B) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(C) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(D) लोक-विन्यास कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

२७३. लोक-विन्यासक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(B) लोक-विन्यास कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(D) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

२७४. लोक-विन्यास पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(B) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(C) लोक-विन्यास कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(D) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

२७५. लोक-विन्यासक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) लोक-विन्यास कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(B) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

२७६. सामाजिक आलोचना सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) सामाजिक आलोचना कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(B) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(C) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(D) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

२७७. सामाजिक आलोचनाक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(B) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(C) सामाजिक आलोचना कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(D) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

२७८. सामाजिक आलोचनाक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(B) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) सामाजिक आलोचना कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

२७९. सामाजिक आलोचना पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(B) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(C) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(D) सामाजिक आलोचना कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

२८०. सामाजिक आलोचनाक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) सामाजिक आलोचना कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(B) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(C) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(D) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

२८१. रचना-संतुलन सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) रचना-संतुलन कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(B) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

२८२. रचना-संतुलनक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(B) रचना-संतुलन कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

२८३. रचना-संतुलनक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(B) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(C) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(D) रचना-संतुलन कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

२८४. रचना-संतुलन पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(B) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(C) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(D) रचना-संतुलन कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

२८५. रचना-संतुलनक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(B) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(C) रचना-संतुलन कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(D) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

२८६. दर्शक-सम्पर्क सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(B) दर्शक-सम्पर्क कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(D) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

२८७. दर्शक-सम्पर्कक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) दर्शक-सम्पर्क कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(B) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(C) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(D) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

२८८. दर्शक-सम्पर्कक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(B) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(C) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(D) दर्शक-सम्पर्क कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

२८९. दर्शक-सम्पर्क पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(B) दर्शक-सम्पर्क कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

२९०. दर्शक-सम्पर्कक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(B) दर्शक-सम्पर्क कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

२९१. प्रदर्शन-आलोचना सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(B) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(C) प्रदर्शन-आलोचना कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(D) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

२९२. प्रदर्शन-आलोचनाक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(B) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(C) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(D) प्रदर्शन-आलोचना कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

२९३. प्रदर्शन-आलोचनाक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) प्रदर्शन-आलोचना कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(B) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(C) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(D) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

२९४. प्रदर्शन-आलोचना पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(B) प्रदर्शन-आलोचना कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(D) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

२९५. प्रदर्शन-आलोचनाक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(B) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(C) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(D) प्रदर्शन-आलोचना कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

२९६. उत्तर-रणनीति सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(B) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(C) उत्तर-रणनीति कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(D) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

२९७. उत्तर-रणनीतिक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(B) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(C) उत्तर-रणनीति कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(D) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

२९८. उत्तर-रणनीतिक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(B) उत्तर-रणनीति कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(D) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

२९९. उत्तर-रणनीति पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(B) उत्तर-रणनीति कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

(C) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(D) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

३००. उत्तर-रणनीतिक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) मंच-निर्देश आ भाषा नाटकमे अनावश्यक अछि।

(B) परिवार आ ग्राम्य जीवन नाटकीय कथ्य नहि बनि सकैत।

(C) एहि लेखकसभक नाटकसँ समाज आ संवादक सम्बन्ध नहि।

(D) उत्तर-रणनीति कैँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि।

महेन्द्र मलंगिया

३०१. महेन्द्र मलंगिया सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) महेन्द्र मलंगिया कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(B) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(C) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(D) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

३०२. महेन्द्र मलंगियाक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(C) महेन्द्र मलंगिया कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(D) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

३०३. महेन्द्र मलंगियाक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(B) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(C) महेन्द्र मलंगिया कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(D) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

३०४. महेन्द्र मलंगिया पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) महेन्द्र मलंगिया कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(C) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(D) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

३०५. महेन्द्र मलंगियाक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) महेन्द्र मलंगिया कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(B) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(C) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(D) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

३०६. रंग-साधना सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) रंग-साधना कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

३०७. रंग-साधनाक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(B) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(C) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(D) रंग-साधना कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

३०८. रंग-साधनाक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) रंग-साधना कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

३०९. रंग-साधना पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(C) रंग-साधना कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(D) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

३१०. रंग-साधनाक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) रंग-साधना कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

३११. सामाजिक आलोचना सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(B) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(C) सामाजिक आलोचना कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(D) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

३१२. सामाजिक आलोचनाक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(C) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(D) सामाजिक आलोचना कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

३१३. सामाजिक आलोचनाक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) सामाजिक आलोचना कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(B) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(C) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(D) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

३१४. सामाजिक आलोचना पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) सामाजिक आलोचना कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

३१५. सामाजिक आलोचनाक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) सामाजिक आलोचना कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(B) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(C) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(D) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

३१६. लोकभाषा सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) लोकभाषा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

३१७. लोकभाषाक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) लोकभाषा केँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

३१८. लोकभाषाक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) लोकभाषा केँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(B) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(C) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(D) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

३१९. लोकभाषा पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(B) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(C) लोकभाषा केँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(D) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

३२०. लोकभाषाक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) लोकभाषा केँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(B) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(C) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(D) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

३२१. ग्रामीण मिथिला सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(B) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(C) ग्रामीण मिथिला केँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(D) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

३२२. ग्रामीण मिथिलाक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(B) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(C) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(D) ग्रामीण मिथिला केँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

३२३. ग्रामीण मिथिलाक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(B) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(C) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(D) ग्रामीण मिथिला केँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

३२४. ग्रामीण मिथिला पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(B) ग्रामीण मिथिला केँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

३२५. ग्रामीण मिथिलाक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) ग्रामीण मिथिला कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(C) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(D) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

३२६. संवादक धार सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) संवादक धार कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

३२७. संवादक धारक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(B) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(C) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(D) संवादक धार कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

३२८. संवादक धारक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(C) संवादक धार कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(D) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

३२९. संवादक धार पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(B) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(C) संवादक धार कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(D) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

३३०. संवादक धारक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) संवादक धार कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

३३१. हास्य-व्यंग्य सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(B) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(C) हास्य-व्यंग्य कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(D) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

३३२. हास्य-व्यंग्यक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) हास्य-व्यंग्य कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(B) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(C) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(D) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

३३३. हास्य-व्यंग्यक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) हास्य-व्यंग्य कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

३३४. हास्य-व्यंग्य पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) हास्य-व्यंग्य कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(B) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(C) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(D) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

३३५. हास्य-व्यंग्यक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(B) हास्य-व्यंग्य कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(C) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(D) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

३३६. मंचीयता सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) मंचीयता कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

३३७. मंचीयताक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(C) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(D) मंचीयता कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

३३८. मंचीयताक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(B) मंचीयता कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

३३९. मंचीयता पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(B) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(C) मंचीयता कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(D) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

३४०. मंचीयताक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(B) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(C) मंचीयता कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(D) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

३४१. चरित्र-निर्माण सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) चरित्र-निर्माण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(B) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(C) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(D) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

३४२. चरित्र-निर्माणक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) चरित्र-निर्माण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(B) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(C) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(D) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

३४३. चरित्र-निर्माणक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(B) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(C) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(D) चरित्र-निर्माण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

३४४. चरित्र-निर्माण पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(B) चरित्र-निर्माण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(C) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(D) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

३४५. चरित्र-निर्माणक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(B) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(C) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(D) चरित्र-निर्माण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

३४६. सत्ता-सवाल सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) सत्ता-सवाल कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(B) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

३४७. सत्ता-सवालक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) सत्ता-सवाल कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

३४८. सत्ता-सवालक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(B) सत्ता-सवाल कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(C) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(D) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

३४९. सत्ता-सवाल पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(B) सत्ता-सवाल कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(C) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(D) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

३५०. सत्ता-सवालक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(B) सत्ता-सवाल कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

३५१. नारी-पात्र सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(B) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(C) नारी-पात्र कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(D) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

३५२. नारी-पात्रक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(B) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(C) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(D) नारी-पात्र कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

३५३. नारी-पात्रक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(B) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(C) नारी-पात्र कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(D) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

३५४. नारी-पात्र पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(B) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(C) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(D) नारी-पात्र कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

३५५. नारी-पात्रक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) नारी-पात्र कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(B) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

३५६. रूपान्तरण सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) रूपान्तरण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

३५७. रूपान्तरणक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) रूपान्तरण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(B) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(C) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(D) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

३५८. रूपान्तरणक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) रूपान्तरण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(B) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(C) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(D) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

३५९. रूपान्तरण पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) रूपान्तरण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(C) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(D) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

३६०. रूपान्तरणक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(B) रूपान्तरण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

३६१. निर्देशन सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) निर्देशन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(B) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(C) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(D) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

३६२. निर्देशनक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(B) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) निर्देशन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

३६३. निर्देशनक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) निर्देशन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(B) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

३६४. निर्देशन पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) निर्देशन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(B) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(C) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(D) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

३६५. निर्देशनक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(B) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(C) निर्देशन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(D) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

३६६. समकालीनता सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(B) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(C) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(D) समकालीनता कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

३६७. समकालीनताक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) समकालीनता कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

३६८. समकालीनताक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) समकालीनता कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

३६९. समकालीनता पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(B) समकालीनता कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(C) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(D) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

३७०. समकालीनताक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(C) समकालीनता कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(D) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

३७१. दर्शक-सम्बोधन सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(B) दर्शक-सम्बोधन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(C) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(D) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

३७२. दर्शक-सम्बोधनक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(B) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(C) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(D) दर्शक-सम्बोधन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

३७३. दर्शक-सम्बोधनक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(B) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(C) दर्शक-सम्बोधन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(D) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

३७४. दर्शक-सम्बोधन पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) दर्शक-सम्बोधन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(B) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

३७५. दर्शक-सम्बोधनक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(B) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(C) दर्शक-सम्बोधन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(D) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

३७६. लोक-ध्वनि सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(B) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(C) लोक-ध्वनि कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(D) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

३७७. लोक-ध्वनिक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(B) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) लोक-ध्वनि कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

३७८. लोक-ध्वनिक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(B) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) लोक-ध्वनि कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

३७९. लोक-ध्वनि पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(B) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(C) लोक-ध्वनि कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(D) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

३८०. लोक-ध्वनिक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) लोक-ध्वनि कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(B) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

३८१. दृश्य-विन्यास सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) दृश्य-विन्यास कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

३८२. दृश्य-विन्यासक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(B) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(C) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(D) दृश्य-विन्यास कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

३८३. दृश्य-विन्यासक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(B) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(C) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(D) दृश्य-विन्यास कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

३८४. दृश्य-विन्यास पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) दृश्य-विन्यास कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(B) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(C) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(D) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

३८५. दृश्य-विन्यासक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(B) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(C) दृश्य-विन्यास कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(D) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

३८६. नाट्य-भाषा सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(B) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(C) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(D) नाट्य-भाषा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

३८७. नाट्य-भाषाक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(B) नाट्य-भाषा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(C) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(D) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

३८८. नाट्य-भाषाक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(C) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(D) नाट्य-भाषा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

३८९. नाट्य-भाषा पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(C) नाट्य-भाषा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(D) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

३९०. नाट्य-भाषाक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(C) नाट्य-भाषा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(D) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

३९१. समीक्षा सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) समीक्षा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(B) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

३९२. समीक्षाक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) समीक्षा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(B) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(C) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(D) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

३९३. समीक्षाक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) समीक्षा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

३९४. समीक्षा पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(B) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(C) समीक्षा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(D) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

३९५. समीक्षाक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(B) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(C) समीक्षा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(D) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

३९६. परीक्षा सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(C) परीक्षा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(D) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

३९७. परीक्षाक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(B) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(C) परीक्षा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(D) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

३९८. परीक्षाक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(C) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(D) परीक्षा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

३९९. परीक्षा पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(B) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(C) परीक्षा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

(D) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

४००. परीक्षाक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) हुनका केवल प्राचीन व्याकरणकार मानल जाइत अछि।

(B) लोकभाषा आ सामाजिक यथार्थक मंचसँ सम्बन्ध नहि।

(C) मलंगियाक नाटकमे संवाद आ मंचीयता अप्रासंगिक अछि।

(D) परीक्षा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि।

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'

४०१. नचिकेता सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(B) नचिकेता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(C) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(D) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

४०२. नचिकेताक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) नचिकेता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

४०३. नचिकेताक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(B) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(C) नचिकेता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

४०४. नचिकेता पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(B) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(C) नचिकेता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

४०५. नचिकेताक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(B) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(C) नचिकेता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

४०६. अरविन्द 'अक्कू' सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) अरविन्द 'अक्कू' कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(B) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

४०७. अरविन्द 'अक्कू'क नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) अरविन्द 'अक्कू' कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(B) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(C) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(D) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

४०८. अरविन्द 'अक्कू'क सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) अरविन्द 'अक्कू' कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

४०९. अरविन्द 'अक्कू' पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) अरविन्द 'अक्कू' कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(D) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

४१०. अरविन्द 'अक्कू'क नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(B) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(C) अरविन्द 'अक्कू' कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

४११. प्रयोगधर्मी रंगमंच सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(B) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) प्रयोगधर्मी रंगमंच कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

४१२. प्रयोगधर्मी रंगमंचक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(B) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(C) प्रयोगधर्मी रंगमंच कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

४१३. प्रयोगधर्मी रंगमंचक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(B) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(C) प्रयोगधर्मी रंगमंच कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

४१४. प्रयोगधर्मी रंगमंच पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) प्रयोगधर्मी रंगमंच कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

४१५. प्रयोगधर्मी रंगमंचक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) प्रयोगधर्मी रंगमंच कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

४१६. युवा मंच सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(B) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(C) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(D) युवा मंच कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

४१७. युवा मंचक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(B) युवा मंच कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(C) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(D) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

४१८. युवा मंचक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(B) युवा मंच कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

४१९. युवा मंच पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(B) युवा मंच कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(C) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(D) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

४२०. युवा मंचक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) युवा मंच कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

४२१. भाषिक प्रयोग सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) भाषिक प्रयोग कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(B) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(C) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(D) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

४२२. भाषिक प्रयोगक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) भाषिक प्रयोग कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(B) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(C) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(D) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

४२३. भाषिक प्रयोगक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(D) भाषिक प्रयोग कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

४२४. भाषिक प्रयोग पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) भाषिक प्रयोग कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

४२५. भाषिक प्रयोगक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) भाषिक प्रयोग कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(B) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

४२६. जनपक्षधरता सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) जनपक्षधरता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

४२७. जनपक्षधरताक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(B) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(C) जनपक्षधरता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

४२८. जनपक्षधरताक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(B) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(C) जनपक्षधरता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

४२९. जनपक्षधरता पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) जनपक्षधरता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(B) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

४३०. जनपक्षधरताक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(D) जनपक्षधरता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

४३१. संवाद-शिल्प सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(B) संवाद-शिल्प कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(C) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(D) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

४३२. संवाद-शिल्पक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) संवाद-शिल्प कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(B) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

४३३. संवाद-शिल्पक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) संवाद-शिल्प कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(B) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(C) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(D) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

४३४. संवाद-शिल्प पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) संवाद-शिल्प कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

४३५. संवाद-शिल्पक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(B) संवाद-शिल्प कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(C) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(D) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

४३६. प्रहसन सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(B) प्रहसन कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

४३७. प्रहसनक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(B) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(C) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(D) प्रहसन कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

४३८. प्रहसनक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(B) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(C) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(D) प्रहसन कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

४३९. प्रहसन पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) प्रहसन कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(B) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(C) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(D) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

४४०. प्रहसनक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(B) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(C) प्रहसन कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

४४१. एकांकी सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) एकांकी कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(B) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

४४२. एकांकीक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(B) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(C) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(D) एकांकी कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

४४३. एकांकीक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) एकांकी कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

४४४. एकांकी पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(B) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(C) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(D) एकांकी कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

४४५. एकांकीक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(B) एकांकी कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(C) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(D) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

४४६. शहरी अनुभव सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(B) शहरी अनुभव कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

४४७. शहरी अनुभवक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(B) शहरी अनुभव कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

४४८. शहरी अनुभवक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) शहरी अनुभव कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

४४९. शहरी अनुभव पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) शहरी अनुभव कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

४५०. शहरी अनुभवक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(B) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(C) शहरी अनुभव कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

४५१. मैथिली अस्मिता सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(B) मैथिली अस्मिता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(C) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(D) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

४५२. मैथिली अस्मिताक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) मैथिली अस्मिता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(B) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(C) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(D) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

४५३. मैथिली अस्मिताक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) मैथिली अस्मिता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(B) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(C) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(D) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

४५४. मैथिली अस्मिता पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) मैथिली अस्मिता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

४५५. मैथिली अस्मिताक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(B) मैथिली अस्मिता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(C) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(D) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

४५६. रूपांतरण सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(B) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(C) रूपांतरण कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

४५७. रूपांतरणक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) रूपांतरण कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(B) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(C) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(D) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

४५८. रूपांतरणक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(B) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(C) रूपांतरण कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

४५९. रूपांतरण पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(D) रूपांतरण कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

४६०. रूपांतरणक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) रूपांतरण कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

४६१. अभिनय-प्रशिक्षण सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) अभिनय-प्रशिक्षण कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

४६२. अभिनय-प्रशिक्षणक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) अभिनय-प्रशिक्षण कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(D) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

४६३. अभिनय-प्रशिक्षणक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) अभिनय-प्रशिक्षण कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

४६४. अभिनय-प्रशिक्षण पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) अभिनय-प्रशिक्षण कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

४६५. अभिनय-प्रशिक्षणक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) अभिनय-प्रशिक्षण कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(B) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

४६६. डिजिटल दस्तावेज सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(B) डिजिटल दस्तावेज कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(C) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(D) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

४६७. डिजिटल दस्तावेजक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(B) डिजिटल दस्तावेज कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(C) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(D) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

४६८. डिजिटल दस्तावेजक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) डिजिटल दस्तावेज कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

४६९. डिजिटल दस्तावेज पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) डिजिटल दस्तावेज कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

४७०. डिजिटल दस्तावेजक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(B) डिजिटल दस्तावेज कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(C) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(D) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

४७१. दर्शक संवाद सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(B) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(C) दर्शक संवाद कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

४७२. दर्शक संवादक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) दर्शक संवाद कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

४७३. दर्शक संवादक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(B) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(C) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(D) दर्शक संवाद कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

४७४. दर्शक संवाद पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(B) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) दर्शक संवाद कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

४७५. दर्शक संवादक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(B) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(C) दर्शक संवाद कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

४७६. व्यंग्य सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(B) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) व्यंग्य कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

४७७. व्यंग्यक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(B) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(C) व्यंग्य कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

४७८. व्यंग्यक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(B) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(C) व्यंग्य कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

४७९. व्यंग्य पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(B) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(C) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(D) व्यंग्य कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

४८०. व्यंग्यक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(B) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(C) व्यंग्य कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

४८१. लोक-नवता सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(B) लोक-नवता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

४८२. लोक-नवताक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(B) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(C) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(D) लोक-नवता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

४८३. लोक-नवताक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) लोक-नवता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(B) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(C) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(D) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

४८४. लोक-नवता पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) लोक-नवता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

४८५. लोक-नवताक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) लोक-नवता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(B) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(C) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(D) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

४८६. मंच-संयम सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) मंच-संयम कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

४८७. मंच-संयमक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(B) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(C) मंच-संयम कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(D) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

४८८. मंच-संयमक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(B) मंच-संयम कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

४८९. मंच-संयम पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) मंच-संयम कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

४९०. मंच-संयमक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(B) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) मंच-संयम कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

४९१. तुलनात्मक पठन सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(B) तुलनात्मक पठन कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

४९२. तुलनात्मक पठनक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(B) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(C) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(D) तुलनात्मक पठन कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

४९३. तुलनात्मक पठनक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) तुलनात्मक पठन कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(B) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

४९४. तुलनात्मक पठन पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) तुलनात्मक पठन कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(B) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(C) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(D) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

४९५. तुलनात्मक पठनक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) तुलनात्मक पठन कैं उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(B) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(C) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(D) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

४९६. समग्र निष्कर्ष सम्बन्धमे सही कथन कोन अछि?

(A) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) समग्र निष्कर्ष कैं उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

४९७. समग्र निष्कर्षक नाट्य-अध्ययनमे मुख्य ध्यान किम्हर होयबाक चाही?

(A) समग्र निष्कर्ष कैं उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(B) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(C) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(D) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

४९८. समग्र निष्कर्षक सन्दर्भमे उचित विकल्प चिन्हू।

(A) समग्र निष्कर्ष कैं उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

४९९. समग्र निष्कर्ष पर परीक्षा-प्रश्न आए तँ सही उत्तर की होयत?

(A) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(B) समग्र निष्कर्ष कैं उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

(C) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(D) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

५००. समग्र निष्कर्षक नाट्य-महत्त्व की अछि?

(A) लोक-नवता आ भाषिक प्रयोग नाटकीय नहि होइत।

(B) मैथिली अस्मिता रंगमंचसँ असम्बद्ध अछि।

(C) समकालीन रंगमंचमे प्रयोग आ दर्शक-संवादक स्थान नहि।

(D) समग्र निष्कर्ष कैं उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि।

उत्तरमाला — अध्याय १ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (C) शंकरदेवक भूमिका कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — शंकरदेवक भूमिका कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२. (C) शंकरदेवक भूमिका कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — शंकरदेवक भूमिका कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि

विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३. (D) शंकरदेवक भूमिका केँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — शंकरदेवक भूमिका केँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४. (D) शंकरदेवक भूमिका केँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — शंकरदेवक भूमिका केँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

५. (B) शंकरदेवक भूमिका केँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — शंकरदेवक भूमिका केँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

६. (A) अंकिया नाट रचना केँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — अंकिया नाट रचना केँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

७. (A) अंकिया नाट रचना केँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — अंकिया नाट रचना केँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

८. (B) अंकिया नाट रचना केँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — अंकिया नाट रचना केँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

९. (C) अंकिया नाट रचना केँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — अंकिया नाट रचना केँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१०. (C) अंकिया नाट रचना केँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — अंकिया नाट रचना केँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

११. (B) सूत्रधार व्यवस्था केँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — सूत्रधार व्यवस्था केँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१२. (B) सूत्रधार व्यवस्था केँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — सूत्रधार व्यवस्था केँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१३. (A) सूत्रधार व्यवस्था केँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — सूत्रधार व्यवस्था केँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१४. (D) सूत्रधार व्यवस्था केँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — सूत्रधार व्यवस्था केँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१५. (B) सूत्रधार व्यवस्था केँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — सूत्रधार व्यवस्था केँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१६. (D) ब्रजावली भाषा केँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — ब्रजावली भाषा केँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१७. (B) ब्रजावली भाषा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — ब्रजावली भाषा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१८. (B) ब्रजावली भाषा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — ब्रजावली भाषा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१९. (B) ब्रजावली भाषा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — ब्रजावली भाषा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२०. (D) ब्रजावली भाषा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — ब्रजावली भाषा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२१. (B) भाओना प्रस्तुति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — भाओना प्रस्तुति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२२. (B) भाओना प्रस्तुति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — भाओना प्रस्तुति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२३. (D) भाओना प्रस्तुति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — भाओना प्रस्तुति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२४. (B) भाओना प्रस्तुति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — भाओना प्रस्तुति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२५. (C) भाओना प्रस्तुति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — भाओना प्रस्तुति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२६. (C) नामघर-संस्कृति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — नामघर-संस्कृति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२७. (A) नामघर-संस्कृति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — नामघर-संस्कृति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२८. (C) नामघर-संस्कृति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — नामघर-संस्कृति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२९. (C) नामघर-संस्कृति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — नामघर-संस्कृति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३०. (A) नामघर-संस्कृति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — नामघर-संस्कृति कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३१. (D) कृष्ण-कथा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — कृष्ण-कथा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकैँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३२. (A) कृष्ण-कथा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — कृष्ण-कथा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकैँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३३. (D) कृष्ण-कथा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — कृष्ण-कथा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकैँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३४. (B) कृष्ण-कथा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — कृष्ण-कथा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकैँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३५. (B) कृष्ण-कथा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — कृष्ण-कथा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकैँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३६. (D) मंच-संरचना कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — मंच-संरचना कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकैँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३७. (B) मंच-संरचना कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — मंच-संरचना कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकैँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३८. (C) मंच-संरचना कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — मंच-संरचना कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकैँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३९. (A) मंच-संरचना कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — मंच-संरचना कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकैँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४०. (C) मंच-संरचना कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — मंच-संरचना कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकैँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४१. (D) मुखौटा आ रूप कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — मुखौटा आ रूप कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकैँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४२. (B) मुखौटा आ रूप कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — मुखौटा आ रूप कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकैँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४३. (D) मुखौटा आ रूप कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — मुखौटा आ रूप कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकैँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४४. (B) मुखौटा आ रूप कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — मुखौटा आ रूप कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकैँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४५. (D) मुखौटा आ रूप कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — मुखौटा आ रूप कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४६. (B) संगीत-नृत्य कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — संगीत-नृत्य कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४७. (D) संगीत-नृत्य कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — संगीत-नृत्य कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४८. (A) संगीत-नृत्य कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — संगीत-नृत्य कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४९. (C) संगीत-नृत्य कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — संगीत-नृत्य कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

५०. (A) संगीत-नृत्य कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — संगीत-नृत्य कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

५१. (B) नैतिक शिक्षा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — नैतिक शिक्षा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

५२. (C) नैतिक शिक्षा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — नैतिक शिक्षा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

५३. (D) नैतिक शिक्षा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — नैतिक शिक्षा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

५४. (B) नैतिक शिक्षा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — नैतिक शिक्षा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

५५. (C) नैतिक शिक्षा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — नैतिक शिक्षा कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

५६. (B) दर्शक सहभागिता कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — दर्शक सहभागिता कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

५७. (B) दर्शक सहभागिता कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — दर्शक सहभागिता कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

५८. (D) दर्शक सहभागिता कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — दर्शक सहभागिता कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

५९. (D) दर्शक सहभागिता कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — दर्शक सहभागिता कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकैँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

६०. (D) दर्शक सहभागिता कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — दर्शक सहभागिता कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकैँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

६१. (D) सत्रीय प्रभाव कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — सत्रीय प्रभाव कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकैँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

६२. (C) सत्रीय प्रभाव कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — सत्रीय प्रभाव कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकैँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

६३. (C) सत्रीय प्रभाव कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — सत्रीय प्रभाव कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकैँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

६४. (B) सत्रीय प्रभाव कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — सत्रीय प्रभाव कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकैँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

६५. (D) सत्रीय प्रभाव कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — सत्रीय प्रभाव कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकैँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

६६. (C) भाषा-मिश्रण कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — भाषा-मिश्रण कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकैँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

६७. (B) भाषा-मिश्रण कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — भाषा-मिश्रण कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकैँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

६८. (C) भाषा-मिश्रण कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — भाषा-मिश्रण कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकैँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

६९. (B) भाषा-मिश्रण कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — भाषा-मिश्रण कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकैँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

७०. (B) भाषा-मिश्रण कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — भाषा-मिश्रण कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकैँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

७१. (A) कथा-संघनन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — कथा-संघनन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकैँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

७२. (B) कथा-संघनन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — कथा-संघनन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकैँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

७३. (A) कथा-संघनन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — कथा-संघनन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

७४. (B) कथा-संघनन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — कथा-संघनन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

७५. (B) कथा-संघनन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — कथा-संघनन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

७६. (A) भक्ति-आन्दोलन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — भक्ति-आन्दोलन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

७७. (C) भक्ति-आन्दोलन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — भक्ति-आन्दोलन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

७८. (A) भक्ति-आन्दोलन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — भक्ति-आन्दोलन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

७९. (A) भक्ति-आन्दोलन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — भक्ति-आन्दोलन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

८०. (D) भक्ति-आन्दोलन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — भक्ति-आन्दोलन कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

८१. (C) सूत्रधारक वाणी कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — सूत्रधारक वाणी कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

८२. (B) सूत्रधारक वाणी कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — सूत्रधारक वाणी कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

८३. (D) सूत्रधारक वाणी कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — सूत्रधारक वाणी कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

८४. (D) सूत्रधारक वाणी कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — सूत्रधारक वाणी कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

८५. (A) सूत्रधारक वाणी कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — सूत्रधारक वाणी कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

८६. (B) कृष्ण लीला कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — कृष्ण लीला कैँ शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

८७. (B) कृष्ण लीला कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — कृष्ण लीला कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

८८. (A) कृष्ण लीला कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — कृष्ण लीला कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

८९. (B) कृष्ण लीला कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — कृष्ण लीला कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

९०. (D) कृष्ण लीला कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — कृष्ण लीला कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

९१. (D) तुलनात्मक दृष्टि कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — तुलनात्मक दृष्टि कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

९२. (A) तुलनात्मक दृष्टि कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — तुलनात्मक दृष्टि कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

९३. (C) तुलनात्मक दृष्टि कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — तुलनात्मक दृष्टि कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

९४. (D) तुलनात्मक दृष्टि कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — तुलनात्मक दृष्टि कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

९५. (A) तुलनात्मक दृष्टि कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — तुलनात्मक दृष्टि कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

९६. (B) परीक्षा-उत्तर कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — परीक्षा-उत्तर कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

९७. (C) परीक्षा-उत्तर कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — परीक्षा-उत्तर कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

९८. (A) परीक्षा-उत्तर कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — परीक्षा-उत्तर कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

९९. (B) परीक्षा-उत्तर कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — परीक्षा-उत्तर कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१००. (B) परीक्षा-उत्तर कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। — परीक्षा-उत्तर कैं शंकरदेवक अंकिया नाट भक्ति, सूत्रधार, ब्रजावली, भाओना, नामघर आ सामुदायिक लोकशिक्षाक संग जुड़ल अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१०१. (C) उमापति-परम्परा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — उमापति-परम्परा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१०२. (C) उमापति-परम्परा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — उमापति-परम्परा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१०३. (B) उमापति-परम्परा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — उमापति-परम्परा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१०४. (B) उमापति-परम्परा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — उमापति-परम्परा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१०५. (C) उमापति-परम्परा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — उमापति-परम्परा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१०६. (D) कीर्तनिया सम्बन्ध कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — कीर्तनिया सम्बन्ध कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१०७. (B) कीर्तनिया सम्बन्ध कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — कीर्तनिया सम्बन्ध कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१०८. (C) कीर्तनिया सम्बन्ध कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — कीर्तनिया सम्बन्ध कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१०९. (D) कीर्तनिया सम्बन्ध कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — कीर्तनिया सम्बन्ध कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

११०. (D) कीर्तनिया सम्बन्ध कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — कीर्तनिया सम्बन्ध कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१११. (B) भक्ति-भाव कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — भक्ति-भाव कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

११२. (A) भक्ति-भाव कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — भक्ति-भाव कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

११३. (D) भक्ति-भाव कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — भक्ति-भाव कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

११४. (D) भक्ति-भाव कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — भक्ति-भाव कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

११५. (A) भक्ति-भाव कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — भक्ति-भाव कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

११६. (D) गीत-संरचना कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — गीत-संरचना कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

११७. (D) गीत-संरचना कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — गीत-संरचना कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

११८. (A) गीत-संरचना कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — गीत-संरचना कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

११९. (D) गीत-संरचना कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — गीत-संरचना कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१२०. (D) गीत-संरचना कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — गीत-संरचना कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१२१. (D) कृष्ण-नाट्य कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — कृष्ण-नाट्य कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१२२. (D) कृष्ण-नाट्य कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — कृष्ण-नाट्य कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१२३. (B) कृष्ण-नाट्य कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — कृष्ण-नाट्य कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१२४. (B) कृष्ण-नाट्य कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — कृष्ण-नाट्य कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१२५. (C) कृष्ण-नाट्य कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — कृष्ण-नाट्य कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१२६. (B) मैथिली भाषा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — मैथिली भाषा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१२७. (A) मैथिली भाषा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — मैथिली भाषा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१२८. (C) मैथिली भाषा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — मैथिली भाषा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१२९. (B) मैथिली भाषा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — मैथिली भाषा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१३०. (D) मैथिली भाषा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — मैथिली भाषा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१३१. (B) ईशनाथ झा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — ईशनाथ झा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१३२. (C) ईशनाथ झा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — ईशनाथ झा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१३३. (B) ईशनाथ झा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — ईशनाथ झा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१३४. (C) ईशनाथ झा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — ईशनाथ झा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१३५. (D) ईशनाथ झा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — ईशनाथ झा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१३६. (C) आधुनिकता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — आधुनिकता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१३७. (D) आधुनिकता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — आधुनिकता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१३८. (A) आधुनिकता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — आधुनिकता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१३९. (B) आधुनिकता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — आधुनिकता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१४०. (B) आधुनिकता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — आधुनिकता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१४१. (A) संवाद-निर्माण कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — संवाद-निर्माण कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१४२. (C) संवाद-निर्माण कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — संवाद-निर्माण कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१४३. (B) संवाद-निर्माण कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — संवाद-निर्माण कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१४४. (A) संवाद-निर्माण कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — संवाद-निर्माण कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१४५. (B) संवाद-निर्माण कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — संवाद-निर्माण कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१४६. (B) लोकजीवन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — लोकजीवन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१४७. (A) लोकजीवन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — लोकजीवन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१४८. (B) लोकजीवन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — लोकजीवन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१४९. (B) लोकजीवन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — लोकजीवन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१५०. (B) लोकजीवन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — लोकजीवन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१५१. (A) परम्परा-आधुनिकता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — परम्परा-आधुनिकता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१५२. (A) परम्परा-आधुनिकता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — परम्परा-आधुनिकता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१५३. (C) परम्परा-आधुनिकता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — परम्परा-आधुनिकता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१५४. (C) परम्परा-आधुनिकता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — परम्परा-आधुनिकता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१५५. (D) परम्परा-आधुनिकता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — परम्परा-आधुनिकता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१५६. (B) मंचीयता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — मंचीयता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१५७. (B) मंचीयता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — मंचीयता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१५८. (D) मंचीयता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — मंचीयता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१५९. (A) मंचीयता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — मंचीयता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१६०. (A) मंचीयता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — मंचीयता कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१६१. (C) चरित्र कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — चरित्र कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१६२. (B) चरित्र कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — चरित्र कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१६३. (A) चरित्र कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — चरित्र कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१६४. (D) चरित्र कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — चरित्र कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१६५. (C) चरित्र कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — चरित्र कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१६६. (B) मिथिला-परिवेश कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — मिथिला-परिवेश कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१६७. (D) मिथिला-परिवेश कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — मिथिला-परिवेश कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१६८. (C) मिथिला-परिवेश कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — मिथिला-परिवेश कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१६९. (B) मिथिला-परिवेश कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — मिथिला-परिवेश कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१७०. (B) मिथिला-परिवेश कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — मिथिला-परिवेश कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१७१. (A) रंग-समीक्षा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — रंग-समीक्षा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१७२. (B) रंग-समीक्षा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — रंग-समीक्षा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१७३. (A) रंग-समीक्षा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — रंग-समीक्षा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१७४. (C) रंग-समीक्षा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — रंग-समीक्षा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१७५. (B) रंग-समीक्षा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — रंग-समीक्षा कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१७६. (C) शैक्षिक मंचन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — शैक्षिक मंचन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१७७. (D) शैक्षिक मंचन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — शैक्षिक मंचन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१७८. (B) शैक्षिक मंचन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — शैक्षिक मंचन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१७९. (B) शैक्षिक मंचन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — शैक्षिक मंचन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१८०. (B) शैक्षिक मंचन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — शैक्षिक मंचन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१८१. (C) भाषा-अनुशासन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — भाषा-अनुशासन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१८२. (D) भाषा-अनुशासन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — भाषा-अनुशासन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१८३. (A) भाषा-अनुशासन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — भाषा-अनुशासन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१८४. (C) भाषा-अनुशासन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — भाषा-अनुशासन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१८५. (C) भाषा-अनुशासन कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — भाषा-अनुशासन कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१८६. (B) सामाजिक चेतना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — सामाजिक चेतना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१८७. (D) सामाजिक चेतना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — सामाजिक चेतना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१८८. (D) सामाजिक चेतना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — सामाजिक चेतना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१८९. (C) सामाजिक चेतना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — सामाजिक चेतना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१९०. (C) सामाजिक चेतना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — सामाजिक चेतना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१९१. (C) तुलना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — तुलना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१९२. (C) तुलना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — तुलना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१९३. (C) तुलना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — तुलना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१९४. (A) तुलना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — तुलना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१९५. (B) तुलना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — तुलना कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१९६. (B) उत्तर-लेखन कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — उत्तर-लेखन कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१९७. (C) उत्तर-लेखन कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — उत्तर-लेखन कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१९८. (B) उत्तर-लेखन कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — उत्तर-लेखन कैँ उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

१९९. (B) उत्तर-लेखन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — उत्तर-लेखन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२००. (C) उत्तर-लेखन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। — उत्तर-लेखन कैं उमापति मध्यकालीन कीर्तनिया धारा आ ईशनाथ झा आधुनिक मैथिली नाटकक मंचीय-सामाजिक दृष्टिक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२०१. (D) सुधांशु 'शेखर' चौधरी कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — सुधांशु 'शेखर' चौधरी कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२०२. (C) सुधांशु 'शेखर' चौधरी कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — सुधांशु 'शेखर' चौधरी कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२०३. (B) सुधांशु 'शेखर' चौधरी कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — सुधांशु 'शेखर' चौधरी कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२०४. (B) सुधांशु 'शेखर' चौधरी कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — सुधांशु 'शेखर' चौधरी कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२०५. (B) सुधांशु 'शेखर' चौधरी कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — सुधांशु 'शेखर' चौधरी कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२०६. (A) रामदेव झा कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — रामदेव झा कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२०७. (D) रामदेव झा कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — रामदेव झा कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२०८. (D) रामदेव झा कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — रामदेव झा कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२०९. (B) रामदेव झा कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — रामदेव झा कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२१०. (B) रामदेव झा कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — रामदेव झा कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२११. (C) बौद्धिक संवेदना कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — बौद्धिक संवेदना कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ

मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२१२. (A) बौद्धिक संवेदना केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — बौद्धिक संवेदना केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२१३. (A) बौद्धिक संवेदना केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — बौद्धिक संवेदना केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२१४. (B) बौद्धिक संवेदना केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — बौद्धिक संवेदना केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२१५. (B) बौद्धिक संवेदना केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — बौद्धिक संवेदना केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२१६. (C) परिवार-कथ्य केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — परिवार-कथ्य केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२१७. (D) परिवार-कथ्य केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — परिवार-कथ्य केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२१८. (A) परिवार-कथ्य केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — परिवार-कथ्य केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२१९. (B) परिवार-कथ्य केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — परिवार-कथ्य केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२२०. (C) परिवार-कथ्य केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — परिवार-कथ्य केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२२१. (B) ग्राम्य जीवन केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — ग्राम्य जीवन केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२२२. (A) ग्राम्य जीवन केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — ग्राम्य जीवन केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२२३. (C) ग्राम्य जीवन केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — ग्राम्य जीवन केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२२४. (C) ग्राम्य जीवन केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — ग्राम्य जीवन केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२२५. (D) ग्राम्य जीवन केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — ग्राम्य जीवन केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२२६. (C) नगर अनुभव कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — नगर अनुभव कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२२७. (B) नगर अनुभव कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — नगर अनुभव कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२२८. (B) नगर अनुभव कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — नगर अनुभव कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२२९. (A) नगर अनुभव कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — नगर अनुभव कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२३०. (C) नगर अनुभव कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — नगर अनुभव कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२३१. (C) चरित्र-गतिरोध कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — चरित्र-गतिरोध कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२३२. (D) चरित्र-गतिरोध कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — चरित्र-गतिरोध कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२३३. (C) चरित्र-गतिरोध कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — चरित्र-गतिरोध कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२३४. (C) चरित्र-गतिरोध कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — चरित्र-गतिरोध कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२३५. (B) चरित्र-गतिरोध कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — चरित्र-गतिरोध कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२३६. (C) संवाद-लय कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — संवाद-लय कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२३७. (A) संवाद-लय कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — संवाद-लय कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२३८. (D) संवाद-लय कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — संवाद-लय कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२३९. (D) संवाद-लय कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — संवाद-लय कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२४०. (B) संवाद-लय कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — संवाद-लय कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२४१. (B) हास्य-करुणा कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — हास्य-करुणा कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२४२. (C) हास्य-करुणा कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — हास्य-करुणा कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२४३. (A) हास्य-करुणा कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — हास्य-करुणा कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२४४. (A) हास्य-करुणा कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — हास्य-करुणा कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२४५. (C) हास्य-करुणा कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — हास्य-करुणा कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२४६. (D) मंच-निर्देश कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — मंच-निर्देश कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२४७. (B) मंच-निर्देश कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — मंच-निर्देश कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२४८. (D) मंच-निर्देश कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — मंच-निर्देश कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२४९. (B) मंच-निर्देश कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — मंच-निर्देश कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२५०. (A) मंच-निर्देश कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — मंच-निर्देश कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२५१. (C) एकांकी प्रयोग कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — एकांकी प्रयोग कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२५२. (C) एकांकी प्रयोग कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — एकांकी प्रयोग कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२५३. (C) एकांकी प्रयोग कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — एकांकी प्रयोग कैं सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२५४. (C) एकांकी प्रयोग कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — एकांकी प्रयोग कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२५५. (C) एकांकी प्रयोग कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — एकांकी प्रयोग कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२५६. (B) शिक्षण-सुलभता कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — शिक्षण-सुलभता कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२५७. (D) शिक्षण-सुलभता कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — शिक्षण-सुलभता कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२५८. (B) शिक्षण-सुलभता कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — शिक्षण-सुलभता कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२५९. (B) शिक्षण-सुलभता कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — शिक्षण-सुलभता कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२६०. (B) शिक्षण-सुलभता कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — शिक्षण-सुलभता कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२६१. (A) स्त्री-स्वर कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — स्त्री-स्वर कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२६२. (B) स्त्री-स्वर कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — स्त्री-स्वर कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२६३. (C) स्त्री-स्वर कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — स्त्री-स्वर कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२६४. (C) स्त्री-स्वर कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — स्त्री-स्वर कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२६५. (B) स्त्री-स्वर कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — स्त्री-स्वर कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२६६. (C) भाषिक सरलता कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — भाषिक सरलता कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२६७. (C) भाषिक सरलता कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — भाषिक सरलता कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२६८. (D) भाषिक सरलता कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — भाषिक सरलता कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२६९. (B) भाषिक सरलता कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — भाषिक सरलता कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२७०. (D) भाषिक सरलता कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — भाषिक सरलता कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२७१. (D) लोक-विन्यास कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — लोक-विन्यास कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२७२. (D) लोक-विन्यास कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — लोक-विन्यास कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२७३. (B) लोक-विन्यास कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — लोक-विन्यास कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२७४. (C) लोक-विन्यास कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — लोक-विन्यास कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२७५. (A) लोक-विन्यास कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — लोक-विन्यास कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२७६. (A) सामाजिक आलोचना कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — सामाजिक आलोचना कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२७७. (C) सामाजिक आलोचना कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — सामाजिक आलोचना कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२७८. (D) सामाजिक आलोचना कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — सामाजिक आलोचना कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२७९. (D) सामाजिक आलोचना कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — सामाजिक आलोचना कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२८०. (A) सामाजिक आलोचना कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — सामाजिक आलोचना कैँ सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार,

संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२८१. (A) रचना-संतुलन केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — रचना-संतुलन केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२८२. (B) रचना-संतुलन केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — रचना-संतुलन केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२८३. (D) रचना-संतुलन केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — रचना-संतुलन केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२८४. (D) रचना-संतुलन केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — रचना-संतुलन केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२८५. (C) रचना-संतुलन केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — रचना-संतुलन केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२८६. (B) दर्शक-सम्पर्क केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — दर्शक-सम्पर्क केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२८७. (A) दर्शक-सम्पर्क केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — दर्शक-सम्पर्क केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२८८. (D) दर्शक-सम्पर्क केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — दर्शक-सम्पर्क केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२८९. (B) दर्शक-सम्पर्क केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — दर्शक-सम्पर्क केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२९०. (B) दर्शक-सम्पर्क केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — दर्शक-सम्पर्क केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२९१. (C) प्रदर्शन-आलोचना केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — प्रदर्शन-आलोचना केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२९२. (D) प्रदर्शन-आलोचना केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — प्रदर्शन-आलोचना केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२९३. (A) प्रदर्शन-आलोचना केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — प्रदर्शन-आलोचना केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२९४. (B) प्रदर्शन-आलोचना केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — प्रदर्शन-आलोचना केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा

आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२९५. (D) प्रदर्शन-आलोचना केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — प्रदर्शन-आलोचना केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२९६. (C) उत्तर-रणनीति केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — उत्तर-रणनीति केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२९७. (C) उत्तर-रणनीति केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — उत्तर-रणनीति केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२९८. (B) उत्तर-रणनीति केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — उत्तर-रणनीति केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

२९९. (B) उत्तर-रणनीति केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — उत्तर-रणनीति केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३००. (D) उत्तर-रणनीति केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। — उत्तर-रणनीति केँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ रामदेव झाक सन्दर्भमे आधुनिक मैथिली नाटकक समाज, परिवार, संवाद, भाषा आ मंचीयता पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३०१. (A) महेन्द्र मलंगिया केँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — महेन्द्र मलंगिया केँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३०२. (C) महेन्द्र मलंगिया केँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — महेन्द्र मलंगिया केँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३०३. (C) महेन्द्र मलंगिया केँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — महेन्द्र मलंगिया केँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३०४. (B) महेन्द्र मलंगिया केँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — महेन्द्र मलंगिया केँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३०५. (A) महेन्द्र मलंगिया केँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — महेन्द्र मलंगिया केँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३०६. (B) रंग-साधना केँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — रंग-साधना केँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३०७. (D) रंग-साधना केँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — रंग-साधना केँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३०८. (D) रंग-साधना केँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — रंग-साधना केँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३०९. (C) रंग-साधना कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — रंग-साधना कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३१०. (B) रंग-साधना कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — रंग-साधना कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३११. (C) सामाजिक आलोचना कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — सामाजिक आलोचना कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३१२. (D) सामाजिक आलोचना कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — सामाजिक आलोचना कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३१३. (A) सामाजिक आलोचना कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — सामाजिक आलोचना कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३१४. (B) सामाजिक आलोचना कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — सामाजिक आलोचना कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३१५. (A) सामाजिक आलोचना कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — सामाजिक आलोचना कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३१६. (B) लोकभाषा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — लोकभाषा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३१७. (D) लोकभाषा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — लोकभाषा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३१८. (A) लोकभाषा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — लोकभाषा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३१९. (C) लोकभाषा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — लोकभाषा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३२०. (A) लोकभाषा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — लोकभाषा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३२१. (C) ग्रामीण मिथिला कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — ग्रामीण मिथिला कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३२२. (D) ग्रामीण मिथिला कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — ग्रामीण मिथिला कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३२३. (D) ग्रामीण मिथिला कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — ग्रामीण मिथिला कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३२४. (B) ग्रामीण मिथिला कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — ग्रामीण मिथिला कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३२५. (B) ग्रामीण मिथिला कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — ग्रामीण मिथिला कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३२६. (D) संवादक धार कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — संवादक धार कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३२७. (D) संवादक धार कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — संवादक धार कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३२८. (C) संवादक धार कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — संवादक धार कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३२९. (C) संवादक धार कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — संवादक धार कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३३०. (B) संवादक धार कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — संवादक धार कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३३१. (C) हास्य-व्यंग्य कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — हास्य-व्यंग्य कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३३२. (A) हास्य-व्यंग्य कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — हास्य-व्यंग्य कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३३३. (D) हास्य-व्यंग्य कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — हास्य-व्यंग्य कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३३४. (A) हास्य-व्यंग्य कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — हास्य-व्यंग्य कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३३५. (B) हास्य-व्यंग्य कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — हास्य-व्यंग्य कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३३६. (B) मंचीयता कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — मंचीयता कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३३७. (D) मंचीयता कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — मंचीयता कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३३८. (B) मंचीयता कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — मंचीयता कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३३९. (C) मंचीयता कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — मंचीयता कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३४०. (C) मंचीयता कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — मंचीयता कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३४१. (A) चरित्र-निर्माण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — चरित्र-निर्माण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३४२. (A) चरित्र-निर्माण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — चरित्र-निर्माण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३४३. (D) चरित्र-निर्माण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — चरित्र-निर्माण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३४४. (B) चरित्र-निर्माण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — चरित्र-निर्माण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३४५. (D) चरित्र-निर्माण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — चरित्र-निर्माण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३४६. (A) सत्ता-सवाल कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — सत्ता-सवाल कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३४७. (B) सत्ता-सवाल कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — सत्ता-सवाल कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३४८. (B) सत्ता-सवाल कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — सत्ता-सवाल कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३४९. (B) सत्ता-सवाल कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — सत्ता-सवाल कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३५०. (B) सत्ता-सवाल कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — सत्ता-सवाल कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३५१. (C) नारी-पात्र कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — नारी-पात्र कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३५२. (D) नारी-पात्र कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — नारी-पात्र कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३५३. (C) नारी-पात्र कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — नारी-पात्र कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३५४. (D) नारी-पात्र कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — नारी-पात्र कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३५५. (A) नारी-पात्र कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — नारी-पात्र कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३५६. (B) रूपान्तरण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — रूपान्तरण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३५७. (A) रूपान्तरण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — रूपान्तरण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३५८. (A) रूपान्तरण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — रूपान्तरण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३५९. (B) रूपान्तरण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — रूपान्तरण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३६०. (B) रूपान्तरण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — रूपान्तरण कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३६१. (A) निर्देशन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — निर्देशन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३६२. (D) निर्देशन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — निर्देशन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३६३. (A) निर्देशन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — निर्देशन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३६४. (A) निर्देशन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — निर्देशन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३६५. (C) निर्देशन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — निर्देशन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३६६. (D) समकालीनता कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — समकालीनता कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३६७. (B) समकालीनता कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — समकालीनता कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३६८. (D) समकालीनता कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — समकालीनता कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३६९. (B) समकालीनता कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — समकालीनता कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३७०. (C) समकालीनता कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — समकालीनता कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३७१. (B) दर्शक-सम्बोधन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — दर्शक-सम्बोधन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३७२. (D) दर्शक-सम्बोधन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — दर्शक-सम्बोधन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३७३. (C) दर्शक-सम्बोधन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — दर्शक-सम्बोधन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३७४. (A) दर्शक-सम्बोधन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — दर्शक-सम्बोधन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३७५. (C) दर्शक-सम्बोधन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — दर्शक-सम्बोधन कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३७६. (C) लोक-ध्वनि कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — लोक-ध्वनि कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३७७. (D) लोक-ध्वनि कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — लोक-ध्वनि कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३७८. (D) लोक-ध्वनि कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — लोक-ध्वनि कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३७९. (C) लोक-ध्वनि कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — लोक-ध्वनि कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३८०. (A) लोक-ध्वनि कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — लोक-ध्वनि कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३८१. (B) दृश्य-विन्यास कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — दृश्य-विन्यास कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३८२. (D) दृश्य-विन्यास कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — दृश्य-विन्यास कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३८३. (D) दृश्य-विन्यास कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — दृश्य-विन्यास कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३८४. (A) दृश्य-विन्यास कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — दृश्य-विन्यास कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३८५. (C) दृश्य-विन्यास कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — दृश्य-विन्यास कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३८६. (D) नाट्य-भाषा कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — नाट्य-भाषा कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३८७. (B) नाट्य-भाषा कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — नाट्य-भाषा कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३८८. (D) नाट्य-भाषा कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — नाट्य-भाषा कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३८९. (C) नाट्य-भाषा कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — नाट्य-भाषा कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३९०. (C) नाट्य-भाषा कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — नाट्य-भाषा कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३९१. (A) समीक्षा कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — समीक्षा कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३९२. (A) समीक्षा कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — समीक्षा कैं महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकैं केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३९३. (B) समीक्षा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — समीक्षा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३९४. (C) समीक्षा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — समीक्षा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३९५. (C) समीक्षा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — समीक्षा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३९६. (C) परीक्षा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — परीक्षा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३९७. (C) परीक्षा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — परीक्षा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३९८. (D) परीक्षा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — परीक्षा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

३९९. (C) परीक्षा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — परीक्षा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४००. (D) परीक्षा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। — परीक्षा कैँ महेन्द्र मलंगिया आधुनिक मैथिली रंगमंचमे सामाजिक यथार्थ, लोकभाषा, संवाद, व्यंग्य आ मंचीय प्रयोगक प्रमुख नाम छथि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४०१. (B) नचिकेता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — नचिकेता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४०२. (C) नचिकेता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — नचिकेता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४०३. (C) नचिकेता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — नचिकेता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४०४. (C) नचिकेता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — नचिकेता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४०५. (C) नचिकेता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — नचिकेता कैँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा,

दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४०६. (A) अरविन्द 'अक्कू' केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — अरविन्द 'अक्कू' केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४०७. (A) अरविन्द 'अक्कू' केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — अरविन्द 'अक्कू' केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४०८. (C) अरविन्द 'अक्कू' केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — अरविन्द 'अक्कू' केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४०९. (A) अरविन्द 'अक्कू' केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — अरविन्द 'अक्कू' केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४१०. (C) अरविन्द 'अक्कू' केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — अरविन्द 'अक्कू' केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४११. (D) प्रयोगधर्मी रंगमंच केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — प्रयोगधर्मी रंगमंच केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४१२. (C) प्रयोगधर्मी रंगमंच केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — प्रयोगधर्मी रंगमंच केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४१३. (C) प्रयोगधर्मी रंगमंच केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — प्रयोगधर्मी रंगमंच केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४१४. (C) प्रयोगधर्मी रंगमंच केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — प्रयोगधर्मी रंगमंच केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४१५. (A) प्रयोगधर्मी रंगमंच केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — प्रयोगधर्मी रंगमंच केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४१६. (D) युवा मंच केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — युवा मंच केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा,

दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४१७. (B) युवा मंच केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — युवा मंच केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४१८. (B) युवा मंच केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — युवा मंच केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४१९. (B) युवा मंच केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — युवा मंच केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४२०. (A) युवा मंच केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — युवा मंच केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४२१. (A) भाषिक प्रयोग केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — भाषिक प्रयोग केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४२२. (A) भाषिक प्रयोग केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — भाषिक प्रयोग केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४२३. (D) भाषिक प्रयोग केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — भाषिक प्रयोग केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४२४. (C) भाषिक प्रयोग केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — भाषिक प्रयोग केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४२५. (A) भाषिक प्रयोग केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — भाषिक प्रयोग केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४२६. (C) जनपक्षधरता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — जनपक्षधरता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४२७. (C) जनपक्षधरता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — जनपक्षधरता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग,

भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४२८. (C) जनपक्षधरता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — जनपक्षधरता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४२९. (A) जनपक्षधरता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — जनपक्षधरता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४३०. (D) जनपक्षधरता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — जनपक्षधरता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४३१. (B) संवाद-शिल्प केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — संवाद-शिल्प केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४३२. (A) संवाद-शिल्प केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — संवाद-शिल्प केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४३३. (A) संवाद-शिल्प केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — संवाद-शिल्प केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४३४. (C) संवाद-शिल्प केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — संवाद-शिल्प केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४३५. (B) संवाद-शिल्प केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — संवाद-शिल्प केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४३६. (B) प्रहसन केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — प्रहसन केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४३७. (D) प्रहसन केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — प्रहसन केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४३८. (D) प्रहसन केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — प्रहसन केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-

संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४३९. (A) प्रहसन केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — प्रहसन केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४४०. (C) प्रहसन केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — प्रहसन केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४४१. (A) एकांकी केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — एकांकी केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४४२. (D) एकांकी केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — एकांकी केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४४३. (C) एकांकी केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — एकांकी केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४४४. (D) एकांकी केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — एकांकी केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४४५. (B) एकांकी केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — एकांकी केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४४६. (B) शहरी अनुभव केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — शहरी अनुभव केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४४७. (B) शहरी अनुभव केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — शहरी अनुभव केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४४८. (D) शहरी अनुभव केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — शहरी अनुभव केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४४९. (C) शहरी अनुभव केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — शहरी अनुभव केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग,

भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४५०. (C) शहरी अनुभव केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — शहरी अनुभव केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४५१. (B) मैथिली अस्मिता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — मैथिली अस्मिता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४५२. (A) मैथिली अस्मिता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — मैथिली अस्मिता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४५३. (A) मैथिली अस्मिता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — मैथिली अस्मिता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४५४. (D) मैथिली अस्मिता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — मैथिली अस्मिता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४५५. (B) मैथिली अस्मिता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — मैथिली अस्मिता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४५६. (C) रूपांतरण केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — रूपांतरण केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४५७. (A) रूपांतरण केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — रूपांतरण केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४५८. (C) रूपांतरण केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — रूपांतरण केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४५९. (D) रूपांतरण केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — रूपांतरण केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४६०. (C) रूपांतरण केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — रूपांतरण केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा,

दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४६१. (C) अभिनय-प्रशिक्षण केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — अभिनय-प्रशिक्षण केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४६२. (A) अभिनय-प्रशिक्षण केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — अभिनय-प्रशिक्षण केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४६३. (D) अभिनय-प्रशिक्षण केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — अभिनय-प्रशिक्षण केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४६४. (C) अभिनय-प्रशिक्षण केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — अभिनय-प्रशिक्षण केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४६५. (A) अभिनय-प्रशिक्षण केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — अभिनय-प्रशिक्षण केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४६६. (B) डिजिटल दस्तावेज केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — डिजिटल दस्तावेज केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४६७. (B) डिजिटल दस्तावेज केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — डिजिटल दस्तावेज केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४६८. (A) डिजिटल दस्तावेज केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — डिजिटल दस्तावेज केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४६९. (D) डिजिटल दस्तावेज केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — डिजिटल दस्तावेज केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४७०. (B) डिजिटल दस्तावेज केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — डिजिटल दस्तावेज केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४७१. (C) दर्शक संवाद केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — दर्शक संवाद केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग,

भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४७२. (A) दर्शक संवाद केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — दर्शक संवाद केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४७३. (D) दर्शक संवाद केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — दर्शक संवाद केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४७४. (D) दर्शक संवाद केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — दर्शक संवाद केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४७५. (C) दर्शक संवाद केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — दर्शक संवाद केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४७६. (D) व्यंग्य केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — व्यंग्य केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४७७. (C) व्यंग्य केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — व्यंग्य केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४७८. (C) व्यंग्य केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — व्यंग्य केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४७९. (D) व्यंग्य केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — व्यंग्य केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४८०. (C) व्यंग्य केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — व्यंग्य केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४८१. (B) लोक-नवता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — लोक-नवता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४८२. (D) लोक-नवता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — लोक-नवता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग,

भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४८३. (A) लोक-नवता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — लोक-नवता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४८४. (C) लोक-नवता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — लोक-नवता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४८५. (A) लोक-नवता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — लोक-नवता केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४८६. (D) मंच-संयम केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — मंच-संयम केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४८७. (C) मंच-संयम केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — मंच-संयम केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४८८. (B) मंच-संयम केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — मंच-संयम केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४८९. (D) मंच-संयम केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — मंच-संयम केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४९०. (D) मंच-संयम केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — मंच-संयम केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४९१. (B) तुलनात्मक पठन केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — तुलनात्मक पठन केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४९२. (D) तुलनात्मक पठन केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — तुलनात्मक पठन केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४९३. (A) तुलनात्मक पठन केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — तुलनात्मक पठन केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म,

प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४९४. (A) तुलनात्मक पठन केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — तुलनात्मक पठन केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४९५. (A) तुलनात्मक पठन केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — तुलनात्मक पठन केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४९६. (D) समग्र निष्कर्ष केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — समग्र निष्कर्ष केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४९७. (A) समग्र निष्कर्ष केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — समग्र निष्कर्ष केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४९८. (A) समग्र निष्कर्ष केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — समग्र निष्कर्ष केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

४९९. (B) समग्र निष्कर्ष केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — समग्र निष्कर्ष केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

५००. (D) समग्र निष्कर्ष केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। — समग्र निष्कर्ष केँ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' आ अरविन्द 'अक्कू'क संदर्भमे समकालीन मैथिली रंगकर्म, प्रयोग, भाषा, दर्शक-संवाद आ लोक-नवता पर बल देल जाइत अछि। एहि कारण एहि विषयकेँ केवल नाम-स्मरण नहि, भाषा, मंच, भाव, समाज आ परम्पराक सन्दर्भमे बुझब आवश्यक अछि।

अध्याय २ : मुक्तककाव्य — विदेह क्विज

sec0

१. सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययनमे “मुक्तककाव्य” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) समाचारक शीर्षक

(B) स्वतन्त्र छोट काव्य, जे अपन भाव, बिम्ब आ निष्कर्ष अपने भीतर पूरा करैत अछि

(C) लम्बा आख्यान मात्र

(D) केवल नाटकक दृश्य

२. “मुक्तककाव्य” कैँ सीताराम झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) समाचारक शीर्षक

(B) स्वतन्त्र छोट काव्य, जे अपन भाव, बिम्ब आ निष्कर्ष अपने भीतर पूरा करैत अछि

(C) लम्बा आख्यान मात्र

(D) केवल नाटकक दृश्य

३. नीचाँमे सीताराम झाक “मुक्तककाव्य” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) समाचारक शीर्षक

(B) स्वतन्त्र छोट काव्य, जे अपन भाव, बिम्ब आ निष्कर्ष अपने भीतर पूरा करैत अछि

(C) लम्बा आख्यान मात्र

(D) केवल नाटकक दृश्य

४. परीक्षा-दृष्टिसँ सीताराम झा पर “मुक्तककाव्य” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) समाचारक शीर्षक

(B) स्वतन्त्र छोट काव्य, जे अपन भाव, बिम्ब आ निष्कर्ष अपने भीतर पूरा करैत अछि

(C) लम्बा आख्यान मात्र

(D) केवल नाटकक दृश्य

५. सीताराम झाक मुक्तकक “मुक्तककाव्य” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) समाचारक शीर्षक

(B) स्वतन्त्र छोट काव्य, जे अपन भाव, बिम्ब आ निष्कर्ष अपने भीतर पूरा करैत अछि

(C) लम्बा आख्यान मात्र

(D) केवल नाटकक दृश्य

६. सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययनमे “कविता-संस्कार” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) नाटकक मंच-सज्जा मात्र

(B) सीताराम झाक काव्य-अध्ययनमे परम्परा, छन्द-संस्कार आ भाव-संयम पर ध्यान देल जाइत अछि

(C) कथा-विस्तारक अभाव

(D) केवल बाजारक विवरण

७. “कविता-संस्कार” कैँ सीताराम झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) नाटकक मंच-सज्जा मात्र

(B) सीताराम झाक काव्य-अध्ययनमे परम्परा, छन्द-संस्कार आ भाव-संयम पर ध्यान देल जाइत अछि

(C) कथा-विस्तारक अभाव

(D) केवल बाजारक विवरण

८. नीचाँमे सीताराम झाक “कविता-संस्कार” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) नाटकक मंच-सज्जा मात्र

(B) सीताराम झाक काव्य-अध्ययनमे परम्परा, छन्द-संस्कार आ भाव-संयम पर ध्यान देल जाइत अछि

(C) कथा-विस्तारक अभाव

(D) केवल बाजारक विवरण

९. परीक्षा-दृष्टिसँ सीताराम झा पर “कविता-संस्कार” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) नाटकक मंच-सज्जा मात्र

(B) सीताराम झाक काव्य-अध्ययनमे परम्परा, छन्द-संस्कार आ भाव-संयम पर ध्यान देल जाइत अछि

(C) कथा-विस्तारक अभाव

(D) केवल बाजारक विवरण

१०. सीताराम झाक मुक्तकक “कविता-संस्कार” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) नाटकक मंच-सज्जा मात्र

(B) सीताराम झाक काव्य-अध्ययनमे परम्परा, छन्द-संस्कार आ भाव-संयम पर ध्यान देल जाइत अछि

(C) कथा-विस्तारक अभाव

(D) केवल बाजारक विवरण

११. सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययनमे “परम्परा-बोध” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल उपन्यासक कथानक

(B) हुनक मुक्तक पढ़ैत समय मैथिली काव्य-परम्परा, लोक-संस्कार आ भाषिक शुद्धता देखब जरूरी अछि

(C) केवल विदेशी शब्दावली

(D) केवल समाचार-पद्धति

१२. “परम्परा-बोध” कैँ सीताराम झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल उपन्यासक कथानक

(B) हुनक मुक्तक पढ़ैत समय मैथिली काव्य-परम्परा, लोक-संस्कार आ भाषिक शुद्धता देखब जरूरी अछि

(C) केवल विदेशी शब्दावली

(D) केवल समाचार-पद्धति

१३. नीचाँमे सीताराम झाक “परम्परा-बोध” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल उपन्यासक कथानक

(B) हुनक मुक्तक पढ़ैत समय मैथिली काव्य-परम्परा, लोक-संस्कार आ भाषिक शुद्धता देखब जरूरी अछि

(C) केवल विदेशी शब्दावली

(D) केवल समाचार-पद्धति

१४. परीक्षा-दृष्टिसँ सीताराम झा पर “परम्परा-बोध” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल उपन्यासक कथानक

(B) हुनक मुक्तक पढ़ैत समय मैथिली काव्य-परम्परा, लोक-संस्कार आ भाषिक शुद्धता देखब जरूरी अछि

(C) केवल विदेशी शब्दावली

(D) केवल समाचार-पद्धति

१५. सीताराम झाक मुक्तकक “परम्परा-बोध” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल उपन्यासक कथानक

(B) हुनक मुक्तक पढ़ैत समय मैथिली काव्य-परम्परा, लोक-संस्कार आ भाषिक शुद्धता देखब जरूरी अछि

(C) केवल विदेशी शब्दावली

(D) केवल समाचार-पद्धति

१६. सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययनमे “छन्द-संयम” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) मंच निर्देश

(B) मुक्तकमे लघु आकारक कारण छन्द, लय आ शब्द-संयम विशेष प्रभावकारी बनैत अछि

(C) असीमित गद्य-विस्तार

(D) पात्र-सूची

१७. “छन्द-संयम” कैँ सीताराम झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) मंच निर्देश

(B) मुक्तकमे लघु आकारक कारण छन्द, लय आ शब्द-संयम विशेष प्रभावकारी बनैत अछि

(C) असीमित गद्य-विस्तार

(D) पात्र-सूची

१८. नीचाँमे सीताराम झाक “छन्द-संयम” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) मंच निर्देश

(B) मुक्तकमे लघु आकारक कारण छन्द, लय आ शब्द-संयम विशेष प्रभावकारी बनैत अछि

(C) असीमित गद्य-विस्तार

(D) पात्र-सूची

१९. परीक्षा-दृष्टिसँ सीताराम झा पर “छन्द-संयम” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) मंच निर्देश

(B) मुक्तकमे लघु आकारक कारण छन्द, लय आ शब्द-संयम विशेष प्रभावकारी बनैत अछि

(C) असीमित गद्य-विस्तार

(D) पात्र-सूची

२०. सीताराम झाक मुक्तकक “छन्द-संयम” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) मंच निर्देश

(B) मुक्तकमे लघु आकारक कारण छन्द, लय आ शब्द-संयम विशेष प्रभावकारी बनैत अछि

(C) असीमित गद्य-विस्तार

(D) पात्र-सूची

२१. सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययनमे “भाव-निष्कर्ष” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल लेखक-नाम

(B) सीताराम झाक अध्ययनमे मुक्तकक अन्तिम पंक्ति वा भाव-संकेत पूरा रचनाकेँ बाँधैत अछि

(C) अधूरा प्रसंग

(D) सूची-पत्र

२२. “भाव-निष्कर्ष” कैँ सीताराम झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल लेखक-नाम

(B) सीताराम झाक अध्ययनमे मुक्तकक अन्तिम पंक्ति वा भाव-संकेत पूरा रचनाकेँ बाँधैत अछि

(C) अधूरा प्रसंग

(D) सूची-पत्र

२३. नीचाँमे सीताराम झाक “भाव-निष्कर्ष” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल लेखक-नाम

(B) सीताराम झाक अध्ययनमे मुक्तकक अन्तिम पंक्ति वा भाव-संकेत पूरा रचनाकेँ बाँधैत अछि

(C) अधूरा प्रसंग

(D) सूची-पत्र

२४. परीक्षा-दृष्टिसँ सीताराम झा पर “भाव-निष्कर्ष” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल लेखक-नाम

(B) सीताराम झाक अध्ययनमे मुक्तकक अन्तिम पंक्ति वा भाव-संकेत पूरा रचनाकेँ बाँधैत अछि

(C) अधूरा प्रसंग

(D) सूची-पत्र

२५. सीताराम झाक मुक्तकक “भाव-निष्कर्ष” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल लेखक-नाम

(B) सीताराम झाक अध्ययनमे मुक्तकक अन्तिम पंक्ति वा भाव-संकेत पूरा रचनाकेँ बाँधैत अछि

(C) अधूरा प्रसंग

(D) सूची-पत्र

२६. सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययनमे “नैतिक स्वर” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) गणितक सूत्र

(B) हुनक काव्य-सन्दर्भमे नैतिक चेतना, जीवन-बोध आ अनुभवक निचोड़ पर प्रश्न बनि सकैत अछि

(C) अर्थहीन शब्द-खेल

(D) चित्रकला-तकनीक मात्र

२७. “नैतिक स्वर” केँ सीताराम झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) गणितक सूत्र

(B) हुनक काव्य-सन्दर्भमे नैतिक चेतना, जीवन-बोध आ अनुभवक निचोड़ पर प्रश्न बनि सकैत अछि

(C) अर्थहीन शब्द-खेल

(D) चित्रकला-तकनीक मात्र

२८. नीचाँमे सीताराम झाक “नैतिक स्वर” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) गणितक सूत्र

(B) हुनक काव्य-सन्दर्भमे नैतिक चेतना, जीवन-बोध आ अनुभवक निचोड़ पर प्रश्न बनि सकैत अछि

(C) अर्थहीन शब्द-खेल

(D) चित्रकला-तकनीक मात्र

२९. परीक्षा-दृष्टिसँ सीताराम झा पर “नैतिक स्वर” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) गणितक सूत्र

(B) हुनक काव्य-सन्दर्भमे नैतिक चेतना, जीवन-बोध आ अनुभवक निचोड़ पर प्रश्न बनि सकैत अछि

(C) अर्थहीन शब्द-खेल

(D) चित्रकला-तकनीक मात्र

३०. सीताराम झाक मुक्तकक “नैतिक स्वर” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) गणितक सूत्र

(B) हुनक काव्य-सन्दर्भमे नैतिक चेतना, जीवन-बोध आ अनुभवक निचोड़ पर प्रश्न बनि सकैत अछि

(C) अर्थहीन शब्द-खेल

(D) चित्रकला-तकनीक मात्र

३१. सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययनमे “भाषा” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) चित्र-वर्णन मात्र

(B) सीताराम झा पर प्रश्नमे सरल, संस्कारित आ भाववाही मैथिली भाषा केँ पहचानब आवश्यक अछि

(C) असम्बद्ध बोली-मिश्रण

(D) केवल अङ्क-गणना

३२. “भाषा” केँ सीताराम झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) चित्र-वर्णन मात्र

(B) सीताराम झा पर प्रश्नमे सरल, संस्कारित आ भाववाही मैथिली भाषा केँ पहचानब आवश्यक अछि

(C) असम्बद्ध बोली-मिश्रण

(D) केवल अङ्क-गणना

३३. नीचाँमे सीताराम झाक “भाषा” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) चित्र-वर्णन मात्र

(B) सीताराम झा पर प्रश्नमे सरल, संस्कारित आ भाववाही मैथिली भाषा कैँ पहचानब आवश्यक अछि

(C) असम्बद्ध बोली-मिश्रण

(D) केवल अङ्क-गणना

३४. परीक्षा-दृष्टिसँ सीताराम झा पर “भाषा” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) चित्र-वर्णन मात्र

(B) सीताराम झा पर प्रश्नमे सरल, संस्कारित आ भाववाही मैथिली भाषा कैँ पहचानब आवश्यक अछि

(C) असम्बद्ध बोली-मिश्रण

(D) केवल अङ्क-गणना

३५. सीताराम झाक मुक्तकक “भाषा” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) चित्र-वर्णन मात्र

(B) सीताराम झा पर प्रश्नमे सरल, संस्कारित आ भाववाही मैथिली भाषा कैँ पहचानब आवश्यक अछि

(C) असम्बद्ध बोली-मिश्रण

(D) केवल अङ्क-गणना

३६. सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययनमे “मुक्तक बनाम प्रबन्ध” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) प्रबन्ध केवल एक पंक्ति

(B) हुनक सन्दर्भमे मुक्तकक स्वतंत्रता आ प्रबन्धकाव्यक विस्तार बीच भिन्नता बुझब जरूरी अछि

(C) दुनूक कोनो भिन्नता नहि

(D) मुक्तक सदैव उपन्यास होइत अछि

३७. “मुक्तक बनाम प्रबन्ध” कैँ सीताराम झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) प्रबन्ध केवल एक पंक्ति

(B) हुनक सन्दर्भमे मुक्तकक स्वतंत्रता आ प्रबन्धकाव्यक विस्तार बीच भिन्नता बुझब जरूरी अछि

(C) दुनूक कोनो भिन्नता नहि

(D) मुक्तक सदैव उपन्यास होइत अछि

३८. नीचाँमे सीताराम झाक “मुक्तक बनाम प्रबन्ध” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) प्रबन्ध केवल एक पंक्ति

(B) हुनक सन्दर्भमे मुक्तकक स्वतंत्रता आ प्रबन्धकाव्यक विस्तार बीच भिन्नता बुझब जरूरी अछि

(C) दुनूक कोनो भिन्नता नहि

(D) मुक्तक सदैव उपन्यास होइत अछि

३९. परीक्षा-दृष्टिसँ सीताराम झा पर “मुक्तक बनाम प्रबन्ध” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) प्रबन्ध केवल एक पंक्ति

(B) हुनक सन्दर्भमे मुक्तकक स्वतंत्रता आ प्रबन्धकाव्यक विस्तार बीच भिन्नता बुझब जरूरी अछि

(C) दुनूक कोनो भिन्नता नहि

(D) मुक्तक सदैव उपन्यास होइत अछि

४०. सीताराम झाक मुक्तकक “मुक्तक बनाम प्रबन्ध” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) प्रबन्ध केवल एक पंक्ति

(B) हुनक सन्दर्भमे मुक्तकक स्वतंत्रता आ प्रबन्धकाव्यक विस्तार बीच भिन्नता बुझब जरूरी अछि

(C) दुनूक कोनो भिन्नता नहि

(D) मुक्तक सदैव उपन्यास होइत अछि

४१. सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययनमे “विषय-विस्तार” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) ई केवल प्रश्नपत्रक क्रमांक अछि

(B) छोट आकारक बावजूद मुक्तक जीवन, प्रकृति, नीति, प्रेम आ समाजक संकेत देबामे समर्थ होइत अछि

(C) मुक्तक विषयहीन रहैत अछि

(D) ई केवल तिथि-सूची अछि

४२. “विषय-विस्तार” कैँ सीताराम झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) ई केवल प्रश्नपत्रक क्रमांक अछि

(B) छोट आकारक बावजूद मुक्तक जीवन, प्रकृति, नीति, प्रेम आ समाजक संकेत देबामे समर्थ होइत अछि

(C) मुक्तक विषयहीन रहैत अछि

(D) ई केवल तिथि-सूची अछि

४३. नीचाँमे सीताराम झाक “विषय-विस्तार” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) ई केवल प्रश्नपत्रक क्रमांक अछि

(B) छोट आकारक बावजूद मुक्तक जीवन, प्रकृति, नीति, प्रेम आ समाजक संकेत देबामे समर्थ होइत अछि

(C) मुक्तक विषयहीन रहैत अछि

(D) ई केवल तिथि-सूची अछि

४४. परीक्षा-दृष्टिसँ सीताराम झा पर “विषय-विस्तार” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) ई केवल प्रश्नपत्रक क्रमांक अछि

(B) छोट आकारक बावजूद मुक्तक जीवन, प्रकृति, नीति, प्रेम आ समाजक संकेत देबामे समर्थ होइत अछि

(C) मुक्तक विषयहीन रहैत अछि

(D) ई केवल तिथि-सूची अछि

४५. सीताराम झाक मुक्तकक “विषय-विस्तार” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई केवल प्रश्नपत्रक क्रमांक अछि

(B) छोट आकारक बावजूद मुक्तक जीवन, प्रकृति, नीति, प्रेम आ समाजक संकेत देबामे समर्थ होइत अछि

(C) मुक्तक विषयहीन रहैत अछि

(D) ई केवल तिथि-सूची अछि

४६. सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययनमे “परीक्षा-दृष्टि” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल शीर्षक दोहरायब

(B) सीताराम झा पर उत्तरमे नामक संग मुक्तकक रूप, भाषा, भाव आ परम्परागत आधार लिखब उचित अछि

(C) केवल जन्म-वर्ष लिखब

(D) केवल पृष्ठ-संख्या लिखब

४७. “परीक्षा-दृष्टि” कैँ सीताराम झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल शीर्षक दोहरायब

(B) सीताराम झा पर उत्तरमे नामक संग मुक्तकक रूप, भाषा, भाव आ परम्परागत आधार लिखब उचित अछि

(C) केवल जन्म-वर्ष लिखब

(D) केवल पृष्ठ-संख्या लिखब

४८. नीचाँमे सीताराम झाक “परीक्षा-दृष्टि” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल शीर्षक दोहरायब

(B) सीताराम झा पर उत्तरमे नामक संग मुक्तकक रूप, भाषा, भाव आ परम्परागत आधार लिखब उचित अछि

(C) केवल जन्म-वर्ष लिखब

(D) केवल पृष्ठ-संख्या लिखब

४९. परीक्षा-दृष्टिसँ सीताराम झा पर “परीक्षा-दृष्टि” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल शीर्षक दोहरायब

(B) सीताराम झा पर उत्तरमे नामक संग मुक्तकक रूप, भाषा, भाव आ परम्परागत आधार लिखब उचित अछि

(C) केवल जन्म-वर्ष लिखब

(D) केवल पृष्ठ-संख्या लिखब

५०. सीताराम झाक मुक्तकक “परीक्षा-दृष्टि” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल शीर्षक दोहरायब

(B) सीताराम झा पर उत्तरमे नामक संग मुक्तकक रूप, भाषा, भाव आ परम्परागत आधार लिखब उचित अछि

(C) केवल जन्म-वर्ष लिखब

(D) केवल पृष्ठ-संख्या लिखब

५१. सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययनमे “आलोचना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल प्रकाशकक पता

(B) आलोचनामे रचनाक लघु आकार, भाव-गहनता, संकेत, लय आ भाषा-सौष्ठवक समन्वय देखल जाइत अछि

(C) केवल छपाइक आकार

(D) केवल मुखपृष्ठक रंग

५२. “आलोचना” कैँ सीताराम झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल प्रकाशकक पता

(B) आलोचनामे रचनाक लघु आकार, भाव-गहनता, संकेत, लय आ भाषा-सौष्ठवक समन्वय देखल जाइत अछि

(C) केवल छपाइक आकार

(D) केवल मुखपृष्ठक रंग

५३. नीचाँमे सीताराम झाक “आलोचना” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल प्रकाशकक पता

(B) आलोचनामे रचनाक लघु आकार, भाव-गहनता, संकेत, लय आ भाषा-सौष्ठवक समन्वय देखल जाइत अछि

(C) केवल छपाइक आकार

(D) केवल मुखपृष्ठक रंग

५४. परीक्षा-दृष्टिसँ सीताराम झा पर “आलोचना” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल प्रकाशकक पता

(B) आलोचनामे रचनाक लघु आकार, भाव-गहनता, संकेत, लय आ भाषा-सौष्ठवक समन्वय देखल जाइत अछि

(C) केवल छपाइक आकार

(D) केवल मुखपृष्ठक रंग

५५. सीताराम झाक मुक्तकक “आलोचना” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल प्रकाशकक पता

(B) आलोचनामे रचनाक लघु आकार, भाव-गहनता, संकेत, लय आ भाषा-सौष्ठवक समन्वय देखल जाइत अछि

(C) केवल छपाइक आकार

(D) केवल मुखपृष्ठक रंग

५६. सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययनमे “लोक-संस्कार” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) नाचक वेशभूषा

(B) सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययन लोक-संस्कार आ शास्त्रीय संस्कारक सह-अस्तित्व दिस संकेत करैत अछि

(C) लोकजीवनसँ पूर्ण अलगाव

(D) कथा-विस्तारक अभाव मात्र

५७. “लोक-संस्कार” कैँ सीताराम झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) नाचक वेशभूषा

(B) सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययन लोक-संस्कार आ शास्त्रीय संस्कारक सह-अस्तित्व दिस संकेत करैत अछि

(C) लोकजीवनसँ पूर्ण अलगाव

(D) कथा-विस्तारक अभाव मात्र

५८. नीचाँमे सीताराम झाक “लोक-संस्कार” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) नाचक वेशभूषा

(B) सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययन लोक-संस्कार आ शास्त्रीय संस्कारक सह-अस्तित्व दिस संकेत करैत अछि

(C) लोकजीवनसँ पूर्ण अलगाव

(D) कथा-विस्तारक अभाव मात्र

५९. परीक्षा-दृष्टिसँ सीताराम झा पर “लोक-संस्कार” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) नाचक वेशभूषा

(B) सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययन लोक-संस्कार आ शास्त्रीय संस्कारक सह-अस्तित्व दिस संकेत करैत अछि

(C) लोकजीवनसँ पूर्ण अलगाव

(D) कथा-विस्तारक अभाव मात्र

६०. सीताराम झाक मुक्तकक “लोक-संस्कार” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) नाचक वेशभूषा

(B) सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययन लोक-संस्कार आ शास्त्रीय संस्कारक सह-अस्तित्व दिस संकेत करैत अछि

(C) लोकजीवनसँ पूर्ण अलगाव

(D) कथा-विस्तारक अभाव मात्र

६१. सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययनमे “रस-बोध” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल आर्थिक आँकड़ा

(B) मुक्तकमे करुण, शान्त, शृङ्गार वा नीति-रसक संक्षिप्त लेकिन प्रभावी रूप भेटि सकैत अछि

(C) रसक निषेध

(D) केवल वैज्ञानिक नाम

६२. “रस-बोध” कैँ सीताराम झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल आर्थिक आँकड़ा

(B) मुक्तकमे करुण, शान्त, शृङ्गार वा नीति-रसक संक्षिप्त लेकिन प्रभावी रूप भेटि सकैत अछि

(C) रसक निषेध

(D) केवल वैज्ञानिक नाम

६३. नीचाँमे सीताराम झाक “रस-बोध” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल आर्थिक आँकड़ा

(B) मुक्तकमे करुण, शान्त, शृङ्गार वा नीति-रसक संक्षिप्त लेकिन प्रभावी रूप भेटि सकैत अछि

(C) रसक निषेध

(D) केवल वैज्ञानिक नाम

६४. परीक्षा-दृष्टिसँ सीताराम झा पर “रस-बोध” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल आर्थिक आँकड़ा

(B) मुक्तकमे करुण, शान्त, शृङ्गार वा नीति-रसक संक्षिप्त लेकिन प्रभावी रूप भेटि सकैत अछि

(C) रसक निषेध

(D) केवल वैज्ञानिक नाम

६५. सीताराम झाक मुक्तकक “रस-बोध” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल आर्थिक आँकड़ा

(B) मुक्तकमे करुण, शान्त, शृङ्गार वा नीति-रसक संक्षिप्त लेकिन प्रभावी रूप भेटि सकैत अछि

(C) रसक निषेध

(D) केवल वैज्ञानिक नाम

६६. सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययनमे “कथ्य” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल उत्तर रंगब

(B) सीताराम झा सम्बन्धी कथ्य-विचारमे रचनाक भावक केन्द्र पकड़ब मुख्य होइत अछि

(C) कथ्यकेँ छोड़ि केवल अक्षर गिनब

(D) केवल खण्ड बदलयब

६७. “कथ्य” केँ सीताराम झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल उत्तर रंगब

(B) सीताराम झा सम्बन्धी कथ्य-विचारमे रचनाक भावक केन्द्र पकड़ब मुख्य होइत अछि

(C) कथ्यकेँ छोड़ि केवल अक्षर गिनब

(D) केवल खण्ड बदलयब

६८. नीचाँमे सीताराम झाक “कथ्य” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल उत्तर रंगब

(B) सीताराम झा सम्बन्धी कथ्य-विचारमे रचनाक भावक केन्द्र पकड़ब मुख्य होइत अछि

(C) कथ्यकेँ छोड़ि केवल अक्षर गिनब

(D) केवल खण्ड बदलयब

६९. परीक्षा-दृष्टिसँ सीताराम झा पर “कथ्य” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल उत्तर रंगब

(B) सीताराम झा सम्बन्धी कथ्य-विचारमे रचनाक भावक केन्द्र पकड़ब मुख्य होइत अछि

(C) कथ्यकेँ छोड़ि केवल अक्षर गिनब

(D) केवल खण्ड बदलयब

७०. सीताराम झाक मुक्तकक “कथ्य” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल उत्तर रंगब

(B) सीताराम झा सम्बन्धी कथ्य-विचारमे रचनाक भावक केन्द्र पकड़ब मुख्य होइत अछि

(C) कथ्यकेँ छोड़ि केवल अक्षर गिनब

(D) केवल खण्ड बदलयब

७१. सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययनमे “स्मरणीयता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) मुद्रण दोष मात्र

(B) लघुता, लय आ भाव-गहनता मुक्तककेँ स्मरणीय बनबैत अछि

(C) लम्बाइ मात्र

(D) पृष्ठ संख्या मात्र

७२. “स्मरणीयता” केँ सीताराम झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) मुद्रण दोष मात्र

(B) लघुता, लय आ भाव-गहनता मुक्तककेँ स्मरणीय बनबैत अछि

(C) लम्बाइ मात्र

(D) पृष्ठ संख्या मात्र

७३. नीचाँमे सीताराम झाक “स्मरणीयता” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) मुद्रण दोष मात्र

(B) लघुता, लय आ भाव-गहनता मुक्तककेँ स्मरणीय बनबैत अछि

(C) लम्बाइ मात्र

(D) पृष्ठ संख्या मात्र

७४. परीक्षा-दृष्टिसँ सीताराम झा पर “स्मरणीयता” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) मुद्रण दोष मात्र

(B) लघुता, लय आ भाव-गहनता मुक्तककेँ स्मरणीय बनबैत अछि

(C) लम्बाइ मात्र

(D) पृष्ठ संख्या मात्र

७५. सीताराम झाक मुक्तकक “स्मरणीयता” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) मुद्रण दोष मात्र

(B) लघुता, लय आ भाव-गहनता मुक्तककेँ स्मरणीय बनबैत अछि

(C) लम्बाइ मात्र

(D) पृष्ठ संख्या मात्र

७६. सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययनमे “शिल्प” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल पात्रक आयु

(B) शिल्पमे शब्द-चयन, यति, लय, बिम्ब आ अन्तिम वक्रता महत्त्वपूर्ण अछि

(C) केवल मंच-द्वार

(D) केवल लेखा-जोखा

७७. “शिल्प” केँ सीताराम झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल पात्रक आयु

(B) शिल्पमे शब्द-चयन, यति, लय, बिम्ब आ अन्तिम वक्रता महत्त्वपूर्ण अछि

(C) केवल मंच-द्वार

(D) केवल लेखा-जोखा

७८. नीचाँमे सीताराम झाक “शिल्प” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल पात्रक आयु

(B) शिल्पमे शब्द-चयन, यति, लय, बिम्ब आ अन्तिम वक्रता महत्त्वपूर्ण अछि

(C) केवल मंच-द्वार

(D) केवल लेखा-जोखा

७९. परीक्षा-दृष्टिसँ सीताराम झा पर “शिल्प” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल पात्रक आयु

(B) शिल्पमे शब्द-चयन, यति, लय, बिम्ब आ अन्तिम वक्रता महत्त्वपूर्ण अछि

(C) केवल मंच-द्वार

(D) केवल लेखा-जोखा

८०. सीताराम झाक मुक्तकक “शिल्प” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल पात्रक आयु

(B) शिल्पमे शब्द-चयन, यति, लय, बिम्ब आ अन्तिम वक्रता महत्त्वपूर्ण अछि

(C) केवल मंच-द्वार

(D) केवल लेखा-जोखा

८१. सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययनमे “शिक्षण” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल सङ्गीत-वाद्य गिनाओल

(B) एहि कविक पाठमे विद्यार्थीकें मुक्तकक स्वतंत्रता, भाव-एकाग्रता आ भाषा-संयम सिखाओल जा सकैत अछि

(C) केवल चित्र बनाओल

(D) केवल मानचित्र रंगाओल

८२. “शिक्षण” कैं सीताराम झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल सङ्गीत-वाद्य गिनाओल

(B) एहि कविक पाठमे विद्यार्थीकें मुक्तकक स्वतंत्रता, भाव-एकाग्रता आ भाषा-संयम सिखाओल जा सकैत अछि

(C) केवल चित्र बनाओल

(D) केवल मानचित्र रंगाओल

८३. नीचाँमे सीताराम झाक “शिक्षण” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल सङ्गीत-वाद्य गिनाओल

(B) एहि कविक पाठमे विद्यार्थीकें मुक्तकक स्वतंत्रता, भाव-एकाग्रता आ भाषा-संयम सिखाओल जा सकैत अछि

(C) केवल चित्र बनाओल

(D) केवल मानचित्र रंगाओल

८४. परीक्षा-दृष्टिसँ सीताराम झा पर “शिक्षण” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल सङ्गीत-वाद्य गिनाओल

(B) एहि कविक पाठमे विद्यार्थीकें मुक्तकक स्वतंत्रता, भाव-एकाग्रता आ भाषा-संयम सिखाओल जा सकैत अछि

(C) केवल चित्र बनाओल

(D) केवल मानचित्र रंगाओल

८५. सीताराम झाक मुक्तकक “शिक्षण” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल सङ्गीत-वाद्य गिनाओल

(B) एहि कविक पाठमे विद्यार्थीकें मुक्तकक स्वतंत्रता, भाव-एकाग्रता आ भाषा-संयम सिखाओल जा सकैत अछि

(C) केवल चित्र बनाओल

(D) केवल मानचित्र रंगाओल

८६. सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययनमे “तुलना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल छापाखाना

(B) सीताराम झा कैं अन्य मुक्तक-कविसँ तुलना करैत समय भाव-प्रकृति, लय आ शब्द-संयम देखल जाइत अछि

(C) केवल कद-काठी

(D) केवल घरक पता

८७. “तुलना” कैं सीताराम झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल छापाखाना

(B) सीताराम झा कैं अन्य मुक्तक-कविसँ तुलना करैत समय भाव-प्रकृति, लय आ शब्द-संयम देखल जाइत अछि

(C) केवल कद-काठी

(D) केवल घरक पता

८८. नीचाँमे सीताराम झाक “तुलना” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल छापाखाना

(B) सीताराम झा कैं अन्य मुक्तक-कविसँ तुलना करैत समय भाव-प्रकृति, लय आ शब्द-संयम देखल जाइत अछि

(C) केवल कद-काठी

(D) केवल घरक पता

८९. परीक्षा-दृष्टिसँ सीताराम झा पर “तुलना” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल छापाखाना

(B) सीताराम झा कैँ अन्य मुक्तक-कविसँ तुलना करैत समय भाव-प्रकृति, लय आ शब्द-संयम देखल जाइत अछि

(C) केवल कद-काठी

(D) केवल घरक पता

९०. सीताराम झाक मुक्तकक “तुलना” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल छापाखाना

(B) सीताराम झा कैँ अन्य मुक्तक-कविसँ तुलना करैत समय भाव-प्रकृति, लय आ शब्द-संयम देखल जाइत अछि

(C) केवल कद-काठी

(D) केवल घरक पता

९१. सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययनमे “परिणति” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) सूचीपत्रक भूमिका

(B) मुक्तकक परिणति छोट आकारमे संपूर्ण भावानुभूति देबामे अछि

(C) असीमित अपूर्णता

(D) कथानकक फैलाव मात्र

९२. “परिणति” कैँ सीताराम झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) सूचीपत्रक भूमिका

(B) मुक्तकक परिणति छोट आकारमे संपूर्ण भावानुभूति देबामे अछि

(C) असीमित अपूर्णता

(D) कथानकक फैलाव मात्र

९३. नीचाँमे सीताराम झाक “परिणति” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) सूचीपत्रक भूमिका

(B) मुक्तकक परिणति छोट आकारमे संपूर्ण भावानुभूति देबामे अछि

(C) असीमित अपूर्णता

(D) कथानकक फैलाव मात्र

९४. परीक्षा-दृष्टिसँ सीताराम झा पर “परिणति” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) सूचीपत्रक भूमिका

(B) मुक्तकक परिणति छोट आकारमे संपूर्ण भावानुभूति देबामे अछि

(C) असीमित अपूर्णता

(D) कथानकक फैलाव मात्र

९५. सीताराम झाक मुक्तकक “परिणति” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) सूचीपत्रक भूमिका

(B) मुक्तकक परिणति छोट आकारमे संपूर्ण भावानुभूति देबामे अछि

(C) असीमित अपूर्णता

(D) कथानकक फैलाव मात्र

९६. सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययनमे “समग्र महत्त्व” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) भाषा अप्रासंगिक अछि

(B) सीताराम झा मुक्तकक अध्ययन मैथिली कविता-परम्पराक लघु लेकिन गहन रूप बुझबामे सहायक अछि

(C) मुक्तक परम्परा अस्वीकार करैत अछि

(D) कविता केवल नाटक अछि

९७. “समग्र महत्त्व” कैँ सीताराम झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) भाषा अप्रासंगिक अछि

(B) सीताराम झा मुक्तकक अध्ययन मैथिली कविता-परम्पराक लघु लेकिन गहन रूप बुझबामे सहायक अछि

(C) मुक्तक परम्परा अस्वीकार करैत अछि

(D) कविता केवल नाटक अछि

९८. नीचाँमे सीताराम झाक “समग्र महत्त्व” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) भाषा अप्रासंगिक अछि

(B) सीताराम झा मुक्तकक अध्ययन मैथिली कविता-परम्पराक लघु लेकिन गहन रूप बुझबामे सहायक अछि

(C) मुक्तक परम्परा अस्वीकार करैत अछि

(D) कविता केवल नाटक अछि

९९. परीक्षा-दृष्टिसँ सीताराम झा पर “समग्र महत्त्व” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) भाषा अप्रासंगिक अछि

(B) सीताराम झा मुक्तकक अध्ययन मैथिली कविता-परम्पराक लघु लेकिन गहन रूप बुझबामे सहायक अछि

(C) मुक्तक परम्परा अस्वीकार करैत अछि

(D) कविता केवल नाटक अछि

१००. सीताराम झाक मुक्तकक “समग्र महत्त्व” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) भाषा अप्रासंगिक अछि

(B) सीताराम झा मुक्तकक अध्ययन मैथिली कविता-परम्पराक लघु लेकिन गहन रूप बुझबामे सहायक अछि

(C) मुक्तक परम्परा अस्वीकार करैत अछि

(D) कविता केवल नाटक अछि

sec1

१०१. काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क मुक्तकक अध्ययनमे “मधुप नाम” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल गणितीय संकेत

(B) ‘मधुप’ नाम गीतात्मक मधुरता, प्रकृति-संसर्ग आ भाव-सुश्राव्यता दिस संकेत करैत अछि

(C) केवल युद्ध-घोष

(D) केवल कानूनी भाषा

१०२. “मधुप नाम” कैँ काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल गणितीय संकेत

(B) ‘मधुप’ नाम गीतात्मक मधुरता, प्रकृति-संसर्ग आ भाव-सुश्राव्यता दिस संकेत करैत अछि

(C) केवल युद्ध-घोष

(D) केवल कानूनी भाषा

१०३. नीचाँमे काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क “मधुप नाम” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल गणितीय संकेत

(B) ‘मधुप’ नाम गीतात्मक मधुरता, प्रकृति-संसर्ग आ भाव-सुश्राव्यता दिस संकेत करैत अछि

(C) केवल युद्ध-घोष

(D) केवल कानूनी भाषा

१०४. परीक्षा-दृष्टिसँ काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ पर “मधुप नाम” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल गणितीय संकेत

(B) ‘मधुप’ नाम गीतात्मक मधुरता, प्रकृति-संसर्ग आ भाव-सुश्राव्यता दिस संकेत करैत अछि

(C) केवल युद्ध-घोष

(D) केवल कानूनी भाषा

१०५. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक "मधुप नाम" काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल गणितीय संकेत

(B) 'मधुप' नाम गीतात्मक मधुरता, प्रकृति-संसर्ग आ भाव-सुश्राव्यता दिस संकेत करैत अछि

(C) केवल युद्ध-घोष

(D) केवल कानूनी भाषा

१०६. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक अध्ययनमे "गीतात्मकता" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) मंच-सूची

(B) काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनमे लय, माधुर्य आ गीत-संवेदना महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि

(C) लय-विरोध

(D) केवल गद्य-सूचना

१०७. "गीतात्मकता" कैँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) मंच-सूची

(B) काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनमे लय, माधुर्य आ गीत-संवेदना महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि

(C) लय-विरोध

(D) केवल गद्य-सूचना

१०८. नीचाँमे काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क "गीतात्मकता" सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) मंच-सूची

(B) काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनमे लय, माधुर्य आ गीत-संवेदना महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि

(C) लय-विरोध

(D) केवल गद्य-सूचना

१०९. परीक्षा-दृष्टिसँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप' पर "गीतात्मकता" आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) मंच-सूची

(B) काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनमे लय, माधुर्य आ गीत-संवेदना महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि

(C) लय-विरोध

(D) केवल गद्य-सूचना

११०. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक "गीतात्मकता" काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) मंच-सूची

(B) काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनमे लय, माधुर्य आ गीत-संवेदना महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि

(C) लय-विरोध

(D) केवल गद्य-सूचना

१११. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक अध्ययनमे "भाव-संयम" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) चित्रकला-फलक

(B) मधुपक मुक्तकमे भावक संक्षिप्त, सजल आ प्रभावी प्रस्तुति पहिचानक बिन्दु अछि

(C) अव्यवस्थित विस्तार

(D) तथ्य-सूची मात्र

११२. "भाव-संयम" कैँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) चित्रकला-फलक

(B) मधुपक मुक्तकमे भावक संक्षिप्त, सजल आ प्रभावी प्रस्तुति पहिचानक बिन्दु अछि

(C) अव्यवस्थित विस्तार

(D) तथ्य-सूची मात्र

११३. नीचाँमे काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क “भाव-संयम” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) चित्रकला-फलक

(B) मधुपक मुक्तकमे भावक संक्षिप्त, सजल आ प्रभावी प्रस्तुति पहिचानक बिन्दु अछि

(C) अव्यवस्थित विस्तार

(D) तथ्य-सूची मात्र

११४. परीक्षा-दृष्टिसँ काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ पर “भाव-संयम” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) चित्रकला-फलक

(B) मधुपक मुक्तकमे भावक संक्षिप्त, सजल आ प्रभावी प्रस्तुति पहिचानक बिन्दु अछि

(C) अव्यवस्थित विस्तार

(D) तथ्य-सूची मात्र

११५. काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क मुक्तकक “भाव-संयम” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) चित्रकला-फलक

(B) मधुपक मुक्तकमे भावक संक्षिप्त, सजल आ प्रभावी प्रस्तुति पहिचानक बिन्दु अछि

(C) अव्यवस्थित विस्तार

(D) तथ्य-सूची मात्र

११६. काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क मुक्तकक अध्ययनमे “प्रकृति-बिम्ब” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल शुष्क परिभाषा

(B) मधुपक अध्ययनमे फूल, मधु, ऋतु आ प्रकृति-संकेतक सौन्दर्यगत भूमिका पर ध्यान देल जाइत अछि

(C) प्रकृति-विरोध

(D) केवल कारखाना-सूची

११७. “प्रकृति-बिम्ब” कैँ काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल शुष्क परिभाषा

(B) मधुपक अध्ययनमे फूल, मधु, ऋतु आ प्रकृति-संकेतक सौन्दर्यगत भूमिका पर ध्यान देल जाइत अछि

(C) प्रकृति-विरोध

(D) केवल कारखाना-सूची

११८. नीचाँमे काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क “प्रकृति-बिम्ब” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल शुष्क परिभाषा

(B) मधुपक अध्ययनमे फूल, मधु, ऋतु आ प्रकृति-संकेतक सौन्दर्यगत भूमिका पर ध्यान देल जाइत अछि

(C) प्रकृति-विरोध

(D) केवल कारखाना-सूची

११९. परीक्षा-दृष्टिसँ काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ पर “प्रकृति-बिम्ब” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल शुष्क परिभाषा

(B) मधुपक अध्ययनमे फूल, मधु, ऋतु आ प्रकृति-संकेतक सौन्दर्यगत भूमिका पर ध्यान देल जाइत अछि

(C) प्रकृति-विरोध

(D) केवल कारखाना-सूची

१२०. काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क मुक्तकक “प्रकृति-बिम्ब” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल शुष्क परिभाषा

(B) मधुपक अध्ययनमे फूल, मधु, ऋतु आ प्रकृति-संकेतक सौन्दर्यगत भूमिका पर ध्यान देल जाइत अछि

(C) प्रकृति-विरोध

(D) केवल कारखाना-सूची

१२१. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक अध्ययनमे "लोक-स्पर्श" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) पत्रकारिता शीर्षक मात्र

(B) हुनक गीतधर्मी मुक्तक लोकजीवनक स्वरकेँ कलात्मक भाषा देबैत अछि

(C) लोकसँ दूरी

(D) केवल विदेशी कथानक

१२२. "लोक-स्पर्श" केँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) पत्रकारिता शीर्षक मात्र

(B) हुनक गीतधर्मी मुक्तक लोकजीवनक स्वरकेँ कलात्मक भाषा देबैत अछि

(C) लोकसँ दूरी

(D) केवल विदेशी कथानक

१२३. नीचाँमे काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क "लोक-स्पर्श" सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) पत्रकारिता शीर्षक मात्र

(B) हुनक गीतधर्मी मुक्तक लोकजीवनक स्वरकेँ कलात्मक भाषा देबैत अछि

(C) लोकसँ दूरी

(D) केवल विदेशी कथानक

१२४. परीक्षा-दृष्टिसँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप' पर "लोक-स्पर्श" आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) पत्रकारिता शीर्षक मात्र

(B) हुनक गीतधर्मी मुक्तक लोकजीवनक स्वरकेँ कलात्मक भाषा देबैत अछि

(C) लोकसँ दूरी

(D) केवल विदेशी कथानक

१२५. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक "लोक-स्पर्श" काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) पत्रकारिता शीर्षक मात्र

(B) हुनक गीतधर्मी मुक्तक लोकजीवनक स्वरकेँ कलात्मक भाषा देबैत अछि

(C) लोकसँ दूरी

(D) केवल विदेशी कथानक

१२६. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक अध्ययनमे "रस" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल मुद्रा-गणना

(B) मधुपक मुक्तकमे शृङ्गार, करुण, सौन्दर्य आ जीवन-बोधक सूक्ष्म आवेग देखल जा सकैत अछि

(C) रसक अभाव

(D) केवल छपाई तकनीक

१२७. "रस" केँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल मुद्रा-गणना

(B) मधुपक मुक्तकमे शृङ्गार, करुण, सौन्दर्य आ जीवन-बोधक सूक्ष्म आवेग देखल जा सकैत अछि

(C) रसक अभाव

(D) केवल छपाई तकनीक

१२८. नीचाँमे काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क "रस" सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल मुद्रा-गणना

(B) मधुपक मुक्तकमे शृङ्गार, करुण, सौन्दर्य आ जीवन-बोधक सूक्ष्म आवेग देखल जा सकैत अछि

(C) रसक अभाव

(D) केवल छपाई तकनीक

१२९. परीक्षा-दृष्टिसँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप' पर "रस" आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल मुद्रा-गणना

(B) मधुपक मुक्तकमे शृङ्गार, करुण, सौन्दर्य आ जीवन-बोधक सूक्ष्म आवेग देखल जा सकैत अछि

(C) रसक अभाव

(D) केवल छपाई तकनीक

१३०. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक "रस" काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल मुद्रा-गणना

(B) मधुपक मुक्तकमे शृङ्गार, करुण, सौन्दर्य आ जीवन-बोधक सूक्ष्म आवेग देखल जा सकैत अछि

(C) रसक अभाव

(D) केवल छपाई तकनीक

१३१. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक अध्ययनमे "भाषिक माधुर्य" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) शब्दहीन संकेत

(B) हुनक कविता-पाठमे ध्वनि, लय आ मधुर शब्दावलीक उपयोग विशेष ध्यानयोग्य अछि

(C) कठोर प्रशासनिक भाषा मात्र

(D) असम्बद्ध शब्द-टूट

१३२. "भाषिक माधुर्य" कैँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) शब्दहीन संकेत

(B) हुनक कविता-पाठमे ध्वनि, लय आ मधुर शब्दावलीक उपयोग विशेष ध्यानयोग्य अछि

(C) कठोर प्रशासनिक भाषा मात्र

(D) असम्बद्ध शब्द-टूट

१३३. नीचाँमे काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क "भाषिक माधुर्य" सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) शब्दहीन संकेत

(B) हुनक कविता-पाठमे ध्वनि, लय आ मधुर शब्दावलीक उपयोग विशेष ध्यानयोग्य अछि

(C) कठोर प्रशासनिक भाषा मात्र

(D) असम्बद्ध शब्द-टूट

१३४. परीक्षा-दृष्टिसँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप' पर "भाषिक माधुर्य" आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) शब्दहीन संकेत

(B) हुनक कविता-पाठमे ध्वनि, लय आ मधुर शब्दावलीक उपयोग विशेष ध्यानयोग्य अछि

(C) कठोर प्रशासनिक भाषा मात्र

(D) असम्बद्ध शब्द-टूट

१३५. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक "भाषिक माधुर्य" काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) शब्दहीन संकेत

(B) हुनक कविता-पाठमे ध्वनि, लय आ मधुर शब्दावलीक उपयोग विशेष ध्यानयोग्य अछि

(C) कठोर प्रशासनिक भाषा मात्र

(D) असम्बद्ध शब्द-टूट

१३६. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक अध्ययनमे "मुक्तक-संरचना" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) मंच-उपकरण

(B) मधुपक सन्दर्भमे मुक्तकक स्वतन्त्र भाव-एकाइ आ छोट आकारक पूर्णता प्रमुख अछि

(C) कथानकक सात काण्ड

(D) असंख्य पात्र-सूची

१३७. “मुक्तक-संरचना” कैँ काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) मंच-उपकरण

(B) मधुपक सन्दर्भमे मुक्तकक स्वतन्त्र भाव-एकाइ आ छोट आकारक पूर्णता प्रमुख अछि

(C) कथानकक सात काण्ड

(D) असंख्य पात्र-सूची

१३८. नीचाँमे काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क “मुक्तक-संरचना” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) मंच-उपकरण

(B) मधुपक सन्दर्भमे मुक्तकक स्वतन्त्र भाव-एकाइ आ छोट आकारक पूर्णता प्रमुख अछि

(C) कथानकक सात काण्ड

(D) असंख्य पात्र-सूची

१३९. परीक्षा-दृष्टिसँ काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ पर “मुक्तक-संरचना” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) मंच-उपकरण

(B) मधुपक सन्दर्भमे मुक्तकक स्वतन्त्र भाव-एकाइ आ छोट आकारक पूर्णता प्रमुख अछि

(C) कथानकक सात काण्ड

(D) असंख्य पात्र-सूची

१४०. काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क मुक्तकक “मुक्तक-संरचना” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) मंच-उपकरण

(B) मधुपक सन्दर्भमे मुक्तकक स्वतन्त्र भाव-एकाइ आ छोट आकारक पूर्णता प्रमुख अछि

(C) कथानकक सात काण्ड

(D) असंख्य पात्र-सूची

१४१. काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क मुक्तकक अध्ययनमे “काव्य-परम्परा” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल वैज्ञानिक रिपोर्ट

(B) मधुपक कविता मैथिली गीत-परम्परा आ आधुनिक संवेदनाक बीच सेतु बनि सकैत अछि

(C) परम्परासँ पूर्ण असम्बद्धता

(D) केवल युद्ध-कथा

१४२. “काव्य-परम्परा” कैँ काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल वैज्ञानिक रिपोर्ट

(B) मधुपक कविता मैथिली गीत-परम्परा आ आधुनिक संवेदनाक बीच सेतु बनि सकैत अछि

(C) परम्परासँ पूर्ण असम्बद्धता

(D) केवल युद्ध-कथा

१४३. नीचाँमे काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क “काव्य-परम्परा” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल वैज्ञानिक रिपोर्ट

(B) मधुपक कविता मैथिली गीत-परम्परा आ आधुनिक संवेदनाक बीच सेतु बनि सकैत अछि

(C) परम्परासँ पूर्ण असम्बद्धता

(D) केवल युद्ध-कथा

१४४. परीक्षा-दृष्टिसँ काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ पर “काव्य-परम्परा” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल वैज्ञानिक रिपोर्ट

(B) मधुपक कविता मैथिली गीत-परम्परा आ आधुनिक संवेदनाक बीच सेतु बनि सकैत अछि

(C) परम्परासँ पूर्ण असम्बद्धता

(D) केवल युद्ध-कथा

१४५. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक "काव्य-परम्परा" काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल वैज्ञानिक रिपोर्ट

(B) मधुपक कविता मैथिली गीत-परम्परा आ आधुनिक संवेदनाक बीच सेतु बनि सकैत अछि

(C) परम्परासँ पूर्ण असम्बद्धता

(D) केवल युद्ध-कथा

१४६. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक अध्ययनमे "सहजता" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) सूचीपत्र

(B) सहज भावक गेय रूप मुक्तककेँ पाठकक स्मृतिमे स्थिर करैत अछि

(C) कठिनता मात्र

(D) लम्बा वाद-विवाद

१४७. "सहजता" केँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) सूचीपत्र

(B) सहज भावक गेय रूप मुक्तककेँ पाठकक स्मृतिमे स्थिर करैत अछि

(C) कठिनता मात्र

(D) लम्बा वाद-विवाद

१४८. नीचाँमे काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क "सहजता" सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) सूचीपत्र

(B) सहज भावक गेय रूप मुक्तककेँ पाठकक स्मृतिमे स्थिर करैत अछि

(C) कठिनता मात्र

(D) लम्बा वाद-विवाद

१४९. परीक्षा-दृष्टिसँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप' पर "सहजता" आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) सूचीपत्र

(B) सहज भावक गेय रूप मुक्तककेँ पाठकक स्मृतिमे स्थिर करैत अछि

(C) कठिनता मात्र

(D) लम्बा वाद-विवाद

१५०. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक "सहजता" काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) सूचीपत्र

(B) सहज भावक गेय रूप मुक्तककेँ पाठकक स्मृतिमे स्थिर करैत अछि

(C) कठिनता मात्र

(D) लम्बा वाद-विवाद

१५१. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक अध्ययनमे "कवि-व्यक्तित्व" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल परीक्षा-कक्ष

(B) मधुपक कवि-व्यक्तित्वक अध्ययनमे कोमलता, गीतत्व आ सौन्दर्य-बोधक संतुलन देखल जाइत अछि

(C) केवल ऐतिहासिक तारीख

(D) केवल भवनक नाम

१५२. "कवि-व्यक्तित्व" केँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल परीक्षा-कक्ष

(B) मधुपक कवि-व्यक्तित्वक अध्ययनमे कोमलता, गीतत्व आ सौन्दर्य-बोधक संतुलन देखल जाइत अछि

(C) केवल ऐतिहासिक तारीख

(D) केवल भवनक नाम

१५३. नीचाँमे काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क “कवि-व्यक्तित्व” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल परीक्षा-कक्ष

(B) मधुपक कवि-व्यक्तित्वक अध्ययनमे कोमलता, गीतत्व आ सौन्दर्य-बोधक संतुलन देखल जाइत अछि

(C) केवल ऐतिहासिक तारीख

(D) केवल भवनक नाम

१५४. परीक्षा-दृष्टिसँ काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ पर “कवि-व्यक्तित्व” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल परीक्षा-कक्ष

(B) मधुपक कवि-व्यक्तित्वक अध्ययनमे कोमलता, गीतत्व आ सौन्दर्य-बोधक संतुलन देखल जाइत अछि

(C) केवल ऐतिहासिक तारीख

(D) केवल भवनक नाम

१५५. काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क मुक्तकक “कवि-व्यक्तित्व” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल परीक्षा-कक्ष

(B) मधुपक कवि-व्यक्तित्वक अध्ययनमे कोमलता, गीतत्व आ सौन्दर्य-बोधक संतुलन देखल जाइत अछि

(C) केवल ऐतिहासिक तारीख

(D) केवल भवनक नाम

१५६. काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क मुक्तकक अध्ययनमे “अलंकार” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल नक्शा

(B) छोट मुक्तकमे अनुप्रास, उपमा, रूपक आ ध्वनि-साम्य प्रभाव बढ़बैत अछि

(C) अलंकार निषिद्ध

(D) केवल गणना

१५७. “अलंकार” केँ काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल नक्शा

(B) छोट मुक्तकमे अनुप्रास, उपमा, रूपक आ ध्वनि-साम्य प्रभाव बढ़बैत अछि

(C) अलंकार निषिद्ध

(D) केवल गणना

१५८. नीचाँमे काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क “अलंकार” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल नक्शा

(B) छोट मुक्तकमे अनुप्रास, उपमा, रूपक आ ध्वनि-साम्य प्रभाव बढ़बैत अछि

(C) अलंकार निषिद्ध

(D) केवल गणना

१५९. परीक्षा-दृष्टिसँ काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ पर “अलंकार” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल नक्शा

(B) छोट मुक्तकमे अनुप्रास, उपमा, रूपक आ ध्वनि-साम्य प्रभाव बढ़बैत अछि

(C) अलंकार निषिद्ध

(D) केवल गणना

१६०. काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क मुक्तकक “अलंकार” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल नक्शा

(B) छोट मुक्तकमे अनुप्रास, उपमा, रूपक आ ध्वनि-साम्य प्रभाव बढ़बैत अछि

(C) अलंकार निषिद्ध

(D) केवल गणना

१६१. काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क मुक्तकक अध्ययनमे “छन्द” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल मुद्रण आकार

(B) गीतात्मक मुक्तकमे छन्द वा लय रचनाक श्रवण-सुख आ स्मरणीयता बनबैत अछि

(C) छन्दक कोनो उपयोग नहि

(D) केवल अनुच्छेद संख्या

१६२. “छन्द” कैँ काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल मुद्रण आकार

(B) गीतात्मक मुक्तकमे छन्द वा लय रचनाक श्रवण-सुख आ स्मरणीयता बनबैत अछि

(C) छन्दक कोनो उपयोग नहि

(D) केवल अनुच्छेद संख्या

१६३. नीचाँमे काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क “छन्द” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल मुद्रण आकार

(B) गीतात्मक मुक्तकमे छन्द वा लय रचनाक श्रवण-सुख आ स्मरणीयता बनबैत अछि

(C) छन्दक कोनो उपयोग नहि

(D) केवल अनुच्छेद संख्या

१६४. परीक्षा-दृष्टिसँ काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ पर “छन्द” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल मुद्रण आकार

(B) गीतात्मक मुक्तकमे छन्द वा लय रचनाक श्रवण-सुख आ स्मरणीयता बनबैत अछि

(C) छन्दक कोनो उपयोग नहि

(D) केवल अनुच्छेद संख्या

१६५. काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क मुक्तकक “छन्द” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल मुद्रण आकार

(B) गीतात्मक मुक्तकमे छन्द वा लय रचनाक श्रवण-सुख आ स्मरणीयता बनबैत अछि

(C) छन्दक कोनो उपयोग नहि

(D) केवल अनुच्छेद संख्या

१६६. काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क मुक्तकक अध्ययनमे “सौन्दर्य-दृष्टि” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल व्यापार

(B) मधुपक काव्य-पाठमे बाह्य प्रकृति आ आन्तरिक भावक मिलन सौन्दर्य रचैत अछि

(C) भाव आ प्रकृति अलग-अलग अछूत

(D) केवल कानून

१६७. “सौन्दर्य-दृष्टि” कैँ काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल व्यापार

(B) मधुपक काव्य-पाठमे बाह्य प्रकृति आ आन्तरिक भावक मिलन सौन्दर्य रचैत अछि

(C) भाव आ प्रकृति अलग-अलग अछूत

(D) केवल कानून

१६८. नीचाँमे काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क “सौन्दर्य-दृष्टि” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल व्यापार

(B) मधुपक काव्य-पाठमे बाह्य प्रकृति आ आन्तरिक भावक मिलन सौन्दर्य रचैत अछि

(C) भाव आ प्रकृति अलग-अलग अछूत

(D) केवल कानून

१६९. परीक्षा-दृष्टिसँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप' पर "सौन्दर्य-दृष्टि" आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल व्यापार

(B) मधुपक काव्य-पाठमे बाह्य प्रकृति आ आन्तरिक भावक मिलन सौन्दर्य रचैत अछि

(C) भाव आ प्रकृति अलग-अलग अछूत

(D) केवल कानून

१७०. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक "सौन्दर्य-दृष्टि" काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल व्यापार

(B) मधुपक काव्य-पाठमे बाह्य प्रकृति आ आन्तरिक भावक मिलन सौन्दर्य रचैत अछि

(C) भाव आ प्रकृति अलग-अलग अछूत

(D) केवल कानून

१७१. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक अध्ययनमे "प्रेम-भाव" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल रसोई-सूची

(B) प्रेमक अभिव्यक्ति मुक्तकमे संक्षिप्त, सांकेतिक आ गेय रूपमे आबि सकैत अछि

(C) प्रेमक स्थान नहि

(D) केवल युद्ध-हथियार

१७२. "प्रेम-भाव" कैँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल रसोई-सूची

(B) प्रेमक अभिव्यक्ति मुक्तकमे संक्षिप्त, सांकेतिक आ गेय रूपमे आबि सकैत अछि

(C) प्रेमक स्थान नहि

(D) केवल युद्ध-हथियार

१७३. नीचाँमे काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क "प्रेम-भाव" सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल रसोई-सूची

(B) प्रेमक अभिव्यक्ति मुक्तकमे संक्षिप्त, सांकेतिक आ गेय रूपमे आबि सकैत अछि

(C) प्रेमक स्थान नहि

(D) केवल युद्ध-हथियार

१७४. परीक्षा-दृष्टिसँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप' पर "प्रेम-भाव" आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल रसोई-सूची

(B) प्रेमक अभिव्यक्ति मुक्तकमे संक्षिप्त, सांकेतिक आ गेय रूपमे आबि सकैत अछि

(C) प्रेमक स्थान नहि

(D) केवल युद्ध-हथियार

१७५. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक "प्रेम-भाव" काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल रसोई-सूची

(B) प्रेमक अभिव्यक्ति मुक्तकमे संक्षिप्त, सांकेतिक आ गेय रूपमे आबि सकैत अछि

(C) प्रेमक स्थान नहि

(D) केवल युद्ध-हथियार

१७६. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक अध्ययनमे "संवेदना" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल नक़्शा

(B) मधुपक मुक्तकक शक्ति तात्कालिक भाव-स्पर्श आ सुचिक्कण अभिव्यक्तिमे अछि

(C) भावहीन तथ्य

(D) केवल आदेश

१७७. “संवेदना” कैँ काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल नक़्शा

(B) मधुपक मुक्तकक शक्ति तात्कालिक भाव-स्पर्श आ सुचिक्कण अभिव्यक्तिमे अछि

(C) भावहीन तथ्य

(D) केवल आदेश

१७८. नीचाँमे काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क “संवेदना” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल नक़्शा

(B) मधुपक मुक्तकक शक्ति तात्कालिक भाव-स्पर्श आ सुचिक्कण अभिव्यक्तिमे अछि

(C) भावहीन तथ्य

(D) केवल आदेश

१७९. परीक्षा-दृष्टिसँ काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ पर “संवेदना” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल नक़्शा

(B) मधुपक मुक्तकक शक्ति तात्कालिक भाव-स्पर्श आ सुचिक्कण अभिव्यक्तिमे अछि

(C) भावहीन तथ्य

(D) केवल आदेश

१८०. काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क मुक्तकक “संवेदना” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल नक़्शा

(B) मधुपक मुक्तकक शक्ति तात्कालिक भाव-स्पर्श आ सुचिक्कण अभिव्यक्तिमे अछि

(C) भावहीन तथ्य

(D) केवल आदेश

१८१. काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क मुक्तकक अध्ययनमे “आलोचना-प्रश्न” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल प्रकाशक बताउ

(B) मधुप पर उत्तर देत समय गीतत्व, माधुर्य, प्रकृति-बिम्ब, भाषा आ मुक्तक-रूप जरूर जोड़ू

(C) केवल नाम लिखू

(D) केवल पृष्ठ गिनू

१८२. “आलोचना-प्रश्न” कैँ काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल प्रकाशक बताउ

(B) मधुप पर उत्तर देत समय गीतत्व, माधुर्य, प्रकृति-बिम्ब, भाषा आ मुक्तक-रूप जरूर जोड़ू

(C) केवल नाम लिखू

(D) केवल पृष्ठ गिनू

१८३. नीचाँमे काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क “आलोचना-प्रश्न” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल प्रकाशक बताउ

(B) मधुप पर उत्तर देत समय गीतत्व, माधुर्य, प्रकृति-बिम्ब, भाषा आ मुक्तक-रूप जरूर जोड़ू

(C) केवल नाम लिखू

(D) केवल पृष्ठ गिनू

१८४. परीक्षा-दृष्टिसँ काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ पर “आलोचना-प्रश्न” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल प्रकाशक बताउ

(B) मधुप पर उत्तर देत समय गीतत्व, माधुर्य, प्रकृति-बिम्ब, भाषा आ मुक्तक-रूप जरूर जोड़ू

(C) केवल नाम लिखू

(D) केवल पृष्ठ गिनू

१८५. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक "आलोचना-प्रश्न" काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल प्रकाशक बताउ

(B) मधुप पर उत्तर देत समय गीतत्व, माधुर्य, प्रकृति-बिम्ब, भाषा आ मुक्तक-रूप जरूर जोड़ू

(C) केवल नाम लिखू

(D) केवल पृष्ठ गिनू

१८६. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक अध्ययनमे "तुलना" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल गाँवक दूरी

(B) मधुपक तुलना करैत समय हुनक मधुर गीतिमयता आ भाव-सूक्ष्मता विशेष बिन्दु बनैत अछि

(C) केवल आकारक तुलना

(D) केवल उम्रक तुलना

१८७. "तुलना" कैँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल गाँवक दूरी

(B) मधुपक तुलना करैत समय हुनक मधुर गीतिमयता आ भाव-सूक्ष्मता विशेष बिन्दु बनैत अछि

(C) केवल आकारक तुलना

(D) केवल उम्रक तुलना

१८८. नीचाँमे काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क "तुलना" सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल गाँवक दूरी

(B) मधुपक तुलना करैत समय हुनक मधुर गीतिमयता आ भाव-सूक्ष्मता विशेष बिन्दु बनैत अछि

(C) केवल आकारक तुलना

(D) केवल उम्रक तुलना

१८९. परीक्षा-दृष्टिसँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप' पर "तुलना" आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल गाँवक दूरी

(B) मधुपक तुलना करैत समय हुनक मधुर गीतिमयता आ भाव-सूक्ष्मता विशेष बिन्दु बनैत अछि

(C) केवल आकारक तुलना

(D) केवल उम्रक तुलना

१९०. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक "तुलना" काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल गाँवक दूरी

(B) मधुपक तुलना करैत समय हुनक मधुर गीतिमयता आ भाव-सूक्ष्मता विशेष बिन्दु बनैत अछि

(C) केवल आकारक तुलना

(D) केवल उम्रक तुलना

१९१. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक अध्ययनमे "पाठकीय प्रभाव" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल रिपोर्ट

(B) हुनक मुक्तक पाठक पर लय, माधुर्य आ भाव-संकेतक संयुक्त प्रभाव छोड़ैत अछि

(C) काव्य प्रभावहीन

(D) केवल आँकड़ा

१९२. "पाठकीय प्रभाव" कैँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल रिपोर्ट

(B) हुनक मुक्तक पाठक पर लय, माधुर्य आ भाव-संकेतक संयुक्त प्रभाव छोड़ैत अछि

(C) काव्य प्रभावहीन

(D) केवल आँकड़ा

१९३. नीचाँमे काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क “पाठकीय प्रभाव” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल रिपोर्ट

(B) हुनक मुक्तक पाठक पर लय, माधुर्य आ भाव-संकेतक संयुक्त प्रभाव छोड़ैत अछि

(C) काव्य प्रभावहीन

(D) केवल आँकड़ा

१९४. परीक्षा-दृष्टिसँ काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ पर “पाठकीय प्रभाव” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल रिपोर्ट

(B) हुनक मुक्तक पाठक पर लय, माधुर्य आ भाव-संकेतक संयुक्त प्रभाव छोड़ैत अछि

(C) काव्य प्रभावहीन

(D) केवल आँकड़ा

१९५. काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क मुक्तकक “पाठकीय प्रभाव” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल रिपोर्ट

(B) हुनक मुक्तक पाठक पर लय, माधुर्य आ भाव-संकेतक संयुक्त प्रभाव छोड़ैत अछि

(C) काव्य प्रभावहीन

(D) केवल आँकड़ा

१९६. काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क मुक्तकक अध्ययनमे “समग्र मूल्य” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल शब्दकोशकार

(B) काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ मुक्तकक गीतात्मक, मधुर आ संवेदनशील परम्परा बुझबामे उपयोगी कवि छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाटककार

१९७. “समग्र मूल्य” कैँ काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल शब्दकोशकार

(B) काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ मुक्तकक गीतात्मक, मधुर आ संवेदनशील परम्परा बुझबामे उपयोगी कवि छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाटककार

१९८. नीचाँमे काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क “समग्र मूल्य” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल शब्दकोशकार

(B) काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ मुक्तकक गीतात्मक, मधुर आ संवेदनशील परम्परा बुझबामे उपयोगी कवि छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाटककार

१९९. परीक्षा-दृष्टिसँ काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ पर “समग्र मूल्य” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल शब्दकोशकार

(B) काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ मुक्तकक गीतात्मक, मधुर आ संवेदनशील परम्परा बुझबामे उपयोगी कवि छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाटककार

२००. काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क मुक्तकक “समग्र मूल्य” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल शब्दकोशकार

(B) काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ मुक्तकक गीतात्मक, मधुर आ संवेदनशील परम्परा बुझबामे उपयोगी कवि छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाटककार

sec2

२०१. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक अध्ययनमे “सुमन नाम” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल नक्शा

(B) ‘सुमन’ नाम काव्यक कोमलता, भाव-सौरभ आ रचनात्मक प्रस्फुटनक संकेत दैत अछि

(C) केवल कठोर शासन

(D) केवल गणित

२०२. “सुमन नाम” कैँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल नक्शा

(B) ‘सुमन’ नाम काव्यक कोमलता, भाव-सौरभ आ रचनात्मक प्रस्फुटनक संकेत दैत अछि

(C) केवल कठोर शासन

(D) केवल गणित

२०३. नीचाँमे सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क “सुमन नाम” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल नक्शा

(B) ‘सुमन’ नाम काव्यक कोमलता, भाव-सौरभ आ रचनात्मक प्रस्फुटनक संकेत दैत अछि

(C) केवल कठोर शासन

(D) केवल गणित

२०४. परीक्षा-दृष्टिसँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ पर “सुमन नाम” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल नक्शा

(B) ‘सुमन’ नाम काव्यक कोमलता, भाव-सौरभ आ रचनात्मक प्रस्फुटनक संकेत दैत अछि

(C) केवल कठोर शासन

(D) केवल गणित

२०५. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक “सुमन नाम” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल नक्शा

(B) ‘सुमन’ नाम काव्यक कोमलता, भाव-सौरभ आ रचनात्मक प्रस्फुटनक संकेत दैत अछि

(C) केवल कठोर शासन

(D) केवल गणित

२०६. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक अध्ययनमे “परम्परा आ आधुनिकता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल सूची

(B) सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क अध्ययनमे परम्परागत काव्य-संस्कार आ आधुनिक चेतनाक संतुलन देखल जाइत अछि

(C) दुनूक पूर्ण अलगाव

(D) केवल समाचार

२०७. “परम्परा आ आधुनिकता” कैँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल सूची

(B) सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क अध्ययनमे परम्परागत काव्य-संस्कार आ आधुनिक चेतनाक संतुलन देखल जाइत अछि

(C) दुनूक पूर्ण अलगाव

(D) केवल समाचार

२०८. नीचाँमे सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क “परम्परा आ आधुनिकता” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल सूची

(B) सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क अध्ययनमे परम्परागत काव्य-संस्कार आ आधुनिक चेतनाक संतुलन देखल जाइत अछि

(C) दुनूक पूर्ण अलगाव

(D) केवल समाचार

२०९. परीक्षा-दृष्टिसँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ पर “परम्परा आ आधुनिकता” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल सूची

(B) सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क अध्ययनमे परम्परागत काव्य-संस्कार आ आधुनिक चेतनाक संतुलन देखल जाइत अछि

(C) दुनूक पूर्ण अलगाव

(D) केवल समाचार

२१०. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक “परम्परा आ आधुनिकता” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल सूची

(B) सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क अध्ययनमे परम्परागत काव्य-संस्कार आ आधुनिक चेतनाक संतुलन देखल जाइत अछि

(C) दुनूक पूर्ण अलगाव

(D) केवल समाचार

२११. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक अध्ययनमे “गीत-संवेदना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) मंच उपकरण

(B) हुनक मुक्तकक पाठमे लय, आन्तरिक संगीत आ भाव-सम्प्रेषण महत्त्वपूर्ण अछि

(C) लयक अभाव

(D) कथानकक अतिविस्तार

२१२. “गीत-संवेदना” कैँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) मंच उपकरण

(B) हुनक मुक्तकक पाठमे लय, आन्तरिक संगीत आ भाव-सम्प्रेषण महत्त्वपूर्ण अछि

(C) लयक अभाव

(D) कथानकक अतिविस्तार

२१३. नीचाँमे सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क “गीत-संवेदना” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) मंच उपकरण

(B) हुनक मुक्तकक पाठमे लय, आन्तरिक संगीत आ भाव-सम्प्रेषण महत्त्वपूर्ण अछि

(C) लयक अभाव

(D) कथानकक अतिविस्तार

२१४. परीक्षा-दृष्टिसँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ पर “गीत-संवेदना” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) मंच उपकरण

(B) हुनक मुक्तकक पाठमे लय, आन्तरिक संगीत आ भाव-सम्प्रेषण महत्त्वपूर्ण अछि

(C) लयक अभाव

(D) कथानकक अतिविस्तार

२१५. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक “गीत-संवेदना” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) मंच उपकरण

(B) हुनक मुक्तकक पाठमे लय, आन्तरिक संगीत आ भाव-सम्प्रेषण महत्त्वपूर्ण अछि

(C) लयक अभाव

(D) कथानकक अतिविस्तार

२१६. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक अध्ययनमे “सामाजिक चेतना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल औजार-सूची

(B) सुमनक कवितामे व्यक्ति-भावसँ आगाँ समाज, लोकजीवन आ नैतिक संकेत देखल जा सकैत अछि

(C) समाजसँ पूर्ण कटाव

(D) केवल गणना

२१७. “सामाजिक चेतना” कैँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल औजार-सूची

(B) सुमनक कवितामे व्यक्ति-भावसँ आगाँ समाज, लोकजीवन आ नैतिक संकेत देखल जा सकैत अछि

(C) समाजसँ पूर्ण कटाव

(D) केवल गणना

२१८. नीचाँमे सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क “सामाजिक चेतना” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल औजार-सूची

(B) सुमनक कवितामे व्यक्ति-भावसँ आगाँ समाज, लोकजीवन आ नैतिक संकेत देखल जा सकैत अछि

(C) समाजसँ पूर्ण कटाव

(D) केवल गणना

२१९. परीक्षा-दृष्टिसँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ पर “सामाजिक चेतना” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल औजार-सूची

(B) सुमनक कवितामे व्यक्ति-भावसँ आगाँ समाज, लोकजीवन आ नैतिक संकेत देखल जा सकैत अछि

(C) समाजसँ पूर्ण कटाव

(D) केवल गणना

२२०. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक “सामाजिक चेतना” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल औजार-सूची

(B) सुमनक कवितामे व्यक्ति-भावसँ आगाँ समाज, लोकजीवन आ नैतिक संकेत देखल जा सकैत अछि

(C) समाजसँ पूर्ण कटाव

(D) केवल गणना

२२१. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक अध्ययनमे “भाषा” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) शब्दहीन चित्र

(B) हुनक भाषा भाववाही, संस्कारित आ पाठक-संवादी मानल जा सकैत अछि

(C) असम्बद्ध ध्वनि

(D) केवल विदेशी कोड

२२२. “भाषा” कैँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) शब्दहीन चित्र

(B) हुनक भाषा भाववाही, संस्कारित आ पाठक-संवादी मानल जा सकैत अछि

(C) असम्बद्ध ध्वनि

(D) केवल विदेशी कोड

२२३. नीचाँमे सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क “भाषा” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) शब्दहीन चित्र

(B) हुनक भाषा भाववाही, संस्कारित आ पाठक-संवादी मानल जा सकैत अछि

(C) असम्बद्ध ध्वनि

(D) केवल विदेशी कोड

२२४. परीक्षा-दृष्टिसँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ पर “भाषा” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) शब्दहीन चित्र

(B) हुनक भाषा भाववाही, संस्कारित आ पाठक-संवादी मानल जा सकैत अछि

(C) असम्बद्ध ध्वनि

(D) केवल विदेशी कोड

२२५. सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मुक्तकक "भाषा" काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) शब्दहीन चित्र

(B) हुनक भाषा भाववाही, संस्कारित आ पाठक-संवादी मानल जा सकैत अछि

(C) असम्बद्ध ध्वनि

(D) केवल विदेशी कोड

२२६. सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मुक्तकक अध्ययनमे "रूप-संयम" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल उपन्यास अध्याय

(B) मुक्तकमे सुमनक भाव छोट संरचनामे समेटि देबाक क्षमता अध्ययन-बिन्दु अछि

(C) अनन्त फैलाव

(D) केवल नाटक-अंक

२२७. "रूप-संयम" कैं सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल उपन्यास अध्याय

(B) मुक्तकमे सुमनक भाव छोट संरचनामे समेटि देबाक क्षमता अध्ययन-बिन्दु अछि

(C) अनन्त फैलाव

(D) केवल नाटक-अंक

२२८. नीचाँमे सुरेन्द्र झा 'सुमन'क "रूप-संयम" सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल उपन्यास अध्याय

(B) मुक्तकमे सुमनक भाव छोट संरचनामे समेटि देबाक क्षमता अध्ययन-बिन्दु अछि

(C) अनन्त फैलाव

(D) केवल नाटक-अंक

२२९. परीक्षा-दृष्टिसँ सुरेन्द्र झा 'सुमन' पर "रूप-संयम" आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल उपन्यास अध्याय

(B) मुक्तकमे सुमनक भाव छोट संरचनामे समेटि देबाक क्षमता अध्ययन-बिन्दु अछि

(C) अनन्त फैलाव

(D) केवल नाटक-अंक

२३०. सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मुक्तकक "रूप-संयम" काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल उपन्यास अध्याय

(B) मुक्तकमे सुमनक भाव छोट संरचनामे समेटि देबाक क्षमता अध्ययन-बिन्दु अछि

(C) अनन्त फैलाव

(D) केवल नाटक-अंक

२३१. सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मुक्तकक अध्ययनमे "आन्तरिक संगीत" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) मौन संकेत

(B) मुक्तकक गेयता ध्वनि-संयोजन, यति आ पुनरुक्ति-सौन्दर्यसँ बनैत अछि

(C) ध्वनि-विरोध

(D) गद्य-सूचना मात्र

२३२. "आन्तरिक संगीत" कैं सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) मौन संकेत

(B) मुक्तकक गेयता ध्वनि-संयोजन, यति आ पुनरुक्ति-सौन्दर्यसँ बनैत अछि

(C) ध्वनि-विरोध

(D) गद्य-सूचना मात्र

२३३. नीचाँमे सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क “आन्तरिक संगीत” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) मौन संकेत

(B) मुक्तकक गेयता ध्वनि-संयोजन, यति आ पुनरुक्ति-सौन्दर्यसँ बनैत अछि

(C) ध्वनि-विरोध

(D) गद्य-सूचना मात्र

२३४. परीक्षा-दृष्टिसँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ पर “आन्तरिक संगीत” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) मौन संकेत

(B) मुक्तकक गेयता ध्वनि-संयोजन, यति आ पुनरुक्ति-सौन्दर्यसँ बनैत अछि

(C) ध्वनि-विरोध

(D) गद्य-सूचना मात्र

२३५. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक “आन्तरिक संगीत” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) मौन संकेत

(B) मुक्तकक गेयता ध्वनि-संयोजन, यति आ पुनरुक्ति-सौन्दर्यसँ बनैत अछि

(C) ध्वनि-विरोध

(D) गद्य-सूचना मात्र

२३६. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक अध्ययनमे “मानव-बोध” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल बजट

(B) सुमनक कविता मनुष्यक अनुभव, आशा, पीड़ा आ नैतिक विकल्पक संकेत दे सकैत अछि

(C) मनुष्यक अभाव

(D) केवल खगोल-चित्र

२३७. “मानव-बोध” कैँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल बजट

(B) सुमनक कविता मनुष्यक अनुभव, आशा, पीड़ा आ नैतिक विकल्पक संकेत दे सकैत अछि

(C) मनुष्यक अभाव

(D) केवल खगोल-चित्र

२३८. नीचाँमे सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क “मानव-बोध” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल बजट

(B) सुमनक कविता मनुष्यक अनुभव, आशा, पीड़ा आ नैतिक विकल्पक संकेत दे सकैत अछि

(C) मनुष्यक अभाव

(D) केवल खगोल-चित्र

२३९. परीक्षा-दृष्टिसँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ पर “मानव-बोध” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल बजट

(B) सुमनक कविता मनुष्यक अनुभव, आशा, पीड़ा आ नैतिक विकल्पक संकेत दे सकैत अछि

(C) मनुष्यक अभाव

(D) केवल खगोल-चित्र

२४०. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक “मानव-बोध” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल बजट

(B) सुमनक कविता मनुष्यक अनुभव, आशा, पीड़ा आ नैतिक विकल्पक संकेत दे सकैत अछि

(C) मनुष्यक अभाव

(D) केवल खगोल-चित्र

२४१. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक अध्ययनमे “प्रकृति” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल उत्तर-पुस्तिका

(B) प्रकृति-संकेत मुक्तकमे भावक आलम्बन आ प्रतीक दुनू बनि सकैत अछि

(C) प्रकृति निरर्थक

(D) केवल सूचीपत्र

२४२. “प्रकृति” कैँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल उत्तर-पुस्तिका

(B) प्रकृति-संकेत मुक्तकमे भावक आलम्बन आ प्रतीक दुनू बनि सकैत अछि

(C) प्रकृति निरर्थक

(D) केवल सूचीपत्र

२४३. नीचाँमे सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क “प्रकृति” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल उत्तर-पुस्तिका

(B) प्रकृति-संकेत मुक्तकमे भावक आलम्बन आ प्रतीक दुनू बनि सकैत अछि

(C) प्रकृति निरर्थक

(D) केवल सूचीपत्र

२४४. परीक्षा-दृष्टिसँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ पर “प्रकृति” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल उत्तर-पुस्तिका

(B) प्रकृति-संकेत मुक्तकमे भावक आलम्बन आ प्रतीक दुनू बनि सकैत अछि

(C) प्रकृति निरर्थक

(D) केवल सूचीपत्र

२४५. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक “प्रकृति” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल उत्तर-पुस्तिका

(B) प्रकृति-संकेत मुक्तकमे भावक आलम्बन आ प्रतीक दुनू बनि सकैत अछि

(C) प्रकृति निरर्थक

(D) केवल सूचीपत्र

२४६. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक अध्ययनमे “राष्ट्रीय/सांस्कृतिक चेतना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल रंगमंची वस्त्र

(B) आधुनिक मैथिली मुक्तकमे सांस्कृतिक अस्मिता आ लोक-चेतना महत्त्वपूर्ण प्रश्न-बिन्दु अछि

(C) अस्मिताक अभाव

(D) केवल तटस्थ गणना

२४७. “राष्ट्रीय/सांस्कृतिक चेतना” कैँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल रंगमंची वस्त्र

(B) आधुनिक मैथिली मुक्तकमे सांस्कृतिक अस्मिता आ लोक-चेतना महत्त्वपूर्ण प्रश्न-बिन्दु अछि

(C) अस्मिताक अभाव

(D) केवल तटस्थ गणना

२४८. नीचाँमे सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क “राष्ट्रीय/सांस्कृतिक चेतना” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल रंगमंची वस्त्र

(B) आधुनिक मैथिली मुक्तकमे सांस्कृतिक अस्मिता आ लोक-चेतना महत्त्वपूर्ण प्रश्न-बिन्दु अछि

(C) अस्मिताक अभाव

(D) केवल तटस्थ गणना

२४९. परीक्षा-दृष्टिसँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ पर “राष्ट्रीय/सांस्कृतिक चेतना” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल रंगमंची वस्त्र

(B) आधुनिक मैथिली मुक्तकमे सांस्कृतिक अस्मिता आ लोक-चेतना महत्त्वपूर्ण प्रश्न-बिन्दु अछि

(C) अस्मिताक अभाव

(D) केवल तटस्थ गणना

२५०. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक “राष्ट्रीय/सांस्कृतिक चेतना” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल रंगमंची वस्त्र

(B) आधुनिक मैथिली मुक्तकमे सांस्कृतिक अस्मिता आ लोक-चेतना महत्त्वपूर्ण प्रश्न-बिन्दु अछि

(C) अस्मिताक अभाव

(D) केवल तटस्थ गणना

२५१. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक अध्ययनमे “साहित्यिक स्थान” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल स्थापत्य

(B) सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क नाम मैथिली साहित्यक आधुनिक काव्य-परम्परामे स्मरणीय रूपेँ पढ़ल जाइत अछि

(C) मैथिली काव्यसँ असम्बद्ध

(D) केवल अभिनय

२५२. “साहित्यिक स्थान” केँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल स्थापत्य

(B) सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क नाम मैथिली साहित्यक आधुनिक काव्य-परम्परामे स्मरणीय रूपेँ पढ़ल जाइत अछि

(C) मैथिली काव्यसँ असम्बद्ध

(D) केवल अभिनय

२५३. नीचाँमे सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क “साहित्यिक स्थान” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल स्थापत्य

(B) सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क नाम मैथिली साहित्यक आधुनिक काव्य-परम्परामे स्मरणीय रूपेँ पढ़ल जाइत अछि

(C) मैथिली काव्यसँ असम्बद्ध

(D) केवल अभिनय

२५४. परीक्षा-दृष्टिसँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ पर “साहित्यिक स्थान” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल स्थापत्य

(B) सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क नाम मैथिली साहित्यक आधुनिक काव्य-परम्परामे स्मरणीय रूपेँ पढ़ल जाइत अछि

(C) मैथिली काव्यसँ असम्बद्ध

(D) केवल अभिनय

२५५. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक “साहित्यिक स्थान” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल स्थापत्य

(B) सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क नाम मैथिली साहित्यक आधुनिक काव्य-परम्परामे स्मरणीय रूपेँ पढ़ल जाइत अछि

(C) मैथिली काव्यसँ असम्बद्ध

(D) केवल अभिनय

२५६. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक अध्ययनमे “निबद्धता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल प्रकाशन-मूल्य

(B) मुक्तक स्वतंत्र होइत हुएँ सेहो भाषिक अनुशासन आ भाव-केन्द्र सँ निबद्ध रहैत अछि

(C) पूर्ण बिखराव

(D) केवल पन्ना संख्या

२५७. “निबद्धता” कैँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल प्रकाशन-मूल्य

(B) मुक्तक स्वतंत्र होइत हुएँ सेहो भाषिक अनुशासन आ भाव-केन्द्र सँ निबद्ध रहैत अछि

(C) पूर्ण बिखराव

(D) केवल पन्ना संख्या

२५८. नीचाँमे सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क “निबद्धता” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल प्रकाशन-मूल्य

(B) मुक्तक स्वतंत्र होइत हुएँ सेहो भाषिक अनुशासन आ भाव-केन्द्र सँ निबद्ध रहैत अछि

(C) पूर्ण बिखराव

(D) केवल पन्ना संख्या

२५९. परीक्षा-दृष्टिसँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ पर “निबद्धता” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल प्रकाशन-मूल्य

(B) मुक्तक स्वतंत्र होइत हुएँ सेहो भाषिक अनुशासन आ भाव-केन्द्र सँ निबद्ध रहैत अछि

(C) पूर्ण बिखराव

(D) केवल पन्ना संख्या

२६०. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक “निबद्धता” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल प्रकाशन-मूल्य

(B) मुक्तक स्वतंत्र होइत हुएँ सेहो भाषिक अनुशासन आ भाव-केन्द्र सँ निबद्ध रहैत अछि

(C) पूर्ण बिखराव

(D) केवल पन्ना संख्या

२६१. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक अध्ययनमे “अर्थ-स्तर” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल गणितीय चिह्न

(B) छोट मुक्तकमे प्रत्यक्ष अर्थक संग सांकेतिक अर्थ सेहो रहि सकैत अछि

(C) केवल एकसूत्री सूचना

(D) अर्थक निषेध

२६२. “अर्थ-स्तर” कैँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल गणितीय चिह्न

(B) छोट मुक्तकमे प्रत्यक्ष अर्थक संग सांकेतिक अर्थ सेहो रहि सकैत अछि

(C) केवल एकसूत्री सूचना

(D) अर्थक निषेध

२६३. नीचाँमे सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क “अर्थ-स्तर” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल गणितीय चिह्न

(B) छोट मुक्तकमे प्रत्यक्ष अर्थक संग सांकेतिक अर्थ सेहो रहि सकैत अछि

(C) केवल एकसूत्री सूचना

(D) अर्थक निषेध

२६४. परीक्षा-दृष्टिसँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ पर “अर्थ-स्तर” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल गणितीय चिह्न

(B) छोट मुक्तकमे प्रत्यक्ष अर्थक संग सांकेतिक अर्थ सेहो रहि सकैत अछि

(C) केवल एकसूत्री सूचना

(D) अर्थक निषेध

२६५. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक “अर्थ-स्तर” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल गणितीय चिह्न

(B) छोट मुक्तकमे प्रत्यक्ष अर्थक संग सांकेतिक अर्थ सेहो रहि सकैत अछि

(C) केवल एकसूत्री सूचना

(D) अर्थक निषेध

२६६. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक अध्ययनमे “अलंकारिकता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल रूपांकन

(B) सुमन-सन्दर्भमे अलंकार भावकेँ सजबैत अछि, भावकेँ ढाँपैत नहि

(C) अलंकार भाव-विरोधी सदैव

(D) भाव अप्रासंगिक

२६७. “अलंकारिकता” केँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल रूपांकन

(B) सुमन-सन्दर्भमे अलंकार भावकेँ सजबैत अछि, भावकेँ ढाँपैत नहि

(C) अलंकार भाव-विरोधी सदैव

(D) भाव अप्रासंगिक

२६८. नीचाँमे सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क “अलंकारिकता” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल रूपांकन

(B) सुमन-सन्दर्भमे अलंकार भावकेँ सजबैत अछि, भावकेँ ढाँपैत नहि

(C) अलंकार भाव-विरोधी सदैव

(D) भाव अप्रासंगिक

२६९. परीक्षा-दृष्टिसँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ पर “अलंकारिकता” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल रूपांकन

(B) सुमन-सन्दर्भमे अलंकार भावकेँ सजबैत अछि, भावकेँ ढाँपैत नहि

(C) अलंकार भाव-विरोधी सदैव

(D) भाव अप्रासंगिक

२७०. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक “अलंकारिकता” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल रूपांकन

(B) सुमन-सन्दर्भमे अलंकार भावकेँ सजबैत अछि, भावकेँ ढाँपैत नहि

(C) अलंकार भाव-विरोधी सदैव

(D) भाव अप्रासंगिक

२७१. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक अध्ययनमे “पाठ-प्रक्रिया” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल नाम रटब

(B) मुक्तक पढ़ैत समय हर पंक्ति, विराम, ध्वनि आ अन्तिम मोड़ पर ध्यान देब चाही

(C) केवल शीर्षक पढ़ब

(D) केवल पृष्ठ उलटब

२७२. “पाठ-प्रक्रिया” केँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल नाम रटब

(B) मुक्तक पढ़ैत समय हर पंक्ति, विराम, ध्वनि आ अन्तिम मोड़ पर ध्यान देब चाही

(C) केवल शीर्षक पढ़ब

(D) केवल पृष्ठ उलटब

२७३. नीचाँमे सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क “पाठ-प्रक्रिया” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल नाम रटब

(B) मुक्तक पढ़ैत समय हर पंक्ति, विराम, ध्वनि आ अन्तिम मोड़ पर ध्यान देब चाही

(C) केवल शीर्षक पढ़ब

(D) केवल पृष्ठ उलटब

२७४. परीक्षा-दृष्टिसँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ पर “पाठ-प्रक्रिया” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल नाम रटब

(B) मुक्तक पढ़ैत समय हर पंक्ति, विराम, ध्वनि आ अन्तिम मोड़ पर ध्यान देब चाही

(C) केवल शीर्षक पढ़ब

(D) केवल पृष्ठ उलटब

२७५. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक “पाठ-प्रक्रिया” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल नाम रटब

(B) मुक्तक पढ़ैत समय हर पंक्ति, विराम, ध्वनि आ अन्तिम मोड़ पर ध्यान देब चाही

(C) केवल शीर्षक पढ़ब

(D) केवल पृष्ठ उलटब

२७६. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक अध्ययनमे “काव्य-संदेश” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल प्रश्न संख्या

(B) सुमनक मुक्तकक संदेश अनेक बेर सूक्ष्म, सांकेतिक आ नैतिक-मानवीय होइत अछि

(C) संदेश सदैव अनुपस्थित

(D) केवल आदेश-पत्र

२७७. “काव्य-संदेश” कैँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल प्रश्न संख्या

(B) सुमनक मुक्तकक संदेश अनेक बेर सूक्ष्म, सांकेतिक आ नैतिक-मानवीय होइत अछि

(C) संदेश सदैव अनुपस्थित

(D) केवल आदेश-पत्र

२७८. नीचाँमे सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क “काव्य-संदेश” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल प्रश्न संख्या

(B) सुमनक मुक्तकक संदेश अनेक बेर सूक्ष्म, सांकेतिक आ नैतिक-मानवीय होइत अछि

(C) संदेश सदैव अनुपस्थित

(D) केवल आदेश-पत्र

२७९. परीक्षा-दृष्टिसँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ पर “काव्य-संदेश” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल प्रश्न संख्या

(B) सुमनक मुक्तकक संदेश अनेक बेर सूक्ष्म, सांकेतिक आ नैतिक-मानवीय होइत अछि

(C) संदेश सदैव अनुपस्थित

(D) केवल आदेश-पत्र

२८०. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक “काव्य-संदेश” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल प्रश्न संख्या

(B) सुमनक मुक्तकक संदेश अनेक बेर सूक्ष्म, सांकेतिक आ नैतिक-मानवीय होइत अछि

(C) संदेश सदैव अनुपस्थित

(D) केवल आदेश-पत्र

२८१. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक अध्ययनमे “तुलना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल पता

(B) सुमनक तुलना करैत समय गीतत्व, सामाजिक चेतना आ भाषिक संस्कार प्रमुख बिन्दु बनैत अछि

(C) केवल अक्षर संख्या

(D) केवल तिथि

२८२. “तुलना” कैँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल पता

(B) सुमनक तुलना करैत समय गीतत्व, सामाजिक चेतना आ भाषिक संस्कार प्रमुख बिन्दु बनैत अछि

(C) केवल अक्षर संख्या

(D) केवल तिथि

२८३. नीचाँमे सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क “तुलना” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल पता

(B) सुमनक तुलना करैत समय गीतत्व, सामाजिक चेतना आ भाषिक संस्कार प्रमुख बिन्दु बनैत अछि

(C) केवल अक्षर संख्या

(D) केवल तिथि

२८४. परीक्षा-दृष्टिसँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ पर “तुलना” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल पता

(B) सुमनक तुलना करैत समय गीतत्व, सामाजिक चेतना आ भाषिक संस्कार प्रमुख बिन्दु बनैत अछि

(C) केवल अक्षर संख्या

(D) केवल तिथि

२८५. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक “तुलना” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल पता

(B) सुमनक तुलना करैत समय गीतत्व, सामाजिक चेतना आ भाषिक संस्कार प्रमुख बिन्दु बनैत अछि

(C) केवल अक्षर संख्या

(D) केवल तिथि

२८६. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक अध्ययनमे “परीक्षा-उत्तर” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल अनुच्छेद गिनब

(B) उत्तरमे सुमनक काव्य-संवेदना, लय, भाषा, समाज-बोध आ मुक्तक-रूप लिखब उपयोगी अछि

(C) केवल नाम लिखि छोड़ब

(D) केवल ‘कवि’ कहब

२८७. “परीक्षा-उत्तर” कैँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल अनुच्छेद गिनब

(B) उत्तरमे सुमनक काव्य-संवेदना, लय, भाषा, समाज-बोध आ मुक्तक-रूप लिखब उपयोगी अछि

(C) केवल नाम लिखि छोड़ब

(D) केवल ‘कवि’ कहब

२८८. नीचाँमे सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क “परीक्षा-उत्तर” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल अनुच्छेद गिनब

(B) उत्तरमे सुमनक काव्य-संवेदना, लय, भाषा, समाज-बोध आ मुक्तक-रूप लिखब उपयोगी अछि

(C) केवल नाम लिखि छोड़ब

(D) केवल ‘कवि’ कहब

२८९. परीक्षा-दृष्टिसँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ पर “परीक्षा-उत्तर” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल अनुच्छेद गिनब

(B) उत्तरमे सुमनक काव्य-संवेदना, लय, भाषा, समाज-बोध आ मुक्तक-रूप लिखब उपयोगी अछि

(C) केवल नाम लिखि छोड़ब

(D) केवल ‘कवि’ कहब

२९०. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक “परीक्षा-उत्तर” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल अनुच्छेद गिनब

(B) उत्तरमे सुमनक काव्य-संवेदना, लय, भाषा, समाज-बोध आ मुक्तक-रूप लिखब उपयोगी अछि

(C) केवल नाम लिखि छोड़ब

(D) केवल ‘कवि’ कहब

२९१. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक अध्ययनमे “पाठकीयता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल मंच-वेश

(B) सुगम भाषा आ लयात्मकता मुक्तककेँ व्यापक पाठकीयता दैत अछि

(C) पाठकक जरूरत नहि

(D) केवल सङ्ग्रहालय

२९२. “पाठकीयता” केँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल मंच-वेश

(B) सुगम भाषा आ लयात्मकता मुक्तककेँ व्यापक पाठकीयता दैत अछि

(C) पाठकक जरूरत नहि

(D) केवल सङ्ग्रहालय

२९३. नीचाँमे सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क “पाठकीयता” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल मंच-वेश

(B) सुगम भाषा आ लयात्मकता मुक्तककेँ व्यापक पाठकीयता दैत अछि

(C) पाठकक जरूरत नहि

(D) केवल सङ्ग्रहालय

२९४. परीक्षा-दृष्टिसँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ पर “पाठकीयता” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल मंच-वेश

(B) सुगम भाषा आ लयात्मकता मुक्तककेँ व्यापक पाठकीयता दैत अछि

(C) पाठकक जरूरत नहि

(D) केवल सङ्ग्रहालय

२९५. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक “पाठकीयता” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल मंच-वेश

(B) सुगम भाषा आ लयात्मकता मुक्तककेँ व्यापक पाठकीयता दैत अछि

(C) पाठकक जरूरत नहि

(D) केवल सङ्ग्रहालय

२९६. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक अध्ययनमे “समग्र मूल्य” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल वैज्ञानिक

(B) सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ मुक्तकक भाव, गीतत्व आ सामाजिक चेतनाक अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण नाम छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाटक-सज्जाकार

२९७. “समग्र मूल्य” कैं सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल वैज्ञानिक

(B) सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ मुक्तकक भाव, गीतत्व आ सामाजिक चेतनाक अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण नाम छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाटक-सज्जाकार

२९८. नीचाँमे सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क “समग्र मूल्य” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल वैज्ञानिक

(B) सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ मुक्तकक भाव, गीतत्व आ सामाजिक चेतनाक अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण नाम छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाटक-सज्जाकार

२९९. परीक्षा-दृष्टिसँ सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ पर “समग्र मूल्य” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल वैज्ञानिक

(B) सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ मुक्तकक भाव, गीतत्व आ सामाजिक चेतनाक अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण नाम छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाटक-सज्जाकार

३००. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क मुक्तकक “समग्र मूल्य” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल वैज्ञानिक

(B) सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ मुक्तकक भाव, गीतत्व आ सामाजिक चेतनाक अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण नाम छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाटक-सज्जाकार

sec3

३०१. यात्रीक मुक्तकक अध्ययनमे “यात्री परिचय” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल चित्रकला उपकरण

(B) ‘यात्री’ नामसँ चर्चित कवि लोकजीवन, जनचेतना आ यथार्थ-बोधक सशक्त स्वर रूपेँ पढ़ल जाइत छथि

(C) केवल दरबारी विलास

(D) केवल निर्जीव गणना

३०२. “यात्री परिचय” कैं यात्रीक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल चित्रकला उपकरण

(B) ‘यात्री’ नामसँ चर्चित कवि लोकजीवन, जनचेतना आ यथार्थ-बोधक सशक्त स्वर रूपेँ पढ़ल जाइत छथि

(C) केवल दरबारी विलास

(D) केवल निर्जीव गणना

३०३. नीचाँमे यात्रीक “यात्री परिचय” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल चित्रकला उपकरण

(B) ‘यात्री’ नामसँ चर्चित कवि लोकजीवन, जनचेतना आ यथार्थ-बोधक सशक्त स्वर रूपेँ पढ़ल जाइत छथि

(C) केवल दरबारी विलास

(D) केवल निर्जीव गणना

३०४. परीक्षा-दृष्टिसँ यात्री पर “यात्री परिचय” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल चित्रकला उपकरण

(B) ‘यात्री’ नामसँ चर्चित कवि लोकजीवन, जनचेतना आ यथार्थ-बोधक सशक्त स्वर रूपेँ पढ़ल जाइत छथि

(C) केवल दरबारी विलास

(D) केवल निर्जीव गणना

३०५. यात्रीक मुक्तकक “यात्री परिचय” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल चित्रकला उपकरण

(B) ‘यात्री’ नामसँ चर्चित कवि लोकजीवन, जनचेतना आ यथार्थ-बोधक सशक्त स्वर रूपेँ पढ़ल जाइत छथि

(C) केवल दरबारी विलास

(D) केवल निर्जीव गणना

३०६. यात्रीक मुक्तकक अध्ययनमे “जनकाव्य” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल राजकीय आदेश

(B) यात्रीक मुक्तकमे जनपक्ष, किसान-श्रमिक जीवन आ लोकभाषाक ऊर्जा महत्त्वपूर्ण अछि

(C) जनजीवनसँ दूरी

(D) केवल महल-वर्णन

३०७. “जनकाव्य” कैँ यात्रीक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल राजकीय आदेश

(B) यात्रीक मुक्तकमे जनपक्ष, किसान-श्रमिक जीवन आ लोकभाषाक ऊर्जा महत्त्वपूर्ण अछि

(C) जनजीवनसँ दूरी

(D) केवल महल-वर्णन

३०८. नीचाँमे यात्रीक “जनकाव्य” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल राजकीय आदेश

(B) यात्रीक मुक्तकमे जनपक्ष, किसान-श्रमिक जीवन आ लोकभाषाक ऊर्जा महत्त्वपूर्ण अछि

(C) जनजीवनसँ दूरी

(D) केवल महल-वर्णन

३०९. परीक्षा-दृष्टिसँ यात्री पर “जनकाव्य” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल राजकीय आदेश

(B) यात्रीक मुक्तकमे जनपक्ष, किसान-श्रमिक जीवन आ लोकभाषाक ऊर्जा महत्त्वपूर्ण अछि

(C) जनजीवनसँ दूरी

(D) केवल महल-वर्णन

३१०. यात्रीक मुक्तकक “जनकाव्य” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल राजकीय आदेश

(B) यात्रीक मुक्तकमे जनपक्ष, किसान-श्रमिक जीवन आ लोकभाषाक ऊर्जा महत्त्वपूर्ण अछि

(C) जनजीवनसँ दूरी

(D) केवल महल-वर्णन

३११. यात्रीक मुक्तकक अध्ययनमे “व्यंग्य” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल मौसम रिपोर्ट

(B) हुनक काव्य-पाठमे व्यंग्य अन्याय, पाखण्ड आ असमानता पर प्रहारक साधन बनैत अछि

(C) व्यंग्यक कोनो स्थान नहि

(D) केवल प्रणय-सूची

३१२. “व्यंग्य” कैँ यात्रीक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल मौसम रिपोर्ट

(B) हुनक काव्य-पाठमे व्यंग्य अन्याय, पाखण्ड आ असमानता पर प्रहारक साधन बनैत अछि

(C) व्यंग्यक कोनो स्थान नहि

(D) केवल प्रणय-सूची

३१३. नीचाँमे यात्रीक “व्यंग्य” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल मौसम रिपोर्ट

(B) हुनक काव्य-पाठमे व्यंग्य अन्याय, पाखण्ड आ असमानता पर प्रहारक साधन बनैत अछि

(C) व्यंग्यक कोनो स्थान नहि

(D) केवल प्रणय-सूची

३१४. परीक्षा-दृष्टिसँ यात्री पर “व्यंग्य” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल मौसम रिपोर्ट

(B) हुनक काव्य-पाठमे व्यंग्य अन्याय, पाखण्ड आ असमानता पर प्रहारक साधन बनैत अछि

(C) व्यंग्यक कोनो स्थान नहि

(D) केवल प्रणय-सूची

३१५. यात्रीक मुक्तकक “व्यंग्य” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल मौसम रिपोर्ट

(B) हुनक काव्य-पाठमे व्यंग्य अन्याय, पाखण्ड आ असमानता पर प्रहारक साधन बनैत अछि

(C) व्यंग्यक कोनो स्थान नहि

(D) केवल प्रणय-सूची

३१६. यात्रीक मुक्तकक अध्ययनमे “लोकभाषा” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) शब्दहीनता

(B) यात्रीक मुक्तक लोक-भाषिक ऊर्जा आ सहज कथनक कारण प्रभावी होइत अछि

(C) लोकभाषा-विरोध

(D) केवल संस्कृतनिष्ठ जड़ता

३१७. “लोकभाषा” कैँ यात्रीक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) शब्दहीनता

(B) यात्रीक मुक्तक लोक-भाषिक ऊर्जा आ सहज कथनक कारण प्रभावी होइत अछि

(C) लोकभाषा-विरोध

(D) केवल संस्कृतनिष्ठ जड़ता

३१८. नीचाँमे यात्रीक “लोकभाषा” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) शब्दहीनता

(B) यात्रीक मुक्तक लोक-भाषिक ऊर्जा आ सहज कथनक कारण प्रभावी होइत अछि

(C) लोकभाषा-विरोध

(D) केवल संस्कृतनिष्ठ जड़ता

३१९. परीक्षा-दृष्टिसँ यात्री पर “लोकभाषा” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) शब्दहीनता

(B) यात्रीक मुक्तक लोक-भाषिक ऊर्जा आ सहज कथनक कारण प्रभावी होइत अछि

(C) लोकभाषा-विरोध

(D) केवल संस्कृतनिष्ठ जड़ता

३२०. यात्रीक मुक्तकक “लोकभाषा” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) शब्दहीनता

(B) यात्रीक मुक्तक लोक-भाषिक ऊर्जा आ सहज कथनक कारण प्रभावी होइत अछि

(C) लोकभाषा-विरोध

(D) केवल संस्कृतनिष्ठ जड़ता

३२१. यात्रीक मुक्तकक अध्ययनमे “सामाजिक यथार्थ” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल फूल-सूची

(B) समाजक वास्तविक पीड़ा, संघर्ष आ विसंगति मुक्तकक विषय बनि सकैत अछि

(C) यथार्थक निषेध

(D) केवल कल्पना-दुर्ग

३२२. “सामाजिक यथार्थ” कैँ यात्रीक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल फूल-सूची

(B) समाजक वास्तविक पीड़ा, संघर्ष आ विसंगति मुक्तकक विषय बनि सकैत अछि

(C) यथार्थक निषेध

(D) केवल कल्पना-दुर्ग

३२३. नीचाँमे यात्रीक “सामाजिक यथार्थ” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल फूल-सूची

(B) समाजक वास्तविक पीड़ा, संघर्ष आ विसंगति मुक्तकक विषय बनि सकैत अछि

(C) यथार्थक निषेध

(D) केवल कल्पना-दुर्ग

३२४. परीक्षा-दृष्टिसँ यात्री पर “सामाजिक यथार्थ” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल फूल-सूची

(B) समाजक वास्तविक पीड़ा, संघर्ष आ विसंगति मुक्तकक विषय बनि सकैत अछि

(C) यथार्थक निषेध

(D) केवल कल्पना-दुर्ग

३२५. यात्रीक मुक्तकक “सामाजिक यथार्थ” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल फूल-सूची

(B) समाजक वास्तविक पीड़ा, संघर्ष आ विसंगति मुक्तकक विषय बनि सकैत अछि

(C) यथार्थक निषेध

(D) केवल कल्पना-दुर्ग

३२६. यात्रीक मुक्तकक अध्ययनमे “क्रान्ति-चेतना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल गणितीय तालिका

(B) यात्रीक काव्य-संवेदना अन्याय-विरोधी, प्रश्नाकुल आ परिवर्तनक आकांक्षी मानल जा सकैत अछि

(C) परिवर्तन-विरोध

(D) केवल मौन

३२७. “क्रान्ति-चेतना” कैँ यात्रीक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल गणितीय तालिका

(B) यात्रीक काव्य-संवेदना अन्याय-विरोधी, प्रश्नाकुल आ परिवर्तनक आकांक्षी मानल जा सकैत अछि

(C) परिवर्तन-विरोध

(D) केवल मौन

३२८. नीचाँमे यात्रीक “क्रान्ति-चेतना” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल गणितीय तालिका

(B) यात्रीक काव्य-संवेदना अन्याय-विरोधी, प्रश्नाकुल आ परिवर्तनक आकांक्षी मानल जा सकैत अछि

(C) परिवर्तन-विरोध

(D) केवल मौन

३२९. परीक्षा-दृष्टिसँ यात्री पर “क्रान्ति-चेतना” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल गणितीय तालिका

(B) यात्रीक काव्य-संवेदना अन्याय-विरोधी, प्रश्नाकुल आ परिवर्तनक आकांक्षी मानल जा सकैत अछि

(C) परिवर्तन-विरोध

(D) केवल मौन

३३०. यात्रीक मुक्तकक “क्रान्ति-चेतना” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल गणितीय तालिका

(B) यात्रीक काव्य-संवेदना अन्याय-विरोधी, प्रश्नाकुल आ परिवर्तनक आकांक्षी मानल जा सकैत अछि

(C) परिवर्तन-विरोध

(D) केवल मौन

३३१. यात्रीक मुक्तकक अध्ययनमे “प्रकृति आ लोक” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल अदालती कागज

(B) हुनक रचनामे प्रकृति सौन्दर्यसँ अधिक लोक-जीवनक सहचर बनि सकैत अछि

(C) प्रकृति पूर्णतः अनुपस्थित

(D) केवल प्रयोगशाला

३३२. “प्रकृति आ लोक” कैँ यात्रीक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल अदालती कागज

(B) हुनक रचनामे प्रकृति सौन्दर्यसँ अधिक लोक-जीवनक सहचर बनि सकैत अछि

(C) प्रकृति पूर्णतः अनुपस्थित

(D) केवल प्रयोगशाला

३३३. नीचाँमे यात्रीक “प्रकृति आ लोक” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल अदालती कागज

(B) हुनक रचनामे प्रकृति सौन्दर्यसँ अधिक लोक-जीवनक सहचर बनि सकैत अछि

(C) प्रकृति पूर्णतः अनुपस्थित

(D) केवल प्रयोगशाला

३३४. परीक्षा-दृष्टिसँ यात्री पर “प्रकृति आ लोक” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल अदालती कागज

(B) हुनक रचनामे प्रकृति सौन्दर्यसँ अधिक लोक-जीवनक सहचर बनि सकैत अछि

(C) प्रकृति पूर्णतः अनुपस्थित

(D) केवल प्रयोगशाला

३३५. यात्रीक मुक्तकक “प्रकृति आ लोक” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल अदालती कागज

(B) हुनक रचनामे प्रकृति सौन्दर्यसँ अधिक लोक-जीवनक सहचर बनि सकैत अछि

(C) प्रकृति पूर्णतः अनुपस्थित

(D) केवल प्रयोगशाला

३३६. यात्रीक मुक्तकक अध्ययनमे “कथन-सीधापन” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल शाब्दिक सजावट

(B) यात्रीक मुक्तकमे सीधा कथन आ धारदार टिप्पणी पाठककेँ तुरन्त स्पर्श करैत अछि

(C) घोर अस्पष्टता सदैव

(D) केवल पहेली

३३७. “कथन-सीधापन” कैं यात्रीक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल शाब्दिक सजावट

(B) यात्रीक मुक्तकमे सीधा कथन आ धारदार टिप्पणी पाठककेँ तुरन्त स्पर्श करैत अछि

(C) घोर अस्पष्टता सदैव

(D) केवल पहेली

३३८. नीचाँमे यात्रीक “कथन-सीधापन” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल शाब्दिक सजावट

(B) यात्रीक मुक्तकमे सीधा कथन आ धारदार टिप्पणी पाठककेँ तुरन्त स्पर्श करैत अछि

(C) घोर अस्पष्टता सदैव

(D) केवल पहेली

३३९. परीक्षा-दृष्टिसँ यात्री पर “कथन-सीधापन” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल शाब्दिक सजावट

(B) यात्रीक मुक्तकमे सीधा कथन आ धारदार टिप्पणी पाठककेँ तुरन्त स्पर्श करैत अछि

(C) घोर अस्पष्टता सदैव

(D) केवल पहेली

३४०. यात्रीक मुक्तकक “कथन-सीधापन” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल शाब्दिक सजावट

(B) यात्रीक मुक्तकमे सीधा कथन आ धारदार टिप्पणी पाठककेँ तुरन्त स्पर्श करैत अछि

(C) घोर अस्पष्टता सदैव

(D) केवल पहेली

३४१. यात्रीक मुक्तकक अध्ययनमे “मानव-मर्यादा” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल तारा-सूची

(B) हुनक काव्य-पाठमे मनुष्यक गरिमा, श्रम आ अधिकारक प्रश्न उभरैत अछि

(C) गरिमाक अभाव

(D) केवल राजमहल

३४२. “मानव-मर्यादा” कैं यात्रीक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल तारा-सूची

(B) हुनक काव्य-पाठमे मनुष्यक गरिमा, श्रम आ अधिकारक प्रश्न उभरैत अछि

(C) गरिमाक अभाव

(D) केवल राजमहल

३४३. नीचाँमे यात्रीक “मानव-मर्यादा” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल तारा-सूची

(B) हुनक काव्य-पाठमे मनुष्यक गरिमा, श्रम आ अधिकारक प्रश्न उभरैत अछि

(C) गरिमाक अभाव

(D) केवल राजमहल

३४४. परीक्षा-दृष्टिसँ यात्री पर “मानव-मर्यादा” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल तारा-सूची

(B) हुनक काव्य-पाठमे मनुष्यक गरिमा, श्रम आ अधिकारक प्रश्न उभरैत अछि

(C) गरिमाक अभाव

(D) केवल राजमहल

३४५. यात्रीक मुक्तकक “मानव-मर्यादा” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल तारा-सूची

(B) हुनक काव्य-पाठमे मनुष्यक गरिमा, श्रम आ अधिकारक प्रश्न उभरैत अछि

(C) गरिमाक अभाव

(D) केवल राजमहल

३४६. यात्रीक मुक्तकक अध्ययनमे “मिथिला-सन्दर्भ” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल राजसी पोशाक

(B) यात्रीक कविता मिथिला, खेत, लोक, भाषा आ सामाजिक संघर्षक अनुभवसँ जुड़ि सकैत अछि

(C) मिथिला-सन्दर्भक निषेध

(D) केवल समुद्री व्यापार

३४७. “मिथिला-सन्दर्भ” कैँ यात्रीक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल राजसी पोशाक

(B) यात्रीक कविता मिथिला, खेत, लोक, भाषा आ सामाजिक संघर्षक अनुभवसँ जुड़ि सकैत अछि

(C) मिथिला-सन्दर्भक निषेध

(D) केवल समुद्री व्यापार

३४८. नीचाँमे यात्रीक “मिथिला-सन्दर्भ” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल राजसी पोशाक

(B) यात्रीक कविता मिथिला, खेत, लोक, भाषा आ सामाजिक संघर्षक अनुभवसँ जुड़ि सकैत अछि

(C) मिथिला-सन्दर्भक निषेध

(D) केवल समुद्री व्यापार

३४९. परीक्षा-दृष्टिसँ यात्री पर “मिथिला-सन्दर्भ” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल राजसी पोशाक

(B) यात्रीक कविता मिथिला, खेत, लोक, भाषा आ सामाजिक संघर्षक अनुभवसँ जुड़ि सकैत अछि

(C) मिथिला-सन्दर्भक निषेध

(D) केवल समुद्री व्यापार

३५०. यात्रीक मुक्तकक “मिथिला-सन्दर्भ” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल राजसी पोशाक

(B) यात्रीक कविता मिथिला, खेत, लोक, भाषा आ सामाजिक संघर्षक अनुभवसँ जुड़ि सकैत अछि

(C) मिथिला-सन्दर्भक निषेध

(D) केवल समुद्री व्यापार

३५१. यात्रीक मुक्तकक अध्ययनमे “आक्रोश” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल हास्य

(B) सचेत आक्रोश मुक्तकमे संक्षिप्त पंक्तिमे तीक्ष्ण प्रभाव पैदा करैत अछि

(C) आक्रोश सदैव दोष

(D) भावनाहीनता

३५२. “आक्रोश” कैँ यात्रीक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल हास्य

(B) सचेत आक्रोश मुक्तकमे संक्षिप्त पंक्तिमे तीक्ष्ण प्रभाव पैदा करैत अछि

(C) आक्रोश सदैव दोष

(D) भावनाहीनता

३५३. नीचाँमे यात्रीक “आक्रोश” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल हास्य

(B) सचेत आक्रोश मुक्तकमे संक्षिप्त पंक्तिमे तीक्ष्ण प्रभाव पैदा करैत अछि

(C) आक्रोश सदैव दोष

(D) भावनाहीनता

३५४. परीक्षा-दृष्टिसँ यात्री पर “आक्रोश” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल हास्य

(B) सचेत आक्रोश मुक्तकमे संक्षिप्त पंक्तिमे तीक्ष्ण प्रभाव पैदा करैत अछि

(C) आक्रोश सदैव दोष

(D) भावनाहीनता

३५५. यात्रीक मुक्तकक “आक्रोश” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल हास्य

(B) सचेत आक्रोश मुक्तकमे संक्षिप्त पंक्तिमे तीक्ष्ण प्रभाव पैदा करैत अछि

(C) आक्रोश सदैव दोष

(D) भावनाहीनता

३५६. यात्रीक मुक्तकक अध्ययनमे “करुणा” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल व्यापारिक लाभ

(B) जनक दुःखक प्रति करुणा यात्रीक काव्य-चेतना केँ मानवीय गहराइ दैत अछि

(C) करुणा अप्रासंगिक

(D) केवल युद्ध-विजय

३५७. “करुणा” केँ यात्रीक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल व्यापारिक लाभ

(B) जनक दुःखक प्रति करुणा यात्रीक काव्य-चेतना केँ मानवीय गहराइ दैत अछि

(C) करुणा अप्रासंगिक

(D) केवल युद्ध-विजय

३५८. नीचाँमे यात्रीक “करुणा” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल व्यापारिक लाभ

(B) जनक दुःखक प्रति करुणा यात्रीक काव्य-चेतना केँ मानवीय गहराइ दैत अछि

(C) करुणा अप्रासंगिक

(D) केवल युद्ध-विजय

३५९. परीक्षा-दृष्टिसँ यात्री पर “करुणा” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल व्यापारिक लाभ

(B) जनक दुःखक प्रति करुणा यात्रीक काव्य-चेतना केँ मानवीय गहराइ दैत अछि

(C) करुणा अप्रासंगिक

(D) केवल युद्ध-विजय

३६०. यात्रीक मुक्तकक “करुणा” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल व्यापारिक लाभ

(B) जनक दुःखक प्रति करुणा यात्रीक काव्य-चेतना केँ मानवीय गहराइ दैत अछि

(C) करुणा अप्रासंगिक

(D) केवल युद्ध-विजय

३६१. यात्रीक मुक्तकक अध्ययनमे “भाषा-शक्ति” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल मौन दृश्य

(B) लोक-लय, बोलचाल आ तीक्ष्ण शब्द-विन्यास यात्रीक मुक्तककेँ जीवंत बनबैत अछि

(C) भाषा निर्जीव

(D) केवल विदेशी उद्धरण

३६२. “भाषा-शक्ति” केँ यात्रीक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल मौन दृश्य

(B) लोक-लय, बोलचाल आ तीक्ष्ण शब्द-विन्यास यात्रीक मुक्तककेँ जीवंत बनबैत अछि

(C) भाषा निर्जीव

(D) केवल विदेशी उद्धरण

३६३. नीचाँमे यात्रीक “भाषा-शक्ति” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल मौन दृश्य

(B) लोक-लय, बोलचाल आ तीक्ष्ण शब्द-विन्यास यात्रीक मुक्तककेँ जीवंत बनबैत अछि

(C) भाषा निर्जीव

(D) केवल विदेशी उद्धरण

३६४. परीक्षा-दृष्टिसँ यात्री पर “भाषा-शक्ति” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल मौन दृश्य

(B) लोक-लय, बोलचाल आ तीक्ष्ण शब्द-विन्यास यात्रीक मुक्तककेँ जीवंत बनबैत अछि

(C) भाषा निर्जीव

(D) केवल विदेशी उद्धरण

३६५. यात्रीक मुक्तकक “भाषा-शक्ति” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल मौन दृश्य

(B) लोक-लय, बोलचाल आ तीक्ष्ण शब्द-विन्यास यात्रीक मुक्तककेँ जीवंत बनबैत अछि

(C) भाषा निर्जीव

(D) केवल विदेशी उद्धरण

३६६. यात्रीक मुक्तकक अध्ययनमे “लोकतांत्रिक स्वर” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल काल्पनिक महल

(B) यात्रीक कवितामे सत्ता-समीक्षा आ जन-दृष्टि लोकतांत्रिक स्वर बनि उठैत अछि

(C) केवल दरबारी स्तुति

(D) जनदृष्टिक निषेध

३६७. “लोकतांत्रिक स्वर” केँ यात्रीक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल काल्पनिक महल

(B) यात्रीक कवितामे सत्ता-समीक्षा आ जन-दृष्टि लोकतांत्रिक स्वर बनि उठैत अछि

(C) केवल दरबारी स्तुति

(D) जनदृष्टिक निषेध

३६८. नीचाँमे यात्रीक “लोकतांत्रिक स्वर” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल काल्पनिक महल

(B) यात्रीक कवितामे सत्ता-समीक्षा आ जन-दृष्टि लोकतांत्रिक स्वर बनि उठैत अछि

(C) केवल दरबारी स्तुति

(D) जनदृष्टिक निषेध

३६९. परीक्षा-दृष्टिसँ यात्री पर “लोकतांत्रिक स्वर” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल काल्पनिक महल

(B) यात्रीक कवितामे सत्ता-समीक्षा आ जन-दृष्टि लोकतांत्रिक स्वर बनि उठैत अछि

(C) केवल दरबारी स्तुति

(D) जनदृष्टिक निषेध

३७०. यात्रीक मुक्तकक “लोकतांत्रिक स्वर” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल काल्पनिक महल

(B) यात्रीक कवितामे सत्ता-समीक्षा आ जन-दृष्टि लोकतांत्रिक स्वर बनि उठैत अछि

(C) केवल दरबारी स्तुति

(D) जनदृष्टिक निषेध

३७१. यात्रीक मुक्तकक अध्ययनमे “प्रतीक” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल सजावटी चिह्न

(B) किसान, धरती, अन्न, श्रम, सड़क आदि प्रतीक सामाजिक अर्थ खोलि सकैत अछि

(C) प्रतीक निषिद्ध

(D) केवल शाब्दिक अर्थ

३७२. “प्रतीक” कैँ यात्रीक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल सजावटी चिह्न

(B) किसान, धरती, अन्न, श्रम, सड़क आदि प्रतीक सामाजिक अर्थ खोलि सकैत अछि

(C) प्रतीक निषिद्ध

(D) केवल शाब्दिक अर्थ

३७३. नीचाँमे यात्रीक “प्रतीक” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल सजावटी चिह्न

(B) किसान, धरती, अन्न, श्रम, सड़क आदि प्रतीक सामाजिक अर्थ खोलि सकैत अछि

(C) प्रतीक निषिद्ध

(D) केवल शाब्दिक अर्थ

३७४. परीक्षा-दृष्टिसँ यात्री पर “प्रतीक” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल सजावटी चिह्न

(B) किसान, धरती, अन्न, श्रम, सड़क आदि प्रतीक सामाजिक अर्थ खोलि सकैत अछि

(C) प्रतीक निषिद्ध

(D) केवल शाब्दिक अर्थ

३७५. यात्रीक मुक्तकक “प्रतीक” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल सजावटी चिह्न

(B) किसान, धरती, अन्न, श्रम, सड़क आदि प्रतीक सामाजिक अर्थ खोलि सकैत अछि

(C) प्रतीक निषिद्ध

(D) केवल शाब्दिक अर्थ

३७६. यात्रीक मुक्तकक अध्ययनमे “परीक्षा-दृष्टि” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल छन्द-सूची

(B) यात्री पर उत्तरमे जनकवि-स्वर, यथार्थ, व्यंग्य, लोकभाषा आ सामाजिक चेतना जोड़ब चाही

(C) केवल नाम-दोहराव

(D) केवल तिथि

३७७. “परीक्षा-दृष्टि” कैँ यात्रीक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल छन्द-सूची

(B) यात्री पर उत्तरमे जनकवि-स्वर, यथार्थ, व्यंग्य, लोकभाषा आ सामाजिक चेतना जोड़ब चाही

(C) केवल नाम-दोहराव

(D) केवल तिथि

३७८. नीचाँमे यात्रीक “परीक्षा-दृष्टि” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल छन्द-सूची

(B) यात्री पर उत्तरमे जनकवि-स्वर, यथार्थ, व्यंग्य, लोकभाषा आ सामाजिक चेतना जोड़ब चाही

(C) केवल नाम-दोहराव

(D) केवल तिथि

३७९. परीक्षा-दृष्टिसँ यात्री पर “परीक्षा-दृष्टि” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल छन्द-सूची

(B) यात्री पर उत्तरमे जनकवि-स्वर, यथार्थ, व्यंग्य, लोकभाषा आ सामाजिक चेतना जोड़ब चाही

(C) केवल नाम-दोहराव

(D) केवल तिथि

३८०. यात्रीक मुक्तकक “परीक्षा-दृष्टि” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल छन्द-सूची

(B) यात्री पर उत्तरमे जनकवि-स्वर, यथार्थ, व्यंग्य, लोकभाषा आ सामाजिक चेतना जोड़ब चाही

(C) केवल नाम-दोहराव

(D) केवल तिथि

३८१. यात्रीक मुक्तकक अध्ययनमे “तुलना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल पत्राचार

(B) यात्रीक तुलना गीतधर्मी कविसँ करैत समय जनपक्ष आ तीक्ष्ण यथार्थ प्रमुख बिन्दु बनैत अछि

(C) केवल लम्बाई

(D) केवल पुस्तक-मूल्य

३८२. “तुलना” कैँ यात्रीक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल पत्राचार

(B) यात्रीक तुलना गीतधर्मी कविसँ करैत समय जनपक्ष आ तीक्ष्ण यथार्थ प्रमुख बिन्दु बनैत अछि

(C) केवल लम्बाई

(D) केवल पुस्तक-मूल्य

३८३. नीचाँमे यात्रीक “तुलना” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल पत्राचार

(B) यात्रीक तुलना गीतधर्मी कविसँ करैत समय जनपक्ष आ तीक्ष्ण यथार्थ प्रमुख बिन्दु बनैत अछि

(C) केवल लम्बाई

(D) केवल पुस्तक-मूल्य

३८४. परीक्षा-दृष्टिसँ यात्री पर “तुलना” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल पत्राचार

(B) यात्रीक तुलना गीतधर्मी कविसँ करैत समय जनपक्ष आ तीक्ष्ण यथार्थ प्रमुख बिन्दु बनैत अछि

(C) केवल लम्बाई

(D) केवल पुस्तक-मूल्य

३८५. यात्रीक मुक्तकक “तुलना” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल पत्राचार

(B) यात्रीक तुलना गीतधर्मी कविसँ करैत समय जनपक्ष आ तीक्ष्ण यथार्थ प्रमुख बिन्दु बनैत अछि

(C) केवल लम्बाई

(D) केवल पुस्तक-मूल्य

३८६. यात्रीक मुक्तकक अध्ययनमे “मुक्तक प्रभाव” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल सजावट

(B) छोट कविता सेहो सामाजिक विसंगति पर बड़ा प्रश्न उठा सकैत अछि

(C) छोट कविता प्रश्न नहि उठबैत

(D) केवल मनोरंजन

३८७. “मुक्तक प्रभाव” कैं यात्रीक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल सजावट

(B) छोट कविता सेहो सामाजिक विसंगति पर बड़ा प्रश्न उठा सकैत अछि

(C) छोट कविता प्रश्न नहि उठबैत

(D) केवल मनोरंजन

३८८. नीचाँमे यात्रीक “मुक्तक प्रभाव” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल सजावट

(B) छोट कविता सेहो सामाजिक विसंगति पर बड़ा प्रश्न उठा सकैत अछि

(C) छोट कविता प्रश्न नहि उठबैत

(D) केवल मनोरंजन

३८९. परीक्षा-दृष्टिसँ यात्री पर “मुक्तक प्रभाव” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल सजावट

(B) छोट कविता सेहो सामाजिक विसंगति पर बड़ा प्रश्न उठा सकैत अछि

(C) छोट कविता प्रश्न नहि उठबैत

(D) केवल मनोरंजन

३९०. यात्रीक मुक्तकक “मुक्तक प्रभाव” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल सजावट

(B) छोट कविता सेहो सामाजिक विसंगति पर बड़ा प्रश्न उठा सकैत अछि

(C) छोट कविता प्रश्न नहि उठबैत

(D) केवल मनोरंजन

३९१. यात्रीक मुक्तकक अध्ययनमे “आधुनिकता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल शून्यता

(B) यात्रीक आधुनिकता लोकसँ कटि नहि, लोकजीवनक भीतरसँ आलोचनात्मक दृष्टि पबैत अछि

(C) लोक-विरोधी आधुनिकता

(D) केवल दरबारी भाव

३९२. “आधुनिकता” कैं यात्रीक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल शून्यता

(B) यात्रीक आधुनिकता लोकसँ कटि नहि, लोकजीवनक भीतरसँ आलोचनात्मक दृष्टि पबैत अछि

(C) लोक-विरोधी आधुनिकता

(D) केवल दरबारी भाव

३९३. नीचाँमे यात्रीक “आधुनिकता” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल शून्यता

(B) यात्रीक आधुनिकता लोकसँ कटि नहि, लोकजीवनक भीतरसँ आलोचनात्मक दृष्टि पबैत अछि

(C) लोक-विरोधी आधुनिकता

(D) केवल दरबारी भाव

३९४. परीक्षा-दृष्टिसँ यात्री पर “आधुनिकता” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल शून्यता

(B) यात्रीक आधुनिकता लोकसँ कटि नहि, लोकजीवनक भीतरसँ आलोचनात्मक दृष्टि पबैत अछि

(C) लोक-विरोधी आधुनिकता

(D) केवल दरबारी भाव

३९५. यात्रीक मुक्तकक “आधुनिकता” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल शून्यता

(B) यात्रीक आधुनिकता लोकसँ कटि नहि, लोकजीवनक भीतरसँ आलोचनात्मक दृष्टि पबैत अछि

(C) लोक-विरोधी आधुनिकता

(D) केवल दरबारी भाव

३९६. यात्रीक मुक्तकक अध्ययनमे “समग्र मूल्य” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल गणक

(B) यात्री मुक्तकक लोकधर्मी, संघर्षशील आ व्यंग्यपूर्ण रूप बुझबामे अत्यन्त उपयोगी कवि छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाट्यकार

३९७. “समग्र मूल्य” कैँ यात्रीक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल गणक

(B) यात्री मुक्तकक लोकधर्मी, संघर्षशील आ व्यंग्यपूर्ण रूप बुझबामे अत्यन्त उपयोगी कवि छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाट्यकार

३९८. नीचाँमे यात्रीक “समग्र मूल्य” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल गणक

(B) यात्री मुक्तकक लोकधर्मी, संघर्षशील आ व्यंग्यपूर्ण रूप बुझबामे अत्यन्त उपयोगी कवि छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाट्यकार

३९९. परीक्षा-दृष्टिसँ यात्री पर “समग्र मूल्य” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल गणक

(B) यात्री मुक्तकक लोकधर्मी, संघर्षशील आ व्यंग्यपूर्ण रूप बुझबामे अत्यन्त उपयोगी कवि छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाट्यकार

४००. यात्रीक मुक्तकक “समग्र मूल्य” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल गणक

(B) यात्री मुक्तकक लोकधर्मी, संघर्षशील आ व्यंग्यपूर्ण रूप बुझबामे अत्यन्त उपयोगी कवि छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाट्यकार

sec4

४०१. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक अध्ययनमे “गीतिधर्मिता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल गणना

(B) आरसी प्रसाद सिंहक अध्ययनमे गीतिमयता, कोमल भाव आ सुसंस्कृत काव्य-भाषा महत्त्वपूर्ण बिन्दु अछि

(C) गीत-विरोध

(D) केवल सूखा विवरण

४०२. “गीतिधर्मिता” कैं आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल गणना

(B) आरसी प्रसाद सिंहक अध्ययनमे गीतिमयता, कोमल भाव आ सुसंस्कृत काव्य-भाषा महत्त्वपूर्ण बिन्दु अछि

(C) गीत-विरोध

(D) केवल सूखा विवरण

४०३. नीचाँमे आरसी प्रसाद सिंहक “गीतिधर्मिता” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल गणना

(B) आरसी प्रसाद सिंहक अध्ययनमे गीतिमयता, कोमल भाव आ सुसंस्कृत काव्य-भाषा महत्त्वपूर्ण बिन्दु अछि

(C) गीत-विरोध

(D) केवल सूखा विवरण

४०४. परीक्षा-दृष्टिसँ आरसी प्रसाद सिंह पर “गीतिधर्मिता” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल गणना

(B) आरसी प्रसाद सिंहक अध्ययनमे गीतिमयता, कोमल भाव आ सुसंस्कृत काव्य-भाषा महत्त्वपूर्ण बिन्दु अछि

(C) गीत-विरोध

(D) केवल सूखा विवरण

४०५. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक “गीतिधर्मिता” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल गणना

(B) आरसी प्रसाद सिंहक अध्ययनमे गीतिमयता, कोमल भाव आ सुसंस्कृत काव्य-भाषा महत्त्वपूर्ण बिन्दु अछि

(C) गीत-विरोध

(D) केवल सूखा विवरण

४०६. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक अध्ययनमे “मानवीय भाव” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल पत्रक शीर्षक

(B) हुनक मुक्तकमे प्रेम, पीड़ा, आशा, स्मृति आ जीवन-सौन्दर्यक मानवीय अनुभूति देखल जा सकैत अछि

(C) मानव-भावक अभाव

(D) केवल युद्ध-आदेश

४०७. “मानवीय भाव” कैं आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल पत्रक शीर्षक

(B) हुनक मुक्तकमे प्रेम, पीड़ा, आशा, स्मृति आ जीवन-सौन्दर्यक मानवीय अनुभूति देखल जा सकैत अछि

(C) मानव-भावक अभाव

(D) केवल युद्ध-आदेश

४०८. नीचाँमे आरसी प्रसाद सिंहक “मानवीय भाव” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल पत्रक शीर्षक

(B) हुनक मुक्तकमे प्रेम, पीड़ा, आशा, स्मृति आ जीवन-सौन्दर्यक मानवीय अनुभूति देखल जा सकैत अछि

(C) मानव-भावक अभाव

(D) केवल युद्ध-आदेश

४०९. परीक्षा-दृष्टिसँ आरसी प्रसाद सिंह पर “मानवीय भाव” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल पत्रक शीर्षक

(B) हुनक मुक्तकमे प्रेम, पीड़ा, आशा, स्मृति आ जीवन-सौन्दर्यक मानवीय अनुभूति देखल जा सकैत अछि

(C) मानव-भावक अभाव

(D) केवल युद्ध-आदेश

४१०. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक “मानवीय भाव” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल पत्रक शीर्षक

(B) हुनक मुक्तकमे प्रेम, पीड़ा, आशा, स्मृति आ जीवन-सौन्दर्यक मानवीय अनुभूति देखल जा सकैत अछि

(C) मानव-भावक अभाव

(D) केवल युद्ध-आदेश

४११. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक अध्ययनमे “लय” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल चित्र-संकेत

(B) लय आ शब्द-संगीत आरसीक मुक्तककेँ श्रवणीय आ स्मरणीय बनबैत अछि

(C) लय सदैव दोष

(D) केवल गद्य-सूची

४१२. “लय” केँ आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल चित्र-संकेत

(B) लय आ शब्द-संगीत आरसीक मुक्तककेँ श्रवणीय आ स्मरणीय बनबैत अछि

(C) लय सदैव दोष

(D) केवल गद्य-सूची

४१३. नीचाँमे आरसी प्रसाद सिंहक “लय” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल चित्र-संकेत

(B) लय आ शब्द-संगीत आरसीक मुक्तककेँ श्रवणीय आ स्मरणीय बनबैत अछि

(C) लय सदैव दोष

(D) केवल गद्य-सूची

४१४. परीक्षा-दृष्टिसँ आरसी प्रसाद सिंह पर “लय” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल चित्र-संकेत

(B) लय आ शब्द-संगीत आरसीक मुक्तककेँ श्रवणीय आ स्मरणीय बनबैत अछि

(C) लय सदैव दोष

(D) केवल गद्य-सूची

४१५. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक “लय” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल चित्र-संकेत

(B) लय आ शब्द-संगीत आरसीक मुक्तककेँ श्रवणीय आ स्मरणीय बनबैत अछि

(C) लय सदैव दोष

(D) केवल गद्य-सूची

४१६. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक अध्ययनमे “प्रकृति” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल नक्शा

(B) प्रकृति-बिम्ब काव्यक आन्तरिक भावकेँ मूर्त रूप देबामे सहायक होइत अछि

(C) प्रकृति अप्रासंगिक

(D) केवल सूची

४१७. “प्रकृति” कैँ आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल नक्शा

(B) प्रकृति-बिम्ब काव्यक आन्तरिक भावकेँ मूर्त रूप देबामे सहायक होइत अछि

(C) प्रकृति अप्रासंगिक

(D) केवल सूची

४१८. नीचाँमे आरसी प्रसाद सिंहक “प्रकृति” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल नक्शा

(B) प्रकृति-बिम्ब काव्यक आन्तरिक भावकेँ मूर्त रूप देबामे सहायक होइत अछि

(C) प्रकृति अप्रासंगिक

(D) केवल सूची

४१९. परीक्षा-दृष्टिसँ आरसी प्रसाद सिंह पर “प्रकृति” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल नक्शा

(B) प्रकृति-बिम्ब काव्यक आन्तरिक भावकेँ मूर्त रूप देबामे सहायक होइत अछि

(C) प्रकृति अप्रासंगिक

(D) केवल सूची

४२०. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक “प्रकृति” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल नक्शा

(B) प्रकृति-बिम्ब काव्यक आन्तरिक भावकेँ मूर्त रूप देबामे सहायक होइत अछि

(C) प्रकृति अप्रासंगिक

(D) केवल सूची

४२१. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक अध्ययनमे “आत्म-संवाद” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल हास्य-विनोद

(B) आरसीक काव्य-पाठमे आत्म-चिन्तन आ संवेदनशील मनक संवाद प्रमुख देखल जा सकैत अछि

(C) आत्म-संवादक निषेध

(D) केवल बाहरी सूचना

४२२. “आत्म-संवाद” कैँ आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल हास्य-विनोद

(B) आरसीक काव्य-पाठमे आत्म-चिन्तन आ संवेदनशील मनक संवाद प्रमुख देखल जा सकैत अछि

(C) आत्म-संवादक निषेध

(D) केवल बाहरी सूचना

४२३. नीचाँमे आरसी प्रसाद सिंहक “आत्म-संवाद” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल हास्य-विनोद

(B) आरसीक काव्य-पाठमे आत्म-चिन्तन आ संवेदनशील मनक संवाद प्रमुख देखल जा सकैत अछि

(C) आत्म-संवादक निषेध

(D) केवल बाहरी सूचना

४२४. परीक्षा-दृष्टिसँ आरसी प्रसाद सिंह पर “आत्म-संवाद” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल हास्य-विनोद

(B) आरसीक काव्य-पाठमे आत्म-चिन्तन आ संवेदनशील मनक संवाद प्रमुख देखल जा सकैत अछि

(C) आत्म-संवादक निषेध

(D) केवल बाहरी सूचना

४२५. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक “आत्म-संवाद” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल हास्य-विनोद

(B) आरसीक काव्य-पाठमे आत्म-चिन्तन आ संवेदनशील मनक संवाद प्रमुख देखल जा सकैत अछि

(C) आत्म-संवादक निषेध

(D) केवल बाहरी सूचना

४२६. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक अध्ययनमे “छोट संरचना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल नाट्य-दृश्य

(B) मुक्तकमे सीमित पंक्तिमे सम्पूर्ण भाव-संकेत देब आरसीक अध्ययनक मुख्य अभ्यास अछि

(C) असीमित प्रबन्ध

(D) केवल उपन्यास

४२७. “छोट संरचना” कैं आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल नाट्य-दृश्य

(B) मुक्तकमे सीमित पंक्तिमे सम्पूर्ण भाव-संकेत देब आरसीक अध्ययनक मुख्य अभ्यास अछि

(C) असीमित प्रबन्ध

(D) केवल उपन्यास

४२८. नीचाँमे आरसी प्रसाद सिंहक “छोट संरचना” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल नाट्य-दृश्य

(B) मुक्तकमे सीमित पंक्तिमे सम्पूर्ण भाव-संकेत देब आरसीक अध्ययनक मुख्य अभ्यास अछि

(C) असीमित प्रबन्ध

(D) केवल उपन्यास

४२९. परीक्षा-दृष्टिसँ आरसी प्रसाद सिंह पर “छोट संरचना” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल नाट्य-दृश्य

(B) मुक्तकमे सीमित पंक्तिमे सम्पूर्ण भाव-संकेत देब आरसीक अध्ययनक मुख्य अभ्यास अछि

(C) असीमित प्रबन्ध

(D) केवल उपन्यास

४३०. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक “छोट संरचना” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल नाट्य-दृश्य

(B) मुक्तकमे सीमित पंक्तिमे सम्पूर्ण भाव-संकेत देब आरसीक अध्ययनक मुख्य अभ्यास अछि

(C) असीमित प्रबन्ध

(D) केवल उपन्यास

४३१. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक अध्ययनमे “अलंकार” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल तारीख

(B) उपमा, रूपक, अनुप्रास आ ध्वनि-साम्य मुक्तकक सौन्दर्य बढबैत अछि

(C) अलंकारक निषेध

(D) केवल आँकड़ा

४३२. “अलंकार” कैं आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल तारीख

(B) उपमा, रूपक, अनुप्रास आ ध्वनि-साम्य मुक्तकक सौन्दर्य बढबैत अछि

(C) अलंकारक निषेध

(D) केवल आँकड़ा

४३३. नीचाँमे आरसी प्रसाद सिंहक “अलंकार” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल तारीख

(B) उपमा, रूपक, अनुप्रास आ ध्वनि-साम्य मुक्तकक सौन्दर्य बढबैत अछि

(C) अलंकारक निषेध

(D) केवल आँकड़ा

४३४. परीक्षा-दृष्टिसँ आरसी प्रसाद सिंह पर “अलंकार” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल तारीख

(B) उपमा, रूपक, अनुप्रास आ ध्वनि-साम्य मुक्तकक सौन्दर्य बढबैत अछि

(C) अलंकारक निषेध

(D) केवल आँकड़ा

४३५. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक “अलंकार” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल तारीख

(B) उपमा, रूपक, अनुप्रास आ ध्वनि-साम्य मुक्तकक सौन्दर्य बढबैत अछि

(C) अलंकारक निषेध

(D) केवल आँकड़ा

४३६. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक अध्ययनमे “भाषा-सौष्ठव” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल विदेशी संकेत

(B) संस्कृतित लेकिन सहज भाषा कविताकेँ गम्भीर आ मधुर दुनू बनबैत अछि

(C) असहज जड़ता

(D) शब्दहीनता

४३७. “भाषा-सौष्ठव” केँ आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल विदेशी संकेत

(B) संस्कृतित लेकिन सहज भाषा कविताकेँ गम्भीर आ मधुर दुनू बनबैत अछि

(C) असहज जड़ता

(D) शब्दहीनता

४३८. नीचाँमे आरसी प्रसाद सिंहक “भाषा-सौष्ठव” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल विदेशी संकेत

(B) संस्कृतित लेकिन सहज भाषा कविताकेँ गम्भीर आ मधुर दुनू बनबैत अछि

(C) असहज जड़ता

(D) शब्दहीनता

४३९. परीक्षा-दृष्टिसँ आरसी प्रसाद सिंह पर “भाषा-सौष्ठव” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल विदेशी संकेत

(B) संस्कृतित लेकिन सहज भाषा कविताकेँ गम्भीर आ मधुर दुनू बनबैत अछि

(C) असहज जड़ता

(D) शब्दहीनता

४४०. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक “भाषा-सौष्ठव” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल विदेशी संकेत

(B) संस्कृतित लेकिन सहज भाषा कविताकेँ गम्भीर आ मधुर दुनू बनबैत अछि

(C) असहज जड़ता

(D) शब्दहीनता

४४१. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक अध्ययनमे “भाव-गहनता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल मुद्रण

(B) लघु आकारक कारण एक-एक शब्द भावक भार वहन करैत अछि

(C) शब्द निरर्थक

(D) भाव विस्तारहीन

४४२. “भाव-गहनता” कैँ आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल मुद्रण

(B) लघु आकारक कारण एक-एक शब्द भावक भार वहन करैत अछि

(C) शब्द निरर्थक

(D) भाव विस्तारहीन

४४३. नीचाँमे आरसी प्रसाद सिंहक “भाव-गहनता” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल मुद्रण

(B) लघु आकारक कारण एक-एक शब्द भावक भार वहन करैत अछि

(C) शब्द निरर्थक

(D) भाव विस्तारहीन

४४४. परीक्षा-दृष्टिसँ आरसी प्रसाद सिंह पर “भाव-गहनता” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल मुद्रण

(B) लघु आकारक कारण एक-एक शब्द भावक भार वहन करैत अछि

(C) शब्द निरर्थक

(D) भाव विस्तारहीन

४४५. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक “भाव-गहनता” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल मुद्रण

(B) लघु आकारक कारण एक-एक शब्द भावक भार वहन करैत अछि

(C) शब्द निरर्थक

(D) भाव विस्तारहीन

४४६. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक अध्ययनमे “सांस्कृतिक चेतना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल रंग-सज्जा

(B) आरसीक मुक्तक भारतीय-सांस्कृतिक मूल्य आ आधुनिक अनुभव बीच संवाद बना सकैत अछि

(C) सांस्कृतिक शून्यता

(D) केवल व्यापार

४४७. “सांस्कृतिक चेतना” कैँ आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल रंग-सज्जा

(B) आरसीक मुक्तक भारतीय-सांस्कृतिक मूल्य आ आधुनिक अनुभव बीच संवाद बना सकैत अछि

(C) सांस्कृतिक शून्यता

(D) केवल व्यापार

४४८. नीचाँमे आरसी प्रसाद सिंहक “सांस्कृतिक चेतना” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल रंग-सज्जा

(B) आरसीक मुक्तक भारतीय-सांस्कृतिक मूल्य आ आधुनिक अनुभव बीच संवाद बना सकैत अछि

(C) सांस्कृतिक शून्यता

(D) केवल व्यापार

४४९. परीक्षा-दृष्टिसँ आरसी प्रसाद सिंह पर “सांस्कृतिक चेतना” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल रंग-सज्जा

(B) आरसीक मुक्तक भारतीय-सांस्कृतिक मूल्य आ आधुनिक अनुभव बीच संवाद बना सकैत अछि

(C) सांस्कृतिक शून्यता

(D) केवल व्यापार

४५०. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक “सांस्कृतिक चेतना” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल रंग-सज्जा

(B) आरसीक मुक्तक भारतीय-सांस्कृतिक मूल्य आ आधुनिक अनुभव बीच संवाद बना सकैत अछि

(C) सांस्कृतिक शून्यता

(D) केवल व्यापार

४५१. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक अध्ययनमे “नारी-भाव” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल प्रशासन

(B) प्रेम आ संवेदना सम्बन्धी प्रश्नमे नारी-पुरुष भावक कलात्मक प्रस्तुति देखल जा सकैत अछि

(C) भाव-विवेकक अभाव

(D) केवल युद्ध

४५२. “नारी-भाव” कैँ आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल प्रशासन

(B) प्रेम आ संवेदना सम्बन्धी प्रश्नमे नारी-पुरुष भावक कलात्मक प्रस्तुति देखल जा सकैत अछि

(C) भाव-विवेकक अभाव

(D) केवल युद्ध

४५३. नीचाँमे आरसी प्रसाद सिंहक “नारी-भाव” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल प्रशासन

(B) प्रेम आ संवेदना सम्बन्धी प्रश्नमे नारी-पुरुष भावक कलात्मक प्रस्तुति देखल जा सकैत अछि

(C) भाव-विवेकक अभाव

(D) केवल युद्ध

४५४. परीक्षा-दृष्टिसँ आरसी प्रसाद सिंह पर “नारी-भाव” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल प्रशासन

(B) प्रेम आ संवेदना सम्बन्धी प्रश्नमे नारी-पुरुष भावक कलात्मक प्रस्तुति देखल जा सकैत अछि

(C) भाव-विवेकक अभाव

(D) केवल युद्ध

४५५. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक “नारी-भाव” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल प्रशासन

(B) प्रेम आ संवेदना सम्बन्धी प्रश्नमे नारी-पुरुष भावक कलात्मक प्रस्तुति देखल जा सकैत अछि

(C) भाव-विवेकक अभाव

(D) केवल युद्ध

४५६. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक अध्ययनमे “स्मृति” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल उपकरण

(B) स्मृति मुक्तकमे अतीत आ वर्तमानक भाव-सम्बन्ध बनबैत अछि

(C) स्मृति निरर्थक

(D) केवल बजट

४५७. “स्मृति” कैँ आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल उपकरण

(B) स्मृति मुक्तकमे अतीत आ वर्तमानक भाव-सम्बन्ध बनबैत अछि

(C) स्मृति निरर्थक

(D) केवल बजट

४५८. नीचाँमे आरसी प्रसाद सिंहक “स्मृति” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल उपकरण

(B) स्मृति मुक्तकमे अतीत आ वर्तमानक भाव-सम्बन्ध बनबैत अछि

(C) स्मृति निरर्थक

(D) केवल बजट

४५९. परीक्षा-दृष्टिसँ आरसी प्रसाद सिंह पर “स्मृति” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल उपकरण

(B) स्मृति मुक्तकमे अतीत आ वर्तमानक भाव-सम्बन्ध बनबैत अछि

(C) स्मृति निरर्थक

(D) केवल बजट

४६०. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक “स्मृति” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल उपकरण

(B) स्मृति मुक्तकमे अतीत आ वर्तमानक भाव-सम्बन्ध बनबैत अछि

(C) स्मृति निरर्थक

(D) केवल बजट

४६१. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक अध्ययनमे “सौन्दर्य-दृष्टि” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल नक्शा

(B) हुनक सौन्दर्य-दृष्टि बाहरी दृश्य आ भीतरी भावक सामंजस्यसँ बनैत अछि

(C) केवल बाहरी रंग

(D) भाव अप्रासंगिक

४६२. “सौन्दर्य-दृष्टि” कैँ आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल नक्शा

(B) हुनक सौन्दर्य-दृष्टि बाहरी दृश्य आ भीतरी भावक सामंजस्यसँ बनैत अछि

(C) केवल बाहरी रंग

(D) भाव अप्रासंगिक

४६३. नीचाँमे आरसी प्रसाद सिंहक “सौन्दर्य-दृष्टि” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल नक्शा

(B) हुनक सौन्दर्य-दृष्टि बाहरी दृश्य आ भीतरी भावक सामंजस्यसँ बनैत अछि

(C) केवल बाहरी रंग

(D) भाव अप्रासंगिक

४६४. परीक्षा-दृष्टिसँ आरसी प्रसाद सिंह पर “सौन्दर्य-दृष्टि” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल नक्शा

(B) हुनक सौन्दर्य-दृष्टि बाहरी दृश्य आ भीतरी भावक सामंजस्यसँ बनैत अछि

(C) केवल बाहरी रंग

(D) भाव अप्रासंगिक

४६५. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक “सौन्दर्य-दृष्टि” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल नक्शा

(B) हुनक सौन्दर्य-दृष्टि बाहरी दृश्य आ भीतरी भावक सामंजस्यसँ बनैत अछि

(C) केवल बाहरी रंग

(D) भाव अप्रासंगिक

४६६. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक अध्ययनमे “अनुभूति” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल नियमावली

(B) मुक्तकक सार व्यक्त अनुभवकेँ सामूहिक अनुभूति बनबामे अछि

(C) अनुभूतिक स्थान नहि

(D) केवल नामावली

४६७. “अनुभूति” केँ आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल नियमावली

(B) मुक्तकक सार व्यक्त अनुभवकेँ सामूहिक अनुभूति बनबामे अछि

(C) अनुभूतिक स्थान नहि

(D) केवल नामावली

४६८. नीचाँमे आरसी प्रसाद सिंहक “अनुभूति” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल नियमावली

(B) मुक्तकक सार व्यक्त अनुभवकेँ सामूहिक अनुभूति बनबामे अछि

(C) अनुभूतिक स्थान नहि

(D) केवल नामावली

४६९. परीक्षा-दृष्टिसँ आरसी प्रसाद सिंह पर “अनुभूति” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल नियमावली

(B) मुक्तकक सार व्यक्त अनुभवकेँ सामूहिक अनुभूति बनबामे अछि

(C) अनुभूतिक स्थान नहि

(D) केवल नामावली

४७०. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक “अनुभूति” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल नियमावली

(B) मुक्तकक सार व्यक्त अनुभवकेँ सामूहिक अनुभूति बनबामे अछि

(C) अनुभूतिक स्थान नहि

(D) केवल नामावली

४७१. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक अध्ययनमे “रस” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल आदेश

(B) शृङ्गार, करुण आ शान्त भाव आरसीक काव्य-पाठमे संभावित प्रमुख रस-बिन्दु छथि

(C) रसक पूर्ण अभाव

(D) केवल हास्य-शोर

४७२. “रस” केँ आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल आदेश

(B) शृङ्गार, करुण आ शान्त भाव आरसीक काव्य-पाठमे संभावित प्रमुख रस-बिन्दु छथि

(C) रसक पूर्ण अभाव

(D) केवल हास्य-शोर

४७३. नीचाँमे आरसी प्रसाद सिंहक “रस” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल आदेश

(B) शृङ्गार, करुण आ शान्त भाव आरसीक काव्य-पाठमे संभावित प्रमुख रस-बिन्दु छथि

(C) रसक पूर्ण अभाव

(D) केवल हास्य-शोर

४७४. परीक्षा-दृष्टिसँ आरसी प्रसाद सिंह पर “रस” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल आदेश

(B) शृङ्गार, करुण आ शान्त भाव आरसीक काव्य-पाठमे संभावित प्रमुख रस-बिन्दु छथि

(C) रसक पूर्ण अभाव

(D) केवल हास्य-शोर

४७५. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक “रस” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल आदेश

(B) शृङ्गार, करुण आ शान्त भाव आरसीक काव्य-पाठमे संभावित प्रमुख रस-बिन्दु छथि

(C) रसक पूर्ण अभाव

(D) केवल हास्य-शोर

४७६. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक अध्ययनमे “परीक्षा-दृष्टि” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल पृष्ठ-संख्या

(B) आरसी पर उत्तरमे गीतिधर्मिता, भाषा, लय, भाव-गहनता आ सौन्दर्य-दृष्टि जोड़ू

(C) केवल लेखक नाम

(D) केवल प्रकाशन तिथि

४७७. “परीक्षा-दृष्टि” कैँ आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल पृष्ठ-संख्या

(B) आरसी पर उत्तरमे गीतिधर्मिता, भाषा, लय, भाव-गहनता आ सौन्दर्य-दृष्टि जोड़ू

(C) केवल लेखक नाम

(D) केवल प्रकाशन तिथि

४७८. नीचाँमे आरसी प्रसाद सिंहक “परीक्षा-दृष्टि” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल पृष्ठ-संख्या

(B) आरसी पर उत्तरमे गीतिधर्मिता, भाषा, लय, भाव-गहनता आ सौन्दर्य-दृष्टि जोड़ू

(C) केवल लेखक नाम

(D) केवल प्रकाशन तिथि

४७९. परीक्षा-दृष्टिसँ आरसी प्रसाद सिंह पर “परीक्षा-दृष्टि” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल पृष्ठ-संख्या

(B) आरसी पर उत्तरमे गीतिधर्मिता, भाषा, लय, भाव-गहनता आ सौन्दर्य-दृष्टि जोड़ू

(C) केवल लेखक नाम

(D) केवल प्रकाशन तिथि

४८०. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक “परीक्षा-दृष्टि” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल पृष्ठ-संख्या

(B) आरसी पर उत्तरमे गीतिधर्मिता, भाषा, लय, भाव-गहनता आ सौन्दर्य-दृष्टि जोड़ू

(C) केवल लेखक नाम

(D) केवल प्रकाशन तिथि

४८१. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक अध्ययनमे “तुलना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल स्थान

(B) आरसीक तुलना करैत समय हुनक गीतात्मक कोमलता आ शिल्प-संयम पर ध्यान देल जाइत अछि

(C) केवल बाहरी परिचय

(D) केवल वेशभूषा

४८२. “तुलना” कैँ आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल स्थान

(B) आरसीक तुलना करैत समय हुनक गीतात्मक कोमलता आ शिल्प-संयम पर ध्यान देल जाइत अछि

(C) केवल बाहरी परिचय

(D) केवल वेशभूषा

४८३. नीचाँमे आरसी प्रसाद सिंहक “तुलना” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल स्थान

(B) आरसीक तुलना करैत समय हुनक गीतात्मक कोमलता आ शिल्प-संयम पर ध्यान देल जाइत अछि

(C) केवल बाहरी परिचय

(D) केवल वेशभूषा

४८४. परीक्षा-दृष्टिसँ आरसी प्रसाद सिंह पर “तुलना” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल स्थान

(B) आरसीक तुलना करैत समय हुनक गीतात्मक कोमलता आ शिल्प-संयम पर ध्यान देल जाइत अछि

(C) केवल बाहरी परिचय

(D) केवल वेशभूषा

४८५. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक “तुलना” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल स्थान

(B) आरसीक तुलना करैत समय हुनक गीतात्मक कोमलता आ शिल्प-संयम पर ध्यान देल जाइत अछि

(C) केवल बाहरी परिचय

(D) केवल वेशभूषा

४८६. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक अध्ययनमे “मुक्तक-पहिचान” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) नाटक-मंच

(B) स्वतन्त्र पंक्ति-समूह, भावक पूर्णता आ लय मुक्तकक पहचान बनैत अछि

(C) कथानक-सप्तक

(D) पात्र-अंक

४८७. “मुक्तक-पहिचान” कैँ आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) नाटक-मंच

(B) स्वतन्त्र पंक्ति-समूह, भावक पूर्णता आ लय मुक्तकक पहचान बनैत अछि

(C) कथानक-सप्तक

(D) पात्र-अंक

४८८. नीचाँमे आरसी प्रसाद सिंहक “मुक्तक-पहिचान” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) नाटक-मंच

(B) स्वतन्त्र पंक्ति-समूह, भावक पूर्णता आ लय मुक्तकक पहचान बनैत अछि

(C) कथानक-सप्तक

(D) पात्र-अंक

४८९. परीक्षा-दृष्टिसँ आरसी प्रसाद सिंह पर “मुक्तक-पहिचान” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) नाटक-मंच

(B) स्वतन्त्र पंक्ति-समूह, भावक पूर्णता आ लय मुक्तकक पहचान बनैत अछि

(C) कथानक-सप्तक

(D) पात्र-अंक

४९०. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक “मुक्तक-पहिचान” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) नाटक-मंच

(B) स्वतन्त्र पंक्ति-समूह, भावक पूर्णता आ लय मुक्तकक पहचान बनैत अछि

(C) कथानक-सप्तक

(D) पात्र-अंक

४९१. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक अध्ययनमे “पाठकीय प्रभाव” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल सूची

(B) मधुर लय आ भाव-सम्पन्नता पाठकक मनमे दीर्घ प्रभाव छोड़ैत अछि

(C) प्रभावक अभाव

(D) केवल आँकड़ा

४९२. “पाठकीय प्रभाव” कैँ आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल सूची

(B) मधुर लय आ भाव-सम्पन्नता पाठकक मनमे दीर्घ प्रभाव छोड़ैत अछि

(C) प्रभावक अभाव

(D) केवल आँकड़ा

४९३. नीचाँमे आरसी प्रसाद सिंहक “पाठकीय प्रभाव” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल सूची

(B) मधुर लय आ भाव-सम्पन्नता पाठकक मनमे दीर्घ प्रभाव छोड़ैत अछि

(C) प्रभावक अभाव

(D) केवल आँकड़ा

४९४. परीक्षा-दृष्टिसँ आरसी प्रसाद सिंह पर “पाठकीय प्रभाव” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल सूची

(B) मधुर लय आ भाव-सम्पन्नता पाठकक मनमे दीर्घ प्रभाव छोड़ैत अछि

(C) प्रभावक अभाव

(D) केवल आँकड़ा

४९५. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक “पाठकीय प्रभाव” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल सूची

(B) मधुर लय आ भाव-सम्पन्नता पाठकक मनमे दीर्घ प्रभाव छोड़ैत अछि

(C) प्रभावक अभाव

(D) केवल आँकड़ा

४९६. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक अध्ययनमे “समग्र मूल्य” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल शिल्पी

(B) आरसी प्रसाद सिंह मुक्तकक गीतात्मक, सौन्दर्यपरक आ मानवीय रूप बुझबामे महत्त्वपूर्ण छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल इतिहासकार

४९७. “समग्र मूल्य” कैं आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल शिल्पी

(B) आरसी प्रसाद सिंह मुक्तकक गीतात्मक, सौन्दर्यपरक आ मानवीय रूप बुझबामे महत्त्वपूर्ण छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल इतिहासकार

४९८. नीचाँमे आरसी प्रसाद सिंहक “समग्र मूल्य” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल शिल्पी

(B) आरसी प्रसाद सिंह मुक्तकक गीतात्मक, सौन्दर्यपरक आ मानवीय रूप बुझबामे महत्त्वपूर्ण छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल इतिहासकार

४९९. परीक्षा-दृष्टिसँ आरसी प्रसाद सिंह पर “समग्र मूल्य” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल शिल्पी

(B) आरसी प्रसाद सिंह मुक्तकक गीतात्मक, सौन्दर्यपरक आ मानवीय रूप बुझबामे महत्त्वपूर्ण छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल इतिहासकार

५००. आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तकक “समग्र मूल्य” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल शिल्पी

(B) आरसी प्रसाद सिंह मुक्तकक गीतात्मक, सौन्दर्यपरक आ मानवीय रूप बुझबामे महत्त्वपूर्ण छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल इतिहासकार

sec5

५०१. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक अध्ययनमे “अमर परिचय” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल गणितज्ञ

(B) चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क अध्ययनमे कवि, गद्यकार, सम्पादकीय चेतना आ साहित्य-अनुसंधानक व्यापकता देखल जाइत अछि

(C) केवल एक मंच-कलाकार

(D) केवल व्यापारी

५०२. “अमर परिचय” कैं चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल गणितज्ञ

(B) चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क अध्ययनमे कवि, गद्यकार, सम्पादकीय चेतना आ साहित्य-अनुसंधानक व्यापकता देखल जाइत अछि

(C) केवल एक मंच-कलाकार

(D) केवल व्यापारी

५०३. नीचाँमे चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क “अमर परिचय” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल गणितज्ञ

(B) चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क अध्ययनमे कवि, गद्यकार, सम्पादकीय चेतना आ साहित्य-अनुसंधानक व्यापकता देखल जाइत अछि

(C) केवल एक मंच-कलाकार

(D) केवल व्यापारी

५०४. परीक्षा-दृष्टिसँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’ पर “अमर परिचय” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल गणितज्ञ

(B) चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क अध्ययनमे कवि, गद्यकार, सम्पादकीय चेतना आ साहित्य-अनुसंधानक व्यापकता देखल जाइत अछि

(C) केवल एक मंच-कलाकार

(D) केवल व्यापारी

५०५. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक “अमर परिचय” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल गणितज्ञ

(B) चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क अध्ययनमे कवि, गद्यकार, सम्पादकीय चेतना आ साहित्य-अनुसंधानक व्यापकता देखल जाइत अछि

(C) केवल एक मंच-कलाकार

(D) केवल व्यापारी

५०६. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक अध्ययनमे “ऋतु-चेतना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल कार्यालयी पत्र

(B) अमरक काव्य-पाठमे ऋतु, प्रकृति, समय आ जीवन-लयक सूक्ष्म सम्बन्ध विशेष ध्यानयोग्य अछि

(C) ऋतु-विरोध

(D) केवल युद्ध-सूची

५०७. “ऋतु-चेतना” कैँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल कार्यालयी पत्र

(B) अमरक काव्य-पाठमे ऋतु, प्रकृति, समय आ जीवन-लयक सूक्ष्म सम्बन्ध विशेष ध्यानयोग्य अछि

(C) ऋतु-विरोध

(D) केवल युद्ध-सूची

५०८. नीचाँमे चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क “ऋतु-चेतना” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल कार्यालयी पत्र

(B) अमरक काव्य-पाठमे ऋतु, प्रकृति, समय आ जीवन-लयक सूक्ष्म सम्बन्ध विशेष ध्यानयोग्य अछि

(C) ऋतु-विरोध

(D) केवल युद्ध-सूची

५०९. परीक्षा-दृष्टिसँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’ पर “ऋतु-चेतना” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल कार्यालयी पत्र

(B) अमरक काव्य-पाठमे ऋतु, प्रकृति, समय आ जीवन-लयक सूक्ष्म सम्बन्ध विशेष ध्यानयोग्य अछि

(C) ऋतु-विरोध

(D) केवल युद्ध-सूची

५१०. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक “ऋतु-चेतना” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल कार्यालयी पत्र

(B) अमरक काव्य-पाठमे ऋतु, प्रकृति, समय आ जीवन-लयक सूक्ष्म सम्बन्ध विशेष ध्यानयोग्य अछि

(C) ऋतु-विरोध

(D) केवल युद्ध-सूची

५११. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक अध्ययनमे “भाषा-संस्कार” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल संख्यात्मक संकेत

(B) हुनक मुक्तकमे संस्कारित मैथिली, ध्वनि-संयम आ भावक परिपक्वता महत्त्वपूर्ण अछि

(C) असंस्कारित बिखराव

(D) शब्दहीनता

५१२. “भाषा-संस्कार” कैँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल संख्यात्मक संकेत

(B) हुनक मुक्तकमे संस्कारित मैथिली, ध्वनि-संयम आ भावक परिपक्वता महत्त्वपूर्ण अछि

(C) असंस्कारित बिखराव

(D) शब्दहीनता

५१३. नीचाँमे चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क “भाषा-संस्कार” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल संख्यात्मक संकेत

(B) हुनक मुक्तकमे संस्कारित मैथिली, ध्वनि-संयम आ भावक परिपक्वता महत्त्वपूर्ण अछि

(C) असंस्कारित बिखराव

(D) शब्दहीनता

५१४. परीक्षा-दृष्टिसँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’ पर “भाषा-संस्कार” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल संख्यात्मक संकेत

(B) हुनक मुक्तकमे संस्कारित मैथिली, ध्वनि-संयम आ भावक परिपक्वता महत्त्वपूर्ण अछि

(C) असंस्कारित बिखराव

(D) शब्दहीनता

५१५. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक “भाषा-संस्कार” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल संख्यात्मक संकेत

(B) हुनक मुक्तकमे संस्कारित मैथिली, ध्वनि-संयम आ भावक परिपक्वता महत्त्वपूर्ण अछि

(C) असंस्कारित बिखराव

(D) शब्दहीनता

५१६. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक अध्ययनमे “परम्परा-दृष्टि” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल खेल-सूची

(B) अमरक अध्ययनमे पुरान काव्य-संस्कार आ आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टि बीच संवाद देखल जाइत अछि

(C) परम्पराक निषेध

(D) केवल तत्कालिक समाचार

५१७. “परम्परा-दृष्टि” कैँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल खेल-सूची

(B) अमरक अध्ययनमे पुरान काव्य-संस्कार आ आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टि बीच संवाद देखल जाइत अछि

(C) परम्पराक निषेध

(D) केवल तत्कालिक समाचार

५१८. नीचाँमे चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क “परम्परा-दृष्टि” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल खेल-सूची

(B) अमरक अध्ययनमे पुरान काव्य-संस्कार आ आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टि बीच संवाद देखल जाइत अछि

(C) परम्पराक निषेध

(D) केवल तत्कालिक समाचार

५१९. परीक्षा-दृष्टिसँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’ पर “परम्परा-दृष्टि” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल खेल-सूची

(B) अमरक अध्ययनमे पुरान काव्य-संस्कार आ आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टि बीच संवाद देखल जाइत अछि

(C) परम्पराक निषेध

(D) केवल तत्कालिक समाचार

५२०. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक “परम्परा-दृष्टि” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल खेल-सूची

(B) अमरक अध्ययनमे पुरान काव्य-संस्कार आ आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टि बीच संवाद देखल जाइत अछि

(C) परम्पराक निषेध

(D) केवल तत्कालिक समाचार

५२१. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक अध्ययनमे “प्रकृति-बिम्ब” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल तिथि

(B) बादर, पवन, ऋतु, फूल, नदी आदि बिम्ब जीवन-भावक संकेत बनि सकैत अछि

(C) बिम्बक कोनो महत्त्व नहि

(D) केवल व्यापारिक चिन्ह

५२२. “प्रकृति-बिम्ब” कैँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल तिथि

(B) बादर, पवन, ऋतु, फूल, नदी आदि बिम्ब जीवन-भावक संकेत बनि सकैत अछि

(C) बिम्बक कोनो महत्त्व नहि

(D) केवल व्यापारिक चिन्ह

५२३. नीचाँमे चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क “प्रकृति-बिम्ब” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल तिथि

(B) बादर, पवन, ऋतु, फूल, नदी आदि बिम्ब जीवन-भावक संकेत बनि सकैत अछि

(C) बिम्बक कोनो महत्त्व नहि

(D) केवल व्यापारिक चिन्ह

५२४. परीक्षा-दृष्टिसँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’ पर “प्रकृति-बिम्ब” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल तिथि

(B) बादर, पवन, ऋतु, फूल, नदी आदि बिम्ब जीवन-भावक संकेत बनि सकैत अछि

(C) बिम्बक कोनो महत्त्व नहि

(D) केवल व्यापारिक चिन्ह

५२५. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक “प्रकृति-बिम्ब” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल तिथि

(B) बादर, पवन, ऋतु, फूल, नदी आदि बिम्ब जीवन-भावक संकेत बनि सकैत अछि

(C) बिम्बक कोनो महत्त्व नहि

(D) केवल व्यापारिक चिन्ह

५२६. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक अध्ययनमे “पत्रकारिता-बोध” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल कराधान

(B) अमरक साहित्यिक व्यक्तित्वमे कविता संग पत्रकारिता आ दस्तावेजी दृष्टि सेहो महत्त्वपूर्ण अछि

(C) दस्तावेजी दृष्टिक अभाव

(D) केवल नृत्य

५२७. “पत्रकारिता-बोध” कैँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल कराधान

(B) अमरक साहित्यिक व्यक्तित्वमे कविता संग पत्रकारिता आ दस्तावेजी दृष्टि सेहो महत्त्वपूर्ण अछि

(C) दस्तावेजी दृष्टिक अभाव

(D) केवल नृत्य

५२८. नीचाँमे चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क “पत्रकारिता-बोध” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल कराधान

(B) अमरक साहित्यिक व्यक्तित्वमे कविता संग पत्रकारिता आ दस्तावेजी दृष्टि सेहो महत्त्वपूर्ण अछि

(C) दस्तावेजी दृष्टिक अभाव

(D) केवल नृत्य

५२९. परीक्षा-दृष्टिसँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’ पर “पत्रकारिता-बोध” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल कराधान

(B) अमरक साहित्यिक व्यक्तित्वमे कविता संग पत्रकारिता आ दस्तावेजी दृष्टि सेहो महत्त्वपूर्ण अछि

(C) दस्तावेजी दृष्टिक अभाव

(D) केवल नृत्य

५३०. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक “पत्रकारिता-बोध” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल कराधान

(B) अमरक साहित्यिक व्यक्तित्वमे कविता संग पत्रकारिता आ दस्तावेजी दृष्टि सेहो महत्त्वपूर्ण अछि

(C) दस्तावेजी दृष्टिक अभाव

(D) केवल नृत्य

५३१. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक अध्ययनमे “अनुसंधान” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल मौखिक अफवाह

(B) हुनक अध्ययनमे स्रोत-जागरूकता, साहित्यिक इतिहास आ प्रमाण-दृष्टि कैँ महत्व देल जाइत अछि

(C) स्रोतक जरूरत नहि

(D) केवल कल्पना

५३२. “अनुसंधान” कैँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल मौखिक अफवाह

(B) हुनक अध्ययनमे स्रोत-जागरूकता, साहित्यिक इतिहास आ प्रमाण-दृष्टि कैँ महत्व देल जाइत अछि

(C) स्रोतक जरूरत नहि

(D) केवल कल्पना

५३३. नीचाँमे चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क “अनुसंधान” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल मौखिक अफवाह

(B) हुनक अध्ययनमे स्रोत-जागरूकता, साहित्यिक इतिहास आ प्रमाण-दृष्टि कैँ महत्व देल जाइत अछि

(C) स्रोतक जरूरत नहि

(D) केवल कल्पना

५३४. परीक्षा-दृष्टिसँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’ पर “अनुसंधान” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल मौखिक अफवाह

(B) हुनक अध्ययनमे स्रोत-जागरूकता, साहित्यिक इतिहास आ प्रमाण-दृष्टि कैँ महत्व देल जाइत अछि

(C) स्रोतक जरूरत नहि

(D) केवल कल्पना

५३५. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक “अनुसंधान” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल मौखिक अफवाह

(B) हुनक अध्ययनमे स्रोत-जागरूकता, साहित्यिक इतिहास आ प्रमाण-दृष्टि कैँ महत्व देल जाइत अछि

(C) स्रोतक जरूरत नहि

(D) केवल कल्पना

५३६. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक अध्ययनमे “मुक्तकक कसौटी” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) नाटकक संवाद मात्र

(B) अमरक मुक्तक-पाठमे भाव-एकाग्रता, भाषा-सौष्ठव आ लयक संयोजन देखल जाइत अछि

(C) असीमित फैलाव

(D) केवल पात्र-सूची

५३७. “मुक्तकक कसौटी” कैँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) नाटकक संवाद मात्र

(B) अमरक मुक्तक-पाठमे भाव-एकाग्रता, भाषा-सौष्ठव आ लयक संयोजन देखल जाइत अछि

(C) असीमित फैलाव

(D) केवल पात्र-सूची

५३८. नीचाँमे चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क “मुक्तकक कसौटी” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) नाटकक संवाद मात्र

(B) अमरक मुक्तक-पाठमे भाव-एकाग्रता, भाषा-सौष्ठव आ लयक संयोजन देखल जाइत अछि

(C) असीमित फैलाव

(D) केवल पात्र-सूची

५३९. परीक्षा-दृष्टिसँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’ पर “मुक्तकक कसौटी” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) नाटकक संवाद मात्र

(B) अमरक मुक्तक-पाठमे भाव-एकाग्रता, भाषा-सौष्ठव आ लयक संयोजन देखल जाइत अछि

(C) असीमित फैलाव

(D) केवल पात्र-सूची

५४०. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक “मुक्तकक कसौटी” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) नाटकक संवाद मात्र

(B) अमरक मुक्तक-पाठमे भाव-एकाग्रता, भाषा-सौष्ठव आ लयक संयोजन देखल जाइत अछि

(C) असीमित फैलाव

(D) केवल पात्र-सूची

५४१. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक अध्ययनमे “कला-संयम” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) आकारक प्रदर्शन

(B) छोट कविता मे शब्दक संयम रचनाक सौन्दर्य आ अर्थ-गहनता बढ़बैत अछि

(C) असंयम ही गुण

(D) लम्बाइ मात्र

५४२. “कला-संयम” कैँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) आकारक प्रदर्शन

(B) छोट कविता मे शब्दक संयम रचनाक सौन्दर्य आ अर्थ-गहनता बढ़बैत अछि

(C) असंयम ही गुण

(D) लम्बाइ मात्र

५४३. नीचाँमे चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क “कला-संयम” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) आकारक प्रदर्शन

(B) छोट कविता मे शब्दक संयम रचनाक सौन्दर्य आ अर्थ-गहनता बढ़बैत अछि

(C) असंयम ही गुण

(D) लम्बाइ मात्र

५४४. परीक्षा-दृष्टिसँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’ पर “कला-संयम” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) आकारक प्रदर्शन

(B) छोट कविता मे शब्दक संयम रचनाक सौन्दर्य आ अर्थ-गहनता बढ़बैत अछि

(C) असंयम ही गुण

(D) लम्बाइ मात्र

५४५. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक “कला-संयम” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) आकारक प्रदर्शन

(B) छोट कविता मे शब्दक संयम रचनाक सौन्दर्य आ अर्थ-गहनता बढ़बैत अछि

(C) असंयम ही गुण

(D) लम्बाइ मात्र

५४६. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक अध्ययनमे “समय-बोध” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल मूल्य-सूची

(B) ऋतु वा समयक बदलाहट मनुष्यक भाव-परिवर्तनक प्रतीक बनि सकैत अछि

(C) समय अप्रासंगिक

(D) केवल नक्शा

५४७. “समय-बोध” कैँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल मूल्य-सूची

(B) ऋतु वा समयक बदलाहट मनुष्यक भाव-परिवर्तनक प्रतीक बनि सकैत अछि

(C) समय अप्रासंगिक

(D) केवल नक्शा

५४८. नीचाँमे चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क “समय-बोध” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल मूल्य-सूची

(B) ऋतु वा समयक बदलाहट मनुष्यक भाव-परिवर्तनक प्रतीक बनि सकैत अछि

(C) समय अप्रासंगिक

(D) केवल नक्शा

५४९. परीक्षा-दृष्टिसँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’ पर “समय-बोध” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल मूल्य-सूची

(B) ऋतु वा समयक बदलाहट मनुष्यक भाव-परिवर्तनक प्रतीक बनि सकैत अछि

(C) समय अप्रासंगिक

(D) केवल नक्शा

५५०. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक “समय-बोध” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल मूल्य-सूची

(B) ऋतु वा समयक बदलाहट मनुष्यक भाव-परिवर्तनक प्रतीक बनि सकैत अछि

(C) समय अप्रासंगिक

(D) केवल नक्शा

५५१. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक अध्ययनमे “समीक्षा-दृष्टि” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल शीर्षक दोहरायब

(B) अमर पर उत्तरमे काव्यक संग साहित्येतिहास, पत्रकारिता आ प्रकृति-चेतना जोड़ब उपयोगी अछि

(C) केवल नाम लिखब

(D) केवल पन्ना गिनब

५५२. “समीक्षा-दृष्टि” कैँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल शीर्षक दोहरायब

(B) अमर पर उत्तरमे काव्यक संग साहित्येतिहास, पत्रकारिता आ प्रकृति-चेतना जोड़ब उपयोगी अछि

(C) केवल नाम लिखब

(D) केवल पन्ना गिनब

५५३. नीचाँमे चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क “समीक्षा-दृष्टि” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल शीर्षक दोहरायब

(B) अमर पर उत्तरमे काव्यक संग साहित्येतिहास, पत्रकारिता आ प्रकृति-चेतना जोड़ब उपयोगी अछि

(C) केवल नाम लिखब

(D) केवल पन्ना गिनब

५५४. परीक्षा-दृष्टिसँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’ पर “समीक्षा-दृष्टि” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल शीर्षक दोहरायब

(B) अमर पर उत्तरमे काव्यक संग साहित्येतिहास, पत्रकारिता आ प्रकृति-चेतना जोड़ब उपयोगी अछि

(C) केवल नाम लिखब

(D) केवल पन्ना गिनब

५५५. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक “समीक्षा-दृष्टि” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल शीर्षक दोहरायब

(B) अमर पर उत्तरमे काव्यक संग साहित्येतिहास, पत्रकारिता आ प्रकृति-चेतना जोड़ब उपयोगी अछि

(C) केवल नाम लिखब

(D) केवल पन्ना गिनब

५५६. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक अध्ययनमे “भाषिक परिष्कार” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल सारणी

(B) वाक्य-संयोजन, शब्द-चयन आ ध्वनि-अनुरणन अमरक काव्य-पहचान बनि सकैत अछि

(C) भाषिक अव्यवस्था

(D) केवल संकेत-चित्र

५५७. “भाषिक परिष्कार” कैँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल सारणी

(B) वाक्य-संयोजन, शब्द-चयन आ ध्वनि-अनुरणन अमरक काव्य-पहचान बनि सकैत अछि

(C) भाषिक अव्यवस्था

(D) केवल संकेत-चित्र

५५८. नीचाँमे चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क “भाषिक परिष्कार” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल सारणी

(B) वाक्य-संयोजन, शब्द-चयन आ ध्वनि-अनुरणन अमरक काव्य-पहचान बनि सकैत अछि

(C) भाषिक अव्यवस्था

(D) केवल संकेत-चित्र

५५९. परीक्षा-दृष्टिसँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’ पर “भाषिक परिष्कार” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल सारणी

(B) वाक्य-संयोजन, शब्द-चयन आ ध्वनि-अनुरणन अमरक काव्य-पहचान बनि सकैत अछि

(C) भाषिक अव्यवस्था

(D) केवल संकेत-चित्र

५६०. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक “भाषिक परिष्कार” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल सारणी

(B) वाक्य-संयोजन, शब्द-चयन आ ध्वनि-अनुरणन अमरक काव्य-पहचान बनि सकैत अछि

(C) भाषिक अव्यवस्था

(D) केवल संकेत-चित्र

५६१. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक अध्ययनमे “लोक आ शास्त्र” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल व्यापार

(B) अमरक काव्य-पाठमे लोक-जीवनक अनुभूति आ शास्त्रीय संस्कारक मिलन देखल जा सकैत अछि

(C) लोक-शास्त्र दुनू निषिद्ध

(D) केवल गणित

५६२. “लोक आ शास्त्र” कैँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल व्यापार

(B) अमरक काव्य-पाठमे लोक-जीवनक अनुभूति आ शास्त्रीय संस्कारक मिलन देखल जा सकैत अछि

(C) लोक-शास्त्र दुनू निषिद्ध

(D) केवल गणित

५६३. नीचाँमे चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क “लोक आ शास्त्र” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल व्यापार

(B) अमरक काव्य-पाठमे लोक-जीवनक अनुभूति आ शास्त्रीय संस्कारक मिलन देखल जा सकैत अछि

(C) लोक-शास्त्र दुनू निषिद्ध

(D) केवल गणित

५६४. परीक्षा-दृष्टिसँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’ पर “लोक आ शास्त्र” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल व्यापार

(B) अमरक काव्य-पाठमे लोक-जीवनक अनुभूति आ शास्त्रीय संस्कारक मिलन देखल जा सकैत अछि

(C) लोक-शास्त्र दुनू निषिद्ध

(D) केवल गणित

५६५. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक “लोक आ शास्त्र” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल व्यापार

(B) अमरक काव्य-पाठमे लोक-जीवनक अनुभूति आ शास्त्रीय संस्कारक मिलन देखल जा सकैत अछि

(C) लोक-शास्त्र दुनू निषिद्ध

(D) केवल गणित

५६६. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक अध्ययनमे “प्रतीक” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल सूची

(B) ऋतु आ प्रकृति प्रतीक काव्यक भावक अर्थ-विस्तार करैत अछि

(C) प्रतीक निरर्थक

(D) केवल शब्दार्थ

५६७. “प्रतीक” कैँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल सूची

(B) ऋतु आ प्रकृति प्रतीक काव्यक भावक अर्थ-विस्तार करैत अछि

(C) प्रतीक निरर्थक

(D) केवल शब्दार्थ

५६८. नीचाँमे चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क “प्रतीक” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल सूची

(B) ऋतु आ प्रकृति प्रतीक काव्यक भावक अर्थ-विस्तार करैत अछि

(C) प्रतीक निरर्थक

(D) केवल शब्दार्थ

५६९. परीक्षा-दृष्टिसँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’ पर “प्रतीक” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल सूची

(B) ऋतु आ प्रकृति प्रतीक काव्यक भावक अर्थ-विस्तार करैत अछि

(C) प्रतीक निरर्थक

(D) केवल शब्दार्थ

५७०. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक “प्रतीक” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल सूची

(B) ऋतु आ प्रकृति प्रतीक काव्यक भावक अर्थ-विस्तार करैत अछि

(C) प्रतीक निरर्थक

(D) केवल शब्दार्थ

५७१. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक अध्ययनमे “स्मरणीयता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल प्रकाशक पता

(B) लयात्मक संक्षिप्तता मुक्तककेँ स्मरणीय बनबैत अछि

(C) अतिविस्तार

(D) केवल फुटनोट

५७२. “स्मरणीयता” केँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल प्रकाशक पता

(B) लयात्मक संक्षिप्तता मुक्तककेँ स्मरणीय बनबैत अछि

(C) अतिविस्तार

(D) केवल फुटनोट

५७३. नीचाँमे चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क “स्मरणीयता” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल प्रकाशक पता

(B) लयात्मक संक्षिप्तता मुक्तककेँ स्मरणीय बनबैत अछि

(C) अतिविस्तार

(D) केवल फुटनोट

५७४. परीक्षा-दृष्टिसँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’ पर “स्मरणीयता” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल प्रकाशक पता

(B) लयात्मक संक्षिप्तता मुक्तककेँ स्मरणीय बनबैत अछि

(C) अतिविस्तार

(D) केवल फुटनोट

५७५. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक “स्मरणीयता” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल प्रकाशक पता

(B) लयात्मक संक्षिप्तता मुक्तककेँ स्मरणीय बनबैत अछि

(C) अतिविस्तार

(D) केवल फुटनोट

५७६. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक अध्ययनमे “तुलना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल पृष्ठ संख्या

(B) अमरक तुलना अन्य कविसँ करैत समय प्रकृति, शोध-दृष्टि आ भाषिक परिपक्वता देखल जाइत अछि

(C) केवल जन्मस्थान

(D) केवल आयु

५७७. “तुलना” कैँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल पृष्ठ संख्या

(B) अमरक तुलना अन्य कविसँ करैत समय प्रकृति, शोध-दृष्टि आ भाषिक परिपक्वता देखल जाइत अछि

(C) केवल जन्मस्थान

(D) केवल आयु

५७८. नीचाँमे चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क “तुलना” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल पृष्ठ संख्या

(B) अमरक तुलना अन्य कविसँ करैत समय प्रकृति, शोध-दृष्टि आ भाषिक परिपक्वता देखल जाइत अछि

(C) केवल जन्मस्थान

(D) केवल आयु

५७९. परीक्षा-दृष्टिसँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’ पर “तुलना” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल पृष्ठ संख्या

(B) अमरक तुलना अन्य कविसँ करैत समय प्रकृति, शोध-दृष्टि आ भाषिक परिपक्वता देखल जाइत अछि

(C) केवल जन्मस्थान

(D) केवल आयु

५८०. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक “तुलना” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल पृष्ठ संख्या

(B) अमरक तुलना अन्य कविसँ करैत समय प्रकृति, शोध-दृष्टि आ भाषिक परिपक्वता देखल जाइत अछि

(C) केवल जन्मस्थान

(D) केवल आयु

५८१. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक अध्ययनमे “परीक्षा-दृष्टि” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल मुद्रण

(B) अमर पर उत्तरमे कवि-व्यक्तित्व, प्रकृति-चित्रण, भाषा, अनुसंधान आ साहित्य-संरक्षणक उल्लेख चाही

(C) केवल एक शब्द

(D) केवल विकल्प संख्या

५८२. “परीक्षा-दृष्टि” कैँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल मुद्रण

(B) अमर पर उत्तरमे कवि-व्यक्तित्व, प्रकृति-चित्रण, भाषा, अनुसंधान आ साहित्य-संरक्षणक उल्लेख चाही

(C) केवल एक शब्द

(D) केवल विकल्प संख्या

५८३. नीचाँमे चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क “परीक्षा-दृष्टि” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल मुद्रण

(B) अमर पर उत्तरमे कवि-व्यक्तित्व, प्रकृति-चित्रण, भाषा, अनुसंधान आ साहित्य-संरक्षणक उल्लेख चाही

(C) केवल एक शब्द

(D) केवल विकल्प संख्या

५८४. परीक्षा-दृष्टिसँ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’ पर “परीक्षा-दृष्टि” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल मुद्रण

(B) अमर पर उत्तरमे कवि-व्यक्तित्व, प्रकृति-चित्रण, भाषा, अनुसंधान आ साहित्य-संरक्षणक उल्लेख चाही

(C) केवल एक शब्द

(D) केवल विकल्प संख्या

५८५. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तकक "परीक्षा-दृष्टि" काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल मुद्रण

(B) अमर पर उत्तरमे कवि-व्यक्तित्व, प्रकृति-चित्रण, भाषा, अनुसंधान आ साहित्य-संरक्षणक उल्लेख चाही

(C) केवल एक शब्द

(D) केवल विकल्प संख्या

५८६. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तकक अध्ययनमे "काव्य-दृष्टि" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) भाषा आवश्यक नहि

(B) काव्य-दृष्टि जीवनक क्षणकेँ अर्थवान बनबैत अछि

(C) क्षणक मूल्य नहि

(D) कविता केवल सूची

५८७. "काव्य-दृष्टि" केँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) भाषा आवश्यक नहि

(B) काव्य-दृष्टि जीवनक क्षणकेँ अर्थवान बनबैत अछि

(C) क्षणक मूल्य नहि

(D) कविता केवल सूची

५८८. नीचाँमे चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क "काव्य-दृष्टि" सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) भाषा आवश्यक नहि

(B) काव्य-दृष्टि जीवनक क्षणकेँ अर्थवान बनबैत अछि

(C) क्षणक मूल्य नहि

(D) कविता केवल सूची

५८९. परीक्षा-दृष्टिसँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' पर "काव्य-दृष्टि" आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) भाषा आवश्यक नहि

(B) काव्य-दृष्टि जीवनक क्षणकेँ अर्थवान बनबैत अछि

(C) क्षणक मूल्य नहि

(D) कविता केवल सूची

५९०. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तकक "काव्य-दृष्टि" काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) भाषा आवश्यक नहि

(B) काव्य-दृष्टि जीवनक क्षणकेँ अर्थवान बनबैत अछि

(C) क्षणक मूल्य नहि

(D) कविता केवल सूची

५९१. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तकक अध्ययनमे "विस्तार" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) अनुभूति निषेध

(B) मुक्तक छोट होइत हुएँ व्यापक अनुभूति जगाबय सकैत अछि

(C) छोट कविता अनिवार्यतः उथली

(D) छोट कविता वर्जित

५९२. "विस्तार" केँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) अनुभूति निषेध

(B) मुक्तक छोट होइत हुएँ व्यापक अनुभूति जगाबय सकैत अछि

(C) छोट कविता अनिवार्यतः उथली

(D) छोट कविता वर्जित

५९३. नीचाँमे चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क "विस्तार" सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) अनुभूति निषेध

(B) मुक्तक छोट होइत हुएँ व्यापक अनुभूति जगाबय सकैत अछि

(C) छोट कविता अनिवार्यतः उथली

(D) छोट कविता वर्जित

५९४. परीक्षा-दृष्टिसँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' पर "विस्तार" आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) अनुभूति निषेध

(B) मुक्तक छोट होइत हुएँ व्यापक अनुभूति जगाबय सकैत अछि

(C) छोट कविता अनिवार्यतः उथली

(D) छोट कविता वर्जित

५९५. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तकक "विस्तार" काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) अनुभूति निषेध

(B) मुक्तक छोट होइत हुएँ व्यापक अनुभूति जगाबय सकैत अछि

(C) छोट कविता अनिवार्यतः उथली

(D) छोट कविता वर्जित

५९६. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तकक अध्ययनमे "समग्र मूल्य" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल शिल्पकार

(B) चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' मुक्तक, प्रकृति-बोध, भाषा-संस्कार आ साहित्यिक अनुसंधानक संयुक्त अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाट्य-निर्देशक

५९७. "समग्र मूल्य" कैँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल शिल्पकार

(B) चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' मुक्तक, प्रकृति-बोध, भाषा-संस्कार आ साहित्यिक अनुसंधानक संयुक्त अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाट्य-निर्देशक

५९८. नीचाँमे चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क "समग्र मूल्य" सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल शिल्पकार

(B) चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' मुक्तक, प्रकृति-बोध, भाषा-संस्कार आ साहित्यिक अनुसंधानक संयुक्त अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाट्य-निर्देशक

५९९. परीक्षा-दृष्टिसँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' पर "समग्र मूल्य" आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल शिल्पकार

(B) चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' मुक्तक, प्रकृति-बोध, भाषा-संस्कार आ साहित्यिक अनुसंधानक संयुक्त अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाट्य-निर्देशक

६००. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तकक "समग्र मूल्य" काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल शिल्पकार

(B) चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' मुक्तक, प्रकृति-बोध, भाषा-संस्कार आ साहित्यिक अनुसंधानक संयुक्त अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाट्य-निर्देशक

sec6

६०१. उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क मुक्तकक अध्ययनमे “मोहन नाम” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल नक्शा

(B) ‘मोहन’ नाम कविता मे आकर्षण, माधुर्य आ भाव-संवेगक संकेतक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

(C) केवल युद्ध-घोष

(D) केवल सरकारी आँकड़ा

६०२. “मोहन नाम” कैँ उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल नक्शा

(B) ‘मोहन’ नाम कविता मे आकर्षण, माधुर्य आ भाव-संवेगक संकेतक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

(C) केवल युद्ध-घोष

(D) केवल सरकारी आँकड़ा

६०३. नीचाँमे उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क “मोहन नाम” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल नक्शा

(B) ‘मोहन’ नाम कविता मे आकर्षण, माधुर्य आ भाव-संवेगक संकेतक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

(C) केवल युद्ध-घोष

(D) केवल सरकारी आँकड़ा

६०४. परीक्षा-दृष्टिसँ उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’ पर “मोहन नाम” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल नक्शा

(B) ‘मोहन’ नाम कविता मे आकर्षण, माधुर्य आ भाव-संवेगक संकेतक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

(C) केवल युद्ध-घोष

(D) केवल सरकारी आँकड़ा

६०५. उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क मुक्तकक “मोहन नाम” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल नक्शा

(B) ‘मोहन’ नाम कविता मे आकर्षण, माधुर्य आ भाव-संवेगक संकेतक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

(C) केवल युद्ध-घोष

(D) केवल सरकारी आँकड़ा

६०६. उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क मुक्तकक अध्ययनमे “मुक्तक-स्वर” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल रिपोर्ट

(B) उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क अध्ययनमे लघु कविता, भाव-संयम आ भाषिक मधुरता पर ध्यान देल जाइत अछि

(C) केवल दीर्घ आख्यान

(D) केवल नाटकक दृश्य

६०७. “मुक्तक-स्वर” कैँ उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल रिपोर्ट

(B) उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क अध्ययनमे लघु कविता, भाव-संयम आ भाषिक मधुरता पर ध्यान देल जाइत अछि

(C) केवल दीर्घ आख्यान

(D) केवल नाटकक दृश्य

६०८. नीचाँमे उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क “मुक्तक-स्वर” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल रिपोर्ट

(B) उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क अध्ययनमे लघु कविता, भाव-संयम आ भाषिक मधुरता पर ध्यान देल जाइत अछि

(C) केवल दीर्घ आख्यान

(D) केवल नाटकक दृश्य

६०९. परीक्षा-दृष्टिसँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' पर "मुक्तक-स्वर" आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल रिपोर्ट

(B) उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क अध्ययनमे लघु कविता, भाव-संयम आ भाषिक मधुरता पर ध्यान देल जाइत अछि

(C) केवल दीर्घ आख्यान

(D) केवल नाटकक दृश्य

६१०. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक "मुक्तक-स्वर" काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल रिपोर्ट

(B) उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क अध्ययनमे लघु कविता, भाव-संयम आ भाषिक मधुरता पर ध्यान देल जाइत अछि

(C) केवल दीर्घ आख्यान

(D) केवल नाटकक दृश्य

६११. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक अध्ययनमे "भाव-माधुर्य" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल आदेश

(B) मोहनक मुक्तकमे कोमल भाव, प्रेम, स्मृति आ जीवन-सौन्दर्यक संकेत देखल जा सकैत अछि

(C) भाव-विरोध

(D) केवल गणना

६१२. "भाव-माधुर्य" कैँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल आदेश

(B) मोहनक मुक्तकमे कोमल भाव, प्रेम, स्मृति आ जीवन-सौन्दर्यक संकेत देखल जा सकैत अछि

(C) भाव-विरोध

(D) केवल गणना

६१३. नीचाँमे उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क "भाव-माधुर्य" सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल आदेश

(B) मोहनक मुक्तकमे कोमल भाव, प्रेम, स्मृति आ जीवन-सौन्दर्यक संकेत देखल जा सकैत अछि

(C) भाव-विरोध

(D) केवल गणना

६१४. परीक्षा-दृष्टिसँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' पर "भाव-माधुर्य" आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल आदेश

(B) मोहनक मुक्तकमे कोमल भाव, प्रेम, स्मृति आ जीवन-सौन्दर्यक संकेत देखल जा सकैत अछि

(C) भाव-विरोध

(D) केवल गणना

६१५. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक "भाव-माधुर्य" काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल आदेश

(B) मोहनक मुक्तकमे कोमल भाव, प्रेम, स्मृति आ जीवन-सौन्दर्यक संकेत देखल जा सकैत अछि

(C) भाव-विरोध

(D) केवल गणना

६१६. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक अध्ययनमे "भाषा" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल विदेशी संकेत

(B) सहज मैथिली, लयात्मक वाक्य आ संक्षिप्त अभिव्यक्ति मुक्तकक पहचान बनैत अछि

(C) शब्दहीनता

(D) असम्बद्ध ध्वनि

६१७. “भाषा” कैँ उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल विदेशी संकेत

(B) सहज मैथिली, लयात्मक वाक्य आ संक्षिप्त अभिव्यक्ति मुक्तकक पहचान बनैत अछि

(C) शब्दहीनता

(D) असम्बद्ध ध्वनि

६१८. नीचाँमे उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क “भाषा” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल विदेशी संकेत

(B) सहज मैथिली, लयात्मक वाक्य आ संक्षिप्त अभिव्यक्ति मुक्तकक पहचान बनैत अछि

(C) शब्दहीनता

(D) असम्बद्ध ध्वनि

६१९. परीक्षा-दृष्टिसँ उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’ पर “भाषा” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल विदेशी संकेत

(B) सहज मैथिली, लयात्मक वाक्य आ संक्षिप्त अभिव्यक्ति मुक्तकक पहचान बनैत अछि

(C) शब्दहीनता

(D) असम्बद्ध ध्वनि

६२०. उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क मुक्तकक “भाषा” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल विदेशी संकेत

(B) सहज मैथिली, लयात्मक वाक्य आ संक्षिप्त अभिव्यक्ति मुक्तकक पहचान बनैत अछि

(C) शब्दहीनता

(D) असम्बद्ध ध्वनि

६२१. उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क मुक्तकक अध्ययनमे “आन्तरिक लय” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल मानचित्र

(B) लय मुक्तककेँ गेय, स्मरणीय आ प्रभावपूर्ण बनबैत अछि

(C) लय निषिद्ध

(D) केवल गद्य सूचना

६२२. “आन्तरिक लय” कैँ उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल मानचित्र

(B) लय मुक्तककेँ गेय, स्मरणीय आ प्रभावपूर्ण बनबैत अछि

(C) लय निषिद्ध

(D) केवल गद्य सूचना

६२३. नीचाँमे उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क “आन्तरिक लय” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल मानचित्र

(B) लय मुक्तककेँ गेय, स्मरणीय आ प्रभावपूर्ण बनबैत अछि

(C) लय निषिद्ध

(D) केवल गद्य सूचना

६२४. परीक्षा-दृष्टिसँ उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’ पर “आन्तरिक लय” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल मानचित्र

(B) लय मुक्तककेँ गेय, स्मरणीय आ प्रभावपूर्ण बनबैत अछि

(C) लय निषिद्ध

(D) केवल गद्य सूचना

६२५. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक "आन्तरिक लय" काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल मानचित्र

(B) लय मुक्तककेँ गेय, स्मरणीय आ प्रभावपूर्ण बनबैत अछि

(C) लय निषिद्ध

(D) केवल गद्य सूचना

६२६. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक अध्ययनमे "प्रकृति-प्रेम" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल वित्तीय लेखा

(B) प्रकृति-सूचक बिम्ब भावक आलम्बन बनि कविता केँ कोमलता देबैत अछि

(C) प्रकृति निरर्थक

(D) केवल मशीन

६२७. "प्रकृति-प्रेम" केँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल वित्तीय लेखा

(B) प्रकृति-सूचक बिम्ब भावक आलम्बन बनि कविता केँ कोमलता देबैत अछि

(C) प्रकृति निरर्थक

(D) केवल मशीन

६२८. नीचाँमे उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क "प्रकृति-प्रेम" सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल वित्तीय लेखा

(B) प्रकृति-सूचक बिम्ब भावक आलम्बन बनि कविता केँ कोमलता देबैत अछि

(C) प्रकृति निरर्थक

(D) केवल मशीन

६२९. परीक्षा-दृष्टिसँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' पर "प्रकृति-प्रेम" आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल वित्तीय लेखा

(B) प्रकृति-सूचक बिम्ब भावक आलम्बन बनि कविता केँ कोमलता देबैत अछि

(C) प्रकृति निरर्थक

(D) केवल मशीन

६३०. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक "प्रकृति-प्रेम" काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल वित्तीय लेखा

(B) प्रकृति-सूचक बिम्ब भावक आलम्बन बनि कविता केँ कोमलता देबैत अछि

(C) प्रकृति निरर्थक

(D) केवल मशीन

६३१. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक अध्ययनमे "मानवीय सम्बन्ध" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल सूखा आदेश

(B) मोहनक काव्य-पाठमे प्रेम, अपनत्व, विरह वा स्मृति जेकाँ भाव महत्त्वपूर्ण भऽ सकैत अछि

(C) सम्बन्धक अभाव

(D) केवल कानूनी भाषा

६३२. "मानवीय सम्बन्ध" केँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल सूखा आदेश

(B) मोहनक काव्य-पाठमे प्रेम, अपनत्व, विरह वा स्मृति जेकाँ भाव महत्त्वपूर्ण भऽ सकैत अछि

(C) सम्बन्धक अभाव

(D) केवल कानूनी भाषा

६३३. नीचाँमे उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क “मानवीय सम्बन्ध” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल सूखा आदेश

(B) मोहनक काव्य-पाठमे प्रेम, अपनत्व, विरह वा स्मृति जेकाँ भाव महत्त्वपूर्ण भऽ सकैत अछि

(C) सम्बन्धक अभाव

(D) केवल कानूनी भाषा

६३४. परीक्षा-दृष्टिसँ उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’ पर “मानवीय सम्बन्ध” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल सूखा आदेश

(B) मोहनक काव्य-पाठमे प्रेम, अपनत्व, विरह वा स्मृति जेकाँ भाव महत्त्वपूर्ण भऽ सकैत अछि

(C) सम्बन्धक अभाव

(D) केवल कानूनी भाषा

६३५. उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क मुक्तकक “मानवीय सम्बन्ध” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल सूखा आदेश

(B) मोहनक काव्य-पाठमे प्रेम, अपनत्व, विरह वा स्मृति जेकाँ भाव महत्त्वपूर्ण भऽ सकैत अछि

(C) सम्बन्धक अभाव

(D) केवल कानूनी भाषा

६३६. उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क मुक्तकक अध्ययनमे “मुक्तकक पूर्णता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल परिशिष्ट

(B) एकटा मुक्तक अपने भीतर आरम्भ, भाव-विकास आ निष्कर्ष धारण कऽ सकैत अछि

(C) सदैव अधूरा

(D) केवल भूमिका

६३७. “मुक्तकक पूर्णता” कैँ उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल परिशिष्ट

(B) एकटा मुक्तक अपने भीतर आरम्भ, भाव-विकास आ निष्कर्ष धारण कऽ सकैत अछि

(C) सदैव अधूरा

(D) केवल भूमिका

६३८. नीचाँमे उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क “मुक्तकक पूर्णता” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल परिशिष्ट

(B) एकटा मुक्तक अपने भीतर आरम्भ, भाव-विकास आ निष्कर्ष धारण कऽ सकैत अछि

(C) सदैव अधूरा

(D) केवल भूमिका

६३९. परीक्षा-दृष्टिसँ उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’ पर “मुक्तकक पूर्णता” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल परिशिष्ट

(B) एकटा मुक्तक अपने भीतर आरम्भ, भाव-विकास आ निष्कर्ष धारण कऽ सकैत अछि

(C) सदैव अधूरा

(D) केवल भूमिका

६४०. उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क मुक्तकक “मुक्तकक पूर्णता” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल परिशिष्ट

(B) एकटा मुक्तक अपने भीतर आरम्भ, भाव-विकास आ निष्कर्ष धारण कऽ सकैत अछि

(C) सदैव अधूरा

(D) केवल भूमिका

६४१. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक अध्ययनमे "प्रतीक" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल तालिका

(B) फूल, पवन, चान, जल वा पथ जेकाँ प्रतीक मनोभाव व्यक्त कऽ सकैत अछि

(C) प्रतीक असम्भव

(D) केवल शाब्दिक नाम

६४२. "प्रतीक" कैँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल तालिका

(B) फूल, पवन, चान, जल वा पथ जेकाँ प्रतीक मनोभाव व्यक्त कऽ सकैत अछि

(C) प्रतीक असम्भव

(D) केवल शाब्दिक नाम

६४३. नीचाँमे उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क "प्रतीक" सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल तालिका

(B) फूल, पवन, चान, जल वा पथ जेकाँ प्रतीक मनोभाव व्यक्त कऽ सकैत अछि

(C) प्रतीक असम्भव

(D) केवल शाब्दिक नाम

६४४. परीक्षा-दृष्टिसँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' पर "प्रतीक" आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल तालिका

(B) फूल, पवन, चान, जल वा पथ जेकाँ प्रतीक मनोभाव व्यक्त कऽ सकैत अछि

(C) प्रतीक असम्भव

(D) केवल शाब्दिक नाम

६४५. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक "प्रतीक" काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल तालिका

(B) फूल, पवन, चान, जल वा पथ जेकाँ प्रतीक मनोभाव व्यक्त कऽ सकैत अछि

(C) प्रतीक असम्भव

(D) केवल शाब्दिक नाम

६४६. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक अध्ययनमे "काव्य-संयम" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल विस्तार

(B) छोट आकार कविसँ चुस्त शब्द-चयन आ अर्थ-सघनता माँगैत अछि

(C) शब्द-विस्फोट ही गुण

(D) अर्थहीनता

६४७. "काव्य-संयम" कैँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल विस्तार

(B) छोट आकार कविसँ चुस्त शब्द-चयन आ अर्थ-सघनता माँगैत अछि

(C) शब्द-विस्फोट ही गुण

(D) अर्थहीनता

६४८. नीचाँमे उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क "काव्य-संयम" सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल विस्तार

(B) छोट आकार कविसँ चुस्त शब्द-चयन आ अर्थ-सघनता माँगैत अछि

(C) शब्द-विस्फोट ही गुण

(D) अर्थहीनता

६४९. परीक्षा-दृष्टिसँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' पर "काव्य-संयम" आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल विस्तार

(B) छोट आकार कविसँ चुस्त शब्द-चयन आ अर्थ-सघनता माँगैत अछि

(C) शब्द-विस्फोट ही गुण

(D) अर्थहीनता

६५०. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक "काव्य-संयम" काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल विस्तार

(B) छोट आकार कविसँ चुस्त शब्द-चयन आ अर्थ-सघनता माँगैत अछि

(C) शब्द-विस्फोट ही गुण

(D) अर्थहीनता

६५१. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक अध्ययनमे "लोक-स्पर्श" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल समाचार

(B) मैथिली मुक्तक लोकलय आ लोक-अनुभवसँ जुड़ि बेसी जीवंत होइत अछि

(C) लोकसँ कटाव

(D) केवल दरबारी भाषा

६५२. "लोक-स्पर्श" कैँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल समाचार

(B) मैथिली मुक्तक लोकलय आ लोक-अनुभवसँ जुड़ि बेसी जीवंत होइत अछि

(C) लोकसँ कटाव

(D) केवल दरबारी भाषा

६५३. नीचाँमे उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क "लोक-स्पर्श" सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल समाचार

(B) मैथिली मुक्तक लोकलय आ लोक-अनुभवसँ जुड़ि बेसी जीवंत होइत अछि

(C) लोकसँ कटाव

(D) केवल दरबारी भाषा

६५४. परीक्षा-दृष्टिसँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' पर "लोक-स्पर्श" आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल समाचार

(B) मैथिली मुक्तक लोकलय आ लोक-अनुभवसँ जुड़ि बेसी जीवंत होइत अछि

(C) लोकसँ कटाव

(D) केवल दरबारी भाषा

६५५. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक "लोक-स्पर्श" काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल समाचार

(B) मैथिली मुक्तक लोकलय आ लोक-अनुभवसँ जुड़ि बेसी जीवंत होइत अछि

(C) लोकसँ कटाव

(D) केवल दरबारी भाषा

६५६. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक अध्ययनमे "सौन्दर्य" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) भाषा अप्रासंगिक

(B) सौन्दर्य केवल दृश्य नहि, भाव, भाषा आ लयक सामंजस्यसँ बनैत अछि

(C) सौन्दर्य केवल रंग

(D) भावक निषेध

६५७. “सौन्दर्य” कैँ उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) भाषा अप्रासंगिक

(B) सौन्दर्य केवल दृश्य नहि, भाव, भाषा आ लयक सामंजस्यसँ बनैत अछि

(C) सौन्दर्य केवल रंग

(D) भावक निषेध

६५८. नीचाँमे उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क “सौन्दर्य” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) भाषा अप्रासंगिक

(B) सौन्दर्य केवल दृश्य नहि, भाव, भाषा आ लयक सामंजस्यसँ बनैत अछि

(C) सौन्दर्य केवल रंग

(D) भावक निषेध

६५९. परीक्षा-दृष्टिसँ उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’ पर “सौन्दर्य” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) भाषा अप्रासंगिक

(B) सौन्दर्य केवल दृश्य नहि, भाव, भाषा आ लयक सामंजस्यसँ बनैत अछि

(C) सौन्दर्य केवल रंग

(D) भावक निषेध

६६०. उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क मुक्तकक “सौन्दर्य” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) भाषा अप्रासंगिक

(B) सौन्दर्य केवल दृश्य नहि, भाव, भाषा आ लयक सामंजस्यसँ बनैत अछि

(C) सौन्दर्य केवल रंग

(D) भावक निषेध

६६१. उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क मुक्तकक अध्ययनमे “आलोचना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल मूल्य

(B) मोहन पर आलोचना लिखैत समय मुक्तकक लघुता, माधुर्य, लय आ प्रतीक देखल जाइत अछि

(C) केवल नाम-दोहराव

(D) केवल पृष्ठ-संख्या

६६२. “आलोचना” कैँ उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल मूल्य

(B) मोहन पर आलोचना लिखैत समय मुक्तकक लघुता, माधुर्य, लय आ प्रतीक देखल जाइत अछि

(C) केवल नाम-दोहराव

(D) केवल पृष्ठ-संख्या

६६३. नीचाँमे उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क “आलोचना” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल मूल्य

(B) मोहन पर आलोचना लिखैत समय मुक्तकक लघुता, माधुर्य, लय आ प्रतीक देखल जाइत अछि

(C) केवल नाम-दोहराव

(D) केवल पृष्ठ-संख्या

६६४. परीक्षा-दृष्टिसँ उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’ पर “आलोचना” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल मूल्य

(B) मोहन पर आलोचना लिखैत समय मुक्तकक लघुता, माधुर्य, लय आ प्रतीक देखल जाइत अछि

(C) केवल नाम-दोहराव

(D) केवल पृष्ठ-संख्या

६६५. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक "आलोचना" काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल मूल्य

(B) मोहन पर आलोचना लिखैत समय मुक्तकक लघुता, माधुर्य, लय आ प्रतीक देखल जाइत अछि

(C) केवल नाम-दोहराव

(D) केवल पृष्ठ-संख्या

६६६. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक अध्ययनमे "छन्द" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल गणित

(B) मुक्तक छन्दबद्ध वा मुक्त लय दुनू रूपमे होइत हुएँ भाव-सम्पूर्ण रहि सकैत अछि

(C) छन्द सदैव अनिवार्य नहि बुझबाक गलती

(D) भावक अभाव

६६७. "छन्द" कैँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल गणित

(B) मुक्तक छन्दबद्ध वा मुक्त लय दुनू रूपमे होइत हुएँ भाव-सम्पूर्ण रहि सकैत अछि

(C) छन्द सदैव अनिवार्य नहि बुझबाक गलती

(D) भावक अभाव

६६८. नीचाँमे उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क "छन्द" सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल गणित

(B) मुक्तक छन्दबद्ध वा मुक्त लय दुनू रूपमे होइत हुएँ भाव-सम्पूर्ण रहि सकैत अछि

(C) छन्द सदैव अनिवार्य नहि बुझबाक गलती

(D) भावक अभाव

६६९. परीक्षा-दृष्टिसँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' पर "छन्द" आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल गणित

(B) मुक्तक छन्दबद्ध वा मुक्त लय दुनू रूपमे होइत हुएँ भाव-सम्पूर्ण रहि सकैत अछि

(C) छन्द सदैव अनिवार्य नहि बुझबाक गलती

(D) भावक अभाव

६७०. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक "छन्द" काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल गणित

(B) मुक्तक छन्दबद्ध वा मुक्त लय दुनू रूपमे होइत हुएँ भाव-सम्पूर्ण रहि सकैत अछि

(C) छन्द सदैव अनिवार्य नहि बुझबाक गलती

(D) भावक अभाव

६७१. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक अध्ययनमे "संवेदना" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) भावहीनता गुण

(B) संवेदना मुक्तकक केन्द्र अछि; ओहि बिना छोट कविता सूखी सूचना बनि जाइत अछि

(C) संवेदना अप्रासंगिक

(D) सूचना ही कविता

६७२. "संवेदना" कैँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) भावहीनता गुण

(B) संवेदना मुक्तकक केन्द्र अछि; ओहि बिना छोट कविता सूखी सूचना बनि जाइत अछि

(C) संवेदना अप्रासंगिक

(D) सूचना ही कविता

६७३. नीचाँमे उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क “संवेदना” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) भावहीनता गुण

(B) संवेदना मुक्तकक केन्द्र अछि; ओहि बिना छोट कविता सूखी सूचना बनि जाइत अछि

(C) संवेदना अप्रासंगिक

(D) सूचना ही कविता

६७४. परीक्षा-दृष्टिसँ उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’ पर “संवेदना” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) भावहीनता गुण

(B) संवेदना मुक्तकक केन्द्र अछि; ओहि बिना छोट कविता सूखी सूचना बनि जाइत अछि

(C) संवेदना अप्रासंगिक

(D) सूचना ही कविता

६७५. उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क मुक्तकक “संवेदना” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) भावहीनता गुण

(B) संवेदना मुक्तकक केन्द्र अछि; ओहि बिना छोट कविता सूखी सूचना बनि जाइत अछि

(C) संवेदना अप्रासंगिक

(D) सूचना ही कविता

६७६. उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क मुक्तकक अध्ययनमे “तुलना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल आकार

(B) मोहनक तुलना गीतिमय कविसँ करैत समय कोमलता आ लयात्मकता प्रमुख रहैत अछि

(C) केवल भूगोल

(D) केवल तारीख

६७७. “तुलना” कैँ उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल आकार

(B) मोहनक तुलना गीतिमय कविसँ करैत समय कोमलता आ लयात्मकता प्रमुख रहैत अछि

(C) केवल भूगोल

(D) केवल तारीख

६७८. नीचाँमे उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क “तुलना” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल आकार

(B) मोहनक तुलना गीतिमय कविसँ करैत समय कोमलता आ लयात्मकता प्रमुख रहैत अछि

(C) केवल भूगोल

(D) केवल तारीख

६७९. परीक्षा-दृष्टिसँ उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’ पर “तुलना” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल आकार

(B) मोहनक तुलना गीतिमय कविसँ करैत समय कोमलता आ लयात्मकता प्रमुख रहैत अछि

(C) केवल भूगोल

(D) केवल तारीख

६८०. उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क मुक्तकक “तुलना” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल आकार

(B) मोहनक तुलना गीतिमय कविसँ करैत समय कोमलता आ लयात्मकता प्रमुख रहैत अछि

(C) केवल भूगोल

(D) केवल तारीख

६८१. उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क मुक्तकक अध्ययनमे “परीक्षा-दृष्टि” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल पुस्तक-मूल्य

(B) उत्तरमे उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क नामक संग मुक्तकक भाव, लय, भाषा आ सौन्दर्य-चेतना जोड़ू

(C) केवल नाम लिखू

(D) केवल क्रमांक

६८२. “परीक्षा-दृष्टि” कैँ उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल पुस्तक-मूल्य

(B) उत्तरमे उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क नामक संग मुक्तकक भाव, लय, भाषा आ सौन्दर्य-चेतना जोड़ू

(C) केवल नाम लिखू

(D) केवल क्रमांक

६८३. नीचाँमे उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क “परीक्षा-दृष्टि” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल पुस्तक-मूल्य

(B) उत्तरमे उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क नामक संग मुक्तकक भाव, लय, भाषा आ सौन्दर्य-चेतना जोड़ू

(C) केवल नाम लिखू

(D) केवल क्रमांक

६८४. परीक्षा-दृष्टिसँ उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’ पर “परीक्षा-दृष्टि” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल पुस्तक-मूल्य

(B) उत्तरमे उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क नामक संग मुक्तकक भाव, लय, भाषा आ सौन्दर्य-चेतना जोड़ू

(C) केवल नाम लिखू

(D) केवल क्रमांक

६८५. उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क मुक्तकक “परीक्षा-दृष्टि” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल पुस्तक-मूल्य

(B) उत्तरमे उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क नामक संग मुक्तकक भाव, लय, भाषा आ सौन्दर्य-चेतना जोड़ू

(C) केवल नाम लिखू

(D) केवल क्रमांक

६८६. उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क मुक्तकक अध्ययनमे “सम्प्रेषण” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल मौन

(B) सुगम भाषा आ गेयता भावकेँ पाठक धरि शीघ्र पहुँचबैत अछि

(C) सम्प्रेषणक जरूरत नहि

(D) केवल कठिनता

६८७. “सम्प्रेषण” कैँ उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल मौन

(B) सुगम भाषा आ गेयता भावकेँ पाठक धरि शीघ्र पहुँचबैत अछि

(C) सम्प्रेषणक जरूरत नहि

(D) केवल कठिनता

६८८. नीचाँमे उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क “सम्प्रेषण” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल मौन

(B) सुगम भाषा आ गेयता भावकेँ पाठक धरि शीघ्र पहुँचबैत अछि

(C) सम्प्रेषणक जरूरत नहि

(D) केवल कठिनता

६८९. परीक्षा-दृष्टिसँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' पर "सम्प्रेषण" आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल मौन

(B) सुगम भाषा आ गेयता भावकेँ पाठक धरि शीघ्र पहुँचबैत अछि

(C) सम्प्रेषणक जरूरत नहि

(D) केवल कठिनता

६९०. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक "सम्प्रेषण" काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल मौन

(B) सुगम भाषा आ गेयता भावकेँ पाठक धरि शीघ्र पहुँचबैत अछि

(C) सम्प्रेषणक जरूरत नहि

(D) केवल कठिनता

६९१. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक अध्ययनमे "पाठकीय प्रभाव" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल रिपोर्ट

(B) मधुर मुक्तक पाठकक स्मृतिमे अल्प शब्दमे दीर्घ भाव छोड़ैत अछि

(C) प्रभाव शून्य

(D) केवल सूचना

६९२. "पाठकीय प्रभाव" केँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल रिपोर्ट

(B) मधुर मुक्तक पाठकक स्मृतिमे अल्प शब्दमे दीर्घ भाव छोड़ैत अछि

(C) प्रभाव शून्य

(D) केवल सूचना

६९३. नीचाँमे उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क "पाठकीय प्रभाव" सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल रिपोर्ट

(B) मधुर मुक्तक पाठकक स्मृतिमे अल्प शब्दमे दीर्घ भाव छोड़ैत अछि

(C) प्रभाव शून्य

(D) केवल सूचना

६९४. परीक्षा-दृष्टिसँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' पर "पाठकीय प्रभाव" आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल रिपोर्ट

(B) मधुर मुक्तक पाठकक स्मृतिमे अल्प शब्दमे दीर्घ भाव छोड़ैत अछि

(C) प्रभाव शून्य

(D) केवल सूचना

६९५. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक "पाठकीय प्रभाव" काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल रिपोर्ट

(B) मधुर मुक्तक पाठकक स्मृतिमे अल्प शब्दमे दीर्घ भाव छोड़ैत अछि

(C) प्रभाव शून्य

(D) केवल सूचना

६९६. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तकक अध्ययनमे "समग्र मूल्य" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल चित्रकार

(B) उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क अध्ययन मुक्तकक कोमल, लयात्मक आ भाव-संयमित पक्ष बुझबामे सहायक अछि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाटककार

६९७. “समग्र मूल्य” कैँ उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल चित्रकार

(B) उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क अध्ययन मुक्तकक कोमल, लयात्मक आ भाव-संयमित पक्ष बुझबामे सहायक अछि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाटककार

६९८. नीचाँमे उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क “समग्र मूल्य” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल चित्रकार

(B) उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क अध्ययन मुक्तकक कोमल, लयात्मक आ भाव-संयमित पक्ष बुझबामे सहायक अछि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाटककार

६९९. परीक्षा-दृष्टिसँ उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’ पर “समग्र मूल्य” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल चित्रकार

(B) उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क अध्ययन मुक्तकक कोमल, लयात्मक आ भाव-संयमित पक्ष बुझबामे सहायक अछि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाटककार

७००. उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क मुक्तकक “समग्र मूल्य” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल चित्रकार

(B) उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क अध्ययन मुक्तकक कोमल, लयात्मक आ भाव-संयमित पक्ष बुझबामे सहायक अछि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाटककार

sec7

७०१. जीवकान्तक मुक्तकक अध्ययनमे “आधुनिक स्वर” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल कार्यालयी पत्र

(B) जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययन आधुनिक जीवन, निजी अनुभूति आ सामाजिक यथार्थक सूक्ष्म संकेत पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि

(C) आधुनिकतासँ असम्बद्ध

(D) केवल पुराणक पुनर्कथन

७०२. “आधुनिक स्वर” कैँ जीवकान्तक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल कार्यालयी पत्र

(B) जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययन आधुनिक जीवन, निजी अनुभूति आ सामाजिक यथार्थक सूक्ष्म संकेत पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि

(C) आधुनिकतासँ असम्बद्ध

(D) केवल पुराणक पुनर्कथन

७०३. नीचाँमे जीवकान्तक “आधुनिक स्वर” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल कार्यालयी पत्र

(B) जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययन आधुनिक जीवन, निजी अनुभूति आ सामाजिक यथार्थक सूक्ष्म संकेत पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि

(C) आधुनिकतासँ असम्बद्ध

(D) केवल पुराणक पुनर्कथन

७०४. परीक्षा-दृष्टिसँ जीवकान्त पर “आधुनिक स्वर” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल कार्यालयी पत्र

(B) जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययन आधुनिक जीवन, निजी अनुभूति आ सामाजिक यथार्थक सूक्ष्म संकेत पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि

(C) आधुनिकतासँ असम्बद्ध

(D) केवल पुराणक पुनर्कथन

७०५. जीवकान्तक मुक्तकक “आधुनिक स्वर” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल कार्यालयी पत्र

(B) जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययन आधुनिक जीवन, निजी अनुभूति आ सामाजिक यथार्थक सूक्ष्म संकेत पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि

(C) आधुनिकतासँ असम्बद्ध

(D) केवल पुराणक पुनर्कथन

७०६. जीवकान्तक मुक्तकक अध्ययनमे “नाम-संकेत” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल हथियार

(B) ‘जीवकान्त’ नाम जीवन-बोध, चेतना आ आन्तरिक आलोकक प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

(C) जीवन-विरोध

(D) केवल गणित

७०७. “नाम-संकेत” कैँ जीवकान्तक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल हथियार

(B) ‘जीवकान्त’ नाम जीवन-बोध, चेतना आ आन्तरिक आलोकक प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

(C) जीवन-विरोध

(D) केवल गणित

७०८. नीचाँमे जीवकान्तक “नाम-संकेत” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल हथियार

(B) ‘जीवकान्त’ नाम जीवन-बोध, चेतना आ आन्तरिक आलोकक प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

(C) जीवन-विरोध

(D) केवल गणित

७०९. परीक्षा-दृष्टिसँ जीवकान्त पर “नाम-संकेत” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल हथियार

(B) ‘जीवकान्त’ नाम जीवन-बोध, चेतना आ आन्तरिक आलोकक प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

(C) जीवन-विरोध

(D) केवल गणित

७१०. जीवकान्तक मुक्तकक “नाम-संकेत” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल हथियार

(B) ‘जीवकान्त’ नाम जीवन-बोध, चेतना आ आन्तरिक आलोकक प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

(C) जीवन-विरोध

(D) केवल गणित

७११. जीवकान्तक मुक्तकक अध्ययनमे “लघुता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) कविता नहि

(B) मुक्तकक छोट रूप जीवकान्तक भावकेँ सघन आ तीक्ष्ण बनबैत अछि

(C) लघुता दोष मात्र

(D) केवल विस्तार

७१२. “लघुता” कैँ जीवकान्तक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) कविता नहि

(B) मुक्तकक छोट रूप जीवकान्तक भावकेँ सघन आ तीक्ष्ण बनबैत अछि

(C) लघुता दोष मात्र

(D) केवल विस्तार

७१३. नीचाँमे जीवकान्तक “लघुता” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) कविता नहि

(B) मुक्तकक छोट रूप जीवकान्तक भावकेँ सघन आ तीक्ष्ण बनबैत अछि

(C) लघुता दोष मात्र

(D) केवल विस्तार

७१४. परीक्षा-दृष्टिसँ जीवकान्त पर “लघुता” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) कविता नहि

(B) मुक्तकक छोट रूप जीवकान्तक भावकेँ सघन आ तीक्ष्ण बनबैत अछि

(C) लघुता दोष मात्र

(D) केवल विस्तार

७१५. जीवकान्तक मुक्तकक “लघुता” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) कविता नहि

(B) मुक्तकक छोट रूप जीवकान्तक भावकेँ सघन आ तीक्ष्ण बनबैत अछि

(C) लघुता दोष मात्र

(D) केवल विस्तार

७१६. जीवकान्तक मुक्तकक अध्ययनमे “अन्तर्मुखता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल खेल

(B) हुनक मुक्तक-पाठमे आत्मानुभूति, अकेलापन, प्रश्न आ संवेदनात्मक बेचैनी देखल जा सकैत अछि

(C) अन्तर्मुखता निषिद्ध

(D) केवल बाज़ार-सूची

७१७. “अन्तर्मुखता” केँ जीवकान्तक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल खेल

(B) हुनक मुक्तक-पाठमे आत्मानुभूति, अकेलापन, प्रश्न आ संवेदनात्मक बेचैनी देखल जा सकैत अछि

(C) अन्तर्मुखता निषिद्ध

(D) केवल बाज़ार-सूची

७१८. नीचाँमे जीवकान्तक “अन्तर्मुखता” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल खेल

(B) हुनक मुक्तक-पाठमे आत्मानुभूति, अकेलापन, प्रश्न आ संवेदनात्मक बेचैनी देखल जा सकैत अछि

(C) अन्तर्मुखता निषिद्ध

(D) केवल बाज़ार-सूची

७१९. परीक्षा-दृष्टिसँ जीवकान्त पर “अन्तर्मुखता” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल खेल

(B) हुनक मुक्तक-पाठमे आत्मानुभूति, अकेलापन, प्रश्न आ संवेदनात्मक बेचैनी देखल जा सकैत अछि

(C) अन्तर्मुखता निषिद्ध

(D) केवल बाज़ार-सूची

७२०. जीवकान्तक मुक्तकक “अन्तर्मुखता” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल खेल

(B) हुनक मुक्तक-पाठमे आत्मानुभूति, अकेलापन, प्रश्न आ संवेदनात्मक बेचैनी देखल जा सकैत अछि

(C) अन्तर्मुखता निषिद्ध

(D) केवल बाज़ार-सूची

७२१. जीवकान्तक मुक्तकक अध्ययनमे “सामाजिक संकेत” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल मौसम

(B) व्यक्ति-भावक भीतर समाज, समय आ व्यवस्था पर सूक्ष्म टिप्पणी भेटि सकैत अछि

(C) समाजक अभाव

(D) केवल निजी नामावली

७२२. “सामाजिक संकेत” कैँ जीवकान्तक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल मौसम

(B) व्यक्ति-भावक भीतर समाज, समय आ व्यवस्था पर सूक्ष्म टिप्पणी भेटि सकैत अछि

(C) समाजक अभाव

(D) केवल निजी नामावली

७२३. नीचाँमे जीवकान्तक “सामाजिक संकेत” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल मौसम

(B) व्यक्ति-भावक भीतर समाज, समय आ व्यवस्था पर सूक्ष्म टिप्पणी भेटि सकैत अछि

(C) समाजक अभाव

(D) केवल निजी नामावली

७२४. परीक्षा-दृष्टिसँ जीवकान्त पर “सामाजिक संकेत” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल मौसम

(B) व्यक्ति-भावक भीतर समाज, समय आ व्यवस्था पर सूक्ष्म टिप्पणी भेटि सकैत अछि

(C) समाजक अभाव

(D) केवल निजी नामावली

७२५. जीवकान्तक मुक्तकक “सामाजिक संकेत” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल मौसम

(B) व्यक्ति-भावक भीतर समाज, समय आ व्यवस्था पर सूक्ष्म टिप्पणी भेटि सकैत अछि

(C) समाजक अभाव

(D) केवल निजी नामावली

७२६. जीवकान्तक मुक्तकक अध्ययनमे “भाषा-प्रयोग” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल संकेतांक

(B) आधुनिक मुक्तकमे सहज, तीक्ष्ण आ अर्थ-सघन मैथिली भाषा प्रभावी होइत अछि

(C) भाषा लापरवाह

(D) शब्दक उपयोग नहि

७२७. “भाषा-प्रयोग” कैँ जीवकान्तक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल संकेतांक

(B) आधुनिक मुक्तकमे सहज, तीक्ष्ण आ अर्थ-सघन मैथिली भाषा प्रभावी होइत अछि

(C) भाषा लापरवाह

(D) शब्दक उपयोग नहि

७२८. नीचाँमे जीवकान्तक “भाषा-प्रयोग” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल संकेतांक

(B) आधुनिक मुक्तकमे सहज, तीक्ष्ण आ अर्थ-सघन मैथिली भाषा प्रभावी होइत अछि

(C) भाषा लापरवाह

(D) शब्दक उपयोग नहि

७२९. परीक्षा-दृष्टिसँ जीवकान्त पर “भाषा-प्रयोग” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल संकेतांक

(B) आधुनिक मुक्तकमे सहज, तीक्ष्ण आ अर्थ-सघन मैथिली भाषा प्रभावी होइत अछि

(C) भाषा लापरवाह

(D) शब्दक उपयोग नहि

७३०. जीवकान्तक मुक्तकक “भाषा-प्रयोग” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल संकेतांक

(B) आधुनिक मुक्तकमे सहज, तीक्ष्ण आ अर्थ-सघन मैथिली भाषा प्रभावी होइत अछि

(C) भाषा लापरवाह

(D) शब्दक उपयोग नहि

७३१. जीवकान्तक मुक्तकक अध्ययनमे “बिम्ब” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल पृष्ठ संख्या

(B) नव बिम्ब आ प्रतीक आधुनिक काव्यक जटिल भावकेँ मूर्त करैत अछि

(C) बिम्ब अनावश्यक

(D) केवल परिभाषा

७३२. “बिम्ब” केँ जीवकान्तक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल पृष्ठ संख्या

(B) नव बिम्ब आ प्रतीक आधुनिक काव्यक जटिल भावकेँ मूर्त करैत अछि

(C) बिम्ब अनावश्यक

(D) केवल परिभाषा

७३३. नीचाँमे जीवकान्तक “बिम्ब” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल पृष्ठ संख्या

(B) नव बिम्ब आ प्रतीक आधुनिक काव्यक जटिल भावकेँ मूर्त करैत अछि

(C) बिम्ब अनावश्यक

(D) केवल परिभाषा

७३४. परीक्षा-दृष्टिसँ जीवकान्त पर “बिम्ब” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल पृष्ठ संख्या

(B) नव बिम्ब आ प्रतीक आधुनिक काव्यक जटिल भावकेँ मूर्त करैत अछि

(C) बिम्ब अनावश्यक

(D) केवल परिभाषा

७३५. जीवकान्तक मुक्तकक “बिम्ब” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल पृष्ठ संख्या

(B) नव बिम्ब आ प्रतीक आधुनिक काव्यक जटिल भावकेँ मूर्त करैत अछि

(C) बिम्ब अनावश्यक

(D) केवल परिभाषा

७३६. जीवकान्तक मुक्तकक अध्ययनमे “व्यंग्य” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल गणना

(B) जीवकान्तक मुक्तकमे सूक्ष्म व्यंग्य समयक विसंगति खोलि सकैत अछि

(C) व्यंग्य असम्भव

(D) केवल स्तुति

७३७. “व्यंग्य” कैं जीवकान्तक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल गणना

(B) जीवकान्तक मुक्तकमे सूक्ष्म व्यंग्य समयक विसंगति खोलि सकैत अछि

(C) व्यंग्य असम्भव

(D) केवल स्तुति

७३८. नीचाँमे जीवकान्तक “व्यंग्य” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल गणना

(B) जीवकान्तक मुक्तकमे सूक्ष्म व्यंग्य समयक विसंगति खोलि सकैत अछि

(C) व्यंग्य असम्भव

(D) केवल स्तुति

७३९. परीक्षा-दृष्टिसँ जीवकान्त पर “व्यंग्य” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल गणना

(B) जीवकान्तक मुक्तकमे सूक्ष्म व्यंग्य समयक विसंगति खोलि सकैत अछि

(C) व्यंग्य असम्भव

(D) केवल स्तुति

७४०. जीवकान्तक मुक्तकक “व्यंग्य” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल गणना

(B) जीवकान्तक मुक्तकमे सूक्ष्म व्यंग्य समयक विसंगति खोलि सकैत अछि

(C) व्यंग्य असम्भव

(D) केवल स्तुति

७४१. जीवकान्तक मुक्तकक अध्ययनमे “शहर-गाम तनाव” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल नाटक-मंच

(B) आधुनिक मैथिली कवितामे गामक स्मृति आ शहरक दबाव बीच तनाव एक प्रश्न-बिन्दु बनैत अछि

(C) तनावक कोनो स्थान नहि

(D) केवल लोकगीत

७४२. “शहर-गाम तनाव” कैं जीवकान्तक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल नाटक-मंच

(B) आधुनिक मैथिली कवितामे गामक स्मृति आ शहरक दबाव बीच तनाव एक प्रश्न-बिन्दु बनैत अछि

(C) तनावक कोनो स्थान नहि

(D) केवल लोकगीत

७४३. नीचाँमे जीवकान्तक “शहर-गाम तनाव” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल नाटक-मंच

(B) आधुनिक मैथिली कवितामे गामक स्मृति आ शहरक दबाव बीच तनाव एक प्रश्न-बिन्दु बनैत अछि

(C) तनावक कोनो स्थान नहि

(D) केवल लोकगीत

७४४. परीक्षा-दृष्टिसँ जीवकान्त पर “शहर-गाम तनाव” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल नाटक-मंच

(B) आधुनिक मैथिली कवितामे गामक स्मृति आ शहरक दबाव बीच तनाव एक प्रश्न-बिन्दु बनैत अछि

(C) तनावक कोनो स्थान नहि

(D) केवल लोकगीत

७४५. जीवकान्तक मुक्तकक “शहर-गाम तनाव” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल नाटक-मंच

(B) आधुनिक मैथिली कवितामे गामक स्मृति आ शहरक दबाव बीच तनाव एक प्रश्न-बिन्दु बनैत अछि

(C) तनावक कोनो स्थान नहि

(D) केवल लोकगीत

७४६. जीवकान्तक मुक्तकक अध्ययनमे “प्रेम आ विडम्बना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) भावक अभाव

(B) प्रेम आधुनिक मुक्तकमे केवल कोमल भाव नहि, बल्कि विडम्बना आ दूरीक अनुभव सेहो बनि सकैत अछि

(C) प्रेम सदैव सरल मात्र

(D) विडम्बना निषिद्ध

७४७. “प्रेम आ विडम्बना” कैं जीवकान्तक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) भावक अभाव

(B) प्रेम आधुनिक मुक्तकमे केवल कोमल भाव नहि, बल्कि विडम्बना आ दूरीक अनुभव सेहो बनि सकैत अछि

(C) प्रेम सदैव सरल मात्र

(D) विडम्बना निषिद्ध

७४८. नीचाँमे जीवकान्तक “प्रेम आ विडम्बना” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) भावक अभाव

(B) प्रेम आधुनिक मुक्तकमे केवल कोमल भाव नहि, बल्कि विडम्बना आ दूरीक अनुभव सेहो बनि सकैत अछि

(C) प्रेम सदैव सरल मात्र

(D) विडम्बना निषिद्ध

७४९. परीक्षा-दृष्टिसँ जीवकान्त पर “प्रेम आ विडम्बना” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) भावक अभाव

(B) प्रेम आधुनिक मुक्तकमे केवल कोमल भाव नहि, बल्कि विडम्बना आ दूरीक अनुभव सेहो बनि सकैत अछि

(C) प्रेम सदैव सरल मात्र

(D) विडम्बना निषिद्ध

७५०. जीवकान्तक मुक्तकक “प्रेम आ विडम्बना” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) भावक अभाव

(B) प्रेम आधुनिक मुक्तकमे केवल कोमल भाव नहि, बल्कि विडम्बना आ दूरीक अनुभव सेहो बनि सकैत अछि

(C) प्रेम सदैव सरल मात्र

(D) विडम्बना निषिद्ध

७५१. जीवकान्तक मुक्तकक अध्ययनमे “समय-बोध” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल आदेश

(B) वर्तमान समयक बेचैनी, असुरक्षा आ प्रश्नाकुलता मुक्तकमे समाहित भऽ सकैत अछि

(C) समयक संकेत नहि

(D) केवल अतीत-सूची

७५२. “समय-बोध” कैं जीवकान्तक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल आदेश

(B) वर्तमान समयक बेचैनी, असुरक्षा आ प्रश्नाकुलता मुक्तकमे समाहित भऽ सकैत अछि

(C) समयक संकेत नहि

(D) केवल अतीत-सूची

७५३. नीचाँमे जीवकान्तक “समय-बोध” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल आदेश

(B) वर्तमान समयक बेचैनी, असुरक्षा आ प्रश्नाकुलता मुक्तकमे समाहित भऽ सकैत अछि

(C) समयक संकेत नहि

(D) केवल अतीत-सूची

७५४. परीक्षा-दृष्टिसँ जीवकान्त पर “समय-बोध” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल आदेश

(B) वर्तमान समयक बेचैनी, असुरक्षा आ प्रश्नाकुलता मुक्तकमे समाहित भऽ सकैत अछि

(C) समयक संकेत नहि

(D) केवल अतीत-सूची

७५५. जीवकान्तक मुक्तकक “समय-बोध” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल आदेश

(B) वर्तमान समयक बेचैनी, असुरक्षा आ प्रश्नाकुलता मुक्तकमे समाहित भऽ सकैत अछि

(C) समयक संकेत नहि

(D) केवल अतीत-सूची

७५६. जीवकान्तक मुक्तकक अध्ययनमे “आलोचना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल लेखकक पता

(B) जीवकान्त पर उत्तरमे आधुनिकता, आत्म-बोध, प्रतीक, भाषा-सघनता आ समाज-संकेत लिखब उचित अछि

(C) केवल नाम दोहराबू

(D) केवल तिथि

७५७. “आलोचना” कैँ जीवकान्तक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल लेखकक पता

(B) जीवकान्त पर उत्तरमे आधुनिकता, आत्म-बोध, प्रतीक, भाषा-सघनता आ समाज-संकेत लिखब उचित अछि

(C) केवल नाम दोहराबू

(D) केवल तिथि

७५८. नीचाँमे जीवकान्तक “आलोचना” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल लेखकक पता

(B) जीवकान्त पर उत्तरमे आधुनिकता, आत्म-बोध, प्रतीक, भाषा-सघनता आ समाज-संकेत लिखब उचित अछि

(C) केवल नाम दोहराबू

(D) केवल तिथि

७५९. परीक्षा-दृष्टिसँ जीवकान्त पर “आलोचना” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल लेखकक पता

(B) जीवकान्त पर उत्तरमे आधुनिकता, आत्म-बोध, प्रतीक, भाषा-सघनता आ समाज-संकेत लिखब उचित अछि

(C) केवल नाम दोहराबू

(D) केवल तिथि

७६०. जीवकान्तक मुक्तकक “आलोचना” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल लेखकक पता

(B) जीवकान्त पर उत्तरमे आधुनिकता, आत्म-बोध, प्रतीक, भाषा-सघनता आ समाज-संकेत लिखब उचित अछि

(C) केवल नाम दोहराबू

(D) केवल तिथि

७६१. जीवकान्तक मुक्तकक अध्ययनमे “रूप” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल संवाद

(B) स्वतन्त्र मुक्तक रूप विचारकेँ लम्बा आख्यान बिना प्रभावी बना सकैत अछि

(C) रूपक अर्थ नहि

(D) केवल प्रबन्ध

७६२. “रूप” केँ जीवकान्तक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल संवाद

(B) स्वतन्त्र मुक्तक रूप विचारकेँ लम्बा आख्यान बिना प्रभावी बना सकैत अछि

(C) रूपक अर्थ नहि

(D) केवल प्रबन्ध

७६३. नीचाँमे जीवकान्तक “रूप” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल संवाद

(B) स्वतन्त्र मुक्तक रूप विचारकेँ लम्बा आख्यान बिना प्रभावी बना सकैत अछि

(C) रूपक अर्थ नहि

(D) केवल प्रबन्ध

७६४. परीक्षा-दृष्टिसँ जीवकान्त पर “रूप” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल संवाद

(B) स्वतन्त्र मुक्तक रूप विचारकेँ लम्बा आख्यान बिना प्रभावी बना सकैत अछि

(C) रूपक अर्थ नहि

(D) केवल प्रबन्ध

७६५. जीवकान्तक मुक्तकक “रूप” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल संवाद

(B) स्वतन्त्र मुक्तक रूप विचारकेँ लम्बा आख्यान बिना प्रभावी बना सकैत अछि

(C) रूपक अर्थ नहि

(D) केवल प्रबन्ध

७६६. जीवकान्तक मुक्तकक अध्ययनमे “ध्वनि” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल सूची

(B) कहबासँ अधिक संकेत करब आधुनिक मुक्तकक महत्त्वपूर्ण शक्ति अछि

(C) संकेतक निषेध

(D) केवल स्पष्ट आदेश

७६७. “ध्वनि” केँ जीवकान्तक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल सूची

(B) कहबासँ अधिक संकेत करब आधुनिक मुक्तकक महत्त्वपूर्ण शक्ति अछि

(C) संकेतक निषेध

(D) केवल स्पष्ट आदेश

७६८. नीचाँमे जीवकान्तक “ध्वनि” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल सूची

(B) कहबासँ अधिक संकेत करब आधुनिक मुक्तकक महत्त्वपूर्ण शक्ति अछि

(C) संकेतक निषेध

(D) केवल स्पष्ट आदेश

७६९. परीक्षा-दृष्टिसँ जीवकान्त पर “ध्वनि” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल सूची

(B) कहबासँ अधिक संकेत करब आधुनिक मुक्तकक महत्त्वपूर्ण शक्ति अछि

(C) संकेतक निषेध

(D) केवल स्पष्ट आदेश

७७०. जीवकान्तक मुक्तकक “ध्वनि” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल सूची

(B) कहबासँ अधिक संकेत करब आधुनिक मुक्तकक महत्त्वपूर्ण शक्ति अछि

(C) संकेतक निषेध

(D) केवल स्पष्ट आदेश

७७१. जीवकान्तक मुक्तकक अध्ययनमे “मानसिकता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल नृत्य

(B) जीवकान्तक काव्य-पाठ मानसिक तनाव, विचारक द्वन्द्व आ संवेदनाक गहराइ दिस लऽ जा सकैत अछि

(C) मानसिक गहराइक अभाव

(D) केवल बाहरी दृश्य

७७२. “मानसिकता” कैँ जीवकान्तक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल नृत्य

(B) जीवकान्तक काव्य-पाठ मानसिक तनाव, विचारक द्वन्द्व आ संवेदनाक गहराइ दिस लऽ जा सकैत अछि

(C) मानसिक गहराइक अभाव

(D) केवल बाहरी दृश्य

७७३. नीचाँमे जीवकान्तक “मानसिकता” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल नृत्य

(B) जीवकान्तक काव्य-पाठ मानसिक तनाव, विचारक द्वन्द्व आ संवेदनाक गहराइ दिस लऽ जा सकैत अछि

(C) मानसिक गहराइक अभाव

(D) केवल बाहरी दृश्य

७७४. परीक्षा-दृष्टिसँ जीवकान्त पर “मानसिकता” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल नृत्य

(B) जीवकान्तक काव्य-पाठ मानसिक तनाव, विचारक द्वन्द्व आ संवेदनाक गहराइ दिस लऽ जा सकैत अछि

(C) मानसिक गहराइक अभाव

(D) केवल बाहरी दृश्य

७७५. जीवकान्तक मुक्तकक “मानसिकता” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल नृत्य

(B) जीवकान्तक काव्य-पाठ मानसिक तनाव, विचारक द्वन्द्व आ संवेदनाक गहराइ दिस लऽ जा सकैत अछि

(C) मानसिक गहराइक अभाव

(D) केवल बाहरी दृश्य

७७६. जीवकान्तक मुक्तकक अध्ययनमे “मिथिला-सन्दर्भ” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल समुद्री कथा

(B) आधुनिक कवि मिथिलाक स्मृति, भाषा आ संस्कृति कैँ नयका समयमे पुनः देखैत छथि

(C) मिथिला अप्रासंगिक

(D) केवल विदेशी भूगोल

७७७. “मिथिला-सन्दर्भ” कैँ जीवकान्तक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल समुद्री कथा

(B) आधुनिक कवि मिथिलाक स्मृति, भाषा आ संस्कृति कैँ नयका समयमे पुनः देखैत छथि

(C) मिथिला अप्रासंगिक

(D) केवल विदेशी भूगोल

७७८. नीचाँमे जीवकान्तक “मिथिला-सन्दर्भ” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल समुद्री कथा

(B) आधुनिक कवि मिथिलाक स्मृति, भाषा आ संस्कृति कैँ नयका समयमे पुनः देखैत छथि

(C) मिथिला अप्रासंगिक

(D) केवल विदेशी भूगोल

७७९. परीक्षा-दृष्टिसँ जीवकान्त पर “मिथिला-सन्दर्भ” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल समुद्री कथा

(B) आधुनिक कवि मिथिलाक स्मृति, भाषा आ संस्कृति कैँ नयका समयमे पुनः देखैत छथि

(C) मिथिला अप्रासंगिक

(D) केवल विदेशी भूगोल

७८०. जीवकान्तक मुक्तकक “मिथिला-सन्दर्भ” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल समुद्री कथा

(B) आधुनिक कवि मिथिलाक स्मृति, भाषा आ संस्कृति कैँ नयका समयमे पुनः देखैत छथि

(C) मिथिला अप्रासंगिक

(D) केवल विदेशी भूगोल

७८१. जीवकान्तक मुक्तकक अध्ययनमे “तुलना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल पृष्ठ संख्या

(B) जीवकान्तक तुलना परम्परागत गीतिक कविसँ करैत समय आधुनिक प्रतीक आ आन्तरिक तनाव प्रमुख होइत अछि

(C) केवल जन्मवर्ष

(D) केवल पुस्तक आकार

७८२. “तुलना” कैँ जीवकान्तक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल पृष्ठ संख्या

(B) जीवकान्तक तुलना परम्परागत गीतिक कविसँ करैत समय आधुनिक प्रतीक आ आन्तरिक तनाव प्रमुख होइत अछि

(C) केवल जन्मवर्ष

(D) केवल पुस्तक आकार

७८३. नीचाँमे जीवकान्तक “तुलना” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल पृष्ठ संख्या

(B) जीवकान्तक तुलना परम्परागत गीतिक कविसँ करैत समय आधुनिक प्रतीक आ आन्तरिक तनाव प्रमुख होइत अछि

(C) केवल जन्मवर्ष

(D) केवल पुस्तक आकार

७८४. परीक्षा-दृष्टिसँ जीवकान्त पर “तुलना” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल पृष्ठ संख्या

(B) जीवकान्तक तुलना परम्परागत गीतिक कविसँ करैत समय आधुनिक प्रतीक आ आन्तरिक तनाव प्रमुख होइत अछि

(C) केवल जन्मवर्ष

(D) केवल पुस्तक आकार

७८५. जीवकान्तक मुक्तकक “तुलना” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल पृष्ठ संख्या

(B) जीवकान्तक तुलना परम्परागत गीतिक कविसँ करैत समय आधुनिक प्रतीक आ आन्तरिक तनाव प्रमुख होइत अछि

(C) केवल जन्मवर्ष

(D) केवल पुस्तक आकार

७८६. जीवकान्तक मुक्तकक अध्ययनमे “परीक्षा-दृष्टि” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल क्रमांक

(B) जीवकान्त पर उत्तरमे आधुनिक मुक्तकक भाषा, बिम्ब, आत्मसंघर्ष आ सामाजिक संकेत जोड़ू

(C) केवल नाम

(D) केवल विकल्प

७८७. “परीक्षा-दृष्टि” कैं जीवकान्तक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल क्रमांक

(B) जीवकान्त पर उत्तरमे आधुनिक मुक्तकक भाषा, बिम्ब, आत्मसंघर्ष आ सामाजिक संकेत जोड़ू

(C) केवल नाम

(D) केवल विकल्प

७८८. नीचाँमे जीवकान्तक “परीक्षा-दृष्टि” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल क्रमांक

(B) जीवकान्त पर उत्तरमे आधुनिक मुक्तकक भाषा, बिम्ब, आत्मसंघर्ष आ सामाजिक संकेत जोड़ू

(C) केवल नाम

(D) केवल विकल्प

७८९. परीक्षा-दृष्टिसँ जीवकान्त पर “परीक्षा-दृष्टि” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल क्रमांक

(B) जीवकान्त पर उत्तरमे आधुनिक मुक्तकक भाषा, बिम्ब, आत्मसंघर्ष आ सामाजिक संकेत जोड़ू

(C) केवल नाम

(D) केवल विकल्प

७९०. जीवकान्तक मुक्तकक “परीक्षा-दृष्टि” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल क्रमांक

(B) जीवकान्त पर उत्तरमे आधुनिक मुक्तकक भाषा, बिम्ब, आत्मसंघर्ष आ सामाजिक संकेत जोड़ू

(C) केवल नाम

(D) केवल विकल्प

७९१. जीवकान्तक मुक्तकक अध्ययनमे “पाठकीय प्रभाव” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल सजावट

(B) सघन मुक्तक पाठककेँ सोचय पर बाध्य करैत अछि

(C) सोचबाक जरूरत नहि

(D) केवल मनोरंजन

७९२. “पाठकीय प्रभाव” कैं जीवकान्तक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल सजावट

(B) सघन मुक्तक पाठककेँ सोचय पर बाध्य करैत अछि

(C) सोचबाक जरूरत नहि

(D) केवल मनोरंजन

७९३. नीचाँमे जीवकान्तक “पाठकीय प्रभाव” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल सजावट

(B) सघन मुक्तक पाठककेँ सोचय पर बाध्य करैत अछि

(C) सोचबाक जरूरत नहि

(D) केवल मनोरंजन

७९४. परीक्षा-दृष्टिसँ जीवकान्त पर “पाठकीय प्रभाव” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल सजावट

(B) सघन मुक्तक पाठककेँ सोचय पर बाध्य करैत अछि

(C) सोचबाक जरूरत नहि

(D) केवल मनोरंजन

७९५. जीवकान्तक मुक्तकक “पाठकीय प्रभाव” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल सजावट

(B) सघन मुक्तक पाठककेँ सोचय पर बाध्य करैत अछि

(C) सोचबाक जरूरत नहि

(D) केवल मनोरंजन

७९६. जीवकान्तक मुक्तकक अध्ययनमे “समग्र मूल्य” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल नाट्यकार

(B) जीवकान्त आधुनिक मैथिली मुक्तकक संवेदनशील, प्रश्नाकुल आ प्रतीकधर्मी पक्ष बुझबामे सहायक कवि छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल पुरातत्ववेत्ता

७९७. “समग्र मूल्य” केँ जीवकान्तक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल नाट्यकार

(B) जीवकान्त आधुनिक मैथिली मुक्तकक संवेदनशील, प्रश्नाकुल आ प्रतीकधर्मी पक्ष बुझबामे सहायक कवि छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल पुरातत्ववेत्ता

७९८. नीचाँमे जीवकान्तक “समग्र मूल्य” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल नाट्यकार

(B) जीवकान्त आधुनिक मैथिली मुक्तकक संवेदनशील, प्रश्नाकुल आ प्रतीकधर्मी पक्ष बुझबामे सहायक कवि छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल पुरातत्ववेत्ता

७९९. परीक्षा-दृष्टिसँ जीवकान्त पर “समग्र मूल्य” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल नाट्यकार

(B) जीवकान्त आधुनिक मैथिली मुक्तकक संवेदनशील, प्रश्नाकुल आ प्रतीकधर्मी पक्ष बुझबामे सहायक कवि छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल पुरातत्ववेत्ता

८००. जीवकान्तक मुक्तकक “समग्र मूल्य” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल नाट्यकार

(B) जीवकान्त आधुनिक मैथिली मुक्तकक संवेदनशील, प्रश्नाकुल आ प्रतीकधर्मी पक्ष बुझबामे सहायक कवि छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल पुरातत्ववेत्ता

sec8

८०१. भीमनाथ झाक मुक्तकक अध्ययनमे “विद्वत्-परिप्रेक्ष्य” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल खेल-सूची

(B) भीमनाथ झाक अध्ययनमे काव्य-संवेदना संग विद्वत्ता, भाषा-जागरूकता आ साहित्यिक विवेकक संगति देखल जाइत अछि

(C) विद्वत्ता-विरोध

(D) केवल मनोरंजन

८०२. “विद्वत्-परिप्रेक्ष्य” कैं भीमनाथ झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल खेल-सूची

(B) भीमनाथ झाक अध्ययनमे काव्य-संवेदना संग विद्वत्ता, भाषा-जागरूकता आ साहित्यिक विवेकक संगति देखल जाइत अछि

(C) विद्वत्ता-विरोध

(D) केवल मनोरंजन

८०३. नीचाँमे भीमनाथ झाक “विद्वत्-परिप्रेक्ष्य” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल खेल-सूची

(B) भीमनाथ झाक अध्ययनमे काव्य-संवेदना संग विद्वत्ता, भाषा-जागरूकता आ साहित्यिक विवेकक संगति देखल जाइत अछि

(C) विद्वत्ता-विरोध

(D) केवल मनोरंजन

८०४. परीक्षा-दृष्टिसँ भीमनाथ झा पर “विद्वत्-परिप्रेक्ष्य” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल खेल-सूची

(B) भीमनाथ झाक अध्ययनमे काव्य-संवेदना संग विद्वत्ता, भाषा-जागरूकता आ साहित्यिक विवेकक संगति देखल जाइत अछि

(C) विद्वत्ता-विरोध

(D) केवल मनोरंजन

८०५. भीमनाथ झाक मुक्तकक “विद्वत्-परिप्रेक्ष्य” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल खेल-सूची

(B) भीमनाथ झाक अध्ययनमे काव्य-संवेदना संग विद्वत्ता, भाषा-जागरूकता आ साहित्यिक विवेकक संगति देखल जाइत अछि

(C) विद्वत्ता-विरोध

(D) केवल मनोरंजन

८०६. भीमनाथ झाक मुक्तकक अध्ययनमे “मुक्तक-रूप” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल उपन्यास

(B) हुनक सन्दर्भमे मुक्तकक लघुता, भाव-एकाग्रता आ विचार-संयम महत्त्वपूर्ण अछि

(C) दीर्घ आख्यान मात्र

(D) असंगति

८०७. “मुक्तक-रूप” कैं भीमनाथ झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल उपन्यास

(B) हुनक सन्दर्भमे मुक्तकक लघुता, भाव-एकाग्रता आ विचार-संयम महत्त्वपूर्ण अछि

(C) दीर्घ आख्यान मात्र

(D) असंगति

८०८. नीचाँमे भीमनाथ झाक “मुक्तक-रूप” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल उपन्यास

(B) हुनक सन्दर्भमे मुक्तकक लघुता, भाव-एकाग्रता आ विचार-संयम महत्त्वपूर्ण अछि

(C) दीर्घ आख्यान मात्र

(D) असंगति

८०९. परीक्षा-दृष्टिसँ भीमनाथ झा पर “मुक्तक-रूप” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल उपन्यास

(B) हुनक सन्दर्भमे मुक्तकक लघुता, भाव-एकाग्रता आ विचार-संयम महत्त्वपूर्ण अछि

(C) दीर्घ आख्यान मात्र

(D) असंगति

८१०. भीमनाथ झाक मुक्तकक “मुक्तक-रूप” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल उपन्यास

(B) हुनक सन्दर्भमे मुक्तकक लघुता, भाव-एकाग्रता आ विचार-संयम महत्त्वपूर्ण अछि

(C) दीर्घ आख्यान मात्र

(D) असंगति

८११. भीमनाथ झाक मुक्तकक अध्ययनमे “भाषा-शुद्धि” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल संकेत

(B) भाषिक सजगता मुक्तकमे अर्थक स्पष्टता आ सौन्दर्य दुनू बढ़बैत अछि

(C) भाषा अप्रासंगिक

(D) शब्दहीनता

८१२. “भाषा-शुद्धि” कैँ भीमनाथ झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल संकेत

(B) भाषिक सजगता मुक्तकमे अर्थक स्पष्टता आ सौन्दर्य दुनू बढ़बैत अछि

(C) भाषा अप्रासंगिक

(D) शब्दहीनता

८१३. नीचाँमे भीमनाथ झाक “भाषा-शुद्धि” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल संकेत

(B) भाषिक सजगता मुक्तकमे अर्थक स्पष्टता आ सौन्दर्य दुनू बढ़बैत अछि

(C) भाषा अप्रासंगिक

(D) शब्दहीनता

८१४. परीक्षा-दृष्टिसँ भीमनाथ झा पर “भाषा-शुद्धि” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल संकेत

(B) भाषिक सजगता मुक्तकमे अर्थक स्पष्टता आ सौन्दर्य दुनू बढ़बैत अछि

(C) भाषा अप्रासंगिक

(D) शब्दहीनता

८१५. भीमनाथ झाक मुक्तकक “भाषा-शुद्धि” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल संकेत

(B) भाषिक सजगता मुक्तकमे अर्थक स्पष्टता आ सौन्दर्य दुनू बढ़बैत अछि

(C) भाषा अप्रासंगिक

(D) शब्दहीनता

८१६. भीमनाथ झाक मुक्तकक अध्ययनमे “विचार-केंद्र” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल अनुच्छेद

(B) मुक्तक छोट होइतो एकटा स्पष्ट विचार वा भाव-केन्द्र रखैत अछि

(C) केंद्रक अभाव

(D) केवल बिखराव

८१७. “विचार-केंद्र” कैँ भीमनाथ झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल अनुच्छेद

(B) मुक्तक छोट होइतो एकटा स्पष्ट विचार वा भाव-केन्द्र रखैत अछि

(C) केंद्रक अभाव

(D) केवल बिखराव

८१८. नीचाँमे भीमनाथ झाक “विचार-केंद्र” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल अनुच्छेद

(B) मुक्तक छोट होइतो एकटा स्पष्ट विचार वा भाव-केन्द्र रखैत अछि

(C) केंद्रक अभाव

(D) केवल बिखराव

८१९. परीक्षा-दृष्टिसँ भीमनाथ झा पर “विचार-केंद्र” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल अनुच्छेद

(B) मुक्तक छोट होइतो एकटा स्पष्ट विचार वा भाव-केन्द्र रखैत अछि

(C) केंद्रक अभाव

(D) केवल बिखराव

८२०. भीमनाथ झाक मुक्तकक “विचार-केंद्र” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल अनुच्छेद

(B) मुक्तक छोट होइतो एकटा स्पष्ट विचार वा भाव-केन्द्र रखैत अछि

(C) केंद्रक अभाव

(D) केवल बिखराव

८२१. भीमनाथ झाक मुक्तकक अध्ययनमे “परम्परा” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल मानचित्र

(B) भीमनाथ झाक कवितामे मैथिली परम्पराक स्मृति आ आधुनिक बोधक मिलन देखल जा सकैत अछि

(C) परम्परा निषिद्ध

(D) केवल आँकड़ा

८२२. “परम्परा” कैँ भीमनाथ झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल मानचित्र

(B) भीमनाथ झाक कवितामे मैथिली परम्पराक स्मृति आ आधुनिक बोधक मिलन देखल जा सकैत अछि

(C) परम्परा निषिद्ध

(D) केवल आँकड़ा

८२३. नीचाँमे भीमनाथ झाक “परम्परा” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल मानचित्र

(B) भीमनाथ झाक कवितामे मैथिली परम्पराक स्मृति आ आधुनिक बोधक मिलन देखल जा सकैत अछि

(C) परम्परा निषिद्ध

(D) केवल आँकड़ा

८२४. परीक्षा-दृष्टिसँ भीमनाथ झा पर “परम्परा” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल मानचित्र

(B) भीमनाथ झाक कवितामे मैथिली परम्पराक स्मृति आ आधुनिक बोधक मिलन देखल जा सकैत अछि

(C) परम्परा निषिद्ध

(D) केवल आँकड़ा

८२५. भीमनाथ झाक मुक्तकक “परम्परा” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल मानचित्र

(B) भीमनाथ झाक कवितामे मैथिली परम्पराक स्मृति आ आधुनिक बोधक मिलन देखल जा सकैत अछि

(C) परम्परा निषिद्ध

(D) केवल आँकड़ा

८२६. भीमनाथ झाक मुक्तकक अध्ययनमे “नैतिकता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल रंग

(B) मुक्तकमे नीति, जीवन-बोध, मानवीय मूल्य वा अनुभवक सार संक्षेपमे आ सकैत अछि

(C) मूल्यक अभाव

(D) केवल बाजार

८२७. “नैतिकता” कैं भीमनाथ झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल रंग

(B) मुक्तकमे नीति, जीवन-बोध, मानवीय मूल्य वा अनुभवक सार संक्षेपमे आ सकैत अछि

(C) मूल्यक अभाव

(D) केवल बाजार

८२८. नीचाँमे भीमनाथ झाक “नैतिकता” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल रंग

(B) मुक्तकमे नीति, जीवन-बोध, मानवीय मूल्य वा अनुभवक सार संक्षेपमे आ सकैत अछि

(C) मूल्यक अभाव

(D) केवल बाजार

८२९. परीक्षा-दृष्टिसँ भीमनाथ झा पर “नैतिकता” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल रंग

(B) मुक्तकमे नीति, जीवन-बोध, मानवीय मूल्य वा अनुभवक सार संक्षेपमे आ सकैत अछि

(C) मूल्यक अभाव

(D) केवल बाजार

८३०. भीमनाथ झाक मुक्तकक “नैतिकता” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल रंग

(B) मुक्तकमे नीति, जीवन-बोध, मानवीय मूल्य वा अनुभवक सार संक्षेपमे आ सकैत अछि

(C) मूल्यक अभाव

(D) केवल बाजार

८३१. भीमनाथ झाक मुक्तकक अध्ययनमे “व्याख्या” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल पृष्ठ

(B) एकटा मुक्तकक व्याख्या करैत समय भाव, भाषा, प्रतीक आ निष्कर्ष चारू देखब चाही

(C) केवल शीर्षक

(D) केवल कविक नाम

८३२. “व्याख्या” कैं भीमनाथ झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल पृष्ठ

(B) एकटा मुक्तकक व्याख्या करैत समय भाव, भाषा, प्रतीक आ निष्कर्ष चारू देखब चाही

(C) केवल शीर्षक

(D) केवल कविक नाम

८३३. नीचाँमे भीमनाथ झाक “व्याख्या” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल पृष्ठ

(B) एकटा मुक्तकक व्याख्या करैत समय भाव, भाषा, प्रतीक आ निष्कर्ष चारू देखब चाही

(C) केवल शीर्षक

(D) केवल कविक नाम

८३४. परीक्षा-दृष्टिसँ भीमनाथ झा पर “व्याख्या” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल पृष्ठ

(B) एकटा मुक्तकक व्याख्या करैत समय भाव, भाषा, प्रतीक आ निष्कर्ष चारू देखब चाही

(C) केवल शीर्षक

(D) केवल कविक नाम

८३५. भीमनाथ झाक मुक्तकक “व्याख्या” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल पृष्ठ

(B) एकटा मुक्तकक व्याख्या करैत समय भाव, भाषा, प्रतीक आ निष्कर्ष चारू देखब चाही

(C) केवल शीर्षक

(D) केवल कविक नाम

८३६. भीमनाथ झाक मुक्तकक अध्ययनमे “शिक्षण-पक्ष” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल खेल

(B) एहि कविक अध्ययन विद्यार्थीकें मुक्तकक कसौटी आ भाषा-विवेक बुझबामे सहायक अछि

(C) शिक्षण असम्भव

(D) केवल चित्रकला

८३७. “शिक्षण-पक्ष” कैँ भीमनाथ झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल खेल

(B) एहि कविक अध्ययन विद्यार्थीकें मुक्तकक कसौटी आ भाषा-विवेक बुझबामे सहायक अछि

(C) शिक्षण असम्भव

(D) केवल चित्रकला

८३८. नीचाँमे भीमनाथ झाक “शिक्षण-पक्ष” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल खेल

(B) एहि कविक अध्ययन विद्यार्थीकें मुक्तकक कसौटी आ भाषा-विवेक बुझबामे सहायक अछि

(C) शिक्षण असम्भव

(D) केवल चित्रकला

८३९. परीक्षा-दृष्टिसँ भीमनाथ झा पर “शिक्षण-पक्ष” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल खेल

(B) एहि कविक अध्ययन विद्यार्थीकें मुक्तकक कसौटी आ भाषा-विवेक बुझबामे सहायक अछि

(C) शिक्षण असम्भव

(D) केवल चित्रकला

८४०. भीमनाथ झाक मुक्तकक “शिक्षण-पक्ष” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल खेल

(B) एहि कविक अध्ययन विद्यार्थीकें मुक्तकक कसौटी आ भाषा-विवेक बुझबामे सहायक अछि

(C) शिक्षण असम्भव

(D) केवल चित्रकला

८४१. भीमनाथ झाक मुक्तकक अध्ययनमे “छन्द-लय” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल लम्बाइ

(B) मुक्तकमे छन्द हो वा मुक्त लय, ध्वनि-संरचना भावकेँ धार दैत अछि

(C) ध्वनि अप्रासंगिक

(D) केवल मौन

८४२. “छन्द-लय” केँ भीमनाथ झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल लम्बाइ

(B) मुक्तकमे छन्द हो वा मुक्त लय, ध्वनि-संरचना भावकेँ धार दैत अछि

(C) ध्वनि अप्रासंगिक

(D) केवल मौन

८४३. नीचाँमे भीमनाथ झाक “छन्द-लय” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल लम्बाइ

(B) मुक्तकमे छन्द हो वा मुक्त लय, ध्वनि-संरचना भावकेँ धार दैत अछि

(C) ध्वनि अप्रासंगिक

(D) केवल मौन

८४४. परीक्षा-दृष्टिसँ भीमनाथ झा पर “छन्द-लय” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल लम्बाइ

(B) मुक्तकमे छन्द हो वा मुक्त लय, ध्वनि-संरचना भावकेँ धार दैत अछि

(C) ध्वनि अप्रासंगिक

(D) केवल मौन

८४५. भीमनाथ झाक मुक्तकक “छन्द-लय” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल लम्बाइ

(B) मुक्तकमे छन्द हो वा मुक्त लय, ध्वनि-संरचना भावकेँ धार दैत अछि

(C) ध्वनि अप्रासंगिक

(D) केवल मौन

८४६. भीमनाथ झाक मुक्तकक अध्ययनमे “अर्थ-सघनता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल छपाई

(B) कम शब्दमे अधिक अर्थ देब मुक्तकक प्रधान शक्ति अछि

(C) अर्थ-विस्तार असम्भव

(D) केवल शब्द-सूची

८४७. “अर्थ-सघनता” केँ भीमनाथ झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल छपाई

(B) कम शब्दमे अधिक अर्थ देब मुक्तकक प्रधान शक्ति अछि

(C) अर्थ-विस्तार असम्भव

(D) केवल शब्द-सूची

८४८. नीचाँमे भीमनाथ झाक “अर्थ-सघनता” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल छपाई

(B) कम शब्दमे अधिक अर्थ देब मुक्तकक प्रधान शक्ति अछि

(C) अर्थ-विस्तार असम्भव

(D) केवल शब्द-सूची

८४९. परीक्षा-दृष्टिसँ भीमनाथ झा पर “अर्थ-सघनता” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल छपाई

(B) कम शब्दमे अधिक अर्थ देब मुक्तकक प्रधान शक्ति अछि

(C) अर्थ-विस्तार असम्भव

(D) केवल शब्द-सूची

८५०. भीमनाथ झाक मुक्तकक “अर्थ-सघनता” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल छपाई

(B) कम शब्दमे अधिक अर्थ देब मुक्तकक प्रधान शक्ति अछि

(C) अर्थ-विस्तार असम्भव

(D) केवल शब्द-सूची

८५१. भीमनाथ झाक मुक्तकक अध्ययनमे “आलोचना-दृष्टि” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल गाम

(B) भीमनाथ झा पर उत्तरमे काव्यक संग आलोचनात्मक विवेक आ भाषा-शिल्प जोड़ल जा सकैत अछि

(C) केवल नाम

(D) केवल तिथि

८५२. “आलोचना-दृष्टि” कैँ भीमनाथ झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल गाम

(B) भीमनाथ झा पर उत्तरमे काव्यक संग आलोचनात्मक विवेक आ भाषा-शिल्प जोड़ल जा सकैत अछि

(C) केवल नाम

(D) केवल तिथि

८५३. नीचाँमे भीमनाथ झाक “आलोचना-दृष्टि” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल गाम

(B) भीमनाथ झा पर उत्तरमे काव्यक संग आलोचनात्मक विवेक आ भाषा-शिल्प जोड़ल जा सकैत अछि

(C) केवल नाम

(D) केवल तिथि

८५४. परीक्षा-दृष्टिसँ भीमनाथ झा पर “आलोचना-दृष्टि” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल गाम

(B) भीमनाथ झा पर उत्तरमे काव्यक संग आलोचनात्मक विवेक आ भाषा-शिल्प जोड़ल जा सकैत अछि

(C) केवल नाम

(D) केवल तिथि

८५५. भीमनाथ झाक मुक्तकक “आलोचना-दृष्टि” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल गाम

(B) भीमनाथ झा पर उत्तरमे काव्यक संग आलोचनात्मक विवेक आ भाषा-शिल्प जोड़ल जा सकैत अछि

(C) केवल नाम

(D) केवल तिथि

८५६. भीमनाथ झाक मुक्तकक अध्ययनमे “सांस्कृतिक संकेत” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल खेल

(B) मुक्तकमे समाज, लोक-स्मृति, धर्म-संस्कार वा पारिवारिक अनुभव सांकेतिक रूपेँ आ सकैत अछि

(C) संकेतक निषेध

(D) केवल गणना

८५७. “सांस्कृतिक संकेत” कैँ भीमनाथ झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल खेल

(B) मुक्तकमे समाज, लोक-स्मृति, धर्म-संस्कार वा पारिवारिक अनुभव सांकेतिक रूपेँ आ सकैत अछि

(C) संकेतक निषेध

(D) केवल गणना

८५८. नीचाँमे भीमनाथ झाक “सांस्कृतिक संकेत” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल खेल

(B) मुक्तकमे समाज, लोक-स्मृति, धर्म-संस्कार वा पारिवारिक अनुभव सांकेतिक रूपेँ आ सकैत अछि

(C) संकेतक निषेध

(D) केवल गणना

८५९. परीक्षा-दृष्टिसँ भीमनाथ झा पर “सांस्कृतिक संकेत” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल खेल

(B) मुक्तकमे समाज, लोक-स्मृति, धर्म-संस्कार वा पारिवारिक अनुभव सांकेतिक रूपेँ आ सकैत अछि

(C) संकेतक निषेध

(D) केवल गणना

८६०. भीमनाथ झाक मुक्तकक “सांस्कृतिक संकेत” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल खेल

(B) मुक्तकमे समाज, लोक-स्मृति, धर्म-संस्कार वा पारिवारिक अनुभव सांकेतिक रूपेँ आ सकैत अछि

(C) संकेतक निषेध

(D) केवल गणना

८६१. भीमनाथ झाक मुक्तकक अध्ययनमे “भाव-विचार समन्वय” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) विचार शून्य

(B) मुक्तकमे भाव आ विचार एक-दोसराकेँ बल दैत अछि, अलग नहि करैत

(C) भाव-विचार विरोधी सदैव

(D) भाव शून्य

८६२. “भाव-विचार समन्वय” कैँ भीमनाथ झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) विचार शून्य

(B) मुक्तकमे भाव आ विचार एक-दोसराकेँ बल दैत अछि, अलग नहि करैत

(C) भाव-विचार विरोधी सदैव

(D) भाव शून्य

८६३. नीचाँमे भीमनाथ झाक “भाव-विचार समन्वय” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) विचार शून्य

(B) मुक्तकमे भाव आ विचार एक-दोसराकेँ बल दैत अछि, अलग नहि करैत

(C) भाव-विचार विरोधी सदैव

(D) भाव शून्य

८६४. परीक्षा-दृष्टिसँ भीमनाथ झा पर “भाव-विचार समन्वय” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) विचार शून्य

(B) मुक्तकमे भाव आ विचार एक-दोसराकेँ बल दैत अछि, अलग नहि करैत

(C) भाव-विचार विरोधी सदैव

(D) भाव शून्य

८६५. भीमनाथ झाक मुक्तकक “भाव-विचार समन्वय” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) विचार शून्य

(B) मुक्तकमे भाव आ विचार एक-दोसराकेँ बल दैत अछि, अलग नहि करैत

(C) भाव-विचार विरोधी सदैव

(D) भाव शून्य

८६६. भीमनाथ झाक मुक्तकक अध्ययनमे “सामाजिकता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल आदेश

(B) छोट कविता सेहो समाजक चिन्ता वा प्रश्नकेँ स्पष्ट कऽ सकैत अछि

(C) समाजक प्रश्न नहि

(D) केवल निजी पंजी

८६७. “सामाजिकता” केँ भीमनाथ झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल आदेश

(B) छोट कविता सेहो समाजक चिन्ता वा प्रश्नकेँ स्पष्ट कऽ सकैत अछि

(C) समाजक प्रश्न नहि

(D) केवल निजी पंजी

८६८. नीचाँमे भीमनाथ झाक “सामाजिकता” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल आदेश

(B) छोट कविता सेहो समाजक चिन्ता वा प्रश्नकेँ स्पष्ट कऽ सकैत अछि

(C) समाजक प्रश्न नहि

(D) केवल निजी पंजी

८६९. परीक्षा-दृष्टिसँ भीमनाथ झा पर “सामाजिकता” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल आदेश

(B) छोट कविता सेहो समाजक चिन्ता वा प्रश्नकेँ स्पष्ट कऽ सकैत अछि

(C) समाजक प्रश्न नहि

(D) केवल निजी पंजी

८७०. भीमनाथ झाक मुक्तकक “सामाजिकता” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल आदेश

(B) छोट कविता सेहो समाजक चिन्ता वा प्रश्नकेँ स्पष्ट कऽ सकैत अछि

(C) समाजक प्रश्न नहि

(D) केवल निजी पंजी

८७१. भीमनाथ झाक मुक्तकक अध्ययनमे “भाषिक निखार” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल पंक्ति संख्या

(B) सही शब्द-चयन मुक्तकक भाव-स्पष्टता आ सौन्दर्यक मूल आधार अछि

(C) शब्द-चयनक मूल्य नहि

(D) केवल ध्वनि

८७२. “भाषिक निखार” केँ भीमनाथ झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल पंक्ति संख्या

(B) सही शब्द-चयन मुक्तकक भाव-स्पष्टता आ सौन्दर्यक मूल आधार अछि

(C) शब्द-चयनक मूल्य नहि

(D) केवल ध्वनि

८७३. नीचाँमे भीमनाथ झाक “भाषिक निखार” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल पंक्ति संख्या

(B) सही शब्द-चयन मुक्तकक भाव-स्पष्टता आ सौन्दर्यक मूल आधार अछि

(C) शब्द-चयनक मूल्य नहि

(D) केवल ध्वनि

८७४. परीक्षा-दृष्टिसँ भीमनाथ झा पर “भाषिक निखार” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल पंक्ति संख्या

(B) सही शब्द-चयन मुक्तकक भाव-स्पष्टता आ सौन्दर्यक मूल आधार अछि

(C) शब्द-चयनक मूल्य नहि

(D) केवल ध्वनि

८७५. भीमनाथ झाक मुक्तकक “भाषिक निखार” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल पंक्ति संख्या

(B) सही शब्द-चयन मुक्तकक भाव-स्पष्टता आ सौन्दर्यक मूल आधार अछि

(C) शब्द-चयनक मूल्य नहि

(D) केवल ध्वनि

८७६. भीमनाथ झाक मुक्तकक अध्ययनमे “परीक्षा-दृष्टि” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल अंक

(B) भीमनाथ झा पर उत्तरमे मुक्तकक लघुता, विचार, भाषा-विवेक आ साहित्यिक सन्तुलन लिखब चाही

(C) केवल कवि-नाम

(D) केवल विकल्प

८७७. “परीक्षा-दृष्टि” कैँ भीमनाथ झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल अंक

(B) भीमनाथ झा पर उत्तरमे मुक्तकक लघुता, विचार, भाषा-विवेक आ साहित्यिक सन्तुलन लिखब चाही

(C) केवल कवि-नाम

(D) केवल विकल्प

८७८. नीचाँमे भीमनाथ झाक “परीक्षा-दृष्टि” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल अंक

(B) भीमनाथ झा पर उत्तरमे मुक्तकक लघुता, विचार, भाषा-विवेक आ साहित्यिक सन्तुलन लिखब चाही

(C) केवल कवि-नाम

(D) केवल विकल्प

८७९. परीक्षा-दृष्टिसँ भीमनाथ झा पर “परीक्षा-दृष्टि” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल अंक

(B) भीमनाथ झा पर उत्तरमे मुक्तकक लघुता, विचार, भाषा-विवेक आ साहित्यिक सन्तुलन लिखब चाही

(C) केवल कवि-नाम

(D) केवल विकल्प

८८०. भीमनाथ झाक मुक्तकक “परीक्षा-दृष्टि” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल अंक

(B) भीमनाथ झा पर उत्तरमे मुक्तकक लघुता, विचार, भाषा-विवेक आ साहित्यिक सन्तुलन लिखब चाही

(C) केवल कवि-नाम

(D) केवल विकल्प

८८१. भीमनाथ झाक मुक्तकक अध्ययनमे “तुलना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल स्थान

(B) हुनक तुलना करैत समय विद्वत् दृष्टि, भाषा-सजगता आ भाव-संयम महत्त्वपूर्ण अछि

(C) केवल बाहरी परिचय

(D) केवल आयु

८८२. “तुलना” कैँ भीमनाथ झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल स्थान

(B) हुनक तुलना करैत समय विद्वत् दृष्टि, भाषा-सजगता आ भाव-संयम महत्त्वपूर्ण अछि

(C) केवल बाहरी परिचय

(D) केवल आयु

८८३. नीचाँमे भीमनाथ झाक “तुलना” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल स्थान

(B) हुनक तुलना करैत समय विद्वत् दृष्टि, भाषा-सजगता आ भाव-संयम महत्त्वपूर्ण अछि

(C) केवल बाहरी परिचय

(D) केवल आयु

८८४. परीक्षा-दृष्टिसँ भीमनाथ झा पर “तुलना” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल स्थान

(B) हुनक तुलना करैत समय विद्वत् दृष्टि, भाषा-सजगता आ भाव-संयम महत्त्वपूर्ण अछि

(C) केवल बाहरी परिचय

(D) केवल आयु

८८५. भीमनाथ झाक मुक्तकक “तुलना” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल स्थान

(B) हुनक तुलना करैत समय विद्वत् दृष्टि, भाषा-सजगता आ भाव-संयम महत्त्वपूर्ण अछि

(C) केवल बाहरी परिचय

(D) केवल आयु

८८६. भीमनाथ झाक मुक्तकक अध्ययनमे “सम्प्रेषण” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल धुँधलापन

(B) स्पष्ट भाषा आ सुगठित संरचना विचारकेँ पाठक धरि पहुँचबैत अछि

(C) सम्प्रेषण नहि

(D) केवल बिखराव

८८७. “सम्प्रेषण” कैँ भीमनाथ झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल धुँधलापन

(B) स्पष्ट भाषा आ सुगठित संरचना विचारकेँ पाठक धरि पहुँचबैत अछि

(C) सम्प्रेषण नहि

(D) केवल बिखराव

८८८. नीचाँमे भीमनाथ झाक “सम्प्रेषण” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल धुँधलापन

(B) स्पष्ट भाषा आ सुगठित संरचना विचारकेँ पाठक धरि पहुँचबैत अछि

(C) सम्प्रेषण नहि

(D) केवल बिखराव

८८९. परीक्षा-दृष्टिसँ भीमनाथ झा पर “सम्प्रेषण” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल धुँधलापन

(B) स्पष्ट भाषा आ सुगठित संरचना विचारकेँ पाठक धरि पहुँचबैत अछि

(C) सम्प्रेषण नहि

(D) केवल बिखराव

८९०. भीमनाथ झाक मुक्तकक “सम्प्रेषण” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल धुँधलापन

(B) स्पष्ट भाषा आ सुगठित संरचना विचारकेँ पाठक धरि पहुँचबैत अछि

(C) सम्प्रेषण नहि

(D) केवल बिखराव

८९१. भीमनाथ झाक मुक्तकक अध्ययनमे “निष्कर्ष” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल मध्य

(B) मुक्तकक अन्तिम भाव-पलटा वा निचोड़ ओकर प्रभाव बढ़बैत अछि

(C) निष्कर्षक जरूरत नहि

(D) केवल आरम्भ

८९२. “निष्कर्ष” केँ भीमनाथ झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल मध्य

(B) मुक्तकक अन्तिम भाव-पलटा वा निचोड़ ओकर प्रभाव बढ़बैत अछि

(C) निष्कर्षक जरूरत नहि

(D) केवल आरम्भ

८९३. नीचाँमे भीमनाथ झाक “निष्कर्ष” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल मध्य

(B) मुक्तकक अन्तिम भाव-पलटा वा निचोड़ ओकर प्रभाव बढ़बैत अछि

(C) निष्कर्षक जरूरत नहि

(D) केवल आरम्भ

८९४. परीक्षा-दृष्टिसँ भीमनाथ झा पर “निष्कर्ष” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल मध्य

(B) मुक्तकक अन्तिम भाव-पलटा वा निचोड़ ओकर प्रभाव बढ़बैत अछि

(C) निष्कर्षक जरूरत नहि

(D) केवल आरम्भ

८९५. भीमनाथ झाक मुक्तकक “निष्कर्ष” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल मध्य

(B) मुक्तकक अन्तिम भाव-पलटा वा निचोड़ ओकर प्रभाव बढ़बैत अछि

(C) निष्कर्षक जरूरत नहि

(D) केवल आरम्भ

८९६. भीमनाथ झाक मुक्तकक अध्ययनमे “समग्र मूल्य” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल वादक

(B) भीमनाथ झा मुक्तकक विचारमय, भाषिक आ शिक्षणीय पक्षक अध्ययनमे उपयोगी नाम छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाट्य कलाकार

८९७. “समग्र मूल्य” कैं भीमनाथ झाक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल वादक

(B) भीमनाथ झा मुक्तकक विचारमय, भाषिक आ शिक्षणीय पक्षक अध्ययनमे उपयोगी नाम छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाट्य कलाकार

८९८. नीचाँमे भीमनाथ झाक “समग्र मूल्य” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल वादक

(B) भीमनाथ झा मुक्तकक विचारमय, भाषिक आ शिक्षणीय पक्षक अध्ययनमे उपयोगी नाम छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाट्य कलाकार

८९९. परीक्षा-दृष्टिसँ भीमनाथ झा पर “समग्र मूल्य” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल वादक

(B) भीमनाथ झा मुक्तकक विचारमय, भाषिक आ शिक्षणीय पक्षक अध्ययनमे उपयोगी नाम छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाट्य कलाकार

९००. भीमनाथ झाक मुक्तकक “समग्र मूल्य” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल वादक

(B) भीमनाथ झा मुक्तकक विचारमय, भाषिक आ शिक्षणीय पक्षक अध्ययनमे उपयोगी नाम छथि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल नाट्य कलाकार

sec9

९०१. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक अध्ययनमे “काव्य-पहिचान” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल निबन्ध

(B) कीर्ति नारायण मिश्रक अध्ययनमे मुक्तकक लघु रचना, भाव-संयम आ काव्य-चेतना पर ध्यान देल जाइत अछि

(C) केवल लम्बा उपन्यास

(D) केवल रंगमंच

९०२. “काव्य-पहिचान” कैं कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल निबन्ध

(B) कीर्ति नारायण मिश्रक अध्ययनमे मुक्तकक लघु रचना, भाव-संयम आ काव्य-चेतना पर ध्यान देल जाइत अछि

(C) केवल लम्बा उपन्यास

(D) केवल रंगमंच

९०३. नीचाँमे कीर्ति नारायण मिश्रक “काव्य-पहिचान” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल निबन्ध

(B) कीर्ति नारायण मिश्रक अध्ययनमे मुक्तकक लघु रचना, भाव-संयम आ काव्य-चेतना पर ध्यान देल जाइत अछि

(C) केवल लम्बा उपन्यास

(D) केवल रंगमंच

९०४. परीक्षा-दृष्टिसँ कीर्ति नारायण मिश्र पर “काव्य-पहिचान” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल निबन्ध

(B) कीर्ति नारायण मिश्रक अध्ययनमे मुक्तकक लघु रचना, भाव-संयम आ काव्य-चेतना पर ध्यान देल जाइत अछि

(C) केवल लम्बा उपन्यास

(D) केवल रंगमंच

९०५. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक “काव्य-पहिचान” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल निबन्ध

(B) कीर्ति नारायण मिश्रक अध्ययनमे मुक्तकक लघु रचना, भाव-संयम आ काव्य-चेतना पर ध्यान देल जाइत अछि

(C) केवल लम्बा उपन्यास

(D) केवल रंगमंच

९०६. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक अध्ययनमे “नाम-संकेत” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल संख्या

(B) ‘कीर्ति’ शब्द साहित्यिक यश, रचनात्मक स्मृति आ काव्य-परम्पराक संकेतक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

(C) केवल व्यापार

(D) केवल भूगोल

९०७. “नाम-संकेत” कैँ कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल संख्या

(B) ‘कीर्ति’ शब्द साहित्यिक यश, रचनात्मक स्मृति आ काव्य-परम्पराक संकेतक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

(C) केवल व्यापार

(D) केवल भूगोल

९०८. नीचाँमे कीर्ति नारायण मिश्रक “नाम-संकेत” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल संख्या

(B) ‘कीर्ति’ शब्द साहित्यिक यश, रचनात्मक स्मृति आ काव्य-परम्पराक संकेतक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

(C) केवल व्यापार

(D) केवल भूगोल

९०९. परीक्षा-दृष्टिसँ कीर्ति नारायण मिश्र पर “नाम-संकेत” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल संख्या

(B) ‘कीर्ति’ शब्द साहित्यिक यश, रचनात्मक स्मृति आ काव्य-परम्पराक संकेतक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

(C) केवल व्यापार

(D) केवल भूगोल

९१०. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक “नाम-संकेत” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल संख्या

(B) ‘कीर्ति’ शब्द साहित्यिक यश, रचनात्मक स्मृति आ काव्य-परम्पराक संकेतक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

(C) केवल व्यापार

(D) केवल भूगोल

९११. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक अध्ययनमे “भाव-संघनन” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल सूची

(B) मुक्तकमे कम शब्दमे सघन भाव देब काव्यक प्रमुख कसौटी अछि

(C) भाव फैलाव मात्र

(D) भावक अभाव

९१२. “भाव-संघनन” कैँ कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल सूची

(B) मुक्तकमे कम शब्दमे सघन भाव देब काव्यक प्रमुख कसौटी अछि

(C) भाव फैलाव मात्र

(D) भावक अभाव

९१३. नीचाँमे कीर्ति नारायण मिश्रक “भाव-संघनन” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल सूची

(B) मुक्तकमे कम शब्दमे सघन भाव देब काव्यक प्रमुख कसौटी अछि

(C) भाव फैलाव मात्र

(D) भावक अभाव

९१४. परीक्षा-दृष्टिसँ कीर्ति नारायण मिश्र पर “भाव-संघनन” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल सूची

(B) मुक्तकमे कम शब्दमे सघन भाव देब काव्यक प्रमुख कसौटी अछि

(C) भाव फैलाव मात्र

(D) भावक अभाव

९१५. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक “भाव-संघनन” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल सूची

(B) मुक्तकमे कम शब्दमे सघन भाव देब काव्यक प्रमुख कसौटी अछि

(C) भाव फैलाव मात्र

(D) भावक अभाव

९१६. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक अध्ययनमे “भाषा” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल संकेत चित्र

(B) सरस, स्पष्ट आ प्रभावकारी मैथिली भाषा मुक्तकक संप्रेषण शक्ति बढ़बैत अछि

(C) भाषाहीनता

(D) असम्बद्ध कोड

९१७. “भाषा” कैँ कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल संकेत चित्र

(B) सरस, स्पष्ट आ प्रभावकारी मैथिली भाषा मुक्तकक संप्रेषण शक्ति बढ़बैत अछि

(C) भाषाहीनता

(D) असम्बद्ध कोड

९१८. नीचाँमे कीर्ति नारायण मिश्रक “भाषा” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल संकेत चित्र

(B) सरस, स्पष्ट आ प्रभावकारी मैथिली भाषा मुक्तकक संप्रेषण शक्ति बढ़बैत अछि

(C) भाषाहीनता

(D) असम्बद्ध कोड

९१९. परीक्षा-दृष्टिसँ कीर्ति नारायण मिश्र पर “भाषा” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल संकेत चित्र

(B) सरस, स्पष्ट आ प्रभावकारी मैथिली भाषा मुक्तकक संप्रेषण शक्ति बढ़बैत अछि

(C) भाषाहीनता

(D) असम्बद्ध कोड

९२०. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक “भाषा” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल संकेत चित्र

(B) सरस, स्पष्ट आ प्रभावकारी मैथिली भाषा मुक्तकक संप्रेषण शक्ति बढ़बैत अछि

(C) भाषाहीनता

(D) असम्बद्ध कोड

९२१. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक अध्ययनमे “लय” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल आँकड़ा

(B) लय कविताक श्रवण-सुख, गति आ स्मरणीयता बढ़बैत अछि

(C) लयक आवश्यकता नहि

(D) केवल गद्य रिपोर्ट

९२२. “लय” कैँ कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल आँकड़ा

(B) लय कविताक श्रवण-सुख, गति आ स्मरणीयता बढ़बैत अछि

(C) लयक आवश्यकता नहि

(D) केवल गद्य रिपोर्ट

९२३. नीचाँमे कीर्ति नारायण मिश्रक “लय” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल आँकड़ा

(B) लय कविताक श्रवण-सुख, गति आ स्मरणीयता बढ़बैत अछि

(C) लयक आवश्यकता नहि

(D) केवल गद्य रिपोर्ट

९२४. परीक्षा-दृष्टिसँ कीर्ति नारायण मिश्र पर “लय” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल आँकड़ा

(B) लय कविताक श्रवण-सुख, गति आ स्मरणीयता बढ़बैत अछि

(C) लयक आवश्यकता नहि

(D) केवल गद्य रिपोर्ट

९२५. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक “लय” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल आँकड़ा

(B) लय कविताक श्रवण-सुख, गति आ स्मरणीयता बढ़बैत अछि

(C) लयक आवश्यकता नहि

(D) केवल गद्य रिपोर्ट

९२६. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक अध्ययनमे “विषय” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल मूल्य

(B) मुक्तकमे प्रकृति, प्रेम, समाज, नीति, स्मृति आ आत्म-चिन्तन जेहन विषय समा सकैत अछि

(C) विषयहीनता

(D) केवल तिथि

९२७. “विषय” कैँ कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल मूल्य

(B) मुक्तकमे प्रकृति, प्रेम, समाज, नीति, स्मृति आ आत्म-चिन्तन जेहन विषय समा सकैत अछि

(C) विषयहीनता

(D) केवल तिथि

९२८. नीचाँमे कीर्ति नारायण मिश्रक “विषय” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल मूल्य

(B) मुक्तकमे प्रकृति, प्रेम, समाज, नीति, स्मृति आ आत्म-चिन्तन जेहन विषय समा सकैत अछि

(C) विषयहीनता

(D) केवल तिथि

९२९. परीक्षा-दृष्टिसँ कीर्ति नारायण मिश्र पर “विषय” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल मूल्य

(B) मुक्तकमे प्रकृति, प्रेम, समाज, नीति, स्मृति आ आत्म-चिन्तन जेहन विषय समा सकैत अछि

(C) विषयहीनता

(D) केवल तिथि

९३०. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक “विषय” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल मूल्य

(B) मुक्तकमे प्रकृति, प्रेम, समाज, नीति, स्मृति आ आत्म-चिन्तन जेहन विषय समा सकैत अछि

(C) विषयहीनता

(D) केवल तिथि

९३१. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक अध्ययनमे “प्रतिनिधित्व” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल अभिनेता

(B) कीर्ति नारायण मिश्रक नाम पाठ्य-सूचीमे मुक्तकक विविध आधुनिक स्वरक प्रतिनिधि रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि

(C) मुक्तकसँ सम्बन्ध नहि

(D) केवल चित्रकार

९३२. “प्रतिनिधित्व” कैँ कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल अभिनेता

(B) कीर्ति नारायण मिश्रक नाम पाठ्य-सूचीमे मुक्तकक विविध आधुनिक स्वरक प्रतिनिधि रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि

(C) मुक्तकसँ सम्बन्ध नहि

(D) केवल चित्रकार

९३३. नीचाँमे कीर्ति नारायण मिश्रक “प्रतिनिधित्व” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल अभिनेता

(B) कीर्ति नारायण मिश्रक नाम पाठ्य-सूचीमे मुक्तकक विविध आधुनिक स्वरक प्रतिनिधि रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि

(C) मुक्तकसँ सम्बन्ध नहि

(D) केवल चित्रकार

९३४. परीक्षा-दृष्टिसँ कीर्ति नारायण मिश्र पर “प्रतिनिधित्व” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल अभिनेता

(B) कीर्ति नारायण मिश्रक नाम पाठ्य-सूचीमे मुक्तकक विविध आधुनिक स्वरक प्रतिनिधि रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि

(C) मुक्तकसँ सम्बन्ध नहि

(D) केवल चित्रकार

९३५. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक “प्रतिनिधित्व” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल अभिनेता

(B) कीर्ति नारायण मिश्रक नाम पाठ्य-सूचीमे मुक्तकक विविध आधुनिक स्वरक प्रतिनिधि रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि

(C) मुक्तकसँ सम्बन्ध नहि

(D) केवल चित्रकार

९३६. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक अध्ययनमे “प्रतीक” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल तालिका

(B) प्रतीक कम शब्दमे व्यापक भावलोक खोलबामे सहायक होइत अछि

(C) प्रतीक सदैव दोष

(D) केवल शाब्दिकता

९३७. “प्रतीक” कैं कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल तालिका

(B) प्रतीक कम शब्दमे व्यापक भावलोक खोलबामे सहायक होइत अछि

(C) प्रतीक सदैव दोष

(D) केवल शाब्दिकता

९३८. नीचाँमे कीर्ति नारायण मिश्रक “प्रतीक” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल तालिका

(B) प्रतीक कम शब्दमे व्यापक भावलोक खोलबामे सहायक होइत अछि

(C) प्रतीक सदैव दोष

(D) केवल शाब्दिकता

९३९. परीक्षा-दृष्टिसँ कीर्ति नारायण मिश्र पर “प्रतीक” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल तालिका

(B) प्रतीक कम शब्दमे व्यापक भावलोक खोलबामे सहायक होइत अछि

(C) प्रतीक सदैव दोष

(D) केवल शाब्दिकता

९४०. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक “प्रतीक” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल तालिका

(B) प्रतीक कम शब्दमे व्यापक भावलोक खोलबामे सहायक होइत अछि

(C) प्रतीक सदैव दोष

(D) केवल शाब्दिकता

९४१. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक अध्ययनमे “आलोचना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल पृष्ठ-संख्या

(B) आलोचनामे कथ्य, रूप, भाषा, लय आ सामाजिक-सांस्कृतिक संकेतक संयुक्त विवेचन चाही

(C) केवल नाम-सूची

(D) केवल प्रकाशन मूल्य

९४२. “आलोचना” कैं कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल पृष्ठ-संख्या

(B) आलोचनामे कथ्य, रूप, भाषा, लय आ सामाजिक-सांस्कृतिक संकेतक संयुक्त विवेचन चाही

(C) केवल नाम-सूची

(D) केवल प्रकाशन मूल्य

९४३. नीचाँमे कीर्ति नारायण मिश्रक “आलोचना” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल पृष्ठ-संख्या

(B) आलोचनामे कथ्य, रूप, भाषा, लय आ सामाजिक-सांस्कृतिक संकेतक संयुक्त विवेचन चाही

(C) केवल नाम-सूची

(D) केवल प्रकाशन मूल्य

९४४. परीक्षा-दृष्टिसँ कीर्ति नारायण मिश्र पर “आलोचना” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल पृष्ठ-संख्या

(B) आलोचनामे कथ्य, रूप, भाषा, लय आ सामाजिक-सांस्कृतिक संकेतक संयुक्त विवेचन चाही

(C) केवल नाम-सूची

(D) केवल प्रकाशन मूल्य

९४५. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक “आलोचना” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल पृष्ठ-संख्या

(B) आलोचनामे कथ्य, रूप, भाषा, लय आ सामाजिक-सांस्कृतिक संकेतक संयुक्त विवेचन चाही

(C) केवल नाम-सूची

(D) केवल प्रकाशन मूल्य

९४६. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक अध्ययनमे “परम्परा” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल समाचार

(B) मैथिली मुक्तकक आधुनिक रूप पुरान गीतिकाव्य परम्परासँ संवाद करैत अछि

(C) परम्परासँ पूर्ण विच्छेद

(D) केवल वैदेशिक रूप

९४७. “परम्परा” कैँ कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल समाचार

(B) मैथिली मुक्तकक आधुनिक रूप पुरान गीतिकाव्य परम्परासँ संवाद करैत अछि

(C) परम्परासँ पूर्ण विच्छेद

(D) केवल वैदेशिक रूप

९४८. नीचाँमे कीर्ति नारायण मिश्रक “परम्परा” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल समाचार

(B) मैथिली मुक्तकक आधुनिक रूप पुरान गीतिकाव्य परम्परासँ संवाद करैत अछि

(C) परम्परासँ पूर्ण विच्छेद

(D) केवल वैदेशिक रूप

९४९. परीक्षा-दृष्टिसँ कीर्ति नारायण मिश्र पर “परम्परा” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल समाचार

(B) मैथिली मुक्तकक आधुनिक रूप पुरान गीतिकाव्य परम्परासँ संवाद करैत अछि

(C) परम्परासँ पूर्ण विच्छेद

(D) केवल वैदेशिक रूप

९५०. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक “परम्परा” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल समाचार

(B) मैथिली मुक्तकक आधुनिक रूप पुरान गीतिकाव्य परम्परासँ संवाद करैत अछि

(C) परम्परासँ पूर्ण विच्छेद

(D) केवल वैदेशिक रूप

९५१. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक अध्ययनमे “आधुनिकता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल सूची

(B) आधुनिक मुक्तकमे व्यक्तिगत संवेदना आ सामाजिक प्रश्न दुनू एक संग आबि सकैत अछि

(C) व्यक्ति आ समाज असंगत

(D) केवल प्राचीन कथा

९५२. “आधुनिकता” कैँ कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल सूची

(B) आधुनिक मुक्तकमे व्यक्तिगत संवेदना आ सामाजिक प्रश्न दुनू एक संग आबि सकैत अछि

(C) व्यक्ति आ समाज असंगत

(D) केवल प्राचीन कथा

९५३. नीचाँमे कीर्ति नारायण मिश्रक “आधुनिकता” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल सूची

(B) आधुनिक मुक्तकमे व्यक्तिगत संवेदना आ सामाजिक प्रश्न दुनू एक संग आबि सकैत अछि

(C) व्यक्ति आ समाज असंगत

(D) केवल प्राचीन कथा

९५४. परीक्षा-दृष्टिसँ कीर्ति नारायण मिश्र पर “आधुनिकता” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल सूची

(B) आधुनिक मुक्तकमे व्यक्तिगत संवेदना आ सामाजिक प्रश्न दुनू एक संग आबि सकैत अछि

(C) व्यक्ति आ समाज असंगत

(D) केवल प्राचीन कथा

९५५. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक “आधुनिकता” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल सूची

(B) आधुनिक मुक्तकमे व्यक्तिगत संवेदना आ सामाजिक प्रश्न दुनू एक संग आबि सकैत अछि

(C) व्यक्ति आ समाज असंगत

(D) केवल प्राचीन कथा

९५६. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक अध्ययनमे “संरचना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल रंग

(B) एकटा मुक्तकमे आरम्भिक संकेत, भाव-विकास आ अन्तिम निष्कर्षक संतुलन होइत अछि

(C) संरचनाक अभाव

(D) केवल ध्वनि

९५७. “संरचना” कैँ कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल रंग

(B) एकटा मुक्तकमे आरम्भिक संकेत, भाव-विकास आ अन्तिम निष्कर्षक संतुलन होइत अछि

(C) संरचनाक अभाव

(D) केवल ध्वनि

९५८. नीचाँमे कीर्ति नारायण मिश्रक “संरचना” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल रंग

(B) एकटा मुक्तकमे आरम्भिक संकेत, भाव-विकास आ अन्तिम निष्कर्षक संतुलन होइत अछि

(C) संरचनाक अभाव

(D) केवल ध्वनि

९५९. परीक्षा-दृष्टिसँ कीर्ति नारायण मिश्र पर “संरचना” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल रंग

(B) एकटा मुक्तकमे आरम्भिक संकेत, भाव-विकास आ अन्तिम निष्कर्षक संतुलन होइत अछि

(C) संरचनाक अभाव

(D) केवल ध्वनि

९६०. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक “संरचना” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल रंग

(B) एकटा मुक्तकमे आरम्भिक संकेत, भाव-विकास आ अन्तिम निष्कर्षक संतुलन होइत अछि

(C) संरचनाक अभाव

(D) केवल ध्वनि

९६१. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक अध्ययनमे “सांस्कृतिक बोध” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल गणना

(B) मिथिला-संस्कृति, लोक-स्मृति आ भाषा-गौरव मुक्तकक अर्थ-भूमि बना सकैत अछि

(C) संस्कृति अप्रासंगिक

(D) केवल कार्यालय

९६२. “सांस्कृतिक बोध” कैँ कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल गणना

(B) मिथिला-संस्कृति, लोक-स्मृति आ भाषा-गौरव मुक्तकक अर्थ-भूमि बना सकैत अछि

(C) संस्कृति अप्रासंगिक

(D) केवल कार्यालय

९६३. नीचाँमे कीर्ति नारायण मिश्रक “सांस्कृतिक बोध” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल गणना

(B) मिथिला-संस्कृति, लोक-स्मृति आ भाषा-गौरव मुक्तकक अर्थ-भूमि बना सकैत अछि

(C) संस्कृति अप्रासंगिक

(D) केवल कार्यालय

९६४. परीक्षा-दृष्टिसँ कीर्ति नारायण मिश्र पर “सांस्कृतिक बोध” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल गणना

(B) मिथिला-संस्कृति, लोक-स्मृति आ भाषा-गौरव मुक्तकक अर्थ-भूमि बना सकैत अछि

(C) संस्कृति अप्रासंगिक

(D) केवल कार्यालय

९६५. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक “सांस्कृतिक बोध” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल गणना

(B) मिथिला-संस्कृति, लोक-स्मृति आ भाषा-गौरव मुक्तकक अर्थ-भूमि बना सकैत अछि

(C) संस्कृति अप्रासंगिक

(D) केवल कार्यालय

९६६. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक अध्ययनमे “मानवीय मूल्य” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल व्यापार

(B) छोट कविता मनुष्यक पीड़ा, आशा, प्रेम आ संघर्षक संकेत देबामे समर्थ अछि

(C) मानवीयता नहि

(D) केवल आदेश

९६७. “मानवीय मूल्य” कैँ कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल व्यापार

(B) छोट कविता मनुष्यक पीड़ा, आशा, प्रेम आ संघर्षक संकेत देबामे समर्थ अछि

(C) मानवीयता नहि

(D) केवल आदेश

९६८. नीचाँमे कीर्ति नारायण मिश्रक “मानवीय मूल्य” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल व्यापार

(B) छोट कविता मनुष्यक पीड़ा, आशा, प्रेम आ संघर्षक संकेत देबामे समर्थ अछि

(C) मानवीयता नहि

(D) केवल आदेश

९६९. परीक्षा-दृष्टिसँ कीर्ति नारायण मिश्र पर “मानवीय मूल्य” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल व्यापार

(B) छोट कविता मनुष्यक पीड़ा, आशा, प्रेम आ संघर्षक संकेत देबामे समर्थ अछि

(C) मानवीयता नहि

(D) केवल आदेश

९७०. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक “मानवीय मूल्य” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल व्यापार

(B) छोट कविता मनुष्यक पीड़ा, आशा, प्रेम आ संघर्षक संकेत देबामे समर्थ अछि

(C) मानवीयता नहि

(D) केवल आदेश

९७१. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक अध्ययनमे “भाषिक सादगी” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) अर्थहीनता गुण

(B) सादगी कविताकेँ कमजोर नहि, बल्कि गहन आ सुग्राह्य बना सकैत अछि

(C) सादगी सदैव दोष

(D) कठिनता ही काव्य

९७२. “भाषिक सादगी” केँ कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) अर्थहीनता गुण

(B) सादगी कविताकेँ कमजोर नहि, बल्कि गहन आ सुग्राह्य बना सकैत अछि

(C) सादगी सदैव दोष

(D) कठिनता ही काव्य

९७३. नीचाँमे कीर्ति नारायण मिश्रक “भाषिक सादगी” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) अर्थहीनता गुण

(B) सादगी कविताकेँ कमजोर नहि, बल्कि गहन आ सुग्राह्य बना सकैत अछि

(C) सादगी सदैव दोष

(D) कठिनता ही काव्य

९७४. परीक्षा-दृष्टिसँ कीर्ति नारायण मिश्र पर “भाषिक सादगी” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) अर्थहीनता गुण

(B) सादगी कविताकेँ कमजोर नहि, बल्कि गहन आ सुग्राह्य बना सकैत अछि

(C) सादगी सदैव दोष

(D) कठिनता ही काव्य

९७५. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक “भाषिक सादगी” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) अर्थहीनता गुण

(B) सादगी कविताकेँ कमजोर नहि, बल्कि गहन आ सुग्राह्य बना सकैत अछि

(C) सादगी सदैव दोष

(D) कठिनता ही काव्य

९७६. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक अध्ययनमे “तुलना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल मूल्य

(B) कीर्ति नारायण मिश्रक तुलना करैत समय भाषा, लय, भाव-संयम आ आधुनिकता देखल जाइत अछि

(C) केवल आयु

(D) केवल पता

९७७. “तुलना” कैँ कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल मूल्य

(B) कीर्ति नारायण मिश्रक तुलना करैत समय भाषा, लय, भाव-संयम आ आधुनिकता देखल जाइत अछि

(C) केवल आयु

(D) केवल पता

९७८. नीचाँमे कीर्ति नारायण मिश्रक “तुलना” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल मूल्य

(B) कीर्ति नारायण मिश्रक तुलना करैत समय भाषा, लय, भाव-संयम आ आधुनिकता देखल जाइत अछि

(C) केवल आयु

(D) केवल पता

९७९. परीक्षा-दृष्टिसँ कीर्ति नारायण मिश्र पर “तुलना” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल मूल्य

(B) कीर्ति नारायण मिश्रक तुलना करैत समय भाषा, लय, भाव-संयम आ आधुनिकता देखल जाइत अछि

(C) केवल आयु

(D) केवल पता

९८०. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक “तुलना” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल मूल्य

(B) कीर्ति नारायण मिश्रक तुलना करैत समय भाषा, लय, भाव-संयम आ आधुनिकता देखल जाइत अछि

(C) केवल आयु

(D) केवल पता

९८१. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक अध्ययनमे “परीक्षा-दृष्टि” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल पृष्ठ

(B) उत्तरमे मुक्तकक स्वतंत्रता, लघुता, भाव-संघनन आ कविक विशिष्ट स्वर अवश्य लिखू

(C) केवल नाम

(D) केवल क्रमांक

९८२. “परीक्षा-दृष्टि” कैँ कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल पृष्ठ

(B) उत्तरमे मुक्तकक स्वतंत्रता, लघुता, भाव-संघनन आ कविक विशिष्ट स्वर अवश्य लिखू

(C) केवल नाम

(D) केवल क्रमांक

९८३. नीचाँमे कीर्ति नारायण मिश्रक “परीक्षा-दृष्टि” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल पृष्ठ

(B) उत्तरमे मुक्तकक स्वतंत्रता, लघुता, भाव-संघनन आ कविक विशिष्ट स्वर अवश्य लिखू

(C) केवल नाम

(D) केवल क्रमांक

९८४. परीक्षा-दृष्टिसँ कीर्ति नारायण मिश्र पर “परीक्षा-दृष्टि” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल पृष्ठ

(B) उत्तरमे मुक्तकक स्वतंत्रता, लघुता, भाव-संघनन आ कविक विशिष्ट स्वर अवश्य लिखू

(C) केवल नाम

(D) केवल क्रमांक

९८५. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक “परीक्षा-दृष्टि” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल पृष्ठ

(B) उत्तरमे मुक्तकक स्वतंत्रता, लघुता, भाव-संघनन आ कविक विशिष्ट स्वर अवश्य लिखू

(C) केवल नाम

(D) केवल क्रमांक

९८६. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक अध्ययनमे “पाठकीयता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल रिपोर्ट

(B) स्पष्ट भाव आ लय पाठकक मनमे काव्यक त्वरित असर पैदा करैत अछि

(C) असरक अभाव

(D) केवल सूचना

९८७. “पाठकीयता” कैँ कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल रिपोर्ट

(B) स्पष्ट भाव आ लय पाठकक मनमे काव्यक त्वरित असर पैदा करैत अछि

(C) असरक अभाव

(D) केवल सूचना

९८८. नीचाँमे कीर्ति नारायण मिश्रक “पाठकीयता” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल रिपोर्ट

(B) स्पष्ट भाव आ लय पाठकक मनमे काव्यक त्वरित असर पैदा करैत अछि

(C) असरक अभाव

(D) केवल सूचना

९८९. परीक्षा-दृष्टिसँ कीर्ति नारायण मिश्र पर “पाठकीयता” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल रिपोर्ट

(B) स्पष्ट भाव आ लय पाठकक मनमे काव्यक त्वरित असर पैदा करैत अछि

(C) असरक अभाव

(D) केवल सूचना

९९०. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक “पाठकीयता” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल रिपोर्ट

(B) स्पष्ट भाव आ लय पाठकक मनमे काव्यक त्वरित असर पैदा करैत अछि

(C) असरक अभाव

(D) केवल सूचना

९९१. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक अध्ययनमे “समकालीनता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल मिथक-सूची

(B) समकालीन जीवनक प्रश्न छोट मुक्तकमे सेहो अर्थपूर्ण ढंगसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि

(C) समकालीनता असम्भव

(D) केवल अतीत

९९२. “समकालीनता” कैँ कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल मिथक-सूची

(B) समकालीन जीवनक प्रश्न छोट मुक्तकमे सेहो अर्थपूर्ण ढंगसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि

(C) समकालीनता असम्भव

(D) केवल अतीत

९९३. नीचाँमे कीर्ति नारायण मिश्रक “समकालीनता” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल मिथक-सूची

(B) समकालीन जीवनक प्रश्न छोट मुक्तकमे सेहो अर्थपूर्ण ढंगसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि

(C) समकालीनता असम्भव

(D) केवल अतीत

९९४. परीक्षा-दृष्टिसँ कीर्ति नारायण मिश्र पर “समकालीनता” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल मिथक-सूची

(B) समकालीन जीवनक प्रश्न छोट मुक्तकमे सेहो अर्थपूर्ण ढंगसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि

(C) समकालीनता असम्भव

(D) केवल अतीत

९९५. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक “समकालीनता” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल मिथक-सूची

(B) समकालीन जीवनक प्रश्न छोट मुक्तकमे सेहो अर्थपूर्ण ढंगसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि

(C) समकालीनता असम्भव

(D) केवल अतीत

९९६. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक अध्ययनमे “समग्र मूल्य” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल शिल्पकार

(B) कीर्ति नारायण मिश्रक अध्ययन मैथिली मुक्तकक आधुनिक, संक्षिप्त आ भावगंभीर स्वर बुझबामे सहायक अछि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल इतिहासकार

९९७. “समग्र मूल्य” कैँ कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि?

(A) केवल शिल्पकार

(B) कीर्ति नारायण मिश्रक अध्ययन मैथिली मुक्तकक आधुनिक, संक्षिप्त आ भावगंभीर स्वर बुझबामे सहायक अछि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल इतिहासकार

९९८. नीचाँमे कीर्ति नारायण मिश्रक “समग्र मूल्य” सम्बन्धी उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल शिल्पकार

(B) कीर्ति नारायण मिश्रक अध्ययन मैथिली मुक्तकक आधुनिक, संक्षिप्त आ भावगंभीर स्वर बुझबामे सहायक अछि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल इतिहासकार

९९९. परीक्षा-दृष्टिसँ कीर्ति नारायण मिश्र पर “समग्र मूल्य” आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल शिल्पकार

(B) कीर्ति नारायण मिश्रक अध्ययन मैथिली मुक्तकक आधुनिक, संक्षिप्त आ भावगंभीर स्वर बुझबामे सहायक अछि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल इतिहासकार

१०००. कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तकक “समग्र मूल्य” काव्यगत उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल शिल्पकार

(B) कीर्ति नारायण मिश्रक अध्ययन मैथिली मुक्तकक आधुनिक, संक्षिप्त आ भावगंभीर स्वर बुझबामे सहायक अछि

(C) मुक्तकसँ असम्बद्ध

(D) केवल इतिहासकार

उत्तरमाला — अध्याय २ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (B) स्वतन्त्र छोट काव्य, जे अपन भाव, बिम्ब आ निष्कर्ष अपने भीतर पूरा करैत अछि — “मुक्तककाव्य” सीताराम झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

२. (B) स्वतन्त्र छोट काव्य, जे अपन भाव, बिम्ब आ निष्कर्ष अपने भीतर पूरा करैत अछि — एहि बिन्दुसँ सीताराम झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

३. (B) स्वतन्त्र छोट काव्य, जे अपन भाव, बिम्ब आ निष्कर्ष अपने भीतर पूरा करैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

४. (B) स्वतन्त्र छोट काव्य, जे अपन भाव, बिम्ब आ निष्कर्ष अपने भीतर पूरा करैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

५. (B) स्वतन्त्र छोट काव्य, जे अपन भाव, बिम्ब आ निष्कर्ष अपने भीतर पूरा करैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

६. (B) सीताराम झाक काव्य-अध्ययनमे परम्परा, छन्द-संस्कार आ भाव-संयम पर ध्यान देल जाइत अछि — “कविता-संस्कार” सीताराम झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

७. (B) सीताराम झाक काव्य-अध्ययनमे परम्परा, छन्द-संस्कार आ भाव-संयम पर ध्यान देल जाइत अछि — एहि बिन्दुसँ सीताराम झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

८. (B) सीताराम झाक काव्य-अध्ययनमे परम्परा, छन्द-संस्कार आ भाव-संयम पर ध्यान देल जाइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

९. (B) सीताराम झाक काव्य-अध्ययनमे परम्परा, छन्द-संस्कार आ भाव-संयम पर ध्यान देल जाइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

१०. (B) सीताराम झाक काव्य-अध्ययनमे परम्परा, छन्द-संस्कार आ भाव-संयम पर ध्यान देल जाइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

११. (B) हुनक मुक्तक पढ़ैत समय मैथिली काव्य-परम्परा, लोक-संस्कार आ भाषिक शुद्धता देखब जरूरी अछि — “परम्परा-बोध” सीताराम झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

१२. (B) हुनक मुक्तक पढ़ैत समय मैथिली काव्य-परम्परा, लोक-संस्कार आ भाषिक शुद्धता देखब जरूरी अछि — एहि बिन्दुसँ सीताराम झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

१३. (B) हुनक मुक्तक पढ़ैत समय मैथिली काव्य-परम्परा, लोक-संस्कार आ भाषिक शुद्धता देखब जरूरी अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

१४. (B) हुनक मुक्तक पढ़ैत समय मैथिली काव्य-परम्परा, लोक-संस्कार आ भाषिक शुद्धता देखब जरूरी अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

१५. (B) हुनक मुक्तक पढ़ैत समय मैथिली काव्य-परम्परा, लोक-संस्कार आ भाषिक शुद्धता देखब जरूरी अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

१६. (B) मुक्तकमे लघु आकारक कारण छन्द, लय आ शब्द-संयम विशेष प्रभावकारी बनैत अछि — “छन्द-संयम” सीताराम झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

१७. (B) मुक्तकमे लघु आकारक कारण छन्द, लय आ शब्द-संयम विशेष प्रभावकारी बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ सीताराम झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

१८. (B) मुक्तकमे लघु आकारक कारण छन्द, लय आ शब्द-संयम विशेष प्रभावकारी बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

१९. (B) मुक्तकमे लघु आकारक कारण छन्द, लय आ शब्द-संयम विशेष प्रभावकारी बनैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

२०. (B) मुक्तकमे लघु आकारक कारण छन्द, लय आ शब्द-संयम विशेष प्रभावकारी बनैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

२१. (B) सीताराम झाक अध्ययनमे मुक्तकक अन्तिम पंक्ति वा भाव-संकेत पूरा रचनाकेँ बाँधैत अछि — "भाव-निष्कर्ष" सीताराम झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

२२. (B) सीताराम झाक अध्ययनमे मुक्तकक अन्तिम पंक्ति वा भाव-संकेत पूरा रचनाकेँ बाँधैत अछि — एहि बिन्दुसँ सीताराम झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

२३. (B) सीताराम झाक अध्ययनमे मुक्तकक अन्तिम पंक्ति वा भाव-संकेत पूरा रचनाकेँ बाँधैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

२४. (B) सीताराम झाक अध्ययनमे मुक्तकक अन्तिम पंक्ति वा भाव-संकेत पूरा रचनाकेँ बाँधैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

२५. (B) सीताराम झाक अध्ययनमे मुक्तकक अन्तिम पंक्ति वा भाव-संकेत पूरा रचनाकेँ बाँधैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

२६. (B) हुनक काव्य-सन्दर्भमे नैतिक चेतना, जीवन-बोध आ अनुभवक निचोड़ पर प्रश्न बनि सकैत अछि — "नैतिक स्वर" सीताराम झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

२७. (B) हुनक काव्य-सन्दर्भमे नैतिक चेतना, जीवन-बोध आ अनुभवक निचोड़ पर प्रश्न बनि सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ सीताराम झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

२८. (B) हुनक काव्य-सन्दर्भमे नैतिक चेतना, जीवन-बोध आ अनुभवक निचोड़ पर प्रश्न बनि सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

२९. (B) हुनक काव्य-सन्दर्भमे नैतिक चेतना, जीवन-बोध आ अनुभवक निचोड़ पर प्रश्न बनि सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

३०. (B) हुनक काव्य-सन्दर्भमे नैतिक चेतना, जीवन-बोध आ अनुभवक निचोड़ पर प्रश्न बनि सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

३१. (B) सीताराम झा पर प्रश्नमे सरल, संस्कारित आ भाववाही मैथिली भाषा केँ पहचानब आवश्यक अछि — "भाषा" सीताराम झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

३२. (B) सीताराम झा पर प्रश्नमे सरल, संस्कारित आ भाववाही मैथिली भाषा केँ पहचानब आवश्यक अछि — एहि बिन्दुसँ सीताराम झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

३३. (B) सीताराम झा पर प्रश्नमे सरल, संस्कारित आ भाववाही मैथिली भाषा केँ पहचानब आवश्यक अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

३४. (B) सीताराम झा पर प्रश्नमे सरल, संस्कारित आ भाववाही मैथिली भाषा केँ पहचानब आवश्यक अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

३५. (B) सीताराम झा पर प्रश्नमे सरल, संस्कारित आ भाववाही मैथिली भाषा केँ पहचानब आवश्यक अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

३६. (B) हुनक सन्दर्भमे मुक्तकक स्वतंत्रता आ प्रबन्धकाव्यक विस्तार बीच भिन्नता बुझब जरूरी अछि — "मुक्तक बनाम प्रबन्ध" सीताराम झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

३७. (B) हुनक सन्दर्भमे मुक्तकक स्वतंत्रता आ प्रबन्धकाव्यक विस्तार बीच भिन्नता बुझब जरूरी अछि — एहि बिन्दुसँ सीताराम झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

३८. (B) हुनक सन्दर्भमे मुक्तकक स्वतंत्रता आ प्रबन्धकाव्यक विस्तार बीच भिन्नता बुझब जरूरी अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

३९. (B) हुनक सन्दर्भमे मुक्तकक स्वतंत्रता आ प्रबन्धकाव्यक विस्तार बीच भिन्नता बुझब जरूरी अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

४०. (B) हुनक सन्दर्भमे मुक्तकक स्वतंत्रता आ प्रबन्धकाव्यक विस्तार बीच भिन्नता बुझब जरूरी अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

४१. (B) छोट आकारक बावजूद मुक्तक जीवन, प्रकृति, नीति, प्रेम आ समाजक संकेत देबामे समर्थ होइत अछि — "विषय-विस्तार" सीताराम झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

४२. (B) छोट आकारक बावजूद मुक्तक जीवन, प्रकृति, नीति, प्रेम आ समाजक संकेत देबामे समर्थ होइत अछि — एहि बिन्दुसँ सीताराम झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

४३. (B) छोट आकारक बावजूद मुक्तक जीवन, प्रकृति, नीति, प्रेम आ समाजक संकेत देबामे समर्थ होइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

४४. (B) छोट आकारक बावजूद मुक्तक जीवन, प्रकृति, नीति, प्रेम आ समाजक संकेत देबामे समर्थ होइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

४५. (B) छोट आकारक बावजूद मुक्तक जीवन, प्रकृति, नीति, प्रेम आ समाजक संकेत देबामे समर्थ होइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

४६. (B) सीताराम झा पर उत्तरमे नामक संग मुक्तकक रूप, भाषा, भाव आ परम्परागत आधार लिखब उचित अछि — "परीक्षा-दृष्टि" सीताराम झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

४७. (B) सीताराम झा पर उत्तरमे नामक संग मुक्तकक रूप, भाषा, भाव आ परम्परागत आधार लिखब उचित अछि — एहि बिन्दुसँ सीताराम झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

४८. (B) सीताराम झा पर उत्तरमे नामक संग मुक्तकक रूप, भाषा, भाव आ परम्परागत आधार लिखब उचित अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

४९. (B) सीताराम झा पर उत्तरमे नामक संग मुक्तकक रूप, भाषा, भाव आ परम्परागत आधार लिखब उचित अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

५०. (B) सीताराम झा पर उत्तरमे नामक संग मुक्तकक रूप, भाषा, भाव आ परम्परागत आधार लिखब उचित अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

५१. (B) आलोचनामे रचनाक लघु आकार, भाव-गहनता, संकेत, लय आ भाषा-सौष्ठवक समन्वय देखल जाइत अछि — "आलोचना" सीताराम झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

५२. (B) आलोचनामे रचनाक लघु आकार, भाव-गहनता, संकेत, लय आ भाषा-सौष्ठवक समन्वय देखल जाइत अछि — एहि बिन्दुसँ सीताराम झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

५३. (B) आलोचनामे रचनाक लघु आकार, भाव-गहनता, संकेत, लय आ भाषा-सौष्ठवक समन्वय देखल जाइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

५४. (B) आलोचनामे रचनाक लघु आकार, भाव-गहनता, संकेत, लय आ भाषा-सौष्ठवक समन्वय देखल जाइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

५५. (B) आलोचनामे रचनाक लघु आकार, भाव-गहनता, संकेत, लय आ भाषा-सौष्ठवक समन्वय देखल जाइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

५६. (B) सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययन लोक-संस्कार आ शास्त्रीय संस्कारक सह-अस्तित्व दिस संकेत करैत अछि — "लोक-संस्कार" सीताराम झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

५७. (B) सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययन लोक-संस्कार आ शास्त्रीय संस्कारक सह-अस्तित्व दिस संकेत करैत अछि — एहि बिन्दुसँ सीताराम झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

५८. (B) सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययन लोक-संस्कार आ शास्त्रीय संस्कारक सह-अस्तित्व दिस संकेत करैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

५९. (B) सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययन लोक-संस्कार आ शास्त्रीय संस्कारक सह-अस्तित्व दिस संकेत करैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

६०. (B) सीताराम झाक मुक्तकक अध्ययन लोक-संस्कार आ शास्त्रीय संस्कारक सह-अस्तित्व दिस संकेत करैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

६१. (B) मुक्तकमे करुण, शान्त, शृङ्गार वा नीति-रसक संक्षिप्त लेकिन प्रभावी रूप भेटि सकैत अछि — "रस-बोध" सीताराम झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

६२. (B) मुक्तकमे करुण, शान्त, शृङ्गार वा नीति-रसक संक्षिप्त लेकिन प्रभावी रूप भेटि सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ सीताराम झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

६३. (B) मुक्तकमे करुण, शान्त, शृङ्गार वा नीति-रसक संक्षिप्त लेकिन प्रभावी रूप भेटि सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

६४. (B) मुक्तकमे करुण, शान्त, शृङ्गार वा नीति-रसक संक्षिप्त लेकिन प्रभावी रूप भेटि सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

६५. (B) मुक्तकमे करुण, शान्त, शृङ्गार वा नीति-रसक संक्षिप्त लेकिन प्रभावी रूप भेटि सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

६६. (B) सीताराम झा सम्बन्धी कथ्य-विचारमे रचनाक भावक केन्द्र पकड़ब मुख्य होइत अछि — "कथ्य" सीताराम झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

६७. (B) सीताराम झा सम्बन्धी कथ्य-विचारमे रचनाक भावक केन्द्र पकड़ब मुख्य होइत अछि — एहि बिन्दुसँ सीताराम झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

६८. (B) सीताराम झा सम्बन्धी कथ्य-विचारमे रचनाक भावक केन्द्र पकड़ब मुख्य होइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

६९. (B) सीताराम झा सम्बन्धी कथ्य-विचारमे रचनाक भावक केन्द्र पकड़ब मुख्य होइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

७०. (B) सीताराम झा सम्बन्धी कथ्य-विचारमे रचनाक भावक केन्द्र पकड़ब मुख्य होइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

७१. (B) लघुता, लय आ भाव-गहनता मुक्तककेँ स्मरणीय बनबैत अछि — "स्मरणीयता" सीताराम झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

७२. (B) लघुता, लय आ भाव-गहनता मुक्तककेँ स्मरणीय बनबैत अछि — एहि बिन्दुसँ सीताराम झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

७३. (B) लघुता, लय आ भाव-गहनता मुक्तककेँ स्मरणीय बनबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

७४. (B) लघुता, लय आ भाव-गहनता मुक्तककेँ स्मरणीय बनबैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

७५. (B) लघुता, लय आ भाव-गहनता मुक्तककेँ स्मरणीय बनबैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

७६. (B) शिल्पमे शब्द-चयन, यति, लय, बिम्ब आ अन्तिम वक्रता महत्त्वपूर्ण अछि — "शिल्प" सीताराम झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

७७. (B) शिल्पमे शब्द-चयन, यति, लय, बिम्ब आ अन्तिम वक्रता महत्त्वपूर्ण अछि — एहि बिन्दुसँ सीताराम झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

७८. (B) शिल्पमे शब्द-चयन, यति, लय, बिम्ब आ अन्तिम वक्रता महत्त्वपूर्ण अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

७९. (B) शिल्पमे शब्द-चयन, यति, लय, बिम्ब आ अन्तिम वक्रता महत्त्वपूर्ण अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

८०. (B) शिल्पमे शब्द-चयन, यति, लय, बिम्ब आ अन्तिम वक्रता महत्त्वपूर्ण अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

८१. (B) एहि कविक पाठमे विद्यार्थीकें मुक्तकक स्वतंत्रता, भाव-एकाग्रता आ भाषा-संयम सिखाओल जा सकैत अछि — "शिक्षण" सीताराम झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

८२. (B) एहि कविक पाठमे विद्यार्थीकें मुक्तकक स्वतंत्रता, भाव-एकाग्रता आ भाषा-संयम सिखाओल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ सीताराम झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

८३. (B) एहि कविक पाठमे विद्यार्थीकें मुक्तकक स्वतंत्रता, भाव-एकाग्रता आ भाषा-संयम सिखाओल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

८४. (B) एहि कविक पाठमे विद्यार्थीकें मुक्तकक स्वतंत्रता, भाव-एकाग्रता आ भाषा-संयम सिखाओल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

८५. (B) एहि कविक पाठमे विद्यार्थीकें मुक्तकक स्वतंत्रता, भाव-एकाग्रता आ भाषा-संयम सिखाओल जा सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

८६. (B) सीताराम झा कैं अन्य मुक्तक-कविसँ तुलना करैत समय भाव-प्रकृति, लय आ शब्द-संयम देखल जाइत अछि — "तुलना" सीताराम झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

८७. (B) सीताराम झा कैं अन्य मुक्तक-कविसँ तुलना करैत समय भाव-प्रकृति, लय आ शब्द-संयम देखल जाइत अछि — एहि बिन्दुसँ सीताराम झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

८८. (B) सीताराम झा कैं अन्य मुक्तक-कविसँ तुलना करैत समय भाव-प्रकृति, लय आ शब्द-संयम देखल जाइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

८९. (B) सीताराम झा कैं अन्य मुक्तक-कविसँ तुलना करैत समय भाव-प्रकृति, लय आ शब्द-संयम देखल जाइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

९०. (B) सीताराम झा कैं अन्य मुक्तक-कविसँ तुलना करैत समय भाव-प्रकृति, लय आ शब्द-संयम देखल जाइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

९१. (B) मुक्तकक परिणति छोट आकारमे संपूर्ण भावानुभूति देबामे अछि — "परिणति" सीताराम झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

९२. (B) मुक्तकक परिणति छोट आकारमे संपूर्ण भावानुभूति देबामे अछि — एहि बिन्दुसँ सीताराम झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

९३. (B) मुक्तकक परिणति छोट आकारमे संपूर्ण भावानुभूति देबामे अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

९४. (B) मुक्तकक परिणति छोट आकारमे संपूर्ण भावानुभूति देबामे अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

९५. (B) मुक्तकक परिणति छोट आकारमे संपूर्ण भावानुभूति देबामे अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

९६. (B) सीताराम झा मुक्तकक अध्ययन मैथिली कविता-परम्पराक लघु लेकिन गहन रूप बुझबामे सहायक अछि — "समग्र महत्त्व" सीताराम झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

९७. (B) सीताराम झा मुक्तकक अध्ययन मैथिली कविता-परम्पराक लघु लेकिन गहन रूप बुझबामे सहायक अछि — एहि बिन्दुसँ सीताराम झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

९८. (B) सीताराम झा मुक्तकक अध्ययन मैथिली कविता-परम्पराक लघु लेकिन गहन रूप बुझबामे सहायक अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

९९. (B) सीताराम झा मुक्तकक अध्ययन मैथिली कविता-परम्पराक लघु लेकिन गहन रूप बुझबामे सहायक अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

१००. (B) सीताराम झा मुक्तकक अध्ययन मैथिली कविता-परम्पराक लघु लेकिन गहन रूप बुझबामे सहायक अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

१०१. (B) 'मधुप' नाम गीतात्मक मधुरता, प्रकृति-संसर्ग आ भाव-सुश्राव्यता दिस संकेत करैत अछि — "मधुप नाम" काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

१०२. (B) 'मधुप' नाम गीतात्मक मधुरता, प्रकृति-संसर्ग आ भाव-सुश्राव्यता दिस संकेत करैत अछि — एहि बिन्दुसँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

१०३. (B) 'मधुप' नाम गीतात्मक मधुरता, प्रकृति-संसर्ग आ भाव-सुश्राव्यता दिस संकेत करैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

१०४. (B) 'मधुप' नाम गीतात्मक मधुरता, प्रकृति-संसर्ग आ भाव-सुश्राव्यता दिस संकेत करैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

१०५. (B) 'मधुप' नाम गीतात्मक मधुरता, प्रकृति-संसर्ग आ भाव-सुश्राव्यता दिस संकेत करैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

१०६. (B) काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनमे लय, माधुर्य आ गीत-संवेदना महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि — "गीतात्मकता" काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

१०७. (B) काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनमे लय, माधुर्य आ गीत-संवेदना महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि — एहि बिन्दुसँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

१०८. (B) काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनमे लय, माधुर्य आ गीत-संवेदना महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

१०९. (B) काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनमे लय, माधुर्य आ गीत-संवेदना महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

११०. (B) काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनमे लय, माधुर्य आ गीत-संवेदना महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

१११. (B) मधुपक मुक्तकमे भावक संक्षिप्त, सजल आ प्रभावी प्रस्तुति पहिचानक बिन्दु अछि — "भाव-संयम" काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

११२. (B) मधुपक मुक्तकमे भावक संक्षिप्त, सजल आ प्रभावी प्रस्तुति पहिचानक बिन्दु अछि — एहि बिन्दुसँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

११३. (B) मधुपक मुक्तकमे भावक संक्षिप्त, सजल आ प्रभावी प्रस्तुति पहिचानक बिन्दु अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

११४. (B) मधुपक मुक्तकमे भावक संक्षिप्त, सजल आ प्रभावी प्रस्तुति पहिचानक बिन्दु अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

११५. (B) मधुपक मुक्तकमे भावक संक्षिप्त, सजल आ प्रभावी प्रस्तुति पहिचानक बिन्दु अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

११६. (B) मधुपक अध्ययनमे फूल, मधु, ऋतु आ प्रकृति-संकेतक सौन्दर्यगत भूमिका पर ध्यान देल जाइत अछि — "प्रकृति-बिम्ब" काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

११७. (B) मधुपक अध्ययनमे फूल, मधु, ऋतु आ प्रकृति-संकेतक सौन्दर्यगत भूमिका पर ध्यान देल जाइत अछि — एहि बिन्दुसँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

११८. (B) मधुपक अध्ययनमे फूल, मधु, ऋतु आ प्रकृति-संकेतक सौन्दर्यगत भूमिका पर ध्यान देल जाइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

११९. (B) मधुपक अध्ययनमे फूल, मधु, ऋतु आ प्रकृति-संकेतक सौन्दर्यगत भूमिका पर ध्यान देल जाइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

१२०. (B) मधुपक अध्ययनमे फूल, मधु, ऋतु आ प्रकृति-संकेतक सौन्दर्यगत भूमिका पर ध्यान देल जाइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

१२१. (B) हुनक गीतधर्मी मुक्तक लोकजीवनक स्वरकेँ कलात्मक भाषा देबैत अछि — "लोक-स्पर्श" काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

१२२. (B) हुनक गीतधर्मी मुक्तक लोकजीवनक स्वरकेँ कलात्मक भाषा देबैत अछि — एहि बिन्दुसँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

१२३. (B) हुनक गीतधर्मी मुक्तक लोकजीवनक स्वरकेँ कलात्मक भाषा देबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

१२४. (B) हुनक गीतधर्मी मुक्तक लोकजीवनक स्वरकेँ कलात्मक भाषा देबैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

१२५. (B) हुनक गीतधर्मी मुक्तक लोकजीवनक स्वरकेँ कलात्मक भाषा देबैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

१२६. (B) मधुपक मुक्तकमे शृङ्गार, करुण, सौन्दर्य आ जीवन-बोधक सूक्ष्म आवेग देखल जा सकैत अछि — "रस" काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

१२७. (B) मधुपक मुक्तकमे शृङ्गार, करुण, सौन्दर्य आ जीवन-बोधक सूक्ष्म आवेग देखल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

१२८. (B) मधुपक मुक्तकमे शृङ्गार, करुण, सौन्दर्य आ जीवन-बोधक सूक्ष्म आवेग देखल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

१२९. (B) मधुपक मुक्तकमे शृङ्गार, करुण, सौन्दर्य आ जीवन-बोधक सूक्ष्म आवेग देखल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

१३०. (B) मधुपक मुक्तकमे शृङ्गार, करुण, सौन्दर्य आ जीवन-बोधक सूक्ष्म आवेग देखल जा सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

१३१. (B) हुनक कविता-पाठमे ध्वनि, लय आ मधुर शब्दावलीक उपयोग विशेष ध्यानयोग्य अछि — "भाषिक माधुर्य" काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

१३२. (B) हुनक कविता-पाठमे ध्वनि, लय आ मधुर शब्दावलीक उपयोग विशेष ध्यानयोग्य अछि — एहि बिन्दुसँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

१३३. (B) हुनक कविता-पाठमे ध्वनि, लय आ मधुर शब्दावलीक उपयोग विशेष ध्यानयोग्य अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

१३४. (B) हुनक कविता-पाठमे ध्वनि, लय आ मधुर शब्दावलीक उपयोग विशेष ध्यानयोग्य अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

१३५. (B) हुनक कविता-पाठमे ध्वनि, लय आ मधुर शब्दावलीक उपयोग विशेष ध्यानयोग्य अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

१३६. (B) मधुपक सन्दर्भमे मुक्तकक स्वतन्त्र भाव-एकाइ आ छोट आकारक पूर्णता प्रमुख अछि — "मुक्तक-संरचना" काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

१३७. (B) मधुपक सन्दर्भमे मुक्तकक स्वतन्त्र भाव-एकाइ आ छोट आकारक पूर्णता प्रमुख अछि — एहि बिन्दुसँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

१३८. (B) मधुपक सन्दर्भमे मुक्तकक स्वतन्त्र भाव-एकाइ आ छोट आकारक पूर्णता प्रमुख अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

१३९. (B) मधुपक सन्दर्भमे मुक्तकक स्वतन्त्र भाव-एकाइ आ छोट आकारक पूर्णता प्रमुख अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

१४०. (B) मधुपक सन्दर्भमे मुक्तकक स्वतन्त्र भाव-एकाइ आ छोट आकारक पूर्णता प्रमुख अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

१४१. (B) मधुपक कविता मैथिली गीत-परम्परा आ आधुनिक संवेदनाक बीच सेतु बनि सकैत अछि — "काव्य-परम्परा" काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

१४२. (B) मधुपक कविता मैथिली गीत-परम्परा आ आधुनिक संवेदनाक बीच सेतु बनि सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

१४३. (B) मधुपक कविता मैथिली गीत-परम्परा आ आधुनिक संवेदनाक बीच सेतु बनि सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

१४४. (B) मधुपक कविता मैथिली गीत-परम्परा आ आधुनिक संवेदनाक बीच सेतु बनि सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

१४५. (B) मधुपक कविता मैथिली गीत-परम्परा आ आधुनिक संवेदनाक बीच सेतु बनि सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

१४६. (B) सहज भावक गेय रूप मुक्तककेँ पाठकक स्मृतिमे स्थिर करैत अछि — "सहजता" काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

१४७. (B) सहज भावक गेय रूप मुक्तककेँ पाठकक स्मृतिमे स्थिर करैत अछि — एहि बिन्दुसँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

१४८. (B) सहज भावक गेय रूप मुक्तककेँ पाठकक स्मृतिमे स्थिर करैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

१४९. (B) सहज भावक गेय रूप मुक्तककेँ पाठकक स्मृतिमे स्थिर करैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

१५०. (B) सहज भावक गेय रूप मुक्तककेँ पाठकक स्मृतिमे स्थिर करैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

१५१. (B) मधुपक कवि-व्यक्तित्वक अध्ययनमे कोमलता, गीतत्व आ सौन्दर्य-बोधक संतुलन देखल जाइत अछि — "कवि-व्यक्तित्व" काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

१५२. (B) मधुपक कवि-व्यक्तित्वक अध्ययनमे कोमलता, गीतत्व आ सौन्दर्य-बोधक संतुलन देखल जाइत अछि — एहि बिन्दुसँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

१५३. (B) मधुपक कवि-व्यक्तित्वक अध्ययनमे कोमलता, गीतत्व आ सौन्दर्य-बोधक संतुलन देखल जाइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

१५४. (B) मधुपक कवि-व्यक्तित्वक अध्ययनमे कोमलता, गीतत्व आ सौन्दर्य-बोधक संतुलन देखल जाइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

१५५. (B) मधुपक कवि-व्यक्तित्वक अध्ययनमे कोमलता, गीतत्व आ सौन्दर्य-बोधक संतुलन देखल जाइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

१५६. (B) छोट मुक्तकमे अनुप्रास, उपमा, रूपक आ ध्वनि-साम्य प्रभाव बढ़बैत अछि — "अलंकार" काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

१५७. (B) छोट मुक्तकमे अनुप्रास, उपमा, रूपक आ ध्वनि-साम्य प्रभाव बढ़बैत अछि — एहि बिन्दुसँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

१५८. (B) छोट मुक्तकमे अनुप्रास, उपमा, रूपक आ ध्वनि-साम्य प्रभाव बढ़बैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

१५९. (B) छोट मुक्तकमे अनुप्रास, उपमा, रूपक आ ध्वनि-साम्य प्रभाव बढ़बैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

१६०. (B) छोट मुक्तकमे अनुप्रास, उपमा, रूपक आ ध्वनि-साम्य प्रभाव बढ़बैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

१६१. (B) गीतात्मक मुक्तकमे छन्द वा लय रचनाक श्रवण-सुख आ स्मरणीयता बनबैत अछि — "छन्द" काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

१६२. (B) गीतात्मक मुक्तकमे छन्द वा लय रचनाक श्रवण-सुख आ स्मरणीयता बनबैत अछि — एहि बिन्दुसँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

१६३. (B) गीतात्मक मुक्तकमे छन्द वा लय रचनाक श्रवण-सुख आ स्मरणीयता बनबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

१६४. (B) गीतात्मक मुक्तकमे छन्द वा लय रचनाक श्रवण-सुख आ स्मरणीयता बनबैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

१६५. (B) गीतात्मक मुक्तकमे छन्द वा लय रचनाक श्रवण-सुख आ स्मरणीयता बनबैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

१६६. (B) मधुपक काव्य-पाठमे बाह्य प्रकृति आ आन्तरिक भावक मिलन सौन्दर्य रचैत अछि — "सौन्दर्य-दृष्टि" काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

१६७. (B) मधुपक काव्य-पाठमे बाह्य प्रकृति आ आन्तरिक भावक मिलन सौन्दर्य रचैत अछि — एहि बिन्दुसँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

१६८. (B) मधुपक काव्य-पाठमे बाह्य प्रकृति आ आन्तरिक भावक मिलन सौन्दर्य रचैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

१६९. (B) मधुपक काव्य-पाठमे बाह्य प्रकृति आ आन्तरिक भावक मिलन सौन्दर्य रचैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

१७०. (B) मधुपक काव्य-पाठमे बाह्य प्रकृति आ आन्तरिक भावक मिलन सौन्दर्य रचैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

१७१. (B) प्रेमक अभिव्यक्ति मुक्तकमे संक्षिप्त, सांकेतिक आ गेय रूपमे आबि सकैत अछि — "प्रेम-भाव" काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

१७२. (B) प्रेमक अभिव्यक्ति मुक्तकमे संक्षिप्त, सांकेतिक आ गेय रूपमे आबि सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

१७३. (B) प्रेमक अभिव्यक्ति मुक्तकमे संक्षिप्त, सांकेतिक आ गेय रूपमे आबि सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

१७४. (B) प्रेमक अभिव्यक्ति मुक्तकमे संक्षिप्त, सांकेतिक आ गेय रूपमे आबि सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

१७५. (B) प्रेमक अभिव्यक्ति मुक्तकमे संक्षिप्त, सांकेतिक आ गेय रूपमे आबि सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

१७६. (B) मधुपक मुक्तकक शक्ति तात्कालिक भाव-स्पर्श आ सुचिक्कण अभिव्यक्तिमे अछि — "संवेदना" काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

१७७. (B) मधुपक मुक्तकक शक्ति तात्कालिक भाव-स्पर्श आ सुचिक्कण अभिव्यक्तिमे अछि — एहि बिन्दुसँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

१७८. (B) मधुपक मुक्तकक शक्ति तात्कालिक भाव-स्पर्श आ सुचिक्कण अभिव्यक्तिमे अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

१७९. (B) मधुपक मुक्तकक शक्ति तात्कालिक भाव-स्पर्श आ सुचिक्कण अभिव्यक्तिमे अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

१८०. (B) मधुपक मुक्तकक शक्ति तात्कालिक भाव-स्पर्श आ सुचिक्कण अभिव्यक्तिमे अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

१८१. (B) मधुप पर उत्तर देत समय गीतत्व, माधुर्य, प्रकृति-बिम्ब, भाषा आ मुक्तक-रूप जरूर जोड़ू — "आलोचना-प्रश्न" काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

१८२. (B) मधुप पर उत्तर देत समय गीतत्व, माधुर्य, प्रकृति-बिम्ब, भाषा आ मुक्तक-रूप जरूर जोड़ू — एहि बिन्दुसँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

१८३. (B) मधुप पर उत्तर देत समय गीतत्व, माधुर्य, प्रकृति-बिम्ब, भाषा आ मुक्तक-रूप जरूर जोड़ू — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

१८४. (B) मधुप पर उत्तर देत समय गीतत्व, माधुर्य, प्रकृति-बिम्ब, भाषा आ मुक्तक-रूप जरूर जोड़ू — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

१८५. (B) मधुप पर उत्तर देत समय गीतत्व, माधुर्य, प्रकृति-बिम्ब, भाषा आ मुक्तक-रूप जरूर जोड़ू — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

१८६. (B) मधुपक तुलना करैत समय हुनक मधुर गीतिमयता आ भाव-सूक्ष्मता विशेष बिन्दु बनैत अछि — "तुलना" काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

१८७. (B) मधुपक तुलना करैत समय हुनक मधुर गीतिमयता आ भाव-सूक्ष्मता विशेष बिन्दु बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

१८८. (B) मधुपक तुलना करैत समय हुनक मधुर गीतिमयता आ भाव-सूक्ष्मता विशेष बिन्दु बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

१८९. (B) मधुपक तुलना करैत समय हुनक मधुर गीतिमयता आ भाव-सूक्ष्मता विशेष बिन्दु बनैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

१९०. (B) मधुपक तुलना करैत समय हुनक मधुर गीतिमयता आ भाव-सूक्ष्मता विशेष बिन्दु बनैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

१९१. (B) हुनक मुक्तक पाठक पर लय, माधुर्य आ भाव-संकेतक संयुक्त प्रभाव छोड़ैत अछि — "पाठकीय प्रभाव" काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

१९२. (B) हुनक मुक्तक पाठक पर लय, माधुर्य आ भाव-संकेतक संयुक्त प्रभाव छोड़ैत अछि — एहि बिन्दुसँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

१९३. (B) हुनक मुक्तक पाठक पर लय, माधुर्य आ भाव-संकेतक संयुक्त प्रभाव छोड़ैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

१९४. (B) हुनक मुक्तक पाठक पर लय, माधुर्य आ भाव-संकेतक संयुक्त प्रभाव छोड़ैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

१९५. (B) हुनक मुक्तक पाठक पर लय, माधुर्य आ भाव-संकेतक संयुक्त प्रभाव छोड़ैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

१९६. (B) काशीकान्त मिश्र 'मधुप' मुक्तकक गीतात्मक, मधुर आ संवेदनशील परम्परा बुझबामे उपयोगी कवि छथि — "समग्र मूल्य" काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

१९७. (B) काशीकान्त मिश्र 'मधुप' मुक्तकक गीतात्मक, मधुर आ संवेदनशील परम्परा बुझबामे उपयोगी कवि छथि — एहि बिन्दुसँ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

१९८. (B) काशीकान्त मिश्र 'मधुप' मुक्तकक गीतात्मक, मधुर आ संवेदनशील परम्परा बुझबामे उपयोगी कवि छथि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

१९९. (B) काशीकान्त मिश्र 'मधुप' मुक्तकक गीतात्मक, मधुर आ संवेदनशील परम्परा बुझबामे उपयोगी कवि छथि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

२००. (B) काशीकान्त मिश्र 'मधुप' मुक्तकक गीतात्मक, मधुर आ संवेदनशील परम्परा बुझबामे उपयोगी कवि छथि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

२०१. (B) 'सुमन' नाम काव्यक कोमलता, भाव-सौरभ आ रचनात्मक प्रस्फुटनक संकेत दैत अछि — "सुमन नाम" सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

२०२. (B) 'सुमन' नाम काव्यक कोमलता, भाव-सौरभ आ रचनात्मक प्रस्फुटनक संकेत दैत अछि — एहि बिन्दुसँ सुरेन्द्र झा 'सुमन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

२०३. (B) 'सुमन' नाम काव्यक कोमलता, भाव-सौरभ आ रचनात्मक प्रस्फुटनक संकेत दैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

२०४. (B) 'सुमन' नाम काव्यक कोमलता, भाव-सौरभ आ रचनात्मक प्रस्फुटनक संकेत दैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

२०५. (B) 'सुमन' नाम काव्यक कोमलता, भाव-सौरभ आ रचनात्मक प्रस्फुटनक संकेत दैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

२०६. (B) सुरेन्द्र झा 'सुमन'क अध्ययनमे परम्परागत काव्य-संस्कार आ आधुनिक चेतनाक संतुलन देखल जाइत अछि — "परम्परा आ आधुनिकता" सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

२०७. (B) सुरेन्द्र झा 'सुमन'क अध्ययनमे परम्परागत काव्य-संस्कार आ आधुनिक चेतनाक संतुलन देखल जाइत अछि — एहि बिन्दुसँ सुरेन्द्र झा 'सुमन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

२०८. (B) सुरेन्द्र झा 'सुमन'क अध्ययनमे परम्परागत काव्य-संस्कार आ आधुनिक चेतनाक संतुलन देखल जाइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

२०९. (B) सुरेन्द्र झा 'सुमन'क अध्ययनमे परम्परागत काव्य-संस्कार आ आधुनिक चेतनाक संतुलन देखल जाइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

२१०. (B) सुरेन्द्र झा 'सुमन'क अध्ययनमे परम्परागत काव्य-संस्कार आ आधुनिक चेतनाक संतुलन देखल जाइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

२११. (B) हुनक मुक्तकक पाठमे लय, आन्तरिक संगीत आ भाव-सम्प्रेषण महत्त्वपूर्ण अछि — "गीत-संवेदना" सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

२१२. (B) हुनक मुक्तकक पाठमे लय, आन्तरिक संगीत आ भाव-सम्प्रेषण महत्त्वपूर्ण अछि — एहि बिन्दुसँ सुरेन्द्र झा 'सुमन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

२१३. (B) हुनक मुक्तकक पाठमे लय, आन्तरिक संगीत आ भाव-सम्प्रेषण महत्त्वपूर्ण अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

२१४. (B) हुनक मुक्तकक पाठमे लय, आन्तरिक संगीत आ भाव-सम्प्रेषण महत्त्वपूर्ण अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

२१५. (B) हुनक मुक्तकक पाठमे लय, आन्तरिक संगीत आ भाव-सम्प्रेषण महत्त्वपूर्ण अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

२१६. (B) सुमनक कवितामे व्यक्ति-भावसँ आगाँ समाज, लोकजीवन आ नैतिक संकेत देखल जा सकैत अछि — "सामाजिक चेतना" सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

२१७. (B) सुमनक कवितामे व्यक्ति-भावसँ आगाँ समाज, लोकजीवन आ नैतिक संकेत देखल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ सुरेन्द्र झा 'सुमन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

२१८. (B) सुमनक कवितामे व्यक्ति-भावसँ आगाँ समाज, लोकजीवन आ नैतिक संकेत देखल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

२१९. (B) सुमनक कवितामे व्यक्ति-भावसँ आगाँ समाज, लोकजीवन आ नैतिक संकेत देखल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

२२०. (B) सुमनक कवितामे व्यक्ति-भावसँ आगाँ समाज, लोकजीवन आ नैतिक संकेत देखल जा सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

२२१. (B) हुनक भाषा भाववाही, संस्कारित आ पाठक-संवादी मानल जा सकैत अछि — "भाषा" सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

२२२. (B) हुनक भाषा भाववाही, संस्कारित आ पाठक-संवादी मानल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ सुरेन्द्र झा 'सुमन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

२२३. (B) हुनक भाषा भाववाही, संस्कारित आ पाठक-संवादी मानल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

२२४. (B) हुनक भाषा भाववाही, संस्कारित आ पाठक-संवादी मानल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

२२५. (B) हुनक भाषा भाववाही, संस्कारित आ पाठक-संवादी मानल जा सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

२२६. (B) मुक्तकमे सुमनक भाव छोट संरचनामे समेटि देबाक क्षमता अध्ययन-बिन्दु अछि — "रूप-संयम" सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

२२७. (B) मुक्तकमे सुमनक भाव छोट संरचनामे समेटि देबाक क्षमता अध्ययन-बिन्दु अछि — एहि बिन्दुसँ सुरेन्द्र झा 'सुमन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

२२८. (B) मुक्तकमे सुमनक भाव छोट संरचनामे समेटि देबाक क्षमता अध्ययन-बिन्दु अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

२२९. (B) मुक्तकमे सुमनक भाव छोट संरचनामे समेटि देबाक क्षमता अध्ययन-बिन्दु अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

२३०. (B) मुक्तकमे सुमनक भाव छोट संरचनामे समेटि देबाक क्षमता अध्ययन-बिन्दु अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

२३१. (B) मुक्तकक गेयता ध्वनि-संयोजन, यति आ पुनरुक्ति-सौन्दर्यसँ बनैत अछि — "आन्तरिक संगीत" सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

२३२. (B) मुक्तकक गेयता ध्वनि-संयोजन, यति आ पुनरुक्ति-सौन्दर्यसँ बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ सुरेन्द्र झा 'सुमन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

२३३. (B) मुक्तकक गेयता ध्वनि-संयोजन, यति आ पुनरुक्ति-सौन्दर्यसँ बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

२३४. (B) मुक्तकक गेयता ध्वनि-संयोजन, यति आ पुनरुक्ति-सौन्दर्यसँ बनैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

२३५. (B) मुक्तकक गेयता ध्वनि-संयोजन, यति आ पुनरुक्ति-सौन्दर्यसँ बनैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

२३६. (B) सुमनक कविता मनुष्यक अनुभव, आशा, पीड़ा आ नैतिक विकल्पक संकेत दे सकैत अछि — "मानव-बोध" सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

२३७. (B) सुमनक कविता मनुष्यक अनुभव, आशा, पीड़ा आ नैतिक विकल्पक संकेत दे सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ सुरेन्द्र झा 'सुमन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

२३८. (B) सुमनक कविता मनुष्यक अनुभव, आशा, पीड़ा आ नैतिक विकल्पक संकेत दे सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

२३९. (B) सुमनक कविता मनुष्यक अनुभव, आशा, पीड़ा आ नैतिक विकल्पक संकेत दे सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

२४०. (B) सुमनक कविता मनुष्यक अनुभव, आशा, पीड़ा आ नैतिक विकल्पक संकेत दे सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

२४१. (B) प्रकृति-संकेत मुक्तकमे भावक आलम्बन आ प्रतीक दुनू बनि सकैत अछि — "प्रकृति" सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

२४२. (B) प्रकृति-संकेत मुक्तकमे भावक आलम्बन आ प्रतीक दुनू बनि सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ सुरेन्द्र झा 'सुमन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

२४३. (B) प्रकृति-संकेत मुक्तकमे भावक आलम्बन आ प्रतीक दुनू बनि सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

२४४. (B) प्रकृति-संकेत मुक्तकमे भावक आलम्बन आ प्रतीक दुनू बनि सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

२४५. (B) प्रकृति-संकेत मुक्तकमे भावक आलम्बन आ प्रतीक दुनू बनि सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

२४६. (B) आधुनिक मैथिली मुक्तकमे सांस्कृतिक अस्मिता आ लोक-चेतना महत्त्वपूर्ण प्रश्न-बिन्दु अछि — "राष्ट्रीय/सांस्कृतिक चेतना" सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

२४७. (B) आधुनिक मैथिली मुक्तकमे सांस्कृतिक अस्मिता आ लोक-चेतना महत्त्वपूर्ण प्रश्न-बिन्दु अछि — एहि बिन्दुसँ सुरेन्द्र झा 'सुमन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

२४८. (B) आधुनिक मैथिली मुक्तकमे सांस्कृतिक अस्मिता आ लोक-चेतना महत्त्वपूर्ण प्रश्न-बिन्दु अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

२४९. (B) आधुनिक मैथिली मुक्तकमे सांस्कृतिक अस्मिता आ लोक-चेतना महत्त्वपूर्ण प्रश्न-बिन्दु अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

२५०. (B) आधुनिक मैथिली मुक्तकमे सांस्कृतिक अस्मिता आ लोक-चेतना महत्त्वपूर्ण प्रश्न-बिन्दु अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

२५१. (B) सुरेन्द्र झा 'सुमन'क नाम मैथिली साहित्यक आधुनिक काव्य-परम्परामे स्मरणीय रूपेँ पढ़ल जाइत अछि — "साहित्यिक स्थान" सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

२५२. (B) सुरेन्द्र झा 'सुमन'क नाम मैथिली साहित्यक आधुनिक काव्य-परम्परामे स्मरणीय रूपेँ पढ़ल जाइत अछि — एहि बिन्दुसँ सुरेन्द्र झा 'सुमन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

२५३. (B) सुरेन्द्र झा 'सुमन'क नाम मैथिली साहित्यक आधुनिक काव्य-परम्परामे स्मरणीय रूपेँ पढ़ल जाइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

२५४. (B) सुरेन्द्र झा 'सुमन'क नाम मैथिली साहित्यक आधुनिक काव्य-परम्परामे स्मरणीय रूपेँ पढ़ल जाइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

२५५. (B) सुरेन्द्र झा 'सुमन'क नाम मैथिली साहित्यक आधुनिक काव्य-परम्परामे स्मरणीय रूपेँ पढ़ल जाइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

२५६. (B) मुक्तक स्वतंत्र होइत हुएँ सेहो भाषिक अनुशासन आ भाव-केन्द्र सँ निबद्ध रहैत अछि — "निबद्धता" सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

२५७. (B) मुक्तक स्वतंत्र होइत हुएँ सेहो भाषिक अनुशासन आ भाव-केन्द्र सँ निबद्ध रहैत अछि — एहि बिन्दुसँ सुरेन्द्र झा 'सुमन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

२५८. (B) मुक्तक स्वतंत्र होइत हुएँ सेहो भाषिक अनुशासन आ भाव-केन्द्र सँ निबद्ध रहैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

२५९. (B) मुक्तक स्वतंत्र होइत हुएँ सेहो भाषिक अनुशासन आ भाव-केन्द्र सँ निबद्ध रहैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

२६०. (B) मुक्तक स्वतंत्र होइत हुएँ सेहो भाषिक अनुशासन आ भाव-केन्द्र सँ निबद्ध रहैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

२६१. (B) छोट मुक्तकमे प्रत्यक्ष अर्थक संग सांकेतिक अर्थ सेहो रहि सकैत अछि — "अर्थ-स्तर" सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

२६२. (B) छोट मुक्तकमे प्रत्यक्ष अर्थक संग सांकेतिक अर्थ सेहो रहि सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ सुरेन्द्र झा 'सुमन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

२६३. (B) छोट मुक्तकमे प्रत्यक्ष अर्थक संग सांकेतिक अर्थ सेहो रहि सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

२६४. (B) छोट मुक्तकमे प्रत्यक्ष अर्थक संग सांकेतिक अर्थ सेहो रहि सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

२६५. (B) छोट मुक्तकमे प्रत्यक्ष अर्थक संग सांकेतिक अर्थ सेहो रहि सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

२६६. (B) सुमन-सन्दर्भमे अलंकार भावकेँ सजबैत अछि, भावकेँ ढाँपैत नहि — "अलंकारिकता" सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

२६७. (B) सुमन-सन्दर्भमे अलंकार भावकेँ सजबैत अछि, भावकेँ ढाँपैत नहि — एहि बिन्दुसँ सुरेन्द्र झा 'सुमन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

२६८. (B) सुमन-सन्दर्भमे अलंकार भावकेँ सजबैत अछि, भावकेँ ढाँपैत नहि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

२६९. (B) सुमन-सन्दर्भमे अलंकार भावकेँ सजबैत अछि, भावकेँ ढाँपैत नहि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

२७०. (B) सुमन-सन्दर्भमे अलंकार भावकेँ सजबैत अछि, भावकेँ ढाँपैत नहि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

२७१. (B) मुक्तक पढ़ैत समय हर पंक्ति, विराम, ध्वनि आ अन्तिम मोड़ पर ध्यान देब चाही — "पाठ-प्रक्रिया" सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

२७२. (B) मुक्तक पढ़ैत समय हर पंक्ति, विराम, ध्वनि आ अन्तिम मोड़ पर ध्यान देब चाही — एहि बिन्दुसँ सुरेन्द्र झा 'सुमन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

२७३. (B) मुक्तक पढ़ैत समय हर पंक्ति, विराम, ध्वनि आ अन्तिम मोड़ पर ध्यान देब चाही — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

२७४. (B) मुक्तक पढ़ैत समय हर पंक्ति, विराम, ध्वनि आ अन्तिम मोड़ पर ध्यान देब चाही — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

२७५. (B) मुक्तक पढ़ैत समय हर पंक्ति, विराम, ध्वनि आ अन्तिम मोड़ पर ध्यान देब चाही — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

२७६. (B) सुमनक मुक्तकक संदेश अनेक बेर सूक्ष्म, सांकेतिक आ नैतिक-मानवीय होइत अछि — "काव्य-संदेश" सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

२७७. (B) सुमनक मुक्तकक संदेश अनेक बेर सूक्ष्म, सांकेतिक आ नैतिक-मानवीय होइत अछि — एहि बिन्दुसँ सुरेन्द्र झा 'सुमन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

२७८. (B) सुमनक मुक्तकक संदेश अनेक बेर सूक्ष्म, सांकेतिक आ नैतिक-मानवीय होइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

२७९. (B) सुमनक मुक्तकक संदेश अनेक बेर सूक्ष्म, सांकेतिक आ नैतिक-मानवीय होइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

२८०. (B) सुमनक मुक्तकक संदेश अनेक बेर सूक्ष्म, सांकेतिक आ नैतिक-मानवीय होइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

२८१. (B) सुमनक तुलना करैत समय गीतत्व, सामाजिक चेतना आ भाषिक संस्कार प्रमुख बिन्दु बनैत अछि — "तुलना" सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

२८२. (B) सुमनक तुलना करैत समय गीतत्व, सामाजिक चेतना आ भाषिक संस्कार प्रमुख बिन्दु बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ सुरेन्द्र झा 'सुमन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

२८३. (B) सुमनक तुलना करैत समय गीतत्व, सामाजिक चेतना आ भाषिक संस्कार प्रमुख बिन्दु बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

२८४. (B) सुमनक तुलना करैत समय गीतत्व, सामाजिक चेतना आ भाषिक संस्कार प्रमुख बिन्दु बनैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

२८५. (B) सुमनक तुलना करैत समय गीतत्व, सामाजिक चेतना आ भाषिक संस्कार प्रमुख बिन्दु बनैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

२८६. (B) उत्तरमे सुमनक काव्य-संवेदना, लय, भाषा, समाज-बोध आ मुक्तक-रूप लिखब उपयोगी अछि — "परीक्षा-उत्तर" सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

२८७. (B) उत्तरमे सुमनक काव्य-संवेदना, लय, भाषा, समाज-बोध आ मुक्तक-रूप लिखब उपयोगी अछि — एहि बिन्दुसँ सुरेन्द्र झा 'सुमन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

२८८. (B) उत्तरमे सुमनक काव्य-संवेदना, लय, भाषा, समाज-बोध आ मुक्तक-रूप लिखब उपयोगी अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

२८९. (B) उत्तरमे सुमनक काव्य-संवेदना, लय, भाषा, समाज-बोध आ मुक्तक-रूप लिखब उपयोगी अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

२९०. (B) उत्तरमे सुमनक काव्य-संवेदना, लय, भाषा, समाज-बोध आ मुक्तक-रूप लिखब उपयोगी अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

२९१. (B) सुगम भाषा आ लयात्मकता मुक्तककेँ व्यापक पाठकीयता दैत अछि — "पाठकीयता" सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

२९२. (B) सुगम भाषा आ लयात्मकता मुक्तककेँ व्यापक पाठकीयता दैत अछि — एहि बिन्दुसँ सुरेन्द्र झा 'सुमन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

२९३. (B) सुगम भाषा आ लयात्मकता मुक्तककेँ व्यापक पाठकीयता दैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

२९४. (B) सुगम भाषा आ लयात्मकता मुक्तककेँ व्यापक पाठकीयता दैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

२९५. (B) सुगम भाषा आ लयात्मकता मुक्तककेँ व्यापक पाठकीयता दैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

२९६. (B) सुरेन्द्र झा 'सुमन' मुक्तकक भाव, गीतत्व आ सामाजिक चेतनाक अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण नाम छथि — "समग्र मूल्य" सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

२९७. (B) सुरेन्द्र झा 'सुमन' मुक्तकक भाव, गीतत्व आ सामाजिक चेतनाक अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण नाम छथि — एहि बिन्दुसँ सुरेन्द्र झा 'सुमन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

२९८. (B) सुरेन्द्र झा 'सुमन' मुक्तकक भाव, गीतत्व आ सामाजिक चेतनाक अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण नाम छथि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

२९९. (B) सुरेन्द्र झा 'सुमन' मुक्तकक भाव, गीतत्व आ सामाजिक चेतनाक अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण नाम छथि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

३००. (B) सुरेन्द्र झा 'सुमन' मुक्तकक भाव, गीतत्व आ सामाजिक चेतनाक अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण नाम छथि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

३०१. (B) 'यात्री' नामसँ चर्चित कवि लोकजीवन, जनचेतना आ यथार्थ-बोधक सशक्त स्वर रूपेँ पढ़ल जाइत छथि — "यात्री परिचय" यात्रीक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

३०२. (B) 'यात्री' नामसँ चर्चित कवि लोकजीवन, जनचेतना आ यथार्थ-बोधक सशक्त स्वर रूपेँ पढ़ल जाइत छथि — एहि बिन्दुसँ यात्रीक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

३०३. (B) 'यात्री' नामसँ चर्चित कवि लोकजीवन, जनचेतना आ यथार्थ-बोधक सशक्त स्वर रूपेँ पढ़ल जाइत छथि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

३०४. (B) 'यात्री' नामसँ चर्चित कवि लोकजीवन, जनचेतना आ यथार्थ-बोधक सशक्त स्वर रूपेँ पढ़ल जाइत छथि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

३०५. (B) 'यात्री' नामसँ चर्चित कवि लोकजीवन, जनचेतना आ यथार्थ-बोधक सशक्त स्वर रूपेँ पढ़ल जाइत छथि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

३०६. (B) यात्रीक मुक्तकमे जनपक्ष, किसान-श्रमिक जीवन आ लोकभाषाक ऊर्जा महत्त्वपूर्ण अछि — "जनकाव्य" यात्रीक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

३०७. (B) यात्रीक मुक्तकमे जनपक्ष, किसान-श्रमिक जीवन आ लोकभाषाक ऊर्जा महत्त्वपूर्ण अछि — एहि बिन्दुसँ यात्रीक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

३०८. (B) यात्रीक मुक्तकमे जनपक्ष, किसान-श्रमिक जीवन आ लोकभाषाक ऊर्जा महत्त्वपूर्ण अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

३०९. (B) यात्रीक मुक्तकमे जनपक्ष, किसान-श्रमिक जीवन आ लोकभाषाक ऊर्जा महत्त्वपूर्ण अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

३१०. (B) यात्रीक मुक्तकमे जनपक्ष, किसान-श्रमिक जीवन आ लोकभाषाक ऊर्जा महत्त्वपूर्ण अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

३११. (B) हुनक काव्य-पाठमे व्यंग्य अन्याय, पाखण्ड आ असमानता पर प्रहारक साधन बनैत अछि — "व्यंग्य" यात्रीक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

३१२. (B) हुनक काव्य-पाठमे व्यंग्य अन्याय, पाखण्ड आ असमानता पर प्रहारक साधन बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ यात्रीक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

३१३. (B) हुनक काव्य-पाठमे व्यंग्य अन्याय, पाखण्ड आ असमानता पर प्रहारक साधन बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

३१४. (B) हुनक काव्य-पाठमे व्यंग्य अन्याय, पाखण्ड आ असमानता पर प्रहारक साधन बनैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

३१५. (B) हुनक काव्य-पाठमे व्यंग्य अन्याय, पाखण्ड आ असमानता पर प्रहारक साधन बनैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

३१६. (B) यात्रीक मुक्तक लोक-भाषिक ऊर्जा आ सहज कथनक कारण प्रभावी होइत अछि — "लोकभाषा" यात्रीक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

३१७. (B) यात्रीक मुक्तक लोक-भाषिक ऊर्जा आ सहज कथनक कारण प्रभावी होइत अछि — एहि बिन्दुसँ यात्रीक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

३१८. (B) यात्रीक मुक्तक लोक-भाषिक ऊर्जा आ सहज कथनक कारण प्रभावी होइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

३१९. (B) यात्रीक मुक्तक लोक-भाषिक ऊर्जा आ सहज कथनक कारण प्रभावी होइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

३२०. (B) यात्रीक मुक्तक लोक-भाषिक ऊर्जा आ सहज कथनक कारण प्रभावी होइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

३२१. (B) समाजक वास्तविक पीड़ा, संघर्ष आ विसंगति मुक्तकक विषय बनि सकैत अछि — "सामाजिक यथार्थ" यात्रीक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

३२२. (B) समाजक वास्तविक पीड़ा, संघर्ष आ विसंगति मुक्तकक विषय बनि सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ यात्रीक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

३२३. (B) समाजक वास्तविक पीड़ा, संघर्ष आ विसंगति मुक्तकक विषय बनि सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

३२४. (B) समाजक वास्तविक पीड़ा, संघर्ष आ विसंगति मुक्तकक विषय बनि सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

३२५. (B) समाजक वास्तविक पीड़ा, संघर्ष आ विसंगति मुक्तकक विषय बनि सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

३२६. (B) यात्रीक काव्य-संवेदना अन्याय-विरोधी, प्रश्नाकुल आ परिवर्तनक आकांक्षी मानल जा सकैत अछि — "क्रान्ति-चेतना" यात्रीक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

३२७. (B) यात्रीक काव्य-संवेदना अन्याय-विरोधी, प्रश्नाकुल आ परिवर्तनक आकांक्षी मानल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ यात्रीक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

३२८. (B) यात्रीक काव्य-संवेदना अन्याय-विरोधी, प्रश्नाकुल आ परिवर्तनक आकांक्षी मानल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

३२९. (B) यात्रीक काव्य-संवेदना अन्याय-विरोधी, प्रश्नाकुल आ परिवर्तनक आकांक्षी मानल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

३३०. (B) यात्रीक काव्य-संवेदना अन्याय-विरोधी, प्रश्नाकुल आ परिवर्तनक आकांक्षी मानल जा सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

३३१. (B) हुनक रचनामे प्रकृति सौन्दर्यसँ अधिक लोक-जीवनक सहचर बनि सकैत अछि — "प्रकृति आ लोक" यात्रीक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

३३२. (B) हुनक रचनामे प्रकृति सौन्दर्यसँ अधिक लोक-जीवनक सहचर बनि सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ यात्रीक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

३३३. (B) हुनक रचनामे प्रकृति सौन्दर्यसँ अधिक लोक-जीवनक सहचर बनि सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

३३४. (B) हुनक रचनामे प्रकृति सौन्दर्यसँ अधिक लोक-जीवनक सहचर बनि सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

३३५. (B) हुनक रचनामे प्रकृति सौन्दर्यसँ अधिक लोक-जीवनक सहचर बनि सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

३३६. (B) यात्रीक मुक्तकमे सीधा कथन आ धारदार टिप्पणी पाठककेँ तुरन्त स्पर्श करैत अछि — "कथन-सीधापन" यात्रीक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

३३७. (B) यात्रीक मुक्तकमे सीधा कथन आ धारदार टिप्पणी पाठककेँ तुरन्त स्पर्श करैत अछि — एहि बिन्दुसँ यात्रीक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

३३८. (B) यात्रीक मुक्तकमे सीधा कथन आ धारदार टिप्पणी पाठककेँ तुरन्त स्पर्श करैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

३३९. (B) यात्रीक मुक्तकमे सीधा कथन आ धारदार टिप्पणी पाठककेँ तुरन्त स्पर्श करैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

३४०. (B) यात्रीक मुक्तकमे सीधा कथन आ धारदार टिप्पणी पाठककेँ तुरन्त स्पर्श करैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

३४१. (B) हुनक काव्य-पाठमे मनुष्यक गरिमा, श्रम आ अधिकारक प्रश्न उभरैत अछि — "मानव-मर्यादा" यात्रीक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

३४२. (B) हुनक काव्य-पाठमे मनुष्यक गरिमा, श्रम आ अधिकारक प्रश्न उभरैत अछि — एहि बिन्दुसँ यात्रीक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

३४३. (B) हुनक काव्य-पाठमे मनुष्यक गरिमा, श्रम आ अधिकारक प्रश्न उभरैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

३४४. (B) हुनक काव्य-पाठमे मनुष्यक गरिमा, श्रम आ अधिकारक प्रश्न उभरैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

३४५. (B) हुनक काव्य-पाठमे मनुष्यक गरिमा, श्रम आ अधिकारक प्रश्न उभरैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

३४६. (B) यात्रीक कविता मिथिला, खेत, लोक, भाषा आ सामाजिक संघर्षक अनुभवसँ जुड़ि सकैत अछि — "मिथिला-सन्दर्भ" यात्रीक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

३४७. (B) यात्रीक कविता मिथिला, खेत, लोक, भाषा आ सामाजिक संघर्षक अनुभवसँ जुड़ि सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ यात्रीक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

३४८. (B) यात्रीक कविता मिथिला, खेत, लोक, भाषा आ सामाजिक संघर्षक अनुभवसँ जुड़ि सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

३४९. (B) यात्रीक कविता मिथिला, खेत, लोक, भाषा आ सामाजिक संघर्षक अनुभवसँ जुड़ि सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

३५०. (B) यात्रीक कविता मिथिला, खेत, लोक, भाषा आ सामाजिक संघर्षक अनुभवसँ जुड़ि सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

३५१. (B) सचेत आक्रोश मुक्तकमे संक्षिप्त पंक्तिमे तीक्ष्ण प्रभाव पैदा करैत अछि — "आक्रोश" यात्रीक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

३५२. (B) सचेत आक्रोश मुक्तकमे संक्षिप्त पंक्तिमे तीक्ष्ण प्रभाव पैदा करैत अछि — एहि बिन्दुसँ यात्रीक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

३५३. (B) सचेत आक्रोश मुक्तकमे संक्षिप्त पंक्तिमे तीक्ष्ण प्रभाव पैदा करैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

३५४. (B) सचेत आक्रोश मुक्तकमे संक्षिप्त पंक्तिमे तीक्ष्ण प्रभाव पैदा करैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

३५५. (B) सचेत आक्रोश मुक्तकमे संक्षिप्त पंक्तिमे तीक्ष्ण प्रभाव पैदा करैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

३५६. (B) जनक दुःखक प्रति करुणा यात्रीक काव्य-चेतना केँ मानवीय गहराइ दैत अछि — "करुणा" यात्रीक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

३५७. (B) जनक दुःखक प्रति करुणा यात्रीक काव्य-चेतना केँ मानवीय गहराइ दैत अछि — एहि बिन्दुसँ यात्रीक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

३५८. (B) जनक दुःखक प्रति करुणा यात्रीक काव्य-चेतना केँ मानवीय गहराइ दैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

३५९. (B) जनक दुःखक प्रति करुणा यात्रीक काव्य-चेतना केँ मानवीय गहराइ दैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

३६०. (B) जनक दुःखक प्रति करुणा यात्रीक काव्य-चेतना कैँ मानवीय गहराइ दैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

३६१. (B) लोक-लय, बोलचाल आ तीक्ष्ण शब्द-विन्यास यात्रीक मुक्तककेँ जीवंत बनबैत अछि — "भाषा-शक्ति" यात्रीक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

३६२. (B) लोक-लय, बोलचाल आ तीक्ष्ण शब्द-विन्यास यात्रीक मुक्तककेँ जीवंत बनबैत अछि — एहि बिन्दुसँ यात्रीक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

३६३. (B) लोक-लय, बोलचाल आ तीक्ष्ण शब्द-विन्यास यात्रीक मुक्तककेँ जीवंत बनबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

३६४. (B) लोक-लय, बोलचाल आ तीक्ष्ण शब्द-विन्यास यात्रीक मुक्तककेँ जीवंत बनबैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

३६५. (B) लोक-लय, बोलचाल आ तीक्ष्ण शब्द-विन्यास यात्रीक मुक्तककेँ जीवंत बनबैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

३६६. (B) यात्रीक कवितामे सत्ता-समीक्षा आ जन-दृष्टि लोकतांत्रिक स्वर बनि उठैत अछि — "लोकतांत्रिक स्वर" यात्रीक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

३६७. (B) यात्रीक कवितामे सत्ता-समीक्षा आ जन-दृष्टि लोकतांत्रिक स्वर बनि उठैत अछि — एहि बिन्दुसँ यात्रीक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

३६८. (B) यात्रीक कवितामे सत्ता-समीक्षा आ जन-दृष्टि लोकतांत्रिक स्वर बनि उठैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

३६९. (B) यात्रीक कवितामे सत्ता-समीक्षा आ जन-दृष्टि लोकतांत्रिक स्वर बनि उठैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

३७०. (B) यात्रीक कवितामे सत्ता-समीक्षा आ जन-दृष्टि लोकतांत्रिक स्वर बनि उठैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

३७१. (B) किसान, धरती, अन्न, श्रम, सड़क आदि प्रतीक सामाजिक अर्थ खोलि सकैत अछि — "प्रतीक" यात्रीक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

३७२. (B) किसान, धरती, अन्न, श्रम, सड़क आदि प्रतीक सामाजिक अर्थ खोलि सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ यात्रीक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

३७३. (B) किसान, धरती, अन्न, श्रम, सड़क आदि प्रतीक सामाजिक अर्थ खोलि सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

३७४. (B) किसान, धरती, अन्न, श्रम, सड़क आदि प्रतीक सामाजिक अर्थ खोलि सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

३७५. (B) किसान, धरती, अन्न, श्रम, सड़क आदि प्रतीक सामाजिक अर्थ खोलि सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

३७६. (B) यात्री पर उत्तरमे जनकवि-स्वर, यथार्थ, व्यंग्य, लोकभाषा आ सामाजिक चेतना जोड़ब चाही — "परीक्षा-दृष्टि" यात्रीक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

३७७. (B) यात्री पर उत्तरमे जनकवि-स्वर, यथार्थ, व्यंग्य, लोकभाषा आ सामाजिक चेतना जोड़ब चाही — एहि बिन्दुसँ यात्रीक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

३७८. (B) यात्री पर उत्तरमे जनकवि-स्वर, यथार्थ, व्यंग्य, लोकभाषा आ सामाजिक चेतना जोड़ब चाही — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

३७९. (B) यात्री पर उत्तरमे जनकवि-स्वर, यथार्थ, व्यंग्य, लोकभाषा आ सामाजिक चेतना जोड़ब चाही — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

३८०. (B) यात्री पर उत्तरमे जनकवि-स्वर, यथार्थ, व्यंग्य, लोकभाषा आ सामाजिक चेतना जोड़ब चाही — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

३८१. (B) यात्रीक तुलना गीतधर्मी कविसँ करैत समय जनपक्ष आ तीक्ष्ण यथार्थ प्रमुख बिन्दु बनैत अछि — "तुलना" यात्रीक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

३८२. (B) यात्रीक तुलना गीतधर्मी कविसँ करैत समय जनपक्ष आ तीक्ष्ण यथार्थ प्रमुख बिन्दु बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ यात्रीक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

३८३. (B) यात्रीक तुलना गीतधर्मी कविसँ करैत समय जनपक्ष आ तीक्ष्ण यथार्थ प्रमुख बिन्दु बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

३८४. (B) यात्रीक तुलना गीतधर्मी कविसँ करैत समय जनपक्ष आ तीक्ष्ण यथार्थ प्रमुख बिन्दु बनैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

३८५. (B) यात्रीक तुलना गीतधर्मी कविसँ करैत समय जनपक्ष आ तीक्ष्ण यथार्थ प्रमुख बिन्दु बनैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

३८६. (B) छोट कविता सेहो सामाजिक विसंगति पर बड़ा प्रश्न उठा सकैत अछि — "मुक्तक प्रभाव" यात्रीक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

३८७. (B) छोट कविता सेहो सामाजिक विसंगति पर बड़ा प्रश्न उठा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ यात्रीक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

३८८. (B) छोट कविता सेहो सामाजिक विसंगति पर बड़ा प्रश्न उठा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

३८९. (B) छोट कविता सेहो सामाजिक विसंगति पर बड़ा प्रश्न उठा सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

३९०. (B) छोट कविता सेहो सामाजिक विसंगति पर बड़ा प्रश्न उठा सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

३९१. (B) यात्रीक आधुनिकता लोकसँ कटि नहि, लोकजीवनक भीतरसँ आलोचनात्मक दृष्टि पबैत अछि — "आधुनिकता" यात्रीक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

३९२. (B) यात्रीक आधुनिकता लोकसँ कटि नहि, लोकजीवनक भीतरसँ आलोचनात्मक दृष्टि पबैत अछि — एहि बिन्दुसँ यात्रीक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

३९३. (B) यात्रीक आधुनिकता लोकसँ कटि नहि, लोकजीवनक भीतरसँ आलोचनात्मक दृष्टि पबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

३९४. (B) यात्रीक आधुनिकता लोकसँ कटि नहि, लोकजीवनक भीतरसँ आलोचनात्मक दृष्टि पबैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

३९५. (B) यात्रीक आधुनिकता लोकसँ कटि नहि, लोकजीवनक भीतरसँ आलोचनात्मक दृष्टि पबैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

३९६. (B) यात्री मुक्तकक लोकधर्मी, संघर्षशील आ व्यंग्यपूर्ण रूप बुझबामे अत्यन्त उपयोगी कवि छथि — "समग्र मूल्य" यात्रीक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

३९७. (B) यात्री मुक्तकक लोकधर्मी, संघर्षशील आ व्यंग्यपूर्ण रूप बुझबामे अत्यन्त उपयोगी कवि छथि — एहि बिन्दुसँ यात्रीक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

३९८. (B) यात्री मुक्तकक लोकधर्मी, संघर्षशील आ व्यंग्यपूर्ण रूप बुझबामे अत्यन्त उपयोगी कवि छथि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

३९९. (B) यात्री मुक्तकक लोकधर्मी, संघर्षशील आ व्यंग्यपूर्ण रूप बुझबामे अत्यन्त उपयोगी कवि छथि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

४००. (B) यात्री मुक्तकक लोकधर्मी, संघर्षशील आ व्यंग्यपूर्ण रूप बुझबामे अत्यन्त उपयोगी कवि छथि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

४०१. (B) आरसी प्रसाद सिंहक अध्ययनमे गीतिमयता, कोमल भाव आ सुसंस्कृत काव्य-भाषा महत्त्वपूर्ण बिन्दु अछि — "गीतिधर्मिता" आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

४०२. (B) आरसी प्रसाद सिंहक अध्ययनमे गीतिमयता, कोमल भाव आ सुसंस्कृत काव्य-भाषा महत्त्वपूर्ण बिन्दु अछि — एहि बिन्दुसँ आरसी प्रसाद सिंहक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

४०३. (B) आरसी प्रसाद सिंहक अध्ययनमे गीतिमयता, कोमल भाव आ सुसंस्कृत काव्य-भाषा महत्त्वपूर्ण बिन्दु अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

४०४. (B) आरसी प्रसाद सिंहक अध्ययनमे गीतिमयता, कोमल भाव आ सुसंस्कृत काव्य-भाषा महत्त्वपूर्ण बिन्दु अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

४०५. (B) आरसी प्रसाद सिंहक अध्ययनमे गीतिमयता, कोमल भाव आ सुसंस्कृत काव्य-भाषा महत्त्वपूर्ण बिन्दु अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

४०६. (B) हुनक मुक्तकमे प्रेम, पीड़ा, आशा, स्मृति आ जीवन-सौन्दर्यक मानवीय अनुभूति देखल जा सकैत अछि — "मानवीय भाव" आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

४०७. (B) हुनक मुक्तकमे प्रेम, पीड़ा, आशा, स्मृति आ जीवन-सौन्दर्यक मानवीय अनुभूति देखल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ आरसी प्रसाद सिंहक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

४०८. (B) हुनक मुक्तकमे प्रेम, पीड़ा, आशा, स्मृति आ जीवन-सौन्दर्यक मानवीय अनुभूति देखल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

४०९. (B) हुनक मुक्तकमे प्रेम, पीड़ा, आशा, स्मृति आ जीवन-सौन्दर्यक मानवीय अनुभूति देखल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

४१०. (B) हुनक मुक्तकमे प्रेम, पीड़ा, आशा, स्मृति आ जीवन-सौन्दर्यक मानवीय अनुभूति देखल जा सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

४११. (B) लय आ शब्द-संगीत आरसीक मुक्तककेँ श्रवणीय आ स्मरणीय बनबैत अछि — "लय" आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

४१२. (B) लय आ शब्द-संगीत आरसीक मुक्तककेँ श्रवणीय आ स्मरणीय बनबैत अछि — एहि बिन्दुसँ आरसी प्रसाद सिंहक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

४१३. (B) लय आ शब्द-संगीत आरसीक मुक्तककेँ श्रवणीय आ स्मरणीय बनबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

४१४. (B) लय आ शब्द-संगीत आरसीक मुक्तककेँ श्रवणीय आ स्मरणीय बनबैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

४१५. (B) लय आ शब्द-संगीत आरसीक मुक्तककेँ श्रवणीय आ स्मरणीय बनबैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

४१६. (B) प्रकृति-बिम्ब काव्यक आन्तरिक भावकेँ मूर्त रूप देबामे सहायक होइत अछि — "प्रकृति" आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

४१७. (B) प्रकृति-बिम्ब काव्यक आन्तरिक भावकेँ मूर्त रूप देबामे सहायक होइत अछि — एहि बिन्दुसँ आरसी प्रसाद सिंहक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

४१८. (B) प्रकृति-बिम्ब काव्यक आन्तरिक भावकेँ मूर्त रूप देबामे सहायक होइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

४१९. (B) प्रकृति-बिम्ब काव्यक आन्तरिक भावकेँ मूर्त रूप देबामे सहायक होइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

४२०. (B) प्रकृति-बिम्ब काव्यक आन्तरिक भावकेँ मूर्त रूप देबामे सहायक होइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

४२१. (B) आरसीक काव्य-पाठमे आत्म-चिन्तन आ संवेदनशील मनक संवाद प्रमुख देखल जा सकैत अछि — "आत्म-संवाद" आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

४२२. (B) आरसीक काव्य-पाठमे आत्म-चिन्तन आ संवेदनशील मनक संवाद प्रमुख देखल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ आरसी प्रसाद सिंहक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

४२३. (B) आरसीक काव्य-पाठमे आत्म-चिन्तन आ संवेदनशील मनक संवाद प्रमुख देखल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

४२४. (B) आरसीक काव्य-पाठमे आत्म-चिन्तन आ संवेदनशील मनक संवाद प्रमुख देखल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

४२५. (B) आरसीक काव्य-पाठमे आत्म-चिन्तन आ संवेदनशील मनक संवाद प्रमुख देखल जा सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

४२६. (B) मुक्तकमे सीमित पंक्तिमे सम्पूर्ण भाव-संकेत देब आरसीक अध्ययनक मुख्य अभ्यास अछि — "छोट संरचना" आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

४२७. (B) मुक्तकमे सीमित पंक्तिमे सम्पूर्ण भाव-संकेत देब आरसीक अध्ययनक मुख्य अभ्यास अछि — एहि बिन्दुसँ आरसी प्रसाद सिंहक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

४२८. (B) मुक्तकमे सीमित पंक्तिमे सम्पूर्ण भाव-संकेत देब आरसीक अध्ययनक मुख्य अभ्यास अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

४२९. (B) मुक्तकमे सीमित पंक्तिमे सम्पूर्ण भाव-संकेत देब आरसीक अध्ययनक मुख्य अभ्यास अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

४३०. (B) मुक्तकमे सीमित पंक्तिमे सम्पूर्ण भाव-संकेत देब आरसीक अध्ययनक मुख्य अभ्यास अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

४३१. (B) उपमा, रूपक, अनुप्रास आ ध्वनि-साम्य मुक्तकक सौन्दर्य बढबैत अछि — "अलंकार" आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

४३२. (B) उपमा, रूपक, अनुप्रास आ ध्वनि-साम्य मुक्तकक सौन्दर्य बढबैत अछि — एहि बिन्दुसँ आरसी प्रसाद सिंहक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

४३३. (B) उपमा, रूपक, अनुप्रास आ ध्वनि-साम्य मुक्तकक सौन्दर्य बढबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

४३४. (B) उपमा, रूपक, अनुप्रास आ ध्वनि-साम्य मुक्तकक सौन्दर्य बढबैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

४३५. (B) उपमा, रूपक, अनुप्रास आ ध्वनि-साम्य मुक्तकक सौन्दर्य बढबैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

४३६. (B) संस्कृतित लेकिन सहज भाषा कविताकेँ गम्भीर आ मधुर दुनू बनबैत अछि — "भाषा-सौष्ठव" आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

४३७. (B) संस्कृतित लेकिन सहज भाषा कविताकेँ गम्भीर आ मधुर दुनू बनबैत अछि — एहि बिन्दुसँ आरसी प्रसाद सिंहक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

४३८. (B) संस्कृतित लेकिन सहज भाषा कविताकेँ गम्भीर आ मधुर दुनू बनबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

४३९. (B) संस्कृतित लेकिन सहज भाषा कविताकेँ गम्भीर आ मधुर दुनू बनबैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

४४०. (B) संस्कृतित लेकिन सहज भाषा कविताकेँ गम्भीर आ मधुर दुनू बनबैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

४४१. (B) लघु आकारक कारण एक-एक शब्द भावक भार वहन करैत अछि — "भाव-गहनता" आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

४४२. (B) लघु आकारक कारण एक-एक शब्द भावक भार वहन करैत अछि — एहि बिन्दुसँ आरसी प्रसाद सिंहक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

४४३. (B) लघु आकारक कारण एक-एक शब्द भावक भार वहन करैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

४४४. (B) लघु आकारक कारण एक-एक शब्द भावक भार वहन करैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

४४५. (B) लघु आकारक कारण एक-एक शब्द भावक भार वहन करैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

४४६. (B) आरसीक मुक्तक भारतीय-सांस्कृतिक मूल्य आ आधुनिक अनुभव बीच संवाद बना सकैत अछि — "सांस्कृतिक चेतना" आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

४४७. (B) आरसीक मुक्तक भारतीय-सांस्कृतिक मूल्य आ आधुनिक अनुभव बीच संवाद बना सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ आरसी प्रसाद सिंहक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

४४८. (B) आरसीक मुक्तक भारतीय-सांस्कृतिक मूल्य आ आधुनिक अनुभव बीच संवाद बना सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

४४९. (B) आरसीक मुक्तक भारतीय-सांस्कृतिक मूल्य आ आधुनिक अनुभव बीच संवाद बना सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

४५०. (B) आरसीक मुक्तक भारतीय-सांस्कृतिक मूल्य आ आधुनिक अनुभव बीच संवाद बना सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

४५१. (B) प्रेम आ संवेदना सम्बन्धी प्रश्नमे नारी-पुरुष भावक कलात्मक प्रस्तुति देखल जा सकैत अछि — "नारी-भाव" आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

४५२. (B) प्रेम आ संवेदना सम्बन्धी प्रश्नमे नारी-पुरुष भावक कलात्मक प्रस्तुति देखल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ आरसी प्रसाद सिंहक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

४५३. (B) प्रेम आ संवेदना सम्बन्धी प्रश्नमे नारी-पुरुष भावक कलात्मक प्रस्तुति देखल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

४५४. (B) प्रेम आ संवेदना सम्बन्धी प्रश्नमे नारी-पुरुष भावक कलात्मक प्रस्तुति देखल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

४५५. (B) प्रेम आ संवेदना सम्बन्धी प्रश्नमे नारी-पुरुष भावक कलात्मक प्रस्तुति देखल जा सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

४५६. (B) स्मृति मुक्तकमे अतीत आ वर्तमानक भाव-सम्बन्ध बनबैत अछि — "स्मृति" आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

४५७. (B) स्मृति मुक्तकमे अतीत आ वर्तमानक भाव-सम्बन्ध बनबैत अछि — एहि बिन्दुसँ आरसी प्रसाद सिंहक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

४५८. (B) स्मृति मुक्तकमे अतीत आ वर्तमानक भाव-सम्बन्ध बनबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

४५९. (B) स्मृति मुक्तकमे अतीत आ वर्तमानक भाव-सम्बन्ध बनबैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

४६०. (B) स्मृति मुक्तकमे अतीत आ वर्तमानक भाव-सम्बन्ध बनबैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

४६१. (B) हुनक सौन्दर्य-दृष्टि बाहरी दृश्य आ भीतरी भावक सामंजस्यसँ बनैत अछि — "सौन्दर्य-दृष्टि" आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

४६२. (B) हुनक सौन्दर्य-दृष्टि बाहरी दृश्य आ भीतरी भावक सामंजस्यसँ बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ आरसी प्रसाद सिंहक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

४६३. (B) हुनक सौन्दर्य-दृष्टि बाहरी दृश्य आ भीतरी भावक सामंजस्यसँ बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

४६४. (B) हुनक सौन्दर्य-दृष्टि बाहरी दृश्य आ भीतरी भावक सामंजस्यसँ बनैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

४६५. (B) हुनक सौन्दर्य-दृष्टि बाहरी दृश्य आ भीतरी भावक सामंजस्यसँ बनैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

४६६. (B) मुक्तकक सार व्यक्त अनुभवकेँ सामूहिक अनुभूति बनबामे अछि — "अनुभूति" आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

४६७. (B) मुक्तकक सार व्यक्त अनुभवकेँ सामूहिक अनुभूति बनबामे अछि — एहि बिन्दुसँ आरसी प्रसाद सिंहक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

४६८. (B) मुक्तकक सार व्यक्त अनुभवकेँ सामूहिक अनुभूति बनबामे अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

४६९. (B) मुक्तकक सार व्यक्त अनुभवकेँ सामूहिक अनुभूति बनबामे अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

४७०. (B) मुक्तकक सार व्यक्त अनुभवकेँ सामूहिक अनुभूति बनबामे अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

४७१. (B) शृङ्गार, करुण आ शान्त भाव आरसीक काव्य-पाठमे संभावित प्रमुख रस-बिन्दु छथि — "रस" आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

४७२. (B) शृङ्गार, करुण आ शान्त भाव आरसीक काव्य-पाठमे संभावित प्रमुख रस-बिन्दु छथि — एहि बिन्दुसँ आरसी प्रसाद सिंहक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

४७३. (B) शृङ्गार, करुण आ शान्त भाव आरसीक काव्य-पाठमे संभावित प्रमुख रस-बिन्दु छथि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

४७४. (B) शृङ्गार, करुण आ शान्त भाव आरसीक काव्य-पाठमे संभावित प्रमुख रस-बिन्दु छथि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

४७५. (B) शृङ्गार, करुण आ शान्त भाव आरसीक काव्य-पाठमे संभावित प्रमुख रस-बिन्दु छथि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

४७६. (B) आरसी पर उत्तरमे गीतिधर्मिता, भाषा, लय, भाव-गहनता आ सौन्दर्य-दृष्टि जोड़ू — "परीक्षा-दृष्टि" आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

४७७. (B) आरसी पर उत्तरमे गीतिधर्मिता, भाषा, लय, भाव-गहनता आ सौन्दर्य-दृष्टि जोड़ू — एहि बिन्दुसँ आरसी प्रसाद सिंहक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

४७८. (B) आरसी पर उत्तरमे गीतिधर्मिता, भाषा, लय, भाव-गहनता आ सौन्दर्य-दृष्टि जोड़ू — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

४७९. (B) आरसी पर उत्तरमे गीतिधर्मिता, भाषा, लय, भाव-गहनता आ सौन्दर्य-दृष्टि जोड़ू — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

४८०. (B) आरसी पर उत्तरमे गीतिधर्मिता, भाषा, लय, भाव-गहनता आ सौन्दर्य-दृष्टि जोड़ू — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

४८१. (B) आरसीक तुलना करैत समय हुनक गीतात्मक कोमलता आ शिल्प-संयम पर ध्यान देल जाइत अछि — "तुलना" आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

४८२. (B) आरसीक तुलना करैत समय हुनक गीतात्मक कोमलता आ शिल्प-संयम पर ध्यान देल जाइत अछि — एहि बिन्दुसँ आरसी प्रसाद सिंहक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

४८३. (B) आरसीक तुलना करैत समय हुनक गीतात्मक कोमलता आ शिल्प-संयम पर ध्यान देल जाइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

४८४. (B) आरसीक तुलना करैत समय हुनक गीतात्मक कोमलता आ शिल्प-संयम पर ध्यान देल जाइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

४८५. (B) आरसीक तुलना करैत समय हुनक गीतात्मक कोमलता आ शिल्प-संयम पर ध्यान देल जाइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

४८६. (B) स्वतन्त्र पंक्ति-समूह, भावक पूर्णता आ लय मुक्तकक पहचान बनैत अछि — "मुक्तक-पहिचान" आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

४८७. (B) स्वतन्त्र पंक्ति-समूह, भावक पूर्णता आ लय मुक्तकक पहचान बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ आरसी प्रसाद सिंहक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

४८८. (B) स्वतन्त्र पंक्ति-समूह, भावक पूर्णता आ लय मुक्तकक पहचान बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

४८९. (B) स्वतन्त्र पंक्ति-समूह, भावक पूर्णता आ लय मुक्तकक पहचान बनैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

४९०. (B) स्वतन्त्र पंक्ति-समूह, भावक पूर्णता आ लय मुक्तकक पहचान बनैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

४९१. (B) मधुर लय आ भाव-सम्पन्नता पाठकक मनमे दीर्घ प्रभाव छोड़ैत अछि — "पाठकीय प्रभाव" आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

४९२. (B) मधुर लय आ भाव-सम्पन्नता पाठकक मनमे दीर्घ प्रभाव छोड़ैत अछि — एहि बिन्दुसँ आरसी प्रसाद सिंहक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

४९३. (B) मधुर लय आ भाव-सम्पन्नता पाठकक मनमे दीर्घ प्रभाव छोड़ैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

४९४. (B) मधुर लय आ भाव-सम्पन्नता पाठकक मनमे दीर्घ प्रभाव छोड़ैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

४९५. (B) मधुर लय आ भाव-सम्पन्नता पाठकक मनमे दीर्घ प्रभाव छोड़ैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

४९६. (B) आरसी प्रसाद सिंह मुक्तकक गीतात्मक, सौन्दर्यपरक आ मानवीय रूप बुझबामे महत्त्वपूर्ण छथि — "समग्र मूल्य" आरसी प्रसाद सिंहक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

४९७. (B) आरसी प्रसाद सिंह मुक्तकक गीतात्मक, सौन्दर्यपरक आ मानवीय रूप बुझबामे महत्त्वपूर्ण छथि — एहि बिन्दुसँ आरसी प्रसाद सिंहक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

४९८. (B) आरसी प्रसाद सिंह मुक्तकक गीतात्मक, सौन्दर्यपरक आ मानवीय रूप बुझबामे महत्त्वपूर्ण छथि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

४९९. (B) आरसी प्रसाद सिंह मुक्तकक गीतात्मक, सौन्दर्यपरक आ मानवीय रूप बुझबामे महत्त्वपूर्ण छथि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

५००. (B) आरसी प्रसाद सिंह मुक्तकक गीतात्मक, सौन्दर्यपरक आ मानवीय रूप बुझबामे महत्त्वपूर्ण छथि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

५०१. (B) चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क अध्ययनमे कवि, गद्यकार, सम्पादकीय चेतना आ साहित्य-अनुसंधानक व्यापकता देखल जाइत अछि — "अमर परिचय" चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

५०२. (B) चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क अध्ययनमे कवि, गद्यकार, सम्पादकीय चेतना आ साहित्य-अनुसंधानक व्यापकता देखल जाइत अछि — एहि बिन्दुसँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

५०३. (B) चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क अध्ययनमे कवि, गद्यकार, सम्पादकीय चेतना आ साहित्य-अनुसंधानक व्यापकता देखल जाइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

५०४. (B) चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क अध्ययनमे कवि, गद्यकार, सम्पादकीय चेतना आ साहित्य-अनुसंधानक व्यापकता देखल जाइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

५०५. (B) चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क अध्ययनमे कवि, गद्यकार, सम्पादकीय चेतना आ साहित्य-अनुसंधानक व्यापकता देखल जाइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

५०६. (B) अमरक काव्य-पाठमे ऋतु, प्रकृति, समय आ जीवन-लयक सूक्ष्म सम्बन्ध विशेष ध्यानयोग्य अछि — "ऋतु-चेतना" चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

५०७. (B) अमरक काव्य-पाठमे ऋतु, प्रकृति, समय आ जीवन-लयक सूक्ष्म सम्बन्ध विशेष ध्यानयोग्य अछि — एहि बिन्दुसँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

५०८. (B) अमरक काव्य-पाठमे ऋतु, प्रकृति, समय आ जीवन-लयक सूक्ष्म सम्बन्ध विशेष ध्यानयोग्य अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

५०९. (B) अमरक काव्य-पाठमे ऋतु, प्रकृति, समय आ जीवन-लयक सूक्ष्म सम्बन्ध विशेष ध्यानयोग्य अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

५१०. (B) अमरक काव्य-पाठमे ऋतु, प्रकृति, समय आ जीवन-लयक सूक्ष्म सम्बन्ध विशेष ध्यानयोग्य अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

५११. (B) हुनक मुक्तकमे संस्कारित मैथिली, ध्वनि-संयम आ भावक परिपक्वता महत्त्वपूर्ण अछि — "भाषा-संस्कार" चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

५१२. (B) हुनक मुक्तकमे संस्कारित मैथिली, ध्वनि-संयम आ भावक परिपक्वता महत्त्वपूर्ण अछि — एहि बिन्दुसँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

५१३. (B) हुनक मुक्तकमे संस्कारित मैथिली, ध्वनि-संयम आ भावक परिपक्वता महत्त्वपूर्ण अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

५१४. (B) हुनक मुक्तकमे संस्कारित मैथिली, ध्वनि-संयम आ भावक परिपक्वता महत्त्वपूर्ण अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

५१५. (B) हुनक मुक्तकमे संस्कारित मैथिली, ध्वनि-संयम आ भावक परिपक्वता महत्त्वपूर्ण अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

५१६. (B) अमरक अध्ययनमे पुरान काव्य-संस्कार आ आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टि बीच संवाद देखल जाइत अछि — "परम्परा-दृष्टि" चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

५१७. (B) अमरक अध्ययनमे पुरान काव्य-संस्कार आ आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टि बीच संवाद देखल जाइत अछि — एहि बिन्दुसँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

५१८. (B) अमरक अध्ययनमे पुरान काव्य-संस्कार आ आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टि बीच संवाद देखल जाइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

५१९. (B) अमरक अध्ययनमे पुरान काव्य-संस्कार आ आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टि बीच संवाद देखल जाइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

५२०. (B) अमरक अध्ययनमे पुरान काव्य-संस्कार आ आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टि बीच संवाद देखल जाइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

५२१. (B) बादर, पवन, ऋतु, फूल, नदी आदि बिम्ब जीवन-भावक संकेत बनि सकैत अछि — "प्रकृति-बिम्ब" चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

५२२. (B) बादर, पवन, ऋतु, फूल, नदी आदि बिम्ब जीवन-भावक संकेत बनि सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

५२३. (B) बादर, पवन, ऋतु, फूल, नदी आदि बिम्ब जीवन-भावक संकेत बनि सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

५२४. (B) बादर, पवन, ऋतु, फूल, नदी आदि बिम्ब जीवन-भावक संकेत बनि सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

५२५. (B) बादर, पवन, ऋतु, फूल, नदी आदि बिम्ब जीवन-भावक संकेत बनि सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

५२६. (B) अमरक साहित्यिक व्यक्तित्वमे कविता संग पत्रकारिता आ दस्तावेजी दृष्टि सेहो महत्त्वपूर्ण अछि — "पत्रकारिता-बोध" चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

५२७. (B) अमरक साहित्यिक व्यक्तित्वमे कविता संग पत्रकारिता आ दस्तावेजी दृष्टि सेहो महत्त्वपूर्ण अछि — एहि बिन्दुसँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

५२८. (B) अमरक साहित्यिक व्यक्तित्वमे कविता संग पत्रकारिता आ दस्तावेजी दृष्टि सेहो महत्त्वपूर्ण अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

५२९. (B) अमरक साहित्यिक व्यक्तित्वमे कविता संग पत्रकारिता आ दस्तावेजी दृष्टि सेहो महत्त्वपूर्ण अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

५३०. (B) अमरक साहित्यिक व्यक्तित्वमे कविता संग पत्रकारिता आ दस्तावेजी दृष्टि सेहो महत्त्वपूर्ण अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

५३१. (B) हुनक अध्ययनमे स्रोत-जागरूकता, साहित्यिक इतिहास आ प्रमाण-दृष्टि कैँ महत्व देल जाइत अछि — "अनुसंधान" चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

५३२. (B) हुनक अध्ययनमे स्रोत-जागरूकता, साहित्यिक इतिहास आ प्रमाण-दृष्टि कैँ महत्व देल जाइत अछि — एहि बिन्दुसँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

५३३. (B) हुनक अध्ययनमे स्रोत-जागरूकता, साहित्यिक इतिहास आ प्रमाण-दृष्टि कैँ महत्व देल जाइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

५३४. (B) हुनक अध्ययनमे स्रोत-जागरूकता, साहित्यिक इतिहास आ प्रमाण-दृष्टि कैँ महत्व देल जाइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

५३५. (B) हुनक अध्ययनमे स्रोत-जागरूकता, साहित्यिक इतिहास आ प्रमाण-दृष्टि कैँ महत्व देल जाइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

५३६. (B) अमरक मुक्तक-पाठमे भाव-एकाग्रता, भाषा-सौष्ठव आ लयक संयोजन देखल जाइत अछि — "मुक्तकक कसौटी" चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

५३७. (B) अमरक मुक्तक-पाठमे भाव-एकाग्रता, भाषा-सौष्ठव आ लयक संयोजन देखल जाइत अछि — एहि बिन्दुसँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

५३८. (B) अमरक मुक्तक-पाठमे भाव-एकाग्रता, भाषा-सौष्ठव आ लयक संयोजन देखल जाइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

५३९. (B) अमरक मुक्तक-पाठमे भाव-एकाग्रता, भाषा-सौष्ठव आ लयक संयोजन देखल जाइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

५४०. (B) अमरक मुक्तक-पाठमे भाव-एकाग्रता, भाषा-सौष्ठव आ लयक संयोजन देखल जाइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

५४१. (B) छोट कविता मे शब्दक संयम रचनाक सौन्दर्य आ अर्थ-गहनता बढ़बैत अछि — "कला-संयम" चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

५४२. (B) छोट कविता मे शब्दक संयम रचनाक सौन्दर्य आ अर्थ-गहनता बढ़बैत अछि — एहि बिन्दुसँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

५४३. (B) छोट कविता मे शब्दक संयम रचनाक सौन्दर्य आ अर्थ-गहनता बढ़बैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

५४४. (B) छोट कविता मे शब्दक संयम रचनाक सौन्दर्य आ अर्थ-गहनता बढ़बैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

५४५. (B) छोट कविता मे शब्दक संयम रचनाक सौन्दर्य आ अर्थ-गहनता बढ़बैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

५४६. (B) ऋतु वा समयक बदलाहट मनुष्यक भाव-परिवर्तनक प्रतीक बनि सकैत अछि — "समय-बोध" चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

५४७. (B) ऋतु वा समयक बदलाहट मनुष्यक भाव-परिवर्तनक प्रतीक बनि सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

५४८. (B) ऋतु वा समयक बदलाहट मनुष्यक भाव-परिवर्तनक प्रतीक बनि सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

५४९. (B) ऋतु वा समयक बदलाहट मनुष्यक भाव-परिवर्तनक प्रतीक बनि सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

५५०. (B) ऋतु वा समयक बदलाहट मनुष्यक भाव-परिवर्तनक प्रतीक बनि सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

५५१. (B) अमर पर उत्तरमे काव्यक संग साहित्येतिहास, पत्रकारिता आ प्रकृति-चेतना जोड़ब उपयोगी अछि — "समीक्षा-दृष्टि" चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

५५२. (B) अमर पर उत्तरमे काव्यक संग साहित्येतिहास, पत्रकारिता आ प्रकृति-चेतना जोड़ब उपयोगी अछि — एहि बिन्दुसँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

५५३. (B) अमर पर उत्तरमे काव्यक संग साहित्येतिहास, पत्रकारिता आ प्रकृति-चेतना जोड़ब उपयोगी अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

५५४. (B) अमर पर उत्तरमे काव्यक संग साहित्येतिहास, पत्रकारिता आ प्रकृति-चेतना जोड़ब उपयोगी अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

५५५. (B) अमर पर उत्तरमे काव्यक संग साहित्येतिहास, पत्रकारिता आ प्रकृति-चेतना जोड़ब उपयोगी अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

५५६. (B) वाक्य-संयोजन, शब्द-चयन आ ध्वनि-अनुरणन अमरक काव्य-पहचान बनि सकैत अछि — "भाषिक परिष्कार" चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

५५७. (B) वाक्य-संयोजन, शब्द-चयन आ ध्वनि-अनुरणन अमरक काव्य-पहचान बनि सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

५५८. (B) वाक्य-संयोजन, शब्द-चयन आ ध्वनि-अनुरणन अमरक काव्य-पहचान बनि सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

५५९. (B) वाक्य-संयोजन, शब्द-चयन आ ध्वनि-अनुरणन अमरक काव्य-पहचान बनि सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

५६०. (B) वाक्य-संयोजन, शब्द-चयन आ ध्वनि-अनुरणन अमरक काव्य-पहचान बनि सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

५६१. (B) अमरक काव्य-पाठमे लोक-जीवनक अनुभूति आ शास्त्रीय संस्कारक मिलन देखल जा सकैत अछि — "लोक आ शास्त्र" चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

५६२. (B) अमरक काव्य-पाठमे लोक-जीवनक अनुभूति आ शास्त्रीय संस्कारक मिलन देखल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

५६३. (B) अमरक काव्य-पाठमे लोक-जीवनक अनुभूति आ शास्त्रीय संस्कारक मिलन देखल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

५६४. (B) अमरक काव्य-पाठमे लोक-जीवनक अनुभूति आ शास्त्रीय संस्कारक मिलन देखल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

५६५. (B) अमरक काव्य-पाठमे लोक-जीवनक अनुभूति आ शास्त्रीय संस्कारक मिलन देखल जा सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

५६६. (B) ऋतु आ प्रकृति प्रतीक काव्यक भावक अर्थ-विस्तार करैत अछि — "प्रतीक" चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

५६७. (B) ऋतु आ प्रकृति प्रतीक काव्यक भावक अर्थ-विस्तार करैत अछि — एहि बिन्दुसँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

५६८. (B) ऋतु आ प्रकृति प्रतीक काव्यक भावक अर्थ-विस्तार करैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

५६९. (B) ऋतु आ प्रकृति प्रतीक काव्यक भावक अर्थ-विस्तार करैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

५७०. (B) ऋतु आ प्रकृति प्रतीक काव्यक भावक अर्थ-विस्तार करैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

५७१. (B) लयात्मक संक्षिप्तता मुक्तककेँ स्मरणीय बनबैत अछि — "स्मरणीयता" चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

५७२. (B) लयात्मक संक्षिप्तता मुक्तककेँ स्मरणीय बनबैत अछि — एहि बिन्दुसँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

५७३. (B) लयात्मक संक्षिप्तता मुक्तककेँ स्मरणीय बनबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

५७४. (B) लयात्मक संक्षिप्तता मुक्तककेँ स्मरणीय बनबैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

५७५. (B) लयात्मक संक्षिप्तता मुक्तककेँ स्मरणीय बनबैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

५७६. (B) अमरक तुलना अन्य कविसँ करैत समय प्रकृति, शोध-दृष्टि आ भाषिक परिपक्वता देखल जाइत अछि — "तुलना" चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

५७७. (B) अमरक तुलना अन्य कविसँ करैत समय प्रकृति, शोध-दृष्टि आ भाषिक परिपक्वता देखल जाइत अछि — एहि बिन्दुसँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

५७८. (B) अमरक तुलना अन्य कविसँ करैत समय प्रकृति, शोध-दृष्टि आ भाषिक परिपक्वता देखल जाइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

५७९. (B) अमरक तुलना अन्य कविसँ करैत समय प्रकृति, शोध-दृष्टि आ भाषिक परिपक्वता देखल जाइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

५८०. (B) अमरक तुलना अन्य कविसँ करैत समय प्रकृति, शोध-दृष्टि आ भाषिक परिपक्वता देखल जाइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

५८१. (B) अमर पर उत्तरमे कवि-व्यक्तित्व, प्रकृति-चित्रण, भाषा, अनुसंधान आ साहित्य-संरक्षणक उल्लेख चाही — "परीक्षा-दृष्टि" चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

५८२. (B) अमर पर उत्तरमे कवि-व्यक्तित्व, प्रकृति-चित्रण, भाषा, अनुसंधान आ साहित्य-संरक्षणक उल्लेख चाही — एहि बिन्दुसँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

५८३. (B) अमर पर उत्तरमे कवि-व्यक्तित्व, प्रकृति-चित्रण, भाषा, अनुसंधान आ साहित्य-संरक्षणक उल्लेख चाही — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

५८४. (B) अमर पर उत्तरमे कवि-व्यक्तित्व, प्रकृति-चित्रण, भाषा, अनुसंधान आ साहित्य-संरक्षणक उल्लेख चाही — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

५८५. (B) अमर पर उत्तरमे कवि-व्यक्तित्व, प्रकृति-चित्रण, भाषा, अनुसंधान आ साहित्य-संरक्षणक उल्लेख चाही — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

५८६. (B) काव्य-दृष्टि जीवनक क्षणकेँ अर्थवान बनबैत अछि — "काव्य-दृष्टि" चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

५८७. (B) काव्य-दृष्टि जीवनक क्षणकेँ अर्थवान बनबैत अछि — एहि बिन्दुसँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

५८८. (B) काव्य-दृष्टि जीवनक क्षणकेँ अर्थवान बनबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

५८९. (B) काव्य-दृष्टि जीवनक क्षणकेँ अर्थवान बनबैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

५९०. (B) काव्य-दृष्टि जीवनक क्षणकेँ अर्थवान बनबैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

५९१. (B) मुक्तक छोट होइत हुएँ व्यापक अनुभूति जगाबय सकैत अछि — "विस्तार" चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

५९२. (B) मुक्तक छोट होइत हुएँ व्यापक अनुभूति जगाबय सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

५९३. (B) मुक्तक छोट होइत हुएँ व्यापक अनुभूति जगाबय सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

५९४. (B) मुक्तक छोट होइत हुएँ व्यापक अनुभूति जगाबय सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

५९५. (B) मुक्तक छोट होइत हुएँ व्यापक अनुभूति जगाबय सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

५९६. (B) चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' मुक्तक, प्रकृति-बोध, भाषा-संस्कार आ साहित्यिक अनुसंधानक संयुक्त अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण छथि — "समग्र मूल्य" चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

५९७. (B) चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' मुक्तक, प्रकृति-बोध, भाषा-संस्कार आ साहित्यिक अनुसंधानक संयुक्त अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण छथि — एहि बिन्दुसँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

५९८. (B) चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' मुक्तक, प्रकृति-बोध, भाषा-संस्कार आ साहित्यिक अनुसंधानक संयुक्त अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण छथि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

५९९. (B) चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' मुक्तक, प्रकृति-बोध, भाषा-संस्कार आ साहित्यिक अनुसंधानक संयुक्त अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण छथि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

६००. (B) चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' मुक्तक, प्रकृति-बोध, भाषा-संस्कार आ साहित्यिक अनुसंधानक संयुक्त अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण छथि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

६०१. (B) 'मोहन' नाम कविता मे आकर्षण, माधुर्य आ भाव-संवेगक संकेतक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — "मोहन नाम" उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

६०२. (B) 'मोहन' नाम कविता मे आकर्षण, माधुर्य आ भाव-संवेगक संकेतक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

६०३. (B) 'मोहन' नाम कविता मे आकर्षण, माधुर्य आ भाव-संवेगक संकेतक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

६०४. (B) 'मोहन' नाम कविता मे आकर्षण, माधुर्य आ भाव-संवेगक संकेतक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

६०५. (B) 'मोहन' नाम कविता मे आकर्षण, माधुर्य आ भाव-संवेगक संकेतक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

६०६. (B) उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क अध्ययनमे लघु कविता, भाव-संयम आ भाषिक मधुरता पर ध्यान देल जाइत अछि — "मुक्तक-स्वर" उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

६०७. (B) उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क अध्ययनमे लघु कविता, भाव-संयम आ भाषिक मधुरता पर ध्यान देल जाइत अछि — एहि बिन्दुसँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

६०८. (B) उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क अध्ययनमे लघु कविता, भाव-संयम आ भाषिक मधुरता पर ध्यान देल जाइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

६०९. (B) उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क अध्ययनमे लघु कविता, भाव-संयम आ भाषिक मधुरता पर ध्यान देल जाइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

६१०. (B) उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क अध्ययनमे लघु कविता, भाव-संयम आ भाषिक मधुरता पर ध्यान देल जाइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

६११. (B) मोहनक मुक्तकमे कोमल भाव, प्रेम, स्मृति आ जीवन-सौन्दर्यक संकेत देखल जा सकैत अछि — "भाव-माधुर्य" उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

६१२. (B) मोहनक मुक्तकमे कोमल भाव, प्रेम, स्मृति आ जीवन-सौन्दर्यक संकेत देखल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

६१३. (B) मोहनक मुक्तकमे कोमल भाव, प्रेम, स्मृति आ जीवन-सौन्दर्यक संकेत देखल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

६१४. (B) मोहनक मुक्तकमे कोमल भाव, प्रेम, स्मृति आ जीवन-सौन्दर्यक संकेत देखल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

६१५. (B) मोहनक मुक्तकमे कोमल भाव, प्रेम, स्मृति आ जीवन-सौन्दर्यक संकेत देखल जा सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

६१६. (B) सहज मैथिली, लयात्मक वाक्य आ संक्षिप्त अभिव्यक्ति मुक्तकक पहचान बनैत अछि — "भाषा" उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

६१७. (B) सहज मैथिली, लयात्मक वाक्य आ संक्षिप्त अभिव्यक्ति मुक्तकक पहचान बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

६१८. (B) सहज मैथिली, लयात्मक वाक्य आ संक्षिप्त अभिव्यक्ति मुक्तकक पहचान बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

६१९. (B) सहज मैथिली, लयात्मक वाक्य आ संक्षिप्त अभिव्यक्ति मुक्तकक पहचान बनैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

६२०. (B) सहज मैथिली, लयात्मक वाक्य आ संक्षिप्त अभिव्यक्ति मुक्तकक पहचान बनैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

६२१. (B) लय मुक्तककेँ गेय, स्मरणीय आ प्रभावपूर्ण बनबैत अछि — "आन्तरिक लय" उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

६२२. (B) लय मुक्तककेँ गेय, स्मरणीय आ प्रभावपूर्ण बनबैत अछि — एहि बिन्दुसँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

६२३. (B) लय मुक्तककेँ गेय, स्मरणीय आ प्रभावपूर्ण बनबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

६२४. (B) लय मुक्तककेँ गेय, स्मरणीय आ प्रभावपूर्ण बनबैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

६२५. (B) लय मुक्तककेँ गेय, स्मरणीय आ प्रभावपूर्ण बनबैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

६२६. (B) प्रकृति-सूचक बिम्ब भावक आलम्बन बनि कविता केँ कोमलता देबैत अछि — "प्रकृति-प्रेम" उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

६२७. (B) प्रकृति-सूचक बिम्ब भावक आलम्बन बनि कविता केँ कोमलता देबैत अछि — एहि बिन्दुसँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

६२८. (B) प्रकृति-सूचक बिम्ब भावक आलम्बन बनि कविता केँ कोमलता देबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

६२९. (B) प्रकृति-सूचक बिम्ब भावक आलम्बन बनि कविता केँ कोमलता देबैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

६३०. (B) प्रकृति-सूचक बिम्ब भावक आलम्बन बनि कविता केँ कोमलता देबैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

६३१. (B) मोहनक काव्य-पाठमे प्रेम, अपनत्व, विरह वा स्मृति जेकाँ भाव महत्त्वपूर्ण भऽ सकैत अछि — "मानवीय सम्बन्ध" उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

६३२. (B) मोहनक काव्य-पाठमे प्रेम, अपनत्व, विरह वा स्मृति जेकाँ भाव महत्त्वपूर्ण भऽ सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

६३३. (B) मोहनक काव्य-पाठमे प्रेम, अपनत्व, विरह वा स्मृति जेकाँ भाव महत्त्वपूर्ण भऽ सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

६३४. (B) मोहनक काव्य-पाठमे प्रेम, अपनत्व, विरह वा स्मृति जेकाँ भाव महत्त्वपूर्ण भऽ सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

६३५. (B) मोहनक काव्य-पाठमे प्रेम, अपनत्व, विरह वा स्मृति जेकाँ भाव महत्त्वपूर्ण भऽ सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

६३६. (B) एकटा मुक्तक अपने भीतर आरम्भ, भाव-विकास आ निष्कर्ष धारण कऽ सकैत अछि — "मुक्तकक पूर्णता" उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

६३७. (B) एकटा मुक्तक अपने भीतर आरम्भ, भाव-विकास आ निष्कर्ष धारण कऽ सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

६३८. (B) एकटा मुक्तक अपने भीतर आरम्भ, भाव-विकास आ निष्कर्ष धारण कऽ सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

६३९. (B) एकटा मुक्तक अपने भीतर आरम्भ, भाव-विकास आ निष्कर्ष धारण कऽ सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

६४०. (B) एकटा मुक्तक अपने भीतर आरम्भ, भाव-विकास आ निष्कर्ष धारण कऽ सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

६४१. (B) फूल, पवन, चान, जल वा पथ जेकाँ प्रतीक मनोभाव व्यक्त कऽ सकैत अछि — "प्रतीक" उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

६४२. (B) फूल, पवन, चान, जल वा पथ जेकाँ प्रतीक मनोभाव व्यक्त कऽ सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

६४३. (B) फूल, पवन, चान, जल वा पथ जेकाँ प्रतीक मनोभाव व्यक्त कऽ सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

६४४. (B) फूल, पवन, चान, जल वा पथ जेकाँ प्रतीक मनोभाव व्यक्त कऽ सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

६४५. (B) फूल, पवन, चान, जल वा पथ जेकाँ प्रतीक मनोभाव व्यक्त कऽ सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

६४६. (B) छोट आकार कविसँ चुस्त शब्द-चयन आ अर्थ-सघनता माँगैत अछि — "काव्य-संयम" उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

६४७. (B) छोट आकार कविसँ चुस्त शब्द-चयन आ अर्थ-सघनता माँगैत अछि — एहि बिन्दुसँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

६४८. (B) छोट आकार कविसँ चुस्त शब्द-चयन आ अर्थ-सघनता माँगैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

६४९. (B) छोट आकार कविसँ चुस्त शब्द-चयन आ अर्थ-सघनता माँगैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

६५०. (B) छोट आकार कविसँ चुस्त शब्द-चयन आ अर्थ-सघनता माँगैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

६५१. (B) मैथिली मुक्तक लोकलय आ लोक-अनुभवसँ जुड़ि बेसी जीवंत होइत अछि — "लोक-स्पर्श" उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

६५२. (B) मैथिली मुक्तक लोकलय आ लोक-अनुभवसँ जुड़ि बेसी जीवंत होइत अछि — एहि बिन्दुसँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

६५३. (B) मैथिली मुक्तक लोकलय आ लोक-अनुभवसँ जुड़ि बेसी जीवंत होइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

६५४. (B) मैथिली मुक्तक लोकलय आ लोक-अनुभवसँ जुड़ि बेसी जीवंत होइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

६५५. (B) मैथिली मुक्तक लोकलय आ लोक-अनुभवसँ जुड़ि बेसी जीवंत होइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

६५६. (B) सौन्दर्य केवल दृश्य नहि, भाव, भाषा आ लयक सामंजस्यसँ बनैत अछि — "सौन्दर्य" उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

६५७. (B) सौन्दर्य केवल दृश्य नहि, भाव, भाषा आ लयक सामंजस्यसँ बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

६५८. (B) सौन्दर्य केवल दृश्य नहि, भाव, भाषा आ लयक सामंजस्यसँ बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

६५९. (B) सौन्दर्य केवल दृश्य नहि, भाव, भाषा आ लयक सामंजस्यसँ बनैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

६६०. (B) सौन्दर्य केवल दृश्य नहि, भाव, भाषा आ लयक सामंजस्यसँ बनैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

६६१. (B) मोहन पर आलोचना लिखैत समय मुक्तकक लघुता, माधुर्य, लय आ प्रतीक देखल जाइत अछि — "आलोचना" उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

६६२. (B) मोहन पर आलोचना लिखैत समय मुक्तकक लघुता, माधुर्य, लय आ प्रतीक देखल जाइत अछि — एहि बिन्दुसँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

६६३. (B) मोहन पर आलोचना लिखैत समय मुक्तकक लघुता, माधुर्य, लय आ प्रतीक देखल जाइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

६६४. (B) मोहन पर आलोचना लिखैत समय मुक्तकक लघुता, माधुर्य, लय आ प्रतीक देखल जाइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

६६५. (B) मोहन पर आलोचना लिखैत समय मुक्तकक लघुता, माधुर्य, लय आ प्रतीक देखल जाइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

६६६. (B) मुक्तक छन्दबद्ध वा मुक्त लय दुनू रूपमे होइत हुएँ भाव-सम्पूर्ण रहि सकैत अछि — "छन्द" उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

६६७. (B) मुक्तक छन्दबद्ध वा मुक्त लय दुनू रूपमे होइत हुएँ भाव-सम्पूर्ण रहि सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

६६८. (B) मुक्तक छन्दबद्ध वा मुक्त लय दुनू रूपमे होइत हुएँ भाव-सम्पूर्ण रहि सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

६६९. (B) मुक्तक छन्दबद्ध वा मुक्त लय दुनू रूपमे होइत हुएँ भाव-सम्पूर्ण रहि सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

६७०. (B) मुक्तक छन्दबद्ध वा मुक्त लय दुनू रूपमे होइत हुएँ भाव-सम्पूर्ण रहि सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

६७१. (B) संवेदना मुक्तकक केन्द्र अछि; ओहि बिना छोट कविता सूखी सूचना बनि जाइत अछि — "संवेदना" उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

६७२. (B) संवेदना मुक्तकक केन्द्र अछि; ओहि बिना छोट कविता सूखी सूचना बनि जाइत अछि — एहि बिन्दुसँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

६७३. (B) संवेदना मुक्तकक केन्द्र अछि; ओहि बिना छोट कविता सूखी सूचना बनि जाइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

६७४. (B) संवेदना मुक्तकक केन्द्र अछि; ओहि बिना छोट कविता सूखी सूचना बनि जाइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

६७५. (B) संवेदना मुक्तकक केन्द्र अछि; ओहि बिना छोट कविता सूखी सूचना बनि जाइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

६७६. (B) मोहनक तुलना गीतिमय कविसँ करैत समय कोमलता आ लयात्मकता प्रमुख रहैत अछि — "तुलना" उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

६७७. (B) मोहनक तुलना गीतिमय कविसँ करैत समय कोमलता आ लयात्मकता प्रमुख रहैत अछि — एहि बिन्दुसँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

६७८. (B) मोहनक तुलना गीतिमय कविसँ करैत समय कोमलता आ लयात्मकता प्रमुख रहैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

६७९. (B) मोहनक तुलना गीतिमय कविसँ करैत समय कोमलता आ लयात्मकता प्रमुख रहैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

६८०. (B) मोहनक तुलना गीतिमय कविसँ करैत समय कोमलता आ लयात्मकता प्रमुख रहैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

६८१. (B) उत्तरमे उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क नामक संग मुक्तकक भाव, लय, भाषा आ सौन्दर्य-चेतना जोड़ू — "परीक्षा-दृष्टि" उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

६८२. (B) उत्तरमे उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क नामक संग मुक्तकक भाव, लय, भाषा आ सौन्दर्य-चेतना जोड़ू — एहि बिन्दुसँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

६८३. (B) उत्तरमे उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क नामक संग मुक्तकक भाव, लय, भाषा आ सौन्दर्य-चेतना जोड़ू — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

६८४. (B) उत्तरमे उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क नामक संग मुक्तकक भाव, लय, भाषा आ सौन्दर्य-चेतना जोड़ू — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

६८५. (B) उत्तरमे उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क नामक संग मुक्तकक भाव, लय, भाषा आ सौन्दर्य-चेतना जोड़ू — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

६८६. (B) सुगम भाषा आ गेयता भावकेँ पाठक धरि शीघ्र पहुँचबैत अछि — "सम्प्रेषण" उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

६८७. (B) सुगम भाषा आ गेयता भावकेँ पाठक धरि शीघ्र पहुँचबैत अछि — एहि बिन्दुसँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

६८८. (B) सुगम भाषा आ गेयता भावकेँ पाठक धरि शीघ्र पहुँचबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

६८९. (B) सुगम भाषा आ गेयता भावकेँ पाठक धरि शीघ्र पहुँचबैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

६९०. (B) सुगम भाषा आ गेयता भावकेँ पाठक धरि शीघ्र पहुँचबैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

६९१. (B) मधुर मुक्तक पाठकक स्मृतिमे अल्प शब्दमे दीर्घ भाव छोड़ैत अछि — "पाठकीय प्रभाव" उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

६९२. (B) मधुर मुक्तक पाठकक स्मृतिमे अल्प शब्दमे दीर्घ भाव छोड़ैत अछि — एहि बिन्दुसँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

६९३. (B) मधुर मुक्तक पाठकक स्मृतिमे अल्प शब्दमे दीर्घ भाव छोड़ैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

६९४. (B) मधुर मुक्तक पाठकक स्मृतिमे अल्प शब्दमे दीर्घ भाव छोड़ैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

६९५. (B) मधुर मुक्तक पाठकक स्मृतिमे अल्प शब्दमे दीर्घ भाव छोड़ैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

६९६. (B) उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क अध्ययन मुक्तकक कोमल, लयात्मक आ भाव-संयमित पक्ष बुझबामे सहायक अछि — "समग्र मूल्य" उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

६९७. (B) उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क अध्ययन मुक्तकक कोमल, लयात्मक आ भाव-संयमित पक्ष बुझबामे सहायक अछि — एहि बिन्दुसँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

६९८. (B) उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क अध्ययन मुक्तकक कोमल, लयात्मक आ भाव-संयमित पक्ष बुझबामे सहायक अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

६९९. (B) उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क अध्ययन मुक्तकक कोमल, लयात्मक आ भाव-संयमित पक्ष बुझबामे सहायक अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

७००. (B) उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क अध्ययन मुक्तकक कोमल, लयात्मक आ भाव-संयमित पक्ष बुझबामे सहायक अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

७०१. (B) जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययन आधुनिक जीवन, निजी अनुभूति आ सामाजिक यथार्थक सूक्ष्म संकेत पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि — "आधुनिक स्वर" जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

७०२. (B) जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययन आधुनिक जीवन, निजी अनुभूति आ सामाजिक यथार्थक सूक्ष्म संकेत पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ जीवकान्तक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

७०३. (B) जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययन आधुनिक जीवन, निजी अनुभूति आ सामाजिक यथार्थक सूक्ष्म संकेत पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

७०४. (B) जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययन आधुनिक जीवन, निजी अनुभूति आ सामाजिक यथार्थक सूक्ष्म संकेत पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

७०५. (B) जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययन आधुनिक जीवन, निजी अनुभूति आ सामाजिक यथार्थक सूक्ष्म संकेत पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

७०६. (B) 'जीवकान्त' नाम जीवन-बोध, चेतना आ आन्तरिक आलोकक प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — "नाम-संकेत" जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

७०७. (B) 'जीवकान्त' नाम जीवन-बोध, चेतना आ आन्तरिक आलोकक प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ जीवकान्तक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

७०८. (B) 'जीवकान्त' नाम जीवन-बोध, चेतना आ आन्तरिक आलोकक प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

७०९. (B) 'जीवकान्त' नाम जीवन-बोध, चेतना आ आन्तरिक आलोकक प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

७१०. (B) 'जीवकान्त' नाम जीवन-बोध, चेतना आ आन्तरिक आलोकक प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

७११. (B) मुक्तकक छोट रूप जीवकान्तक भावकेँ सघन आ तीक्ष्ण बनबैत अछि — "लघुता" जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

७१२. (B) मुक्तकक छोट रूप जीवकान्तक भावकेँ सघन आ तीक्ष्ण बनबैत अछि — एहि बिन्दुसँ जीवकान्तक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

७१३. (B) मुक्तकक छोट रूप जीवकान्तक भावकेँ सघन आ तीक्ष्ण बनबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

७१४. (B) मुक्तकक छोट रूप जीवकान्तक भावकेँ सघन आ तीक्ष्ण बनबैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

७१५. (B) मुक्तकक छोट रूप जीवकान्तक भावकेँ सघन आ तीक्ष्ण बनबैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

७१६. (B) हुनक मुक्तक-पाठमे आत्मानुभूति, अकेलापन, प्रश्न आ संवेदनात्मक बेचैनी देखल जा सकैत अछि — "अन्तर्मुखता" जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

७१७. (B) हुनक मुक्तक-पाठमे आत्मानुभूति, अकेलापन, प्रश्न आ संवेदनात्मक बेचैनी देखल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ जीवकान्तक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

७१८. (B) हुनक मुक्तक-पाठमे आत्मानुभूति, अकेलापन, प्रश्न आ संवेदनात्मक बेचैनी देखल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

७१९. (B) हुनक मुक्तक-पाठमे आत्मानुभूति, अकेलापन, प्रश्न आ संवेदनात्मक बेचैनी देखल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

७२०. (B) हुनक मुक्तक-पाठमे आत्मानुभूति, अकेलापन, प्रश्न आ संवेदनात्मक बेचैनी देखल जा सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

७२१. (B) व्यक्ति-भावक भीतर समाज, समय आ व्यवस्था पर सूक्ष्म टिप्पणी भेटि सकैत अछि — "सामाजिक संकेत" जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

७२२. (B) व्यक्ति-भावक भीतर समाज, समय आ व्यवस्था पर सूक्ष्म टिप्पणी भेटि सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ जीवकान्तक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

७२३. (B) व्यक्ति-भावक भीतर समाज, समय आ व्यवस्था पर सूक्ष्म टिप्पणी भेटि सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

७२४. (B) व्यक्ति-भावक भीतर समाज, समय आ व्यवस्था पर सूक्ष्म टिप्पणी भेटि सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

७२५. (B) व्यक्ति-भावक भीतर समाज, समय आ व्यवस्था पर सूक्ष्म टिप्पणी भेटि सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

७२६. (B) आधुनिक मुक्तकमे सहज, तीक्ष्ण आ अर्थ-सघन मैथिली भाषा प्रभावी होइत अछि — "भाषा-प्रयोग" जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

७२७. (B) आधुनिक मुक्तकमे सहज, तीक्ष्ण आ अर्थ-सघन मैथिली भाषा प्रभावी होइत अछि — एहि बिन्दुसँ जीवकान्तक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

७२८. (B) आधुनिक मुक्तकमे सहज, तीक्ष्ण आ अर्थ-सघन मैथिली भाषा प्रभावी होइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

७२९. (B) आधुनिक मुक्तकमे सहज, तीक्ष्ण आ अर्थ-सघन मैथिली भाषा प्रभावी होइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

७३०. (B) आधुनिक मुक्तकमे सहज, तीक्ष्ण आ अर्थ-सघन मैथिली भाषा प्रभावी होइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

७३१. (B) नव बिम्ब आ प्रतीक आधुनिक काव्यक जटिल भावकेँ मूर्त करैत अछि — "बिम्ब" जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

७३२. (B) नव बिम्ब आ प्रतीक आधुनिक काव्यक जटिल भावकेँ मूर्त करैत अछि — एहि बिन्दुसँ जीवकान्तक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

७३३. (B) नव बिम्ब आ प्रतीक आधुनिक काव्यक जटिल भावकेँ मूर्त करैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

७३४. (B) नव बिम्ब आ प्रतीक आधुनिक काव्यक जटिल भावकेँ मूर्त करैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

७३५. (B) नव बिम्ब आ प्रतीक आधुनिक काव्यक जटिल भावकेँ मूर्त करैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

७३६. (B) जीवकान्तक मुक्तकमे सूक्ष्म व्यंग्य समयक विसंगति खोलि सकैत अछि — "व्यंग्य" जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

७३७. (B) जीवकान्तक मुक्तकमे सूक्ष्म व्यंग्य समयक विसंगति खोलि सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ जीवकान्तक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

७३८. (B) जीवकान्तक मुक्तकमे सूक्ष्म व्यंग्य समयक विसंगति खोलि सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

७३९. (B) जीवकान्तक मुक्तकमे सूक्ष्म व्यंग्य समयक विसंगति खोलि सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

७४०. (B) जीवकान्तक मुक्तकमे सूक्ष्म व्यंग्य समयक विसंगति खोलि सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

७४१. (B) आधुनिक मैथिली कवितामे गामक स्मृति आ शहरक दबाव बीच तनाव एक प्रश्न-बिन्दु बनैत अछि — "शहर-गाम तनाव" जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

७४२. (B) आधुनिक मैथिली कवितामे गामक स्मृति आ शहरक दबाव बीच तनाव एक प्रश्न-बिन्दु बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ जीवकान्तक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

७४३. (B) आधुनिक मैथिली कवितामे गामक स्मृति आ शहरक दबाव बीच तनाव एक प्रश्न-बिन्दु बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

७४४. (B) आधुनिक मैथिली कवितामे गामक स्मृति आ शहरक दबाव बीच तनाव एक प्रश्न-बिन्दु बनैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

७४५. (B) आधुनिक मैथिली कवितामे गामक स्मृति आ शहरक दबाव बीच तनाव एक प्रश्न-बिन्दु बनैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

७४६. (B) प्रेम आधुनिक मुक्तकमे केवल कोमल भाव नहि, बल्कि विडम्बना आ दूरीक अनुभव सेहो बनि सकैत अछि — "प्रेम आ विडम्बना" जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

७४७. (B) प्रेम आधुनिक मुक्तकमे केवल कोमल भाव नहि, बल्कि विडम्बना आ दूरीक अनुभव सेहो बनि सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ जीवकान्तक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

७४८. (B) प्रेम आधुनिक मुक्तकमे केवल कोमल भाव नहि, बल्कि विडम्बना आ दूरीक अनुभव सेहो बनि सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

७४९. (B) प्रेम आधुनिक मुक्तकमे केवल कोमल भाव नहि, बल्कि विडम्बना आ दूरीक अनुभव सेहो बनि सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

७५०. (B) प्रेम आधुनिक मुक्तकमे केवल कोमल भाव नहि, बल्कि विडम्बना आ दूरीक अनुभव सेहो बनि सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

७५१. (B) वर्तमान समयक बेचैनी, असुरक्षा आ प्रश्नाकुलता मुक्तकमे समाहित भऽ सकैत अछि — "समय-बोध" जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

७५२. (B) वर्तमान समयक बेचैनी, असुरक्षा आ प्रश्नाकुलता मुक्तकमे समाहित भऽ सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ जीवकान्तक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

७५३. (B) वर्तमान समयक बेचैनी, असुरक्षा आ प्रश्नाकुलता मुक्तकमे समाहित भऽ सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

७५४. (B) वर्तमान समयक बेचैनी, असुरक्षा आ प्रश्नाकुलता मुक्तकमे समाहित भऽ सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

७५५. (B) वर्तमान समयक बेचैनी, असुरक्षा आ प्रश्नाकुलता मुक्तकमे समाहित भऽ सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

७५६. (B) जीवकान्त पर उत्तरमे आधुनिकता, आत्म-बोध, प्रतीक, भाषा-सघनता आ समाज-संकेत लिखब उचित अछि — "आलोचना" जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

७५७. (B) जीवकान्त पर उत्तरमे आधुनिकता, आत्म-बोध, प्रतीक, भाषा-सघनता आ समाज-संकेत लिखब उचित अछि — एहि बिन्दुसँ जीवकान्तक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

७५८. (B) जीवकान्त पर उत्तरमे आधुनिकता, आत्म-बोध, प्रतीक, भाषा-सघनता आ समाज-संकेत लिखब उचित अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

७५९. (B) जीवकान्त पर उत्तरमे आधुनिकता, आत्म-बोध, प्रतीक, भाषा-सघनता आ समाज-संकेत लिखब उचित अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

७६०. (B) जीवकान्त पर उत्तरमे आधुनिकता, आत्म-बोध, प्रतीक, भाषा-सघनता आ समाज-संकेत लिखब उचित अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

७६१. (B) स्वतन्त्र मुक्तक रूप विचारकेँ लम्बा आख्यान बिना प्रभावी बना सकैत अछि — "रूप" जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

७६२. (B) स्वतन्त्र मुक्तक रूप विचारकेँ लम्बा आख्यान बिना प्रभावी बना सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ जीवकान्तक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

७६३. (B) स्वतन्त्र मुक्तक रूप विचारकेँ लम्बा आख्यान बिना प्रभावी बना सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

७६४. (B) स्वतन्त्र मुक्तक रूप विचारकेँ लम्बा आख्यान बिना प्रभावी बना सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

७६५. (B) स्वतन्त्र मुक्तक रूप विचारकेँ लम्बा आख्यान बिना प्रभावी बना सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

७६६. (B) कहबासँ अधिक संकेत करब आधुनिक मुक्तकक महत्त्वपूर्ण शक्ति अछि — "ध्वनि" जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

७६७. (B) कहबासँ अधिक संकेत करब आधुनिक मुक्तकक महत्त्वपूर्ण शक्ति अछि — एहि बिन्दुसँ जीवकान्तक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

७६८. (B) कहबासँ अधिक संकेत करब आधुनिक मुक्तकक महत्त्वपूर्ण शक्ति अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

७६९. (B) कहबासँ अधिक संकेत करब आधुनिक मुक्तकक महत्त्वपूर्ण शक्ति अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

७७०. (B) कहबासँ अधिक संकेत करब आधुनिक मुक्तकक महत्त्वपूर्ण शक्ति अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

७७१. (B) जीवकान्तक काव्य-पाठ मानसिक तनाव, विचारक द्वन्द्व आ संवेदनाक गहराइ दिस लऽ जा सकैत अछि — "मानसिकता" जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

७७२. (B) जीवकान्तक काव्य-पाठ मानसिक तनाव, विचारक द्वन्द्व आ संवेदनाक गहराइ दिस लऽ जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ जीवकान्तक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

७७३. (B) जीवकान्तक काव्य-पाठ मानसिक तनाव, विचारक द्वन्द्व आ संवेदनाक गहराइ दिस लऽ जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

७७४. (B) जीवकान्तक काव्य-पाठ मानसिक तनाव, विचारक द्वन्द्व आ संवेदनाक गहराइ दिस लऽ जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

७७५. (B) जीवकान्तक काव्य-पाठ मानसिक तनाव, विचारक द्वन्द्व आ संवेदनाक गहराइ दिस लऽ जा सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

७७६. (B) आधुनिक कवि मिथिलाक स्मृति, भाषा आ संस्कृति केँ नयका समयमे पुनः देखैत छथि — "मिथिला-सन्दर्भ" जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

७७७. (B) आधुनिक कवि मिथिलाक स्मृति, भाषा आ संस्कृति केँ नयका समयमे पुनः देखैत छथि — एहि बिन्दुसँ जीवकान्तक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

७७८. (B) आधुनिक कवि मिथिलाक स्मृति, भाषा आ संस्कृति केँ नयका समयमे पुनः देखैत छथि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

७७९. (B) आधुनिक कवि मिथिलाक स्मृति, भाषा आ संस्कृति केँ नयका समयमे पुनः देखैत छथि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

७८०. (B) आधुनिक कवि मिथिलाक स्मृति, भाषा आ संस्कृति कैं नयका समयमे पुनः देखैत छथि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

७८१. (B) जीवकान्तक तुलना परम्परागत गीतिक कविसँ करैत समय आधुनिक प्रतीक आ आन्तरिक तनाव प्रमुख होइत अछि — "तुलना" जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

७८२. (B) जीवकान्तक तुलना परम्परागत गीतिक कविसँ करैत समय आधुनिक प्रतीक आ आन्तरिक तनाव प्रमुख होइत अछि — एहि बिन्दुसँ जीवकान्तक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

७८३. (B) जीवकान्तक तुलना परम्परागत गीतिक कविसँ करैत समय आधुनिक प्रतीक आ आन्तरिक तनाव प्रमुख होइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

७८४. (B) जीवकान्तक तुलना परम्परागत गीतिक कविसँ करैत समय आधुनिक प्रतीक आ आन्तरिक तनाव प्रमुख होइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

७८५. (B) जीवकान्तक तुलना परम्परागत गीतिक कविसँ करैत समय आधुनिक प्रतीक आ आन्तरिक तनाव प्रमुख होइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

७८६. (B) जीवकान्त पर उत्तरमे आधुनिक मुक्तकक भाषा, बिम्ब, आत्मसंघर्ष आ सामाजिक संकेत जोड़ू — "परीक्षा-दृष्टि" जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

७८७. (B) जीवकान्त पर उत्तरमे आधुनिक मुक्तकक भाषा, बिम्ब, आत्मसंघर्ष आ सामाजिक संकेत जोड़ू — एहि बिन्दुसँ जीवकान्तक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

७८८. (B) जीवकान्त पर उत्तरमे आधुनिक मुक्तकक भाषा, बिम्ब, आत्मसंघर्ष आ सामाजिक संकेत जोड़ू — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

७८९. (B) जीवकान्त पर उत्तरमे आधुनिक मुक्तकक भाषा, बिम्ब, आत्मसंघर्ष आ सामाजिक संकेत जोड़ू — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

७९०. (B) जीवकान्त पर उत्तरमे आधुनिक मुक्तकक भाषा, बिम्ब, आत्मसंघर्ष आ सामाजिक संकेत जोड़ू — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

७९१. (B) सघन मुक्तक पाठककेँ सोचय पर बाध्य करैत अछि — "पाठकीय प्रभाव" जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

७९२. (B) सघन मुक्तक पाठककेँ सोचय पर बाध्य करैत अछि — एहि बिन्दुसँ जीवकान्तक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

७९३. (B) सघन मुक्तक पाठककेँ सोचय पर बाध्य करैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

७९४. (B) सघन मुक्तक पाठककेँ सोचय पर बाध्य करैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

७९५. (B) सघन मुक्तक पाठककेँ सोचय पर बाध्य करैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

७९६. (B) जीवकान्त आधुनिक मैथिली मुक्तकक संवेदनशील, प्रश्नाकुल आ प्रतीकधर्मी पक्ष बुझबामे सहायक कवि छथि — "समग्र मूल्य" जीवकान्तक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

७९७. (B) जीवकान्त आधुनिक मैथिली मुक्तकक संवेदनशील, प्रश्नाकुल आ प्रतीकधर्मी पक्ष बुझबामे सहायक कवि छथि — एहि बिन्दुसँ जीवकान्तक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

७९८. (B) जीवकान्त आधुनिक मैथिली मुक्तकक संवेदनशील, प्रश्नाकुल आ प्रतीकधर्मी पक्ष बुझबामे सहायक कवि छथि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

७९९. (B) जीवकान्त आधुनिक मैथिली मुक्तकक संवेदनशील, प्रश्नाकुल आ प्रतीकधर्मी पक्ष बुझबामे सहायक कवि छथि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

८००. (B) जीवकान्त आधुनिक मैथिली मुक्तकक संवेदनशील, प्रश्नाकुल आ प्रतीकधर्मी पक्ष बुझबामे सहायक कवि छथि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

८०१. (B) भीमनाथ झाक अध्ययनमे काव्य-संवेदना संग विद्वत्ता, भाषा-जागरूकता आ साहित्यिक विवेकक संगति देखल जाइत अछि — "विद्वत्-परिप्रेक्ष्य" भीमनाथ झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

८०२. (B) भीमनाथ झाक अध्ययनमे काव्य-संवेदना संग विद्वत्ता, भाषा-जागरूकता आ साहित्यिक विवेकक संगति देखल जाइत अछि — एहि बिन्दुसँ भीमनाथ झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

८०३. (B) भीमनाथ झाक अध्ययनमे काव्य-संवेदना संग विद्वत्ता, भाषा-जागरूकता आ साहित्यिक विवेकक संगति देखल जाइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

८०४. (B) भीमनाथ झाक अध्ययनमे काव्य-संवेदना संग विद्वत्ता, भाषा-जागरूकता आ साहित्यिक विवेकक संगति देखल जाइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

८०५. (B) भीमनाथ झाक अध्ययनमे काव्य-संवेदना संग विद्वत्ता, भाषा-जागरूकता आ साहित्यिक विवेकक संगति देखल जाइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

८०६. (B) हुनक सन्दर्भमे मुक्तकक लघुता, भाव-एकाग्रता आ विचार-संयम महत्त्वपूर्ण अछि — "मुक्तक-रूप" भीमनाथ झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

८०७. (B) हुनक सन्दर्भमे मुक्तकक लघुता, भाव-एकाग्रता आ विचार-संयम महत्त्वपूर्ण अछि — एहि बिन्दुसँ भीमनाथ झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

८०८. (B) हुनक सन्दर्भमे मुक्तकक लघुता, भाव-एकाग्रता आ विचार-संयम महत्त्वपूर्ण अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

८०९. (B) हुनक सन्दर्भमे मुक्तकक लघुता, भाव-एकाग्रता आ विचार-संयम महत्त्वपूर्ण अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

८१०. (B) हुनक सन्दर्भमे मुक्तकक लघुता, भाव-एकाग्रता आ विचार-संयम महत्त्वपूर्ण अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

८११. (B) भाषिक सजगता मुक्तकमे अर्थक स्पष्टता आ सौन्दर्य दुनू बढ़बैत अछि — "भाषा-शुद्धि" भीमनाथ झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

८१२. (B) भाषिक सजगता मुक्तकमे अर्थक स्पष्टता आ सौन्दर्य दुनू बढ़बैत अछि — एहि बिन्दुसँ भीमनाथ झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

८१३. (B) भाषिक सजगता मुक्तकमे अर्थक स्पष्टता आ सौन्दर्य दुनू बढ़बैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

८१४. (B) भाषिक सजगता मुक्तकमे अर्थक स्पष्टता आ सौन्दर्य दुनू बढ़बैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

८१५. (B) भाषिक सजगता मुक्तकमे अर्थक स्पष्टता आ सौन्दर्य दुनू बढ़बैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

८१६. (B) मुक्तक छोट होइतो एकटा स्पष्ट विचार वा भाव-केन्द्र रखैत अछि — "विचार-केंद्र" भीमनाथ झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

८१७. (B) मुक्तक छोट होइतो एकटा स्पष्ट विचार वा भाव-केन्द्र रखैत अछि — एहि बिन्दुसँ भीमनाथ झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

८१८. (B) मुक्तक छोट होइतो एकटा स्पष्ट विचार वा भाव-केन्द्र रखैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

८१९. (B) मुक्तक छोट होइतो एकटा स्पष्ट विचार वा भाव-केन्द्र रखैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

८२०. (B) मुक्तक छोट होइतो एकटा स्पष्ट विचार वा भाव-केन्द्र रखैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

८२१. (B) भीमनाथ झाक कवितामे मैथिली परम्पराक स्मृति आ आधुनिक बोधक मिलन देखल जा सकैत अछि — "परम्परा" भीमनाथ झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

८२२. (B) भीमनाथ झाक कवितामे मैथिली परम्पराक स्मृति आ आधुनिक बोधक मिलन देखल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ भीमनाथ झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

८२३. (B) भीमनाथ झाक कवितामे मैथिली परम्पराक स्मृति आ आधुनिक बोधक मिलन देखल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

८२४. (B) भीमनाथ झाक कवितामे मैथिली परम्पराक स्मृति आ आधुनिक बोधक मिलन देखल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

८२५. (B) भीमनाथ झाक कवितामे मैथिली परम्पराक स्मृति आ आधुनिक बोधक मिलन देखल जा सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

८२६. (B) मुक्तकमे नीति, जीवन-बोध, मानवीय मूल्य वा अनुभवक सार संक्षेपमे आ सकैत अछि — "नैतिकता" भीमनाथ झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

८२७. (B) मुक्तकमे नीति, जीवन-बोध, मानवीय मूल्य वा अनुभवक सार संक्षेपमे आ सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ भीमनाथ झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

८२८. (B) मुक्तकमे नीति, जीवन-बोध, मानवीय मूल्य वा अनुभवक सार संक्षेपमे आ सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

८२९. (B) मुक्तकमे नीति, जीवन-बोध, मानवीय मूल्य वा अनुभवक सार संक्षेपमे आ सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

८३०. (B) मुक्तकमे नीति, जीवन-बोध, मानवीय मूल्य वा अनुभवक सार संक्षेपमे आ सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

८३१. (B) एकटा मुक्तकक व्याख्या करैत समय भाव, भाषा, प्रतीक आ निष्कर्ष चारू देखब चाही — "व्याख्या" भीमनाथ झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

८३२. (B) एकटा मुक्तकक व्याख्या करैत समय भाव, भाषा, प्रतीक आ निष्कर्ष चारू देखब चाही — एहि बिन्दुसँ भीमनाथ झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

८३३. (B) एकटा मुक्तकक व्याख्या करैत समय भाव, भाषा, प्रतीक आ निष्कर्ष चारू देखब चाही — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

८३४. (B) एकटा मुक्तकक व्याख्या करैत समय भाव, भाषा, प्रतीक आ निष्कर्ष चारू देखब चाही — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

८३५. (B) एकटा मुक्तकक व्याख्या करैत समय भाव, भाषा, प्रतीक आ निष्कर्ष चारू देखब चाही — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

८३६. (B) एहि कविक अध्ययन विद्यार्थीकें मुक्तकक कसौटी आ भाषा-विवेक बुझबामे सहायक अछि — "शिक्षण-पक्ष" भीमनाथ झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

८३७. (B) एहि कविक अध्ययन विद्यार्थीकें मुक्तकक कसौटी आ भाषा-विवेक बुझबामे सहायक अछि — एहि बिन्दुसँ भीमनाथ झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

८३८. (B) एहि कविक अध्ययन विद्यार्थीकें मुक्तकक कसौटी आ भाषा-विवेक बुझबामे सहायक अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

८३९. (B) एहि कविक अध्ययन विद्यार्थीकें मुक्तकक कसौटी आ भाषा-विवेक बुझबामे सहायक अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

८४०. (B) एहि कविक अध्ययन विद्यार्थीकें मुक्तकक कसौटी आ भाषा-विवेक बुझबामे सहायक अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

८४१. (B) मुक्तकमे छन्द हो वा मुक्त लय, ध्वनि-संरचना भावकेँ धार दैत अछि — "छन्द-लय" भीमनाथ झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

८४२. (B) मुक्तकमे छन्द हो वा मुक्त लय, ध्वनि-संरचना भावकेँ धार दैत अछि — एहि बिन्दुसँ भीमनाथ झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

८४३. (B) मुक्तकमे छन्द हो वा मुक्त लय, ध्वनि-संरचना भावकेँ धार दैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

८४४. (B) मुक्तकमे छन्द हो वा मुक्त लय, ध्वनि-संरचना भावकेँ धार दैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

८४५. (B) मुक्तकमे छन्द हो वा मुक्त लय, ध्वनि-संरचना भावकेँ धार दैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

८४६. (B) कम शब्दमे अधिक अर्थ देब मुक्तकक प्रधान शक्ति अछि — "अर्थ-सघनता" भीमनाथ झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

८४७. (B) कम शब्दमे अधिक अर्थ देब मुक्तकक प्रधान शक्ति अछि — एहि बिन्दुसँ भीमनाथ झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

८४८. (B) कम शब्दमे अधिक अर्थ देब मुक्तकक प्रधान शक्ति अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

८४९. (B) कम शब्दमे अधिक अर्थ देब मुक्तकक प्रधान शक्ति अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

८५०. (B) कम शब्दमे अधिक अर्थ देब मुक्तकक प्रधान शक्ति अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

८५१. (B) भीमनाथ झा पर उत्तरमे काव्यक संग आलोचनात्मक विवेक आ भाषा-शिल्प जोड़ल जा सकैत अछि — "आलोचना-दृष्टि" भीमनाथ झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

८५२. (B) भीमनाथ झा पर उत्तरमे काव्यक संग आलोचनात्मक विवेक आ भाषा-शिल्प जोड़ल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ भीमनाथ झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

८५३. (B) भीमनाथ झा पर उत्तरमे काव्यक संग आलोचनात्मक विवेक आ भाषा-शिल्प जोड़ल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

८५४. (B) भीमनाथ झा पर उत्तरमे काव्यक संग आलोचनात्मक विवेक आ भाषा-शिल्प जोड़ल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

८५५. (B) भीमनाथ झा पर उत्तरमे काव्यक संग आलोचनात्मक विवेक आ भाषा-शिल्प जोड़ल जा सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

८५६. (B) मुक्तकमे समाज, लोक-स्मृति, धर्म-संस्कार वा पारिवारिक अनुभव सांकेतिक रूपेँ आ सकैत अछि — "सांस्कृतिक संकेत" भीमनाथ झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

८५७. (B) मुक्तकमे समाज, लोक-स्मृति, धर्म-संस्कार वा पारिवारिक अनुभव सांकेतिक रूपेँ आ सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ भीमनाथ झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

८५८. (B) मुक्तकमे समाज, लोक-स्मृति, धर्म-संस्कार वा पारिवारिक अनुभव सांकेतिक रूपेँ आ सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

८५९. (B) मुक्तकमे समाज, लोक-स्मृति, धर्म-संस्कार वा पारिवारिक अनुभव सांकेतिक रूपेँ आ सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

८६०. (B) मुक्तकमे समाज, लोक-स्मृति, धर्म-संस्कार वा पारिवारिक अनुभव सांकेतिक रूपेँ आ सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

८६१. (B) मुक्तकमे भाव आ विचार एक-दोसराकेँ बल दैत अछि, अलग नहि करैत — "भाव-विचार समन्वय" भीमनाथ झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

८६२. (B) मुक्तकमे भाव आ विचार एक-दोसराकेँ बल दैत अछि, अलग नहि करैत — एहि बिन्दुसँ भीमनाथ झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

८६३. (B) मुक्तकमे भाव आ विचार एक-दोसराकेँ बल दैत अछि, अलग नहि करैत — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

८६४. (B) मुक्तकमे भाव आ विचार एक-दोसराकेँ बल दैत अछि, अलग नहि करैत — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

८६५. (B) मुक्तकमे भाव आ विचार एक-दोसराकेँ बल दैत अछि, अलग नहि करैत — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

८६६. (B) छोट कविता सेहो समाजक चिन्ता वा प्रश्नकेँ स्पष्ट कऽ सकैत अछि — "सामाजिकता" भीमनाथ झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

८६७. (B) छोट कविता सेहो समाजक चिन्ता वा प्रश्नकेँ स्पष्ट कऽ सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ भीमनाथ झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

८६८. (B) छोट कविता सेहो समाजक चिन्ता वा प्रश्नकेँ स्पष्ट कऽ सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

८६९. (B) छोट कविता सेहो समाजक चिन्ता वा प्रश्नकेँ स्पष्ट कऽ सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

८७०. (B) छोट कविता सेहो समाजक चिन्ता वा प्रश्नकेँ स्पष्ट कऽ सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

८७१. (B) सही शब्द-चयन मुक्तकक भाव-स्पष्टता आ सौन्दर्यक मूल आधार अछि — "भाषिक निखार" भीमनाथ झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

८७२. (B) सही शब्द-चयन मुक्तकक भाव-स्पष्टता आ सौन्दर्यक मूल आधार अछि — एहि बिन्दुसँ भीमनाथ झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

८७३. (B) सही शब्द-चयन मुक्तकक भाव-स्पष्टता आ सौन्दर्यक मूल आधार अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

८७४. (B) सही शब्द-चयन मुक्तकक भाव-स्पष्टता आ सौन्दर्यक मूल आधार अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

८७५. (B) सही शब्द-चयन मुक्तकक भाव-स्पष्टता आ सौन्दर्यक मूल आधार अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

८७६. (B) भीमनाथ झा पर उत्तरमे मुक्तकक लघुता, विचार, भाषा-विवेक आ साहित्यिक सन्तुलन लिखब चाही — "परीक्षा-दृष्टि" भीमनाथ झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

८७७. (B) भीमनाथ झा पर उत्तरमे मुक्तकक लघुता, विचार, भाषा-विवेक आ साहित्यिक सन्तुलन लिखब चाही — एहि बिन्दुसँ भीमनाथ झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

८७८. (B) भीमनाथ झा पर उत्तरमे मुक्तकक लघुता, विचार, भाषा-विवेक आ साहित्यिक सन्तुलन लिखब चाही — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

८७९. (B) भीमनाथ झा पर उत्तरमे मुक्तकक लघुता, विचार, भाषा-विवेक आ साहित्यिक सन्तुलन लिखब चाही — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

८८०. (B) भीमनाथ झा पर उत्तरमे मुक्तकक लघुता, विचार, भाषा-विवेक आ साहित्यिक सन्तुलन लिखब चाही — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

८८१. (B) हुनक तुलना करैत समय विद्वत् दृष्टि, भाषा-सजगता आ भाव-संयम महत्त्वपूर्ण अछि — "तुलना" भीमनाथ झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

८८२. (B) हुनक तुलना करैत समय विद्वत् दृष्टि, भाषा-सजगता आ भाव-संयम महत्त्वपूर्ण अछि — एहि बिन्दुसँ भीमनाथ झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

८८३. (B) हुनक तुलना करैत समय विद्वत् दृष्टि, भाषा-सजगता आ भाव-संयम महत्त्वपूर्ण अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

८८४. (B) हुनक तुलना करैत समय विद्वत् दृष्टि, भाषा-सजगता आ भाव-संयम महत्त्वपूर्ण अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

८८५. (B) हुनक तुलना करैत समय विद्वत् दृष्टि, भाषा-सजगता आ भाव-संयम महत्त्वपूर्ण अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

८८६. (B) स्पष्ट भाषा आ सुगठित संरचना विचारकेँ पाठक धरि पहुँचबैत अछि — "सम्प्रेषण" भीमनाथ झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

८८७. (B) स्पष्ट भाषा आ सुगठित संरचना विचारकेँ पाठक धरि पहुँचबैत अछि — एहि बिन्दुसँ भीमनाथ झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

८८८. (B) स्पष्ट भाषा आ सुगठित संरचना विचारकेँ पाठक धरि पहुँचबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

८८९. (B) स्पष्ट भाषा आ सुगठित संरचना विचारकेँ पाठक धरि पहुँचबैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

८९०. (B) स्पष्ट भाषा आ सुगठित संरचना विचारकेँ पाठक धरि पहुँचबैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

८९१. (B) मुक्तकक अन्तिम भाव-पलटा वा निचोड़ ओकर प्रभाव बढ़बैत अछि — "निष्कर्ष" भीमनाथ झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

८९२. (B) मुक्तकक अन्तिम भाव-पलटा वा निचोड़ ओकर प्रभाव बढ़बैत अछि — एहि बिन्दुसँ भीमनाथ झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

८९३. (B) मुक्तकक अन्तिम भाव-पलटा वा निचोड़ ओकर प्रभाव बढ़बैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

८९४. (B) मुक्तकक अन्तिम भाव-पलटा वा निचोड़ ओकर प्रभाव बढ़बैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

८९५. (B) मुक्तकक अन्तिम भाव-पलटा वा निचोड़ ओकर प्रभाव बढ़बैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

८९६. (B) भीमनाथ झा मुक्तकक विचारमय, भाषिक आ शिक्षणीय पक्षक अध्ययनमे उपयोगी नाम छथि — "समग्र मूल्य" भीमनाथ झाक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

८९७. (B) भीमनाथ झा मुक्तकक विचारमय, भाषिक आ शिक्षणीय पक्षक अध्ययनमे उपयोगी नाम छथि — एहि बिन्दुसँ भीमनाथ झाक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

८९८. (B) भीमनाथ झा मुक्तकक विचारमय, भाषिक आ शिक्षणीय पक्षक अध्ययनमे उपयोगी नाम छथि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

८९९. (B) भीमनाथ झा मुक्तकक विचारमय, भाषिक आ शिक्षणीय पक्षक अध्ययनमे उपयोगी नाम छथि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

९००. (B) भीमनाथ झा मुक्तकक विचारमय, भाषिक आ शिक्षणीय पक्षक अध्ययनमे उपयोगी नाम छथि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

९०१. (B) कीर्ति नारायण मिश्रक अध्ययनमे मुक्तकक लघु रचना, भाव-संयम आ काव्य-चेतना पर ध्यान देल जाइत अछि — "काव्य-पहिचान" कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

९०२. (B) कीर्ति नारायण मिश्रक अध्ययनमे मुक्तकक लघु रचना, भाव-संयम आ काव्य-चेतना पर ध्यान देल जाइत अछि — एहि बिन्दुसँ कीर्ति नारायण मिश्रक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

९०३. (B) कीर्ति नारायण मिश्रक अध्ययनमे मुक्तकक लघु रचना, भाव-संयम आ काव्य-चेतना पर ध्यान देल जाइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

९०४. (B) कीर्ति नारायण मिश्रक अध्ययनमे मुक्तकक लघु रचना, भाव-संयम आ काव्य-चेतना पर ध्यान देल जाइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

९०५. (B) कीर्ति नारायण मिश्रक अध्ययनमे मुक्तकक लघु रचना, भाव-संयम आ काव्य-चेतना पर ध्यान देल जाइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

९०६. (B) 'कीर्ति' शब्द साहित्यिक यश, रचनात्मक स्मृति आ काव्य-परम्पराक संकेतक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — "नाम-संकेत" कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

९०७. (B) 'कीर्ति' शब्द साहित्यिक यश, रचनात्मक स्मृति आ काव्य-परम्पराक संकेतक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कीर्ति नारायण मिश्रक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

९०८. (B) 'कीर्ति' शब्द साहित्यिक यश, रचनात्मक स्मृति आ काव्य-परम्पराक संकेतक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

९०९. (B) 'कीर्ति' शब्द साहित्यिक यश, रचनात्मक स्मृति आ काव्य-परम्पराक संकेतक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

९१०. (B) 'कीर्ति' शब्द साहित्यिक यश, रचनात्मक स्मृति आ काव्य-परम्पराक संकेतक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

९११. (B) मुक्तकमे कम शब्दमे सघन भाव देब काव्यक प्रमुख कसौटी अछि — "भाव-संघनन" कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

९१२. (B) मुक्तकमे कम शब्दमे सघन भाव देब काव्यक प्रमुख कसौटी अछि — एहि बिन्दुसँ कीर्ति नारायण मिश्रक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

९१३. (B) मुक्तकमे कम शब्दमे सघन भाव देब काव्यक प्रमुख कसौटी अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

९१४. (B) मुक्तकमे कम शब्दमे सघन भाव देब काव्यक प्रमुख कसौटी अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

९१५. (B) मुक्तकमे कम शब्दमे सघन भाव देब काव्यक प्रमुख कसौटी अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

९१६. (B) सरस, स्पष्ट आ प्रभावकारी मैथिली भाषा मुक्तकक संप्रेषण शक्ति बढ़बैत अछि — "भाषा" कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

९१७. (B) सरस, स्पष्ट आ प्रभावकारी मैथिली भाषा मुक्तकक संप्रेषण शक्ति बढ़बैत अछि — एहि बिन्दुसँ कीर्ति नारायण मिश्रक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

९१८. (B) सरस, स्पष्ट आ प्रभावकारी मैथिली भाषा मुक्तकक संप्रेषण शक्ति बढ़बैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

९१९. (B) सरस, स्पष्ट आ प्रभावकारी मैथिली भाषा मुक्तकक संप्रेषण शक्ति बढ़बैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

९२०. (B) सरस, स्पष्ट आ प्रभावकारी मैथिली भाषा मुक्तकक संप्रेषण शक्ति बढ़बैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

९२१. (B) लय कविताक श्रवण-सुख, गति आ स्मरणीयता बढ़बैत अछि — "लय" कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

९२२. (B) लय कविताक श्रवण-सुख, गति आ स्मरणीयता बढ़बैत अछि — एहि बिन्दुसँ कीर्ति नारायण मिश्रक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

९२३. (B) लय कविताक श्रवण-सुख, गति आ स्मरणीयता बढ़बैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

९२४. (B) लय कविताक श्रवण-सुख, गति आ स्मरणीयता बढ़बैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

९२५. (B) लय कविताक श्रवण-सुख, गति आ स्मरणीयता बढ़बैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

९२६. (B) मुक्तकमे प्रकृति, प्रेम, समाज, नीति, स्मृति आ आत्म-चिन्तन जेहन विषय समा सकैत अछि — "विषय" कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

९२७. (B) मुक्तकमे प्रकृति, प्रेम, समाज, नीति, स्मृति आ आत्म-चिन्तन जेहन विषय समा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कीर्ति नारायण मिश्रक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

९२८. (B) मुक्तकमे प्रकृति, प्रेम, समाज, नीति, स्मृति आ आत्म-चिन्तन जेहन विषय समा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

९२९. (B) मुक्तकमे प्रकृति, प्रेम, समाज, नीति, स्मृति आ आत्म-चिन्तन जेहन विषय समा सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

९३०. (B) मुक्तकमे प्रकृति, प्रेम, समाज, नीति, स्मृति आ आत्म-चिन्तन जेहन विषय समा सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

९३१. (B) कीर्ति नारायण मिश्रक नाम पाठ्य-सूचीमे मुक्तकक विविध आधुनिक स्वरक प्रतिनिधि रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि — "प्रतिनिधित्व" कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

९३२. (B) कीर्ति नारायण मिश्रक नाम पाठ्य-सूचीमे मुक्तकक विविध आधुनिक स्वरक प्रतिनिधि रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कीर्ति नारायण मिश्रक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

९३३. (B) कीर्ति नारायण मिश्रक नाम पाठ्य-सूचीमे मुक्तकक विविध आधुनिक स्वरक प्रतिनिधि रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

९३४. (B) कीर्ति नारायण मिश्रक नाम पाठ्य-सूचीमे मुक्तकक विविध आधुनिक स्वरक प्रतिनिधि रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

९३५. (B) कीर्ति नारायण मिश्रक नाम पाठ्य-सूचीमे मुक्तकक विविध आधुनिक स्वरक प्रतिनिधि रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

९३६. (B) प्रतीक कम शब्दमे व्यापक भावलोक खोलबामे सहायक होइत अछि — "प्रतीक" कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

९३७. (B) प्रतीक कम शब्दमे व्यापक भावलोक खोलबामे सहायक होइत अछि — एहि बिन्दुसँ कीर्ति नारायण मिश्रक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

९३८. (B) प्रतीक कम शब्दमे व्यापक भावलोक खोलबामे सहायक होइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

९३९. (B) प्रतीक कम शब्दमे व्यापक भावलोक खोलबामे सहायक होइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

९४०. (B) प्रतीक कम शब्दमे व्यापक भावलोक खोलबामे सहायक होइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

९४१. (B) आलोचनामे कथ्य, रूप, भाषा, लय आ सामाजिक-सांस्कृतिक संकेतक संयुक्त विवेचन चाही — "आलोचना" कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

९४२. (B) आलोचनामे कथ्य, रूप, भाषा, लय आ सामाजिक-सांस्कृतिक संकेतक संयुक्त विवेचन चाही — एहि बिन्दुसँ कीर्ति नारायण मिश्रक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

९४३. (B) आलोचनामे कथ्य, रूप, भाषा, लय आ सामाजिक-सांस्कृतिक संकेतक संयुक्त विवेचन चाही — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

९४४. (B) आलोचनामे कथ्य, रूप, भाषा, लय आ सामाजिक-सांस्कृतिक संकेतक संयुक्त विवेचन चाही — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

९४५. (B) आलोचनामे कथ्य, रूप, भाषा, लय आ सामाजिक-सांस्कृतिक संकेतक संयुक्त विवेचन चाही — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

९४६. (B) मैथिली मुक्तकक आधुनिक रूप पुरान गीतिकाव्य परम्परासँ संवाद करैत अछि — "परम्परा" कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

९४७. (B) मैथिली मुक्तकक आधुनिक रूप पुरान गीतिकाव्य परम्परासँ संवाद करैत अछि — एहि बिन्दुसँ कीर्ति नारायण मिश्रक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

९४८. (B) मैथिली मुक्तकक आधुनिक रूप पुरान गीतिकाव्य परम्परासँ संवाद करैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

९४९. (B) मैथिली मुक्तकक आधुनिक रूप पुरान गीतिकाव्य परम्परासँ संवाद करैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

९५०. (B) मैथिली मुक्तकक आधुनिक रूप पुरान गीतिकाव्य परम्परासँ संवाद करैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

९५१. (B) आधुनिक मुक्तकमे व्यक्तिगत संवेदना आ सामाजिक प्रश्न दुनू एक संग आबि सकैत अछि — "आधुनिकता" कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

९५२. (B) आधुनिक मुक्तकमे व्यक्तिगत संवेदना आ सामाजिक प्रश्न दुनू एक संग आबि सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कीर्ति नारायण मिश्रक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

९५३. (B) आधुनिक मुक्तकमे व्यक्तिगत संवेदना आ सामाजिक प्रश्न दुनू एक संग आबि सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

९५४. (B) आधुनिक मुक्तकमे व्यक्तिगत संवेदना आ सामाजिक प्रश्न दुनू एक संग आबि सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

९५५. (B) आधुनिक मुक्तकमे व्यक्तिगत संवेदना आ सामाजिक प्रश्न दुनू एक संग आबि सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

९५६. (B) एकटा मुक्तकमे आरम्भिक संकेत, भाव-विकास आ अन्तिम निष्कर्षक संतुलन होइत अछि — "संरचना" कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

९५७. (B) एकटा मुक्तकमे आरम्भिक संकेत, भाव-विकास आ अन्तिम निष्कर्षक संतुलन होइत अछि — एहि बिन्दुसँ कीर्ति नारायण मिश्रक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

९५८. (B) एकटा मुक्तकमे आरम्भिक संकेत, भाव-विकास आ अन्तिम निष्कर्षक संतुलन होइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

९५९. (B) एकटा मुक्तकमे आरम्भिक संकेत, भाव-विकास आ अन्तिम निष्कर्षक संतुलन होइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

९६०. (B) एकटा मुक्तकमे आरम्भिक संकेत, भाव-विकास आ अन्तिम निष्कर्षक संतुलन होइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

९६१. (B) मिथिला-संस्कृति, लोक-स्मृति आ भाषा-गौरव मुक्तकक अर्थ-भूमि बना सकैत अछि — "सांस्कृतिक बोध" कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

९६२. (B) मिथिला-संस्कृति, लोक-स्मृति आ भाषा-गौरव मुक्तकक अर्थ-भूमि बना सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कीर्ति नारायण मिश्रक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

९६३. (B) मिथिला-संस्कृति, लोक-स्मृति आ भाषा-गौरव मुक्तकक अर्थ-भूमि बना सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

९६४. (B) मिथिला-संस्कृति, लोक-स्मृति आ भाषा-गौरव मुक्तकक अर्थ-भूमि बना सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

९६५. (B) मिथिला-संस्कृति, लोक-स्मृति आ भाषा-गौरव मुक्तकक अर्थ-भूमि बना सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

९६६. (B) छोट कविता मनुष्यक पीड़ा, आशा, प्रेम आ संघर्षक संकेत देबामे समर्थ अछि — "मानवीय मूल्य" कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

९६७. (B) छोट कविता मनुष्यक पीड़ा, आशा, प्रेम आ संघर्षक संकेत देबामे समर्थ अछि — एहि बिन्दुसँ कीर्ति नारायण मिश्रक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

९६८. (B) छोट कविता मनुष्यक पीड़ा, आशा, प्रेम आ संघर्षक संकेत देबामे समर्थ अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

९६९. (B) छोट कविता मनुष्यक पीड़ा, आशा, प्रेम आ संघर्षक संकेत देबामे समर्थ अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

९७०. (B) छोट कविता मनुष्यक पीड़ा, आशा, प्रेम आ संघर्षक संकेत देबामे समर्थ अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

९७१. (B) सादगी कविताकेँ कमजोर नहि, बल्कि गहन आ सुग्राह्य बना सकैत अछि — "भाषिक सादगी" कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

९७२. (B) सादगी कविताकेँ कमजोर नहि, बल्कि गहन आ सुग्राह्य बना सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कीर्ति नारायण मिश्रक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

९७३. (B) सादगी कविताकेँ कमजोर नहि, बल्कि गहन आ सुग्राह्य बना सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

९७४. (B) सादगी कविताकेँ कमजोर नहि, बल्कि गहन आ सुग्राह्य बना सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

९७५. (B) सादगी कविताकेँ कमजोर नहि, बल्कि गहन आ सुग्राह्य बना सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

९७६. (B) कीर्ति नारायण मिश्रक तुलना करैत समय भाषा, लय, भाव-संयम आ आधुनिकता देखल जाइत अछि — "तुलना" कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

९७७. (B) कीर्ति नारायण मिश्रक तुलना करैत समय भाषा, लय, भाव-संयम आ आधुनिकता देखल जाइत अछि — एहि बिन्दुसँ कीर्ति नारायण मिश्रक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

९७८. (B) कीर्ति नारायण मिश्रक तुलना करैत समय भाषा, लय, भाव-संयम आ आधुनिकता देखल जाइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

९७९. (B) कीर्ति नारायण मिश्रक तुलना करैत समय भाषा, लय, भाव-संयम आ आधुनिकता देखल जाइत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

९८०. (B) कीर्ति नारायण मिश्रक तुलना करैत समय भाषा, लय, भाव-संयम आ आधुनिकता देखल जाइत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

९८१. (B) उत्तरमे मुक्तकक स्वतंत्रता, लघुता, भाव-संघनन आ कविक विशिष्ट स्वर अवश्य लिखू — "परीक्षा-दृष्टि" कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

९८२. (B) उत्तरमे मुक्तकक स्वतंत्रता, लघुता, भाव-संघनन आ कविक विशिष्ट स्वर अवश्य लिखू — एहि बिन्दुसँ कीर्ति नारायण मिश्रक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

९८३. (B) उत्तरमे मुक्तकक स्वतंत्रता, लघुता, भाव-संघनन आ कविक विशिष्ट स्वर अवश्य लिखू — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

९८४. (B) उत्तरमे मुक्तकक स्वतंत्रता, लघुता, भाव-संघनन आ कविक विशिष्ट स्वर अवश्य लिखू — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

९८५. (B) उत्तरमे मुक्तकक स्वतंत्रता, लघुता, भाव-संघनन आ कविक विशिष्ट स्वर अवश्य लिखू — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

९८६. (B) स्पष्ट भाव आ लय पाठकक मनमे काव्यक त्वरित असर पैदा करैत अछि — "पाठकीयता" कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

९८७. (B) स्पष्ट भाव आ लय पाठकक मनमे काव्यक त्वरित असर पैदा करैत अछि — एहि बिन्दुसँ कीर्ति नारायण मिश्रक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

९८८. (B) स्पष्ट भाव आ लय पाठकक मनमे काव्यक त्वरित असर पैदा करैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

९८९. (B) स्पष्ट भाव आ लय पाठकक मनमे काव्यक त्वरित असर पैदा करैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

९९०. (B) स्पष्ट भाव आ लय पाठकक मनमे काव्यक त्वरित असर पैदा करैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

९९१. (B) समकालीन जीवनक प्रश्न छोट मुक्तकमे सेहो अर्थपूर्ण ढंगसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि — "समकालीनता" कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

९९२. (B) समकालीन जीवनक प्रश्न छोट मुक्तकमे सेहो अर्थपूर्ण ढंगसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कीर्ति नारायण मिश्रक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

९९३. (B) समकालीन जीवनक प्रश्न छोट मुक्तकमे सेहो अर्थपूर्ण ढंगसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

९९४. (B) समकालीन जीवनक प्रश्न छोट मुक्तकमे सेहो अर्थपूर्ण ढंगसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

९९५. (B) समकालीन जीवनक प्रश्न छोट मुक्तकमे सेहो अर्थपूर्ण ढंगसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

९९६. (B) कीर्ति नारायण मिश्रक अध्ययन मैथिली मुक्तकक आधुनिक, संक्षिप्त आ भावगंभीर स्वर बुझबामे सहायक अछि — "समग्र मूल्य" कीर्ति नारायण मिश्रक मुक्तक-अध्ययनक मुख्य बिन्दु अछि; सही उत्तर ओहि बिन्दुक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि।

९९७. (B) कीर्ति नारायण मिश्रक अध्ययन मैथिली मुक्तकक आधुनिक, संक्षिप्त आ भावगंभीर स्वर बुझबामे सहायक अछि — एहि बिन्दुसँ कीर्ति नारायण मिश्रक कविता-स्वर, भाषा, भाव आ मुक्तक-रूपक सम्बन्ध बुझल जाइत अछि।

९९८. (B) कीर्ति नारायण मिश्रक अध्ययन मैथिली मुक्तकक आधुनिक, संक्षिप्त आ भावगंभीर स्वर बुझबामे सहायक अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे लघु काव्य-रूप, भाव-संयम, भाषा आ काव्य-संकेतसँ मेल खाइत अछि।

९९९. (B) कीर्ति नारायण मिश्रक अध्ययन मैथिली मुक्तकक आधुनिक, संक्षिप्त आ भावगंभीर स्वर बुझबामे सहायक अछि — परीक्षामे केवल कवि-नाम नहि, हुनक काव्यगत विशेषता, भाषा, भाव आ विधागत पक्ष जोड़ब चाही।

१०००. (B) कीर्ति नारायण मिश्रक अध्ययन मैथिली मुक्तकक आधुनिक, संक्षिप्त आ भावगंभीर स्वर बुझबामे सहायक अछि — मुक्तकक उपयोगिता ओकर संक्षिप्तता, अर्थ-सघनता, लय, बिम्ब आ पाठकीय प्रभावसँ स्पष्ट होइत अछि।

अध्याय ३ : महाकाव्य एवं खण्डकाव्य — विदेह क्विज

sec0

१. महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्परामे “महाकाव्य” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) दीर्घ कथात्मक काव्य, जाहिमे व्यापक कथावस्तु, नायक, प्रसंग, समाज आ आदर्शक विस्तार होइत अछि

(B) केवल दू पंक्तिक गीत

(C) केवल समाचार-पत्रक सूचना

(D) केवल निबन्धक निष्कर्ष

२. “महाकाव्य” कैं महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्पराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) केवल समाचार-पत्रक सूचना

(B) केवल निबन्धक निष्कर्ष

(C) केवल दू पंक्तिक गीत

(D) दीर्घ कथात्मक काव्य, जाहिमे व्यापक कथावस्तु, नायक, प्रसंग, समाज आ आदर्शक विस्तार होइत अछि

३. नीचाँमे “महाकाव्य”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) दीर्घ कथात्मक काव्य, जाहिमे व्यापक कथावस्तु, नायक, प्रसंग, समाज आ आदर्शक विस्तार होइत अछि

(B) केवल निबन्धक निष्कर्ष

(C) केवल दू पंक्तिक गीत

(D) केवल समाचार-पत्रक सूचना

४. परीक्षा-दृष्टिसँ “महाकाव्य” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल दू पंक्तिक गीत

(B) केवल निबन्धक निष्कर्ष

(C) केवल समाचार-पत्रक सूचना

(D) दीर्घ कथात्मक काव्य, जाहिमे व्यापक कथावस्तु, नायक, प्रसंग, समाज आ आदर्शक विस्तार होइत अछि

५. “महाकाव्य”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल समाचार-पत्रक सूचना

(B) केवल दू पंक्तिक गीत

(C) केवल निबन्धक निष्कर्ष

(D) दीर्घ कथात्मक काव्य, जाहिमे व्यापक कथावस्तु, नायक, प्रसंग, समाज आ आदर्शक विस्तार होइत अछि

६. महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्परामे “खण्डकाव्यसँ भिन्नता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) महाकाव्यमे कथावस्तु नहि रहैत अछि

(B) महाकाव्य केवल चिट्ठी होइत अछि

(C) महाकाव्य प्रायः विस्तृत जीवन-कथा वा महान प्रसंगक विस्तार करैत अछि

(D) महाकाव्य सदैव एक क्षण धरि सीमित रहैत अछि

७. “खण्डकाव्यसँ भिन्नता” कैं महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्पराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) महाकाव्य सदैव एक क्षण धरि सीमित रहैत अछि

(B) महाकाव्य प्रायः विस्तृत जीवन-कथा वा महान प्रसंगक विस्तार करैत अछि

(C) महाकाव्यमे कथावस्तु नहि रहैत अछि

(D) महाकाव्य केवल चिट्ठी होइत अछि

८. नीचाँमे “खण्डकाव्यसँ भिन्नता”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) महाकाव्य सदैव एक क्षण धरि सीमित रहैत अछि

(B) महाकाव्यमे कथावस्तु नहि रहैत अछि

(C) महाकाव्य प्रायः विस्तृत जीवन-कथा वा महान प्रसंगक विस्तार करैत अछि

(D) महाकाव्य केवल चिट्ठी होइत अछि

९. परीक्षा-दृष्टिसँ "खण्डकाव्यसँ भिन्नता" पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) महाकाव्यमे कथावस्तु नहि रहैत अछि

(B) महाकाव्य प्रायः विस्तृत जीवन-कथा वा महान प्रसंगक विस्तार करैत अछि

(C) महाकाव्य सदैव एक क्षण धरि सीमित रहैत अछि

(D) महाकाव्य केवल चिट्ठी होइत अछि

१०. "खण्डकाव्यसँ भिन्नता"क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) महाकाव्य केवल चिट्ठी होइत अछि

(B) महाकाव्य प्रायः विस्तृत जीवन-कथा वा महान प्रसंगक विस्तार करैत अछि

(C) महाकाव्यमे कथावस्तु नहि रहैत अछि

(D) महाकाव्य सदैव एक क्षण धरि सीमित रहैत अछि

११. महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्परामे "सर्गबद्धता" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) महाकाव्यमे कथाकेँ अलग-अलग प्रसंग वा सर्गमे बाँटल जा सकैत अछि

(B) काव्य बिना क्रमक असम्बद्ध ध्वनि होइत अछि

(C) सर्ग केवल गद्य-पत्रक अनुच्छेद अछि

(D) सर्गक कथासँ कोनो सम्बन्ध नहि

१२. "सर्गबद्धता" केँ महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्पराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) सर्ग केवल गद्य-पत्रक अनुच्छेद अछि

(B) सर्गक कथासँ कोनो सम्बन्ध नहि

(C) काव्य बिना क्रमक असम्बद्ध ध्वनि होइत अछि

(D) महाकाव्यमे कथाकेँ अलग-अलग प्रसंग वा सर्गमे बाँटल जा सकैत अछि

१३. नीचाँमे "सर्गबद्धता"क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) महाकाव्यमे कथाकेँ अलग-अलग प्रसंग वा सर्गमे बाँटल जा सकैत अछि

(B) सर्गक कथासँ कोनो सम्बन्ध नहि

(C) काव्य बिना क्रमक असम्बद्ध ध्वनि होइत अछि

(D) सर्ग केवल गद्य-पत्रक अनुच्छेद अछि

१४. परीक्षा-दृष्टिसँ "सर्गबद्धता" पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) काव्य बिना क्रमक असम्बद्ध ध्वनि होइत अछि

(B) सर्गक कथासँ कोनो सम्बन्ध नहि

(C) सर्ग केवल गद्य-पत्रक अनुच्छेद अछि

(D) महाकाव्यमे कथाकेँ अलग-अलग प्रसंग वा सर्गमे बाँटल जा सकैत अछि

१५. "सर्गबद्धता"क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) सर्ग केवल गद्य-पत्रक अनुच्छेद अछि

(B) काव्य बिना क्रमक असम्बद्ध ध्वनि होइत अछि

(C) सर्गक कथासँ कोनो सम्बन्ध नहि

(D) महाकाव्यमे कथाकेँ अलग-अलग प्रसंग वा सर्गमे बाँटल जा सकैत अछि

१६. महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्परामे "नायकत्व" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) महाकाव्यक नायक सामूहिक आदर्श, संघर्ष वा चरित्र-ऊर्जा केँ धारण करैत अछि

(B) नायक केवल पाद-टिप्पणी होइत अछि

(C) नायकक भूमिका शून्य रहैत अछि

(D) नायक सदैव निर्जीव वस्तु होइत अछि

१७. “नायकत्व” कैँ महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्पराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) नायकक भूमिका शून्य रहैत अछि

(B) नायक सदैव निर्जीव वस्तु होइत अछि

(C) नायक केवल पाद-टिप्पणी होइत अछि

(D) महाकाव्यक नायक सामूहिक आदर्श, संघर्ष वा चरित्र-ऊर्जा कैँ धारण करैत अछि

१८. नीचाँमे “नायकत्व”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) महाकाव्यक नायक सामूहिक आदर्श, संघर्ष वा चरित्र-ऊर्जा कैँ धारण करैत अछि

(B) नायक सदैव निर्जीव वस्तु होइत अछि

(C) नायक केवल पाद-टिप्पणी होइत अछि

(D) नायकक भूमिका शून्य रहैत अछि

१९. परीक्षा-दृष्टिसँ “नायकत्व” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) नायक केवल पाद-टिप्पणी होइत अछि

(B) नायक सदैव निर्जीव वस्तु होइत अछि

(C) नायकक भूमिका शून्य रहैत अछि

(D) महाकाव्यक नायक सामूहिक आदर्श, संघर्ष वा चरित्र-ऊर्जा कैँ धारण करैत अछि

२०. “नायकत्व”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) नायकक भूमिका शून्य रहैत अछि

(B) नायक केवल पाद-टिप्पणी होइत अछि

(C) नायक सदैव निर्जीव वस्तु होइत अछि

(D) महाकाव्यक नायक सामूहिक आदर्श, संघर्ष वा चरित्र-ऊर्जा कैँ धारण करैत अछि

२१. महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्परामे “विस्तृत कथावस्तु” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) महाकाव्य अनेक प्रसंग, पात्र, संघर्ष आ आदर्शकेँ जोड़ैत अछि

(B) महाकाव्य केवल एक शब्दक शीर्षक अछि

(C) कथा-विस्तार दोष मात्र अछि

(D) प्रसंग-विकास असम्भव अछि

२२. “विस्तृत कथावस्तु” कैँ महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्पराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) कथा-विस्तार दोष मात्र अछि

(B) प्रसंग-विकास असम्भव अछि

(C) महाकाव्य केवल एक शब्दक शीर्षक अछि

(D) महाकाव्य अनेक प्रसंग, पात्र, संघर्ष आ आदर्शकेँ जोड़ैत अछि

२३. नीचाँमे “विस्तृत कथावस्तु”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) महाकाव्य अनेक प्रसंग, पात्र, संघर्ष आ आदर्शकेँ जोड़ैत अछि

(B) प्रसंग-विकास असम्भव अछि

(C) महाकाव्य केवल एक शब्दक शीर्षक अछि

(D) कथा-विस्तार दोष मात्र अछि

२४. परीक्षा-दृष्टिसँ “विस्तृत कथावस्तु” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) महाकाव्य केवल एक शब्दक शीर्षक अछि

(B) प्रसंग-विकास असम्भव अछि

(C) कथा-विस्तार दोष मात्र अछि

(D) महाकाव्य अनेक प्रसंग, पात्र, संघर्ष आ आदर्शकेँ जोड़ैत अछि

२५. “विस्तृत कथावस्तु”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) कथा-विस्तार दोष मात्र अछि

(B) महाकाव्य केवल एक शब्दक शीर्षक अछि

(C) प्रसंग-विकास असम्भव अछि

(D) महाकाव्य अनेक प्रसंग, पात्र, संघर्ष आ आदर्शकेँ जोड़ैत अछि

२६. महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्परामे “रस-बहुलता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) महाकाव्यमे वीर, करुण, शृङ्गार, भक्ति, शान्त आदि अनेक रसक सम्भावना रहैत अछि

(B) महाकाव्य सदैव रसहीन सूची होइत अछि

(C) रसक चर्चा केवल गणितमे होइत अछि

(D) रस आ पात्रक कोनो सम्बन्ध नहि

२७. “रस-बहुलता” केँ महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्पराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) रसक चर्चा केवल गणितमे होइत अछि

(B) रस आ पात्रक कोनो सम्बन्ध नहि

(C) महाकाव्य सदैव रसहीन सूची होइत अछि

(D) महाकाव्यमे वीर, करुण, शृङ्गार, भक्ति, शान्त आदि अनेक रसक सम्भावना रहैत अछि

२८. नीचाँमे “रस-बहुलता”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) महाकाव्यमे वीर, करुण, शृङ्गार, भक्ति, शान्त आदि अनेक रसक सम्भावना रहैत अछि

(B) रस आ पात्रक कोनो सम्बन्ध नहि

(C) महाकाव्य सदैव रसहीन सूची होइत अछि

(D) रसक चर्चा केवल गणितमे होइत अछि

२९. परीक्षा-दृष्टिसँ “रस-बहुलता” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) महाकाव्य सदैव रसहीन सूची होइत अछि

(B) रस आ पात्रक कोनो सम्बन्ध नहि

(C) रसक चर्चा केवल गणितमे होइत अछि

(D) महाकाव्यमे वीर, करुण, शृङ्गार, भक्ति, शान्त आदि अनेक रसक सम्भावना रहैत अछि

३०. “रस-बहुलता”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) रसक चर्चा केवल गणितमे होइत अछि

(B) महाकाव्य सदैव रसहीन सूची होइत अछि

(C) रस आ पात्रक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) महाकाव्यमे वीर, करुण, शृङ्गार, भक्ति, शान्त आदि अनेक रसक सम्भावना रहैत अछि

३१. महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्परामे “वर्णन-विस्तार” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) वर्णन केवल मूल्य-सूची अछि

(B) नगर, वन, युद्ध, यात्रा, ऋतु, सभा आदि वर्णन महाकाव्यक गरिमा बढ़बैत अछि

(C) वर्णन सदैव अर्थहीन त्रुटि अछि

(D) काव्यमे दृश्य बनबैत नहि

३२. “वर्णन-विस्तार” केँ महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्पराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) नगर, वन, युद्ध, यात्रा, ऋतु, सभा आदि वर्णन महाकाव्यक गरिमा बढ़बैत अछि

(B) काव्यमे दृश्य बनबैत नहि

(C) वर्णन केवल मूल्य-सूची अछि

(D) वर्णन सदैव अर्थहीन त्रुटि अछि

३३. नीचाँमे “वर्णन-विस्तार”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) काव्यमे दृश्य बनबैत नहि

(B) नगर, वन, युद्ध, यात्रा, ऋतु, सभा आदि वर्णन महाकाव्यक गरिमा बढ़बैत अछि

(C) वर्णन केवल मूल्य-सूची अछि

(D) वर्णन सदैव अर्थहीन त्रुटि अछि

३४. परीक्षा-दृष्टिसँ “वर्णन-विस्तार” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) नगर, वन, युद्ध, यात्रा, ऋतु, सभा आदि वर्णन महाकाव्यक गरिमा बढ़बैत अछि

(B) वर्णन सदैव अर्थहीन त्रुटि अछि

(C) वर्णन केवल मूल्य-सूची अछि

(D) काव्यमे दृश्य बनबैत नहि

३५. “वर्णन-विस्तार”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) नगर, वन, युद्ध, यात्रा, ऋतु, सभा आदि वर्णन महाकाव्यक गरिमा बढ़बैत अछि

(B) काव्यमे दृश्य बनबैत नहि

(C) वर्णन सदैव अर्थहीन त्रुटि अछि

(D) वर्णन केवल मूल्य-सूची अछि

३६. महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्परामे “आदर्श आ मूल्य” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) आदर्शक साहित्यसँ कोनो सम्बन्ध नहि

(B) केवल व्याकरण-सूत्र अछि

(C) महाकाव्य समाजक नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आ मानवीय मूल्यकेँ रूप दैत अछि

(D) महाकाव्य मूल्य-विमुख कागज अछि

३७. “आदर्श आ मूल्य” केँ महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्पराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) महाकाव्य मूल्य-विमुख कागज अछि

(B) महाकाव्य समाजक नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आ मानवीय मूल्यकेँ रूप दैत अछि

(C) आदर्शक साहित्यसँ कोनो सम्बन्ध नहि

(D) केवल व्याकरण-सूत्र अछि

३८. नीचाँमे “आदर्श आ मूल्य”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) महाकाव्य मूल्य-विमुख कागज अछि

(B) आदर्शक साहित्यसँ कोनो सम्बन्ध नहि

(C) महाकाव्य समाजक नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आ मानवीय मूल्यकेँ रूप दैत अछि

(D) केवल व्याकरण-सूत्र अछि

३९. परीक्षा-दृष्टिसँ “आदर्श आ मूल्य” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) आदर्शक साहित्यसँ कोनो सम्बन्ध नहि

(B) महाकाव्य समाजक नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आ मानवीय मूल्यकेँ रूप दैत अछि

(C) महाकाव्य मूल्य-विमुख कागज अछि

(D) केवल व्याकरण-सूत्र अछि

४०. “आदर्श आ मूल्य”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल व्याकरण-सूत्र अछि

(B) महाकाव्य समाजक नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आ मानवीय मूल्यकेँ रूप दैत अछि

(C) आदर्शक साहित्यसँ कोनो सम्बन्ध नहि

(D) महाकाव्य मूल्य-विमुख कागज अछि

४१. महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्परामे “इतिहास आ पुराण” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) इतिहास-स्मृति काव्य-विरोधी अछि

(B) पुराणक कथ्य सदैव असाहित्यिक अछि

(C) मैथिली महाकाव्य प्रायः रामायण, महाभारत, पुराण वा चरित-कथासँ सम्बद्ध भेटैत अछि

(D) महाकाव्य केवल आधुनिक विज्ञापनसँ बनैत अछि

४२. “इतिहास आ पुराण” कैँ महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्पराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) महाकाव्य केवल आधुनिक विज्ञापनसँ बनैत अछि

(B) मैथिली महाकाव्य प्रायः रामायण, महाभारत, पुराण वा चरित-कथासँ सम्बद्ध भेटैत अछि

(C) इतिहास-स्मृति काव्य-विरोधी अछि

(D) पुराणक कथ्य सदैव असाहित्यिक अछि

४३. नीचाँमे “इतिहास आ पुराण”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) महाकाव्य केवल आधुनिक विज्ञापनसँ बनैत अछि

(B) इतिहास-स्मृति काव्य-विरोधी अछि

(C) मैथिली महाकाव्य प्रायः रामायण, महाभारत, पुराण वा चरित-कथासँ सम्बद्ध भेटैत अछि

(D) पुराणक कथ्य सदैव असाहित्यिक अछि

४४. परीक्षा-दृष्टिसँ “इतिहास आ पुराण” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) इतिहास-स्मृति काव्य-विरोधी अछि

(B) मैथिली महाकाव्य प्रायः रामायण, महाभारत, पुराण वा चरित-कथासँ सम्बद्ध भेटैत अछि

(C) महाकाव्य केवल आधुनिक विज्ञापनसँ बनैत अछि

(D) पुराणक कथ्य सदैव असाहित्यिक अछि

४५. “इतिहास आ पुराण”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) पुराणक कथ्य सदैव असाहित्यिक अछि

(B) मैथिली महाकाव्य प्रायः रामायण, महाभारत, पुराण वा चरित-कथासँ सम्बद्ध भेटैत अछि

(C) इतिहास-स्मृति काव्य-विरोधी अछि

(D) महाकाव्य केवल आधुनिक विज्ञापनसँ बनैत अछि

४६. महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्परामे “रामकाव्य परम्परा” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) रामकाव्यक भाषा-संस्कृतिसँ सम्बन्ध नहि

(B) मिथिलाभाषा रामायण आ रमेश्वरचरित मिथिला रामायण रामकथा-आधारित महाकाव्य-धारा बुझबैत अछि

(C) रामकाव्य मैथिलीमे अप्रासंगिक अछि

(D) रामकथा केवल वैज्ञानिक सूत्र अछि

४७. “रामकाव्य परम्परा” कैँ महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्पराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) मिथिलाभाषा रामायण आ रमेश्वरचरित मिथिला रामायण रामकथा-आधारित महाकाव्य-धारा बुझबैत अछि

(B) रामकथा केवल वैज्ञानिक सूत्र अछि

(C) रामकाव्यक भाषा-संस्कृतिसँ सम्बन्ध नहि

(D) रामकाव्य मैथिलीमे अप्रासंगिक अछि

४८. नीचाँमे “रामकाव्य परम्परा”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) रामकथा केवल वैज्ञानिक सूत्र अछि

(B) मिथिलाभाषा रामायण आ रमेश्वरचरित मिथिला रामायण रामकथा-आधारित महाकाव्य-धारा बुझबैत अछि

(C) रामकाव्यक भाषा-संस्कृतिसँ सम्बन्ध नहि

(D) रामकाव्य मैथिलीमे अप्रासंगिक अछि

४९. परीक्षा-दृष्टिसँ “रामकाव्य परम्परा” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) मिथिलाभाषा रामायण आ रमेश्वरचरित मिथिला रामायण रामकथा-आधारित महाकाव्य-धारा बुझबैत अछि

(B) रामकाव्य मैथिलीमे अप्रासंगिक अछि

(C) रामकाव्यक भाषा-संस्कृतिसँ सम्बन्ध नहि

(D) रामकथा केवल वैज्ञानिक सूत्र अछि

५०. “रामकाव्य परम्परा”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) मिथिलाभाषा रामायण आ रमेश्वरचरित मिथिला रामायण रामकथा-आधारित महाकाव्य-धारा बुझबैत अछि

(B) रामकथा केवल वैज्ञानिक सूत्र अछि

(C) रामकाव्य मैथिलीमे अप्रासंगिक अछि

(D) रामकाव्यक भाषा-संस्कृतिसँ सम्बन्ध नहि

५१. महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्परामे “महाभारत प्रसंग” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) सुभद्रा-हरण, एकलव्य, उत्तरा, प्रतिज्ञा पाण्डव आदि काव्य महाभारतीय सामग्रीसँ सम्बन्धित मानल जा सकैत अछि

(B) महाभारत प्रसंग केवल पाक-विधि अछि

(C) पात्र-आधार काव्यमे नहि रहैत अछि

(D) महाभारत आ कथाक सम्बन्ध असम्भव अछि

५२. “महाभारत प्रसंग” कैँ महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्पराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) पात्र-आधार काव्यमे नहि रहैत अछि

(B) महाभारत आ कथाक सम्बन्ध असम्भव अछि

(C) महाभारत प्रसंग केवल पाक-विधि अछि

(D) सुभद्रा-हरण, एकलव्य, उत्तरा, प्रतिज्ञा पाण्डव आदि काव्य महाभारतीय सामग्रीसँ सम्बन्धित मानल जा सकैत अछि

५३. नीचाँमे “महाभारत प्रसंग”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) सुभद्रा-हरण, एकलव्य, उत्तरा, प्रतिज्ञा पाण्डव आदि काव्य महाभारतीय सामग्रीसँ सम्बन्धित मानल जा सकैत अछि

(B) महाभारत आ कथाक सम्बन्ध असम्भव अछि

(C) महाभारत प्रसंग केवल पाक-विधि अछि

(D) पात्र-आधार काव्यमे नहि रहैत अछि

५४. परीक्षा-दृष्टिसँ “महाभारत प्रसंग” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) महाभारत प्रसंग केवल पाक-विधि अछि

(B) महाभारत आ कथाक सम्बन्ध असम्भव अछि

(C) पात्र-आधार काव्यमे नहि रहैत अछि

(D) सुभद्रा-हरण, एकलव्य, उत्तरा, प्रतिज्ञा पाण्डव आदि काव्य महाभारतीय सामग्रीसँ सम्बन्धित मानल जा सकैत अछि

५५. “महाभारत प्रसंग”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) पात्र-आधार काव्यमे नहि रहैत अछि

(B) महाभारत प्रसंग केवल पाक-विधि अछि

(C) महाभारत आ कथाक सम्बन्ध असम्भव अछि

(D) सुभद्रा-हरण, एकलव्य, उत्तरा, प्रतिज्ञा पाण्डव आदि काव्य महाभारतीय सामग्रीसँ सम्बन्धित मानल जा सकैत अछि

५६. महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्परामे “चरित काव्य” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) चरित सदैव बिना पात्रक होइत अछि

(B) कृष्णचरित, अम्बचरित, चाणक्य आदि नाम चरित्र-केंद्रित काव्य-दृष्टिक संकेत दैत अछि

(C) चरितक अर्थ केवल तालिका अछि

(D) चरित्र काव्य-विषय नहि बनि सकैत

५७. “चरित काव्य” कैँ महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्पराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) कृष्णचरित, अम्बचरित, चाणक्य आदि नाम चरित्र-केंद्रित काव्य-दृष्टिक संकेत दैत अछि

(B) चरित्र काव्य-विषय नहि बनि सकैत

(C) चरित सदैव बिना पात्रक होइत अछि

(D) चरितक अर्थ केवल तालिका अछि

५८. नीचाँमे “चरित काव्य”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) चरित्र काव्य-विषय नहि बनि सकैत

(B) कृष्णचरित, अम्बचरित, चाणक्य आदि नाम चरित्र-केंद्रित काव्य-दृष्टिक संकेत दैत अछि

(C) चरित सदैव बिना पात्रक होइत अछि

(D) चरितक अर्थ केवल तालिका अछि

५९. परीक्षा-दृष्टिसँ “चरित काव्य” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) कृष्णचरित, अम्बचरित, चाणक्य आदि नाम चरित्र-केंद्रित काव्य-दृष्टिक संकेत दैत अछि

(B) चरितक अर्थ केवल तालिका अछि

(C) चरित सदैव बिना पात्रक होइत अछि

(D) चरित्र काव्य-विषय नहि बनि सकैत

६०. “चरित काव्य”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) कृष्णचरित, अम्बचरित, चाणक्य आदि नाम चरित्र-केंद्रित काव्य-दृष्टिक संकेत दैत अछि

(B) चरित्र काव्य-विषय नहि बनि सकैत

(C) चरितक अर्थ केवल तालिका अछि

(D) चरित सदैव बिना पात्रक होइत अछि

६१. महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्परामे “मिथिला-परिवेश” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) मिथिला-परिवेशक काव्यमे कोनो अर्थ नहि

(B) भाषा आ भूगोल सदैव अलग-अलग अछि

(C) परिवेश केवल छपाइ-दोष अछि

(D) मैथिली महाकाव्य अपन भाषा, लोक-संस्कार आ मिथिला-दृष्टिसँ विशिष्ट बनैत अछि

६२. “मिथिला-परिवेश” कैँ महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्पराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) परिवेश केवल छपाइ-दोष अछि

(B) मिथिला-परिवेशक काव्यमे कोनो अर्थ नहि

(C) मैथिली महाकाव्य अपन भाषा, लोक-संस्कार आ मिथिला-दृष्टिसँ विशिष्ट बनैत अछि

(D) भाषा आ भूगोल सदैव अलग-अलग अछि

६३. नीचाँमे “मिथिला-परिवेश”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) परिवेश केवल छपाइ-दोष अछि

(B) मिथिला-परिवेशक काव्यमे कोनो अर्थ नहि

(C) भाषा आ भूगोल सदैव अलग-अलग अछि

(D) मैथिली महाकाव्य अपन भाषा, लोक-संस्कार आ मिथिला-दृष्टिसँ विशिष्ट बनैत अछि

६४. परीक्षा-दृष्टिसँ “मिथिला-परिवेश” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) परिवेश केवल छपाइ-दोष अछि

(B) भाषा आ भूगोल सदैव अलग-अलग अछि

(C) मैथिली महाकाव्य अपन भाषा, लोक-संस्कार आ मिथिला-दृष्टिसँ विशिष्ट बनैत अछि

(D) मिथिला-परिवेशक काव्यमे कोनो अर्थ नहि

६५. “मिथिला-परिवेश”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) मिथिला-परिवेशक काव्यमे कोनो अर्थ नहि

(B) परिवेश केवल छपाइ-दोष अछि

(C) मैथिली महाकाव्य अपन भाषा, लोक-संस्कार आ मिथिला-दृष्टिसँ विशिष्ट बनैत अछि

(D) भाषा आ भूगोल सदैव अलग-अलग अछि

६६. महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्परामे “भाषा-गौरव” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) महाकाव्य-रचना मैथिली भाषाक कथात्मक क्षमता आ साहित्यिक गरिमाक प्रमाण अछि

(B) मैथिलीमे दीर्घ काव्य असम्भव अछि

(C) भाषा-गौरव साहित्य-विरोधी अछि

(D) केवल परभाषा साहित्य बनबैत अछि

६७. “भाषा-गौरव” कैं महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्पराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) भाषा-गौरव साहित्य-विरोधी अछि

(B) केवल परभाषा साहित्य बनबैत अछि

(C) मैथिलीमे दीर्घ काव्य असम्भव अछि

(D) महाकाव्य-रचना मैथिली भाषाक कथात्मक क्षमता आ साहित्यिक गरिमाक प्रमाण अछि

६८. नीचाँमे “भाषा-गौरव”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) महाकाव्य-रचना मैथिली भाषाक कथात्मक क्षमता आ साहित्यिक गरिमाक प्रमाण अछि

(B) केवल परभाषा साहित्य बनबैत अछि

(C) मैथिलीमे दीर्घ काव्य असम्भव अछि

(D) भाषा-गौरव साहित्य-विरोधी अछि

६९. परीक्षा-दृष्टिसँ “भाषा-गौरव” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) मैथिलीमे दीर्घ काव्य असम्भव अछि

(B) केवल परभाषा साहित्य बनबैत अछि

(C) भाषा-गौरव साहित्य-विरोधी अछि

(D) महाकाव्य-रचना मैथिली भाषाक कथात्मक क्षमता आ साहित्यिक गरिमाक प्रमाण अछि

७०. “भाषा-गौरव”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) भाषा-गौरव साहित्य-विरोधी अछि

(B) मैथिलीमे दीर्घ काव्य असम्भव अछि

(C) केवल परभाषा साहित्य बनबैत अछि

(D) महाकाव्य-रचना मैथिली भाषाक कथात्मक क्षमता आ साहित्यिक गरिमाक प्रमाण अछि

७१. महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्परामे “छन्द-विधान” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) महाकाव्य आ खण्डकाव्यमे छन्द, लय आ पद-संरचना अर्थ-प्रभाव बढ़बैत अछि

(B) छन्द केवल वाणिज्यक नियम अछि

(C) लय काव्यसँ असम्बद्ध अछि

(D) छन्दक प्रयोग सदैव वर्जित अछि

७२. “छन्द-विधान” कैं महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्पराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) लय काव्यसँ असम्बद्ध अछि

(B) छन्दक प्रयोग सदैव वर्जित अछि

(C) छन्द केवल वाणिज्यक नियम अछि

(D) महाकाव्य आ खण्डकाव्यमे छन्द, लय आ पद-संरचना अर्थ-प्रभाव बढ़बैत अछि

७३. नीचाँमे “छन्द-विधान”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) महाकाव्य आ खण्डकाव्यमे छन्द, लय आ पद-संरचना अर्थ-प्रभाव बढ़बैत अछि

(B) छन्दक प्रयोग सदैव वर्जित अछि

(C) छन्द केवल वाणिज्यक नियम अछि

(D) लय काव्यसँ असम्बद्ध अछि

७४. परीक्षा-दृष्टिसँ “छन्द-विधान” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) छन्द केवल वाणिज्यक नियम अछि

(B) छन्दक प्रयोग सदैव वर्जित अछि

(C) लय काव्यसँ असम्बद्ध अछि

(D) महाकाव्य आ खण्डकाव्यमे छन्द, लय आ पद-संरचना अर्थ-प्रभाव बढ़बैत अछि

७५. “छन्द-विधान”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) लय काव्यसँ असम्बद्ध अछि

(B) छन्द केवल वाणिज्यक नियम अछि

(C) छन्दक प्रयोग सदैव वर्जित अछि

(D) महाकाव्य आ खण्डकाव्यमे छन्द, लय आ पद-संरचना अर्थ-प्रभाव बढ़बैत अछि

७६. महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्परामे “संवाद आ प्रसंग” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) संवाद केवल पृष्ठ-संख्या अछि

(B) दीर्घ काव्यमे संवाद, वर्णन आ प्रसंग-विन्यास कथा आगाँ बढ़बैत अछि

(C) संवादक कथासँ कोनो सम्बन्ध नहि

(D) प्रसंग-विन्यास दोष अछि

७७. “संवाद आ प्रसंग” कैँ महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्पराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) दीर्घ काव्यमे संवाद, वर्णन आ प्रसंग-विन्यास कथा आगाँ बढ़बैत अछि

(B) प्रसंग-विन्यास दोष अछि

(C) संवाद केवल पृष्ठ-संख्या अछि

(D) संवादक कथासँ कोनो सम्बन्ध नहि

७८. नीचाँमे “संवाद आ प्रसंग”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) प्रसंग-विन्यास दोष अछि

(B) दीर्घ काव्यमे संवाद, वर्णन आ प्रसंग-विन्यास कथा आगाँ बढ़बैत अछि

(C) संवाद केवल पृष्ठ-संख्या अछि

(D) संवादक कथासँ कोनो सम्बन्ध नहि

७९. परीक्षा-दृष्टिसँ “संवाद आ प्रसंग” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) दीर्घ काव्यमे संवाद, वर्णन आ प्रसंग-विन्यास कथा आगाँ बढ़बैत अछि

(B) संवादक कथासँ कोनो सम्बन्ध नहि

(C) संवाद केवल पृष्ठ-संख्या अछि

(D) प्रसंग-विन्यास दोष अछि

८०. “संवाद आ प्रसंग”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) दीर्घ काव्यमे संवाद, वर्णन आ प्रसंग-विन्यास कथा आगाँ बढ़बैत अछि

(B) प्रसंग-विन्यास दोष अछि

(C) संवादक कथासँ कोनो सम्बन्ध नहि

(D) संवाद केवल पृष्ठ-संख्या अछि

८१. महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्परामे "देव-मानव सम्बन्ध" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) राम, कृष्ण, अम्बा, शकुन्तला आदि प्रसंगमे दिव्य, मानवीय आ सांस्कृतिक अर्थ जुड़ैत अछि

(B) देव-मानव सम्बन्ध काव्य-विरोधी अछि

(C) काव्यमे प्रतीक नहि होइत

(D) ई केवल नकल-पुस्तिका अछि

८२. "देव-मानव सम्बन्ध" कैँ महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्पराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) काव्यमे प्रतीक नहि होइत

(B) ई केवल नकल-पुस्तिका अछि

(C) देव-मानव सम्बन्ध काव्य-विरोधी अछि

(D) राम, कृष्ण, अम्बा, शकुन्तला आदि प्रसंगमे दिव्य, मानवीय आ सांस्कृतिक अर्थ जुड़ैत अछि

८३. नीचाँमे "देव-मानव सम्बन्ध"क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) राम, कृष्ण, अम्बा, शकुन्तला आदि प्रसंगमे दिव्य, मानवीय आ सांस्कृतिक अर्थ जुड़ैत अछि

(B) ई केवल नकल-पुस्तिका अछि

(C) देव-मानव सम्बन्ध काव्य-विरोधी अछि

(D) काव्यमे प्रतीक नहि होइत

८४. परीक्षा-दृष्टिसँ "देव-मानव सम्बन्ध" पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) देव-मानव सम्बन्ध काव्य-विरोधी अछि

(B) ई केवल नकल-पुस्तिका अछि

(C) काव्यमे प्रतीक नहि होइत

(D) राम, कृष्ण, अम्बा, शकुन्तला आदि प्रसंगमे दिव्य, मानवीय आ सांस्कृतिक अर्थ जुड़ैत अछि

८५. "देव-मानव सम्बन्ध"क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) काव्यमे प्रतीक नहि होइत

(B) देव-मानव सम्बन्ध काव्य-विरोधी अछि

(C) ई केवल नकल-पुस्तिका अछि

(D) राम, कृष्ण, अम्बा, शकुन्तला आदि प्रसंगमे दिव्य, मानवीय आ सांस्कृतिक अर्थ जुड़ैत अछि

८६. महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्परामे "परीक्षा-उत्तर संरचना" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) कविता पढ़बासँ उत्तर खराब होइत अछि

(B) परिभाषा, कृति-नाम, कथ्य, शैली आ महत्त्व जोड़ि उत्तर लिखब उपयुक्त अछि

(C) केवल एक शब्द लिखब पर्याप्त अछि

(D) उदाहरण नहि देबाक चाही

८७. "परीक्षा-उत्तर संरचना" कैँ महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्पराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) परिभाषा, कृति-नाम, कथ्य, शैली आ महत्त्व जोड़ि उत्तर लिखब उपयुक्त अछि

(B) उदाहरण नहि देबाक चाही

(C) कविता पढ़बासँ उत्तर खराब होइत अछि

(D) केवल एक शब्द लिखब पर्याप्त अछि

८८. नीचाँमे "परीक्षा-उत्तर संरचना"क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) उदाहरण नहि देबाक चाही

(B) परिभाषा, कृति-नाम, कथ्य, शैली आ महत्त्व जोड़ि उत्तर लिखब उपयुक्त अछि

(C) कविता पढ़बासँ उत्तर खराब होइत अछि

(D) केवल एक शब्द लिखब पर्याप्त अछि

८९. परीक्षा-दृष्टिसँ "परीक्षा-उत्तर संरचना" पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) परिभाषा, कृति-नाम, कथ्य, शैली आ महत्त्व जोड़ि उत्तर लिखब उपयुक्त अछि

(B) केवल एक शब्द लिखब पर्याप्त अछि

(C) कविता पढ़बासँ उत्तर खराब होइत अछि

(D) उदाहरण नहि देबाक चाही

९०. "परीक्षा-उत्तर संरचना"क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) परिभाषा, कृति-नाम, कथ्य, शैली आ महत्त्व जोड़ि उत्तर लिखब उपयुक्त अछि

(B) उदाहरण नहि देबाक चाही

(C) केवल एक शब्द लिखब पर्याप्त अछि

(D) कविता पढ़बासँ उत्तर खराब होइत अछि

९१. महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्परामे "विधा-पहिचान" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) विधा-पहिचान केवल रंगसँ होइत अछि

(B) कथा-विस्तारक अर्थ नहि

(C) विधा सदैव संयोग मात्र अछि

(D) कृति महाकाव्य अछि कि खण्डकाव्य, ई ओकर विस्तार, कथ्य आ संरचनासँ चिन्हल जाएत अछि

९२. "विधा-पहिचान" केँ महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्पराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) विधा सदैव संयोग मात्र अछि

(B) विधा-पहिचान केवल रंगसँ होइत अछि

(C) कृति महाकाव्य अछि कि खण्डकाव्य, ई ओकर विस्तार, कथ्य आ संरचनासँ चिन्हल जाएत अछि

(D) कथा-विस्तारक अर्थ नहि

९३. नीचाँमे "विधा-पहिचान"क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) विधा सदैव संयोग मात्र अछि

(B) विधा-पहिचान केवल रंगसँ होइत अछि

(C) कथा-विस्तारक अर्थ नहि

(D) कृति महाकाव्य अछि कि खण्डकाव्य, ई ओकर विस्तार, कथ्य आ संरचनासँ चिन्हल जाएत अछि

९४. परीक्षा-दृष्टिसँ "विधा-पहिचान" पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) विधा सदैव संयोग मात्र अछि

(B) कथा-विस्तारक अर्थ नहि

(C) कृति महाकाव्य अछि कि खण्डकाव्य, ई ओकर विस्तार, कथ्य आ संरचनासँ चिन्हल जाएत अछि

(D) विधा-पहिचान केवल रंगसँ होइत अछि

९५. "विधा-पहिचान"क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) विधा-पहिचान केवल रंगसँ होइत अछि

(B) विधा सदैव संयोग मात्र अछि

(C) कृति महाकाव्य अछि कि खण्डकाव्य, ई ओकर विस्तार, कथ्य आ संरचनासँ चिन्हल जाएत अछि

(D) कथा-विस्तारक अर्थ नहि

९६. महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्परामे "तुलनात्मक दृष्टि" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) तुलना कखनहुँ नहि करबाक चाही

(B) सभ कृति एकहि रूपक अछि

(C) भेद-बोध साहित्य-विरोधी अछि

(D) महाकाव्य आ खण्डकाव्यक भेद बुझि कृतिसभक स्थान तय करब साहित्येतिहासक आवश्यक अभ्यास अछि

९७. “तुलनात्मक दृष्टि” कैँ महाकाव्यक स्वरूप आ मैथिली परम्पराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) भेद-बोध साहित्य-विरोधी अछि

(B) तुलना कखनहुँ नहि करबाक चाही

(C) महाकाव्य आ खण्डकाव्यक भेद बुझि कृतिसभक स्थान तय करब साहित्येतिहासक आवश्यक अभ्यास अछि

(D) सभ कृति एकहि रूपक अछि

९८. नीचाँमे “तुलनात्मक दृष्टि”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) भेद-बोध साहित्य-विरोधी अछि

(B) तुलना कखनहुँ नहि करबाक चाही

(C) सभ कृति एकहि रूपक अछि

(D) महाकाव्य आ खण्डकाव्यक भेद बुझि कृतिसभक स्थान तय करब साहित्येतिहासक आवश्यक अभ्यास अछि

९९. परीक्षा-दृष्टिसँ “तुलनात्मक दृष्टि” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) भेद-बोध साहित्य-विरोधी अछि

(B) सभ कृति एकहि रूपक अछि

(C) महाकाव्य आ खण्डकाव्यक भेद बुझि कृतिसभक स्थान तय करब साहित्येतिहासक आवश्यक अभ्यास अछि

(D) तुलना कखनहुँ नहि करबाक चाही

१००. “तुलनात्मक दृष्टि”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) तुलना कखनहुँ नहि करबाक चाही

(B) भेद-बोध साहित्य-विरोधी अछि

(C) महाकाव्य आ खण्डकाव्यक भेद बुझि कृतिसभक स्थान तय करब साहित्येतिहासक आवश्यक अभ्यास अछि

(D) सभ कृति एकहि रूपक अछि

sec1

१०१. मिथिलाभाषा रामायणमे “मिथिलाभाषा रामायण” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल लघु चुटकुला-संग्रह

(B) केवल राजपत्र

(C) केवल शब्दकोश

(D) रामकथा कैँ मैथिली भाषामे महाकाव्यात्मक रूप देनिहार प्रमुख कृति रूपमे पढ़ल जाइत अछि

१०२. “मिथिलाभाषा रामायण” कैँ मिथिलाभाषा रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) केवल शब्दकोश

(B) केवल लघु चुटकुला-संग्रह

(C) रामकथा कैँ मैथिली भाषामे महाकाव्यात्मक रूप देनिहार प्रमुख कृति रूपमे पढ़ल जाइत अछि

(D) केवल राजपत्र

१०३. नीचाँमे “मिथिलाभाषा रामायण”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल शब्दकोश

(B) केवल लघु चुटकुला-संग्रह

(C) केवल राजपत्र

(D) रामकथा कैँ मैथिली भाषामे महाकाव्यात्मक रूप देनिहार प्रमुख कृति रूपमे पढ़ल जाइत अछि

१०४. परीक्षा-दृष्टिसँ “मिथिलाभाषा रामायण” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल शब्दकोश

(B) केवल राजपत्र

(C) रामकथा कैँ मैथिली भाषामे महाकाव्यात्मक रूप देनिहार प्रमुख कृति रूपमे पढ़ल जाइत अछि

(D) केवल लघु चुटकुला-संग्रह

१०५. “मिथिलाभाषा रामायण”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल लघु चुटकुला-संग्रह

(B) केवल शब्दकोश

(C) रामकथा कैँ मैथिली भाषामे महाकाव्यात्मक रूप देनिहार प्रमुख कृति रूपमे पढ़ल जाइत अछि

(D) केवल राजपत्र

१०६. मिथिलाभाषा रामायणमे “रामकथा” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) ई केवल कृषि-विवरण अछि

(B) रामकथा काव्य-विषय नहि

(C) कथावस्तु अनुपस्थित अछि

(D) कृति रामक जीवन, आदर्श, वनगमन, संघर्ष आ धर्म-दृष्टिक कथात्मक आधार लैत अछि

१०७. “रामकथा” कैँ मिथिलाभाषा रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) कथावस्तु अनुपस्थित अछि

(B) ई केवल कृषि-विवरण अछि

(C) कृति रामक जीवन, आदर्श, वनगमन, संघर्ष आ धर्म-दृष्टिक कथात्मक आधार लैत अछि

(D) रामकथा काव्य-विषय नहि

१०८. नीचाँमे “रामकथा”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) कथावस्तु अनुपस्थित अछि

(B) ई केवल कृषि-विवरण अछि

(C) रामकथा काव्य-विषय नहि

(D) कृति रामक जीवन, आदर्श, वनगमन, संघर्ष आ धर्म-दृष्टिक कथात्मक आधार लैत अछि

१०९. परीक्षा-दृष्टिसँ “रामकथा” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) कथावस्तु अनुपस्थित अछि

(B) रामकथा काव्य-विषय नहि

(C) कृति रामक जीवन, आदर्श, वनगमन, संघर्ष आ धर्म-दृष्टिक कथात्मक आधार लैत अछि

(D) ई केवल कृषि-विवरण अछि

११०. “रामकथा”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई केवल कृषि-विवरण अछि

(B) कथावस्तु अनुपस्थित अछि

(C) कृति रामक जीवन, आदर्श, वनगमन, संघर्ष आ धर्म-दृष्टिक कथात्मक आधार लैत अछि

(D) रामकथा काव्य-विषय नहि

१११. मिथिलाभाषा रामायणमे “अयोध्या प्रसंग” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) रामक जन्म, परिवार, राजधर्म आ राज्य-संस्कृतिक आरम्भिक आधार बनैत अछि

(B) अयोध्या प्रसंग केवल बाजार-सूची अछि

(C) काव्यमे परिवारक अर्थ नहि

(D) राजधर्म असम्बद्ध अछि

११२. “अयोध्या प्रसंग” कैँ मिथिलाभाषा रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) काव्यमे परिवारक अर्थ नहि

(B) राजधर्म असम्बद्ध अछि

(C) अयोध्या प्रसंग केवल बाजार-सूची अछि

(D) रामक जन्म, परिवार, राजधर्म आ राज्य-संस्कृतिक आरम्भिक आधार बनैत अछि

११३. नीचाँमे “अयोध्या प्रसंग”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) रामक जन्म, परिवार, राजधर्म आ राज्य-संस्कृतिक आरम्भिक आधार बनैत अछि

(B) राजधर्म असम्बद्ध अछि

(C) अयोध्या प्रसंग केवल बाजार-सूची अछि

(D) काव्यमे परिवारक अर्थ नहि

११४. परीक्षा-दृष्टिसँ “अयोध्या प्रसंग” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) अयोध्या प्रसंग केवल बाजार-सूची अछि

(B) राजधर्म असम्बद्ध अछि

(C) काव्यमे परिवारक अर्थ नहि

(D) रामक जन्म, परिवार, राजधर्म आ राज्य-संस्कृतिक आरम्भिक आधार बनैत अछि

११५. “अयोध्या प्रसंग”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) काव्यमे परिवारक अर्थ नहि

(B) अयोध्या प्रसंग केवल बाजार-सूची अछि

(C) राजधर्म असम्बद्ध अछि

(D) रामक जन्म, परिवार, राजधर्म आ राज्य-संस्कृतिक आरम्भिक आधार बनैत अछि

११६. मिथिलाभाषा रामायणमे “वनगमन” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) वन प्रसंग अर्थहीन अछि

(B) कर्तव्यक चर्चा नहि होइत

(C) वनगमन त्याग, धर्मपालन, कर्तव्य आ मानवीय परीक्षा केँ उभारैत अछि

(D) वनगमन खेलक नियम मात्र अछि

११७. “वनगमन” केँ मिथिलाभाषा रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) वनगमन खेलक नियम मात्र अछि

(B) वनगमन त्याग, धर्मपालन, कर्तव्य आ मानवीय परीक्षा केँ उभारैत अछि

(C) वन प्रसंग अर्थहीन अछि

(D) कर्तव्यक चर्चा नहि होइत

११८. नीचाँमे “वनगमन”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) वनगमन खेलक नियम मात्र अछि

(B) वन प्रसंग अर्थहीन अछि

(C) वनगमन त्याग, धर्मपालन, कर्तव्य आ मानवीय परीक्षा केँ उभारैत अछि

(D) कर्तव्यक चर्चा नहि होइत

११९. परीक्षा-दृष्टिसँ “वनगमन” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) वन प्रसंग अर्थहीन अछि

(B) वनगमन त्याग, धर्मपालन, कर्तव्य आ मानवीय परीक्षा केँ उभारैत अछि

(C) वनगमन खेलक नियम मात्र अछि

(D) कर्तव्यक चर्चा नहि होइत

१२०. “वनगमन”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) कर्तव्यक चर्चा नहि होइत

(B) वनगमन त्याग, धर्मपालन, कर्तव्य आ मानवीय परीक्षा केँ उभारैत अछि

(C) वन प्रसंग अर्थहीन अछि

(D) वनगमन खेलक नियम मात्र अछि

१२१. मिथिलाभाषा रामायणमे “सीता-चरित्र” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) स्त्री-पात्रक भूमिका शून्य अछि

(B) सीता धैर्य, पवित्रता, साहस, करुणा आ मर्यादाक केन्द्रीय प्रतीक छथि

(C) सीता काव्यसँ बाहरक पात्र छथि

(D) सीता प्रसंग केवल गणना अछि

१२२. “सीता-चरित्र” कैं मिथिलाभाषा रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) सीता धैर्य, पवित्रता, साहस, करुणा आ मर्यादाक केन्द्रीय प्रतीक छथि

(B) सीता प्रसंग केवल गणना अछि

(C) स्त्री-पात्रक भूमिका शून्य अछि

(D) सीता काव्यसँ बाहरक पात्र छथि

१२३. नीचाँमे “सीता-चरित्र”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) सीता प्रसंग केवल गणना अछि

(B) सीता धैर्य, पवित्रता, साहस, करुणा आ मर्यादाक केन्द्रीय प्रतीक छथि

(C) स्त्री-पात्रक भूमिका शून्य अछि

(D) सीता काव्यसँ बाहरक पात्र छथि

१२४. परीक्षा-दृष्टिसँ “सीता-चरित्र” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) सीता धैर्य, पवित्रता, साहस, करुणा आ मर्यादाक केन्द्रीय प्रतीक छथि

(B) सीता काव्यसँ बाहरक पात्र छथि

(C) स्त्री-पात्रक भूमिका शून्य अछि

(D) सीता प्रसंग केवल गणना अछि

१२५. “सीता-चरित्र”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) सीता धैर्य, पवित्रता, साहस, करुणा आ मर्यादाक केन्द्रीय प्रतीक छथि

(B) सीता प्रसंग केवल गणना अछि

(C) सीता काव्यसँ बाहरक पात्र छथि

(D) स्त्री-पात्रक भूमिका शून्य अछि

१२६. मिथिलाभाषा रामायणमे “हनुमान प्रसंग” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) भक्ति, सेवा, साहस आ संदेश-वाहनक आदर्श रूपमे हनुमानक महत्त्व अछि

(B) हनुमान केवल अलंकारक नाम अछि

(C) सेवा-भाव नहि भेटैत

(D) संदेश-प्रसंग नहि

१२७. “हनुमान प्रसंग” कैं मिथिलाभाषा रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) सेवा-भाव नहि भेटैत

(B) संदेश-प्रसंग नहि

(C) हनुमान केवल अलंकारक नाम अछि

(D) भक्ति, सेवा, साहस आ संदेश-वाहनक आदर्श रूपमे हनुमानक महत्त्व अछि

१२८. नीचाँमे “हनुमान प्रसंग”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) भक्ति, सेवा, साहस आ संदेश-वाहनक आदर्श रूपमे हनुमानक महत्त्व अछि

(B) संदेश-प्रसंग नहि

(C) हनुमान केवल अलंकारक नाम अछि

(D) सेवा-भाव नहि भेटैत

१२९. परीक्षा-दृष्टिसँ “हनुमान प्रसंग” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) हनुमान केवल अलंकारक नाम अछि

(B) संदेश-प्रसंग नहि

(C) सेवा-भाव नहि भेटैत

(D) भक्ति, सेवा, साहस आ संदेश-वाहनक आदर्श रूपमे हनुमानक महत्त्व अछि

१३०. “हनुमान प्रसंग”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) सेवा-भाव नहि भेटैत

(B) हनुमान केवल अलंकारक नाम अछि

(C) संदेश-प्रसंग नहि

(D) भक्ति, सेवा, साहस आ संदेश-वाहनक आदर्श रूपमे हनुमानक महत्त्व अछि

१३१. मिथिलाभाषा रामायणमे “लंकाकाण्ड” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) संघर्ष अनुपस्थित अछि

(B) धर्म-अधर्म संघर्ष, युद्ध, नीति आ विजयक कथात्मक शिखर रूपमे देखल जा सकैत अछि

(C) लंकाकाण्ड केवल भोजन-सूची अछि

(D) युद्धक कोनो अर्थ नहि

१३२. “लंकाकाण्ड” कैँ मिथिलाभाषा रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) धर्म-अधर्म संघर्ष, युद्ध, नीति आ विजयक कथात्मक शिखर रूपमे देखल जा सकैत अछि

(B) युद्धक कोनो अर्थ नहि

(C) संघर्ष अनुपस्थित अछि

(D) लंकाकाण्ड केवल भोजन-सूची अछि

१३३. नीचाँमे “लंकाकाण्ड”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) युद्धक कोनो अर्थ नहि

(B) धर्म-अधर्म संघर्ष, युद्ध, नीति आ विजयक कथात्मक शिखर रूपमे देखल जा सकैत अछि

(C) संघर्ष अनुपस्थित अछि

(D) लंकाकाण्ड केवल भोजन-सूची अछि

१३४. परीक्षा-दृष्टिसँ “लंकाकाण्ड” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) धर्म-अधर्म संघर्ष, युद्ध, नीति आ विजयक कथात्मक शिखर रूपमे देखल जा सकैत अछि

(B) लंकाकाण्ड केवल भोजन-सूची अछि

(C) संघर्ष अनुपस्थित अछि

(D) युद्धक कोनो अर्थ नहि

१३५. “लंकाकाण्ड”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) धर्म-अधर्म संघर्ष, युद्ध, नीति आ विजयक कथात्मक शिखर रूपमे देखल जा सकैत अछि

(B) युद्धक कोनो अर्थ नहि

(C) लंकाकाण्ड केवल भोजन-सूची अछि

(D) संघर्ष अनुपस्थित अछि

१३६. मिथिलाभाषा रामायणमे “मिथिला-दृष्टि” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) कृति मिथिलासँ दूर रहैत अछि

(B) कथा केवल परभाषाक अछि

(C) मैथिलीमे रामकथा आनलासँ मिथिला-भाषिक पाठकक सांस्कृतिक अपनत्व बनैत अछि

(D) भाषिक अपनत्व निरर्थक अछि

१३७. “मिथिला-दृष्टि” कैं मिथिलाभाषा रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) भाषिक अपनत्व निरर्थक अछि

(B) मैथिलीमे रामकथा आनलासँ मिथिला-भाषिक पाठकक सांस्कृतिक अपनत्व बनैत अछि

(C) कृति मिथिलासँ दूर रहैत अछि

(D) कथा केवल परभाषाक अछि

१३८. नीचाँमे “मिथिला-दृष्टि”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) भाषिक अपनत्व निरर्थक अछि

(B) कृति मिथिलासँ दूर रहैत अछि

(C) मैथिलीमे रामकथा आनलासँ मिथिला-भाषिक पाठकक सांस्कृतिक अपनत्व बनैत अछि

(D) कथा केवल परभाषाक अछि

१३९. परीक्षा-दृष्टिसँ “मिथिला-दृष्टि” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) कृति मिथिलासँ दूर रहैत अछि

(B) मैथिलीमे रामकथा आनलासँ मिथिला-भाषिक पाठकक सांस्कृतिक अपनत्व बनैत अछि

(C) भाषिक अपनत्व निरर्थक अछि

(D) कथा केवल परभाषाक अछि

१४०. “मिथिला-दृष्टि”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) कथा केवल परभाषाक अछि

(B) मैथिलीमे रामकथा आनलासँ मिथिला-भाषिक पाठकक सांस्कृतिक अपनत्व बनैत अछि

(C) कृति मिथिलासँ दूर रहैत अछि

(D) भाषिक अपनत्व निरर्थक अछि

१४१. मिथिलाभाषा रामायणमे “लोकभाषिकता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) जनभाषा केवल गलती अछि

(B) श्रव्यता असम्भव अछि

(C) कृति रामकथाकेँ जनभाषामे पठनीय आ श्रव्य बनबैत अछि

(D) लोकभाषा साहित्यक शत्रु अछि

१४२. “लोकभाषिकता” कैं मिथिलाभाषा रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) लोकभाषा साहित्यक शत्रु अछि

(B) कृति रामकथाकेँ जनभाषामे पठनीय आ श्रव्य बनबैत अछि

(C) जनभाषा केवल गलती अछि

(D) श्रव्यता असम्भव अछि

१४३. नीचाँमे “लोकभाषिकता”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) लोकभाषा साहित्यक शत्रु अछि

(B) जनभाषा केवल गलती अछि

(C) कृति रामकथाकेँ जनभाषामे पठनीय आ श्रव्य बनबैत अछि

(D) श्रव्यता असम्भव अछि

१४४. परीक्षा-दृष्टिसँ “लोकभाषिकता” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) जनभाषा केवल गलती अछि

(B) कृति रामकथाकेँ जनभाषामे पठनीय आ श्रव्य बनबैत अछि

(C) लोकभाषा साहित्यक शत्रु अछि

(D) श्रव्यता असम्भव अछि

१४५. “लोकभाषिकता”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) श्रव्यता असम्भव अछि

(B) कृति रामकथाकेँ जनभाषामे पठनीय आ श्रव्य बनबैत अछि

(C) जनभाषा केवल गलती अछि

(D) लोकभाषा साहित्यक शत्रु अछि

१४६. मिथिलाभाषा रामायणमे “भक्ति-भाव” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) रामक प्रति श्रद्धा, धर्म आ समर्पण काव्यक भाव-भूमि बनैत अछि

(B) भक्ति काव्यमे निषिद्ध अछि

(C) कृति पूर्णतः भावहीन अछि

(D) श्रद्धा केवल नाटकक वस्त्र अछि

१४७. “भक्ति-भाव” केँ मिथिलाभाषा रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) कृति पूर्णतः भावहीन अछि

(B) श्रद्धा केवल नाटकक वस्त्र अछि

(C) भक्ति काव्यमे निषिद्ध अछि

(D) रामक प्रति श्रद्धा, धर्म आ समर्पण काव्यक भाव-भूमि बनैत अछि

१४८. नीचाँमे “भक्ति-भाव”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) रामक प्रति श्रद्धा, धर्म आ समर्पण काव्यक भाव-भूमि बनैत अछि

(B) श्रद्धा केवल नाटकक वस्त्र अछि

(C) भक्ति काव्यमे निषिद्ध अछि

(D) कृति पूर्णतः भावहीन अछि

१४९. परीक्षा-दृष्टिसँ “भक्ति-भाव” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) भक्ति काव्यमे निषिद्ध अछि

(B) श्रद्धा केवल नाटकक वस्त्र अछि

(C) कृति पूर्णतः भावहीन अछि

(D) रामक प्रति श्रद्धा, धर्म आ समर्पण काव्यक भाव-भूमि बनैत अछि

१५०. “भक्ति-भाव”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) कृति पूर्णतः भावहीन अछि

(B) भक्ति काव्यमे निषिद्ध अछि

(C) श्रद्धा केवल नाटकक वस्त्र अछि

(D) रामक प्रति श्रद्धा, धर्म आ समर्पण काव्यक भाव-भूमि बनैत अछि

१५१. मिथिलाभाषा रामायणमे “मर्यादा” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) मर्यादा केवल व्याकरणिक कारक अछि

(B) रामचरित्र अनैतिकता सिखबैत अछि

(C) वचनपालन असम्बद्ध अछि

(D) रामक चरित्र मर्यादा, सत्य, वचनपालन आ धर्मनिष्ठाक प्रतीक बनैत अछि

१५२. “मर्यादा” केँ मिथिलाभाषा रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) वचनपालन असम्बद्ध अछि

(B) मर्यादा केवल व्याकरणिक कारक अछि

(C) रामक चरित्र मर्यादा, सत्य, वचनपालन आ धर्मनिष्ठाक प्रतीक बनैत अछि

(D) रामचरित्र अनैतिकता सिखबैत अछि

१५३. नीचाँमे “मर्यादा”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) वचनपालन असम्बद्ध अछि

(B) मर्यादा केवल व्याकरणिक कारक अछि

(C) रामचरित्र अनैतिकता सिखबैत अछि

(D) रामक चरित्र मर्यादा, सत्य, वचनपालन आ धर्मनिष्ठाक प्रतीक बनैत अछि

१५४. परीक्षा-दृष्टिसँ “मर्यादा” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) वचनपालन असम्बद्ध अछि

(B) रामचरित्र अनैतिकता सिखबैत अछि

(C) रामक चरित्र मर्यादा, सत्य, वचनपालन आ धर्मनिष्ठाक प्रतीक बनैत अछि

(D) मर्यादा केवल व्याकरणिक कारक अछि

१५५. “मर्यादा”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) मर्यादा केवल व्याकरणिक कारक अछि

(B) वचनपालन असम्बद्ध अछि

(C) रामक चरित्र मर्यादा, सत्य, वचनपालन आ धर्मनिष्ठाक प्रतीक बनैत अछि

(D) रामचरित्र अनैतिकता सिखबैत अछि

१५६. मिथिलाभाषा रामायणमे “कथात्मक प्रवाह” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) दीर्घता सदैव दोष अछि

(B) दीर्घ कथा क्रमबद्ध प्रसंग, पात्र आ संघर्षसँ आगाँ बढ़ैत अछि

(C) प्रवाहक अर्थ केवल नदी अछि

(D) कथाक क्रम नहि रहैत

१५७. “कथात्मक प्रवाह” कैँ मिथिलाभाषा रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) दीर्घ कथा क्रमबद्ध प्रसंग, पात्र आ संघर्षसँ आगाँ बढ़ैत अछि

(B) कथाक क्रम नहि रहैत

(C) दीर्घता सदैव दोष अछि

(D) प्रवाहक अर्थ केवल नदी अछि

१५८. नीचाँमे “कथात्मक प्रवाह”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) कथाक क्रम नहि रहैत

(B) दीर्घ कथा क्रमबद्ध प्रसंग, पात्र आ संघर्षसँ आगाँ बढ़ैत अछि

(C) दीर्घता सदैव दोष अछि

(D) प्रवाहक अर्थ केवल नदी अछि

१५९. परीक्षा-दृष्टिसँ “कथात्मक प्रवाह” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) दीर्घ कथा क्रमबद्ध प्रसंग, पात्र आ संघर्षसँ आगाँ बढ़ैत अछि

(B) प्रवाहक अर्थ केवल नदी अछि

(C) दीर्घता सदैव दोष अछि

(D) कथाक क्रम नहि रहैत

१६०. “कथात्मक प्रवाह”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) दीर्घ कथा क्रमबद्ध प्रसंग, पात्र आ संघर्षसँ आगाँ बढ़ैत अछि

(B) कथाक क्रम नहि रहैत

(C) प्रवाहक अर्थ केवल नदी अछि

(D) दीर्घता सदैव दोष अछि

१६१. मिथिलाभाषा रामायणमे “स्त्री-दृष्टि” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) स्त्री-पात्र नहि रहैत

(B) परिवारक भाव नहि

(C) काव्यमे संवाद नहि

(D) सीता, कौशल्या, कैकेयी आदि पात्रक माध्यमे परिवार, नीति आ भावनात्मक संघर्ष उभरैत अछि

१६२. “स्त्री-दृष्टि” कैँ मिथिलाभाषा रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) काव्यमे संवाद नहि

(B) स्त्री-पात्र नहि रहैत

(C) सीता, कौशल्या, कैकेयी आदि पात्रक माध्यमे परिवार, नीति आ भावनात्मक संघर्ष उभरैत अछि

(D) परिवारक भाव नहि

१६३. नीचाँमे “स्त्री-दृष्टि”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) काव्यमे संवाद नहि

(B) स्त्री-पात्र नहि रहैत

(C) परिवारक भाव नहि

(D) सीता, कौशल्या, कैकेयी आदि पात्रक माध्यमे परिवार, नीति आ भावनात्मक संघर्ष उभरैत अछि

१६४. परीक्षा-दृष्टिसँ “स्त्री-दृष्टि” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) काव्यमे संवाद नहि

(B) परिवारक भाव नहि

(C) सीता, कौशल्या, कैकेयी आदि पात्रक माध्यमे परिवार, नीति आ भावनात्मक संघर्ष उभरैत अछि

(D) स्त्री-पात्र नहि रहैत

१६५. “स्त्री-दृष्टि”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) स्त्री-पात्र नहि रहैत

(B) काव्यमे संवाद नहि

(C) सीता, कौशल्या, कैकेयी आदि पात्रक माध्यमे परिवार, नीति आ भावनात्मक संघर्ष उभरैत अछि

(D) परिवारक भाव नहि

१६६. मिथिलाभाषा रामायणमे “नीति-दृष्टि” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) धर्मक अर्थ नहि

(B) राज्यक प्रश्न नहि

(C) रामायणक प्रसंग राज्य, परिवार, मित्रता, शत्रुता आ धर्मक नीति-शिक्षा दैत अछि

(D) नीति केवल हिसाब-किताब अछि

१६७. “नीति-दृष्टि” कैँ मिथिलाभाषा रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) नीति केवल हिसाब-किताब अछि

(B) रामायणक प्रसंग राज्य, परिवार, मित्रता, शत्रुता आ धर्मक नीति-शिक्षा दैत अछि

(C) धर्मक अर्थ नहि

(D) राज्यक प्रश्न नहि

१६८. नीचाँमे “नीति-दृष्टि”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) नीति केवल हिसाब-किताब अछि

(B) धर्मक अर्थ नहि

(C) रामायणक प्रसंग राज्य, परिवार, मित्रता, शत्रुता आ धर्मक नीति-शिक्षा दैत अछि

(D) राज्यक प्रश्न नहि

१६९. परीक्षा-दृष्टिसँ “नीति-दृष्टि” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) धर्मक अर्थ नहि

(B) रामायणक प्रसंग राज्य, परिवार, मित्रता, शत्रुता आ धर्मक नीति-शिक्षा दैत अछि

(C) नीति केवल हिसाब-किताब अछि

(D) राज्यक प्रश्न नहि

१७०. “नीति-दृष्टि”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) राज्यक प्रश्न नहि

(B) रामायणक प्रसंग राज्य, परिवार, मित्रता, शत्रुता आ धर्मक नीति-शिक्षा दैत अछि

(C) धर्मक अर्थ नहि

(D) नीति केवल हिसाब-किताब अछि

१७१. मिथिलाभाषा रामायणमे “भाषा-शैली” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) संप्रेषण आवश्यक नहि

(B) मैथिली रूपान्तरणमे सरलता, भाव-संप्रेषण आ लोक-माधुर्य महत्त्वपूर्ण अछि

(C) भाषा केवल कठोर आदेश अछि

(D) माधुर्य दोष अछि

१७२. “भाषा-शैली” कैँ मिथिलाभाषा रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) मैथिली रूपान्तरणमे सरलता, भाव-संप्रेषण आ लोक-माधुर्य महत्त्वपूर्ण अछि

(B) माधुर्य दोष अछि

(C) संप्रेषण आवश्यक नहि

(D) भाषा केवल कठोर आदेश अछि

१७३. नीचाँमे “भाषा-शैली”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) माधुर्य दोष अछि

(B) मैथिली रूपान्तरणमे सरलता, भाव-संप्रेषण आ लोक-माधुर्य महत्त्वपूर्ण अछि

(C) संप्रेषण आवश्यक नहि

(D) भाषा केवल कठोर आदेश अछि

१७४. परीक्षा-दृष्टिसँ “भाषा-शैली” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) मैथिली रूपान्तरणमे सरलता, भाव-संप्रेषण आ लोक-माधुर्य महत्त्वपूर्ण अछि

(B) भाषा केवल कठोर आदेश अछि

(C) संप्रेषण आवश्यक नहि

(D) माधुर्य दोष अछि

१७५. “भाषा-शैली”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) मैथिली रूपान्तरणमे सरलता, भाव-संप्रेषण आ लोक-माधुर्य महत्त्वपूर्ण अछि

(B) माधुर्य दोष अछि

(C) भाषा केवल कठोर आदेश अछि

(D) संप्रेषण आवश्यक नहि

१७६. मिथिलाभाषा रामायणमे “छन्द आ लय” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) छन्द केवल खेत-माप अछि

(B) श्रव्यता नष्ट करबाक वस्तु अछि

(C) रामकथा काव्यात्मक छन्द, लय आ श्रव्यता द्वारा स्मरणीय बनैत अछि

(D) लयक भूमिका नहि

१७७. “छन्द आ लय” कैँ मिथिलाभाषा रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) लयक भूमिका नहि

(B) रामकथा काव्यात्मक छन्द, लय आ श्रव्यता द्वारा स्मरणीय बनैत अछि

(C) छन्द केवल खेत-माप अछि

(D) श्रव्यता नष्ट करबाक वस्तु अछि

१७८. नीचाँमे “छन्द आ लय”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) लयक भूमिका नहि

(B) छन्द केवल खेत-माप अछि

(C) रामकथा काव्यात्मक छन्द, लय आ श्रव्यता द्वारा स्मरणीय बनैत अछि

(D) श्रव्यता नष्ट करबाक वस्तु अछि

१७९. परीक्षा-दृष्टिसँ “छन्द आ लय” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) छन्द केवल खेत-माप अछि

(B) रामकथा काव्यात्मक छन्द, लय आ श्रव्यता द्वारा स्मरणीय बनैत अछि

(C) लयक भूमिका नहि

(D) श्रव्यता नष्ट करबाक वस्तु अछि

१८०. “छन्द आ लय”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) श्रव्यता नष्ट करबाक वस्तु अछि

(B) रामकथा काव्यात्मक छन्द, लय आ श्रव्यता द्वारा स्मरणीय बनैत अछि

(C) छन्द केवल खेत-माप अछि

(D) लयक भूमिका नहि

१८१. मिथिलाभाषा रामायणमे “काव्यात्मक वर्णन” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) वन, नगर, युद्ध, यात्रा, विरह आ मिलनक वर्णन काव्य-सौन्दर्य बनबैत अछि

(B) वर्णन निषिद्ध अछि

(C) दृश्यात्मकता असाहित्यिक अछि

(D) कथा बिना दृश्यक होइत अछि

१८२. “काव्यात्मक वर्णन” कैँ मिथिलाभाषा रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) दृश्यात्मकता असाहित्यिक अछि

(B) कथा बिना दृश्यक होइत अछि

(C) वर्णन निषिद्ध अछि

(D) वन, नगर, युद्ध, यात्रा, विरह आ मिलनक वर्णन काव्य-सौन्दर्य बनबैत अछि

१८३. नीचाँमे “काव्यात्मक वर्णन”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) वन, नगर, युद्ध, यात्रा, विरह आ मिलनक वर्णन काव्य-सौन्दर्य बनबैत अछि

(B) कथा बिना दृश्यक होइत अछि

(C) वर्णन निषिद्ध अछि

(D) दृश्यात्मकता असाहित्यिक अछि

१८४. परीक्षा-दृष्टिसँ “काव्यात्मक वर्णन” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) वर्णन निषिद्ध अछि

(B) कथा बिना दृश्यक होइत अछि

(C) दृश्यात्मकता असाहित्यिक अछि

(D) वन, नगर, युद्ध, यात्रा, विरह आ मिलनक वर्णन काव्य-सौन्दर्य बनबैत अछि

१८५. “काव्यात्मक वर्णन”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) दृश्यात्मकता असाहित्यिक अछि

(B) वर्णन निषिद्ध अछि

(C) कथा बिना दृश्यक होइत अछि

(D) वन, नगर, युद्ध, यात्रा, विरह आ मिलनक वर्णन काव्य-सौन्दर्य बनबैत अछि

१८६. मिथिलाभाषा रामायणमे “धर्म आ करुणा” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) कृति केवल आदेश अछि

(B) रामकथामे धर्मपालनक संग करुणा, वियोग आ मानवीय पीड़ा सेहो जुड़ल अछि

(C) धर्म आ करुणा अलग नहि मिलि सकैत

(D) पीड़ा काव्य-विरोधी अछि

१८७. “धर्म आ करुणा” कैँ मिथिलाभाषा रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) रामकथामे धर्मपालनक संग करुणा, वियोग आ मानवीय पीड़ा सेहो जुड़ल अछि

(B) पीड़ा काव्य-विरोधी अछि

(C) कृति केवल आदेश अछि

(D) धर्म आ करुणा अलग नहि मिलि सकैत

१८८. नीचाँमे “धर्म आ करुणा”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) पीड़ा काव्य-विरोधी अछि

(B) रामकथामे धर्मपालनक संग करुणा, वियोग आ मानवीय पीड़ा सेहो जुड़ल अछि

(C) कृति केवल आदेश अछि

(D) धर्म आ करुणा अलग नहि मिलि सकैत

१८९. परीक्षा-दृष्टिसँ “धर्म आ करुणा” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) रामकथामे धर्मपालनक संग करुणा, वियोग आ मानवीय पीड़ा सेहो जुड़ल अछि

(B) धर्म आ करुणा अलग नहि मिलि सकैत

(C) कृति केवल आदेश अछि

(D) पीड़ा काव्य-विरोधी अछि

१९०. “धर्म आ करुणा”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) रामकथामे धर्मपालनक संग करुणा, वियोग आ मानवीय पीड़ा सेहो जुड़ल अछि

(B) पीड़ा काव्य-विरोधी अछि

(C) धर्म आ करुणा अलग नहि मिलि सकैत

(D) कृति केवल आदेश अछि

१९१. मिथिलाभाषा रामायणमे “आदर्श नायक” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) राम आदर्श नायक रूपमे धर्म, साहस, दया आ मर्यादाक धारक छथि

(B) नायक निष्क्रिय वस्तु अछि

(C) आदर्शक चर्चा नहि

(D) राम केवल पृष्ठ-संख्या अछि

१९२. “आदर्श नायक” कैँ मिथिलाभाषा रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) आदर्शक चर्चा नहि

(B) राम केवल पृष्ठ-संख्या अछि

(C) नायक निष्क्रिय वस्तु अछि

(D) राम आदर्श नायक रूपमे धर्म, साहस, दया आ मर्यादाक धारक छथि

१९३. नीचाँमे “आदर्श नायक”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) राम आदर्श नायक रूपमे धर्म, साहस, दया आ मर्यादाक धारक छथि

(B) राम केवल पृष्ठ-संख्या अछि

(C) नायक निष्क्रिय वस्तु अछि

(D) आदर्शक चर्चा नहि

१९४. परीक्षा-दृष्टिसँ “आदर्श नायक” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) नायक निष्क्रिय वस्तु अछि

(B) राम केवल पृष्ठ-संख्या अछि

(C) आदर्शक चर्चा नहि

(D) राम आदर्श नायक रूपमे धर्म, साहस, दया आ मर्यादाक धारक छथि

१९५. “आदर्श नायक”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) आदर्शक चर्चा नहि

(B) नायक निष्क्रिय वस्तु अछि

(C) राम केवल पृष्ठ-संख्या अछि

(D) राम आदर्श नायक रूपमे धर्म, साहस, दया आ मर्यादाक धारक छथि

१९६. मिथिलाभाषा रामायणमे “साहित्येतिहासक स्थान” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) साहित्येतिहासमे एकर उल्लेख निरर्थक अछि

(B) ई खण्डकाव्य सूचीमे मात्र अछि

(C) कृति साहित्यसँ बाहर अछि

(D) मिथिलाभाषा रामायण मैथिली महाकाव्य-परम्परामे रामकाव्यक प्रमुख उदाहरण मानल जाइत अछि

१९७. “साहित्येतिहासक स्थान” कैँ मिथिलाभाषा रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) कृति साहित्यसँ बाहर अछि

(B) साहित्येतिहासमे एकर उल्लेख निरर्थक अछि

(C) मिथिलाभाषा रामायण मैथिली महाकाव्य-परम्परामे रामकाव्यक प्रमुख उदाहरण मानल जाइत अछि

(D) ई खण्डकाव्य सूचीमे मात्र अछि

१९८. नीचाँमे “साहित्येतिहासक स्थान”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) कृति साहित्यसँ बाहर अछि

(B) साहित्येतिहासमे एकर उल्लेख निरर्थक अछि

(C) ई खण्डकाव्य सूचीमे मात्र अछि

(D) मिथिलाभाषा रामायण मैथिली महाकाव्य-परम्परामे रामकाव्यक प्रमुख उदाहरण मानल जाइत अछि

१९९. परीक्षा-दृष्टिसँ “साहित्येतिहासक स्थान” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) कृति साहित्यसँ बाहर अछि

(B) ई खण्डकाव्य सूचीमे मात्र अछि

(C) मिथिलाभाषा रामायण मैथिली महाकाव्य-परम्परामे रामकाव्यक प्रमुख उदाहरण मानल जाइत अछि

(D) साहित्येतिहासमे एकर उल्लेख निरर्थक अछि

२००. “साहित्येतिहासक स्थान”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) साहित्येतिहासमे एकर उल्लेख निरर्थक अछि

(B) कृति साहित्यसँ बाहर अछि

(C) मिथिलाभाषा रामायण मैथिली महाकाव्य-परम्परामे रामकाव्यक प्रमुख उदाहरण मानल जाइत अछि

(D) ई खण्डकाव्य सूचीमे मात्र अछि

sec2

२०१. रमेश्वरचरित मिथिला रामायणमे “रमेश्वरचरित मिथिला रामायण” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल हास्य-निबन्ध

(B) केवल आधुनिक विज्ञापन

(C) केवल पारिभाषिक कोश

(D) रामकथा-आधारित मैथिली महाकाव्य-धाराक एक महत्त्वपूर्ण कृति रूपमे पढ़ल जाइत अछि

२०२. “रमेश्वरचरित मिथिला रामायण” कैं रमेश्वरचरित मिथिला रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) केवल पारिभाषिक कोश

(B) केवल हास्य-निबन्ध

(C) रामकथा-आधारित मैथिली महाकाव्य-धाराक एक महत्त्वपूर्ण कृति रूपमे पढ़ल जाइत अछि

(D) केवल आधुनिक विज्ञापन

२०३. नीचाँमे “रमेश्वरचरित मिथिला रामायण”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल पारिभाषिक कोश

(B) केवल हास्य-निबन्ध

(C) केवल आधुनिक विज्ञापन

(D) रामकथा-आधारित मैथिली महाकाव्य-धाराक एक महत्त्वपूर्ण कृति रूपमे पढ़ल जाइत अछि

२०४. परीक्षा-दृष्टिसँ “रमेश्वरचरित मिथिला रामायण” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल पारिभाषिक कोश

(B) केवल आधुनिक विज्ञापन

(C) रामकथा-आधारित मैथिली महाकाव्य-धाराक एक महत्त्वपूर्ण कृति रूपमे पढ़ल जाइत अछि

(D) केवल हास्य-निबन्ध

२०५. “रमेश्वरचरित मिथिला रामायण”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल हास्य-निबन्ध

(B) केवल पारिभाषिक कोश

(C) रामकथा-आधारित मैथिली महाकाव्य-धाराक एक महत्त्वपूर्ण कृति रूपमे पढ़ल जाइत अछि

(D) केवल आधुनिक विज्ञापन

२०६. रमेश्वरचरित मिथिला रामायणमे “मिथिला रामायण नाम” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) शीर्षक स्वयं रामकथा आ मिथिला-भाषिक सांस्कृतिक सम्बन्धक संकेत दैत अछि

(B) शीर्षकक रामकथासँ सम्बन्ध नहि

(C) मिथिला शब्द निरर्थक अछि

(D) नाम केवल अंकसूची अछि

२०७. “मिथिला रामायण नाम” कैं रमेश्वरचरित मिथिला रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) मिथिला शब्द निरर्थक अछि

(B) नाम केवल अंकसूची अछि

(C) शीर्षकक रामकथासँ सम्बन्ध नहि

(D) शीर्षक स्वयं रामकथा आ मिथिला-भाषिक सांस्कृतिक सम्बन्धक संकेत दैत अछि

२०८. नीचाँमे “मिथिला रामायण नाम”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) शीर्षक स्वयं रामकथा आ मिथिला-भाषिक सांस्कृतिक सम्बन्धक संकेत दैत अछि

(B) नाम केवल अंकसूची अछि

(C) शीर्षकक रामकथासँ सम्बन्ध नहि

(D) मिथिला शब्द निरर्थक अछि

२०९. परीक्षा-दृष्टिसँ “मिथिला रामायण नाम” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) शीर्षकक रामकथासँ सम्बन्ध नहि

(B) नाम केवल अंकसूची अछि

(C) मिथिला शब्द निरर्थक अछि

(D) शीर्षक स्वयं रामकथा आ मिथिला-भाषिक सांस्कृतिक सम्बन्धक संकेत दैत अछि

२१०. “मिथिला रामायण नाम”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) मिथिला शब्द निरर्थक अछि

(B) शीर्षकक रामकथासँ सम्बन्ध नहि

(C) नाम केवल अंकसूची अछि

(D) शीर्षक स्वयं रामकथा आ मिथिला-भाषिक सांस्कृतिक सम्बन्धक संकेत दैत अछि

२११. रमेश्वरचरित मिथिला रामायणमे “रामचरित” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) रामचरित केवल चिठ्ठी अछि

(B) चरितमे पात्र नहि

(C) राम कथा-विषय नहि

(D) रामक जीवन, धर्म, संघर्ष आ आदर्शक काव्यात्मक प्रस्तुति ई कृतिक केन्द्र होइत अछि

२१२. “रामचरित” कैँ रमेश्वरचरित मिथिला रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) राम कथा-विषय नहि

(B) रामचरित केवल चिठ्ठी अछि

(C) रामक जीवन, धर्म, संघर्ष आ आदर्शक काव्यात्मक प्रस्तुति ई कृतिक केन्द्र होइत अछि

(D) चरितमे पात्र नहि

२१३. नीचाँमे “रामचरित”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) राम कथा-विषय नहि

(B) रामचरित केवल चिठ्ठी अछि

(C) चरितमे पात्र नहि

(D) रामक जीवन, धर्म, संघर्ष आ आदर्शक काव्यात्मक प्रस्तुति ई कृतिक केन्द्र होइत अछि

२१४. परीक्षा-दृष्टिसँ “रामचरित” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) राम कथा-विषय नहि

(B) चरितमे पात्र नहि

(C) रामक जीवन, धर्म, संघर्ष आ आदर्शक काव्यात्मक प्रस्तुति ई कृतिक केन्द्र होइत अछि

(D) रामचरित केवल चिठ्ठी अछि

२१५. “रामचरित”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) रामचरित केवल चिठ्ठी अछि

(B) राम कथा-विषय नहि

(C) रामक जीवन, धर्म, संघर्ष आ आदर्शक काव्यात्मक प्रस्तुति ई कृतिक केन्द्र होइत अछि

(D) चरितमे पात्र नहि

२१६. रमेश्वरचरित मिथिला रामायणमे “भक्तिपरकता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) समर्पण गणितक सूत्र अछि

(B) रामक प्रति श्रद्धा, समर्पण आ धर्म-बोध कृतिक भाव-धुरी बनैत अछि

(C) भक्ति सदैव काव्य-विरोधी अछि

(D) श्रद्धा अनुपस्थित रहैत

२१७. “भक्तिपरकता” कैं रमेश्वरचरित मिथिला रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) रामक प्रति श्रद्धा, समर्पण आ धर्म-बोध कृतिक भाव-धुरी बनैत अछि

(B) श्रद्धा अनुपस्थित रहैत

(C) समर्पण गणितक सूत्र अछि

(D) भक्ति सदैव काव्य-विरोधी अछि

२१८. नीचाँमे “भक्तिपरकता”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) श्रद्धा अनुपस्थित रहैत

(B) रामक प्रति श्रद्धा, समर्पण आ धर्म-बोध कृतिक भाव-धुरी बनैत अछि

(C) समर्पण गणितक सूत्र अछि

(D) भक्ति सदैव काव्य-विरोधी अछि

२१९. परीक्षा-दृष्टिसँ “भक्तिपरकता” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) रामक प्रति श्रद्धा, समर्पण आ धर्म-बोध कृतिक भाव-धुरी बनैत अछि

(B) भक्ति सदैव काव्य-विरोधी अछि

(C) समर्पण गणितक सूत्र अछि

(D) श्रद्धा अनुपस्थित रहैत

२२०. “भक्तिपरकता”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) रामक प्रति श्रद्धा, समर्पण आ धर्म-बोध कृतिक भाव-धुरी बनैत अछि

(B) श्रद्धा अनुपस्थित रहैत

(C) भक्ति सदैव काव्य-विरोधी अछि

(D) समर्पण गणितक सूत्र अछि

२२१. रमेश्वरचरित मिथिला रामायणमे “कथाविस्तार” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) कृति केवल शीर्षक मात्र अछि

(B) प्रसंगक उपयोग नहि

(C) महाकाव्य रूपमे प्रसंग-दर-प्रसंग कथा-विकास आ भाव-विस्तार अपेक्षित अछि

(D) कथाविस्तार असम्भव अछि

२२२. “कथाविस्तार” कैं रमेश्वरचरित मिथिला रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) कथाविस्तार असम्भव अछि

(B) महाकाव्य रूपमे प्रसंग-दर-प्रसंग कथा-विकास आ भाव-विस्तार अपेक्षित अछि

(C) कृति केवल शीर्षक मात्र अछि

(D) प्रसंगक उपयोग नहि

२२३. नीचाँमे “कथाविस्तार”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) कथाविस्तार असम्भव अछि

(B) कृति केवल शीर्षक मात्र अछि

(C) महाकाव्य रूपमे प्रसंग-दर-प्रसंग कथा-विकास आ भाव-विस्तार अपेक्षित अछि

(D) प्रसंगक उपयोग नहि

२२४. परीक्षा-दृष्टिसँ “कथाविस्तार” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) कृति केवल शीर्षक मात्र अछि

(B) महाकाव्य रूपमे प्रसंग-दर-प्रसंग कथा-विकास आ भाव-विस्तार अपेक्षित अछि

(C) कथाविस्तार असम्भव अछि

(D) प्रसंगक उपयोग नहि

२२५. “कथाविस्तार”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) प्रसंगक उपयोग नहि

(B) महाकाव्य रूपमे प्रसंग-दर-प्रसंग कथा-विकास आ भाव-विस्तार अपेक्षित अछि

(C) कृति केवल शीर्षक मात्र अछि

(D) कथाविस्तार असम्भव अछि

२२६. रमेश्वरचरित मिथिला रामायणमे “अवतार-दृष्टि” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) चरित्र शून्य अछि

(B) रामक चरित्र दिव्य आ मानवीय दुनू धरातल पर देखल जा सकैत अछि

(C) अवतार-दृष्टि केवल व्यापारिक चिह्न अछि

(D) दिव्य-मानवीय सम्बन्ध नहि

२२७. “अवतार-दृष्टि” कैँ रमेश्वरचरित मिथिला रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) रामक चरित्र दिव्य आ मानवीय दुनू धरातल पर देखल जा सकैत अछि

(B) दिव्य-मानवीय सम्बन्ध नहि

(C) चरित्र शून्य अछि

(D) अवतार-दृष्टि केवल व्यापारिक चिह्न अछि

२२८. नीचाँमे “अवतार-दृष्टि”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) दिव्य-मानवीय सम्बन्ध नहि

(B) रामक चरित्र दिव्य आ मानवीय दुनू धरातल पर देखल जा सकैत अछि

(C) चरित्र शून्य अछि

(D) अवतार-दृष्टि केवल व्यापारिक चिह्न अछि

२२९. परीक्षा-दृष्टिसँ “अवतार-दृष्टि” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) रामक चरित्र दिव्य आ मानवीय दुनू धरातल पर देखल जा सकैत अछि

(B) अवतार-दृष्टि केवल व्यापारिक चिह्न अछि

(C) चरित्र शून्य अछि

(D) दिव्य-मानवीय सम्बन्ध नहि

२३०. “अवतार-दृष्टि”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) रामक चरित्र दिव्य आ मानवीय दुनू धरातल पर देखल जा सकैत अछि

(B) दिव्य-मानवीय सम्बन्ध नहि

(C) अवतार-दृष्टि केवल व्यापारिक चिह्न अछि

(D) चरित्र शून्य अछि

२३१. रमेश्वरचरित मिथिला रामायणमे “सीता-प्रसंग” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) सीता-प्रसंग छोड़ा देल जाए

(B) स्त्री-पात्रक भूमिका नहि

(C) वियोग अर्थहीन अछि

(D) रामायणक अर्थ-गठनमे सीताक धैर्य, वियोग, साहस आ मर्यादा अनिवार्य अछि

२३२. “सीता-प्रसंग” कैँ रमेश्वरचरित मिथिला रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) वियोग अर्थहीन अछि

(B) सीता-प्रसंग छोड़ा देल जाए

(C) रामायणक अर्थ-गठनमे सीताक धैर्य, वियोग, साहस आ मर्यादा अनिवार्य अछि

(D) स्त्री-पात्रक भूमिका नहि

२३३. नीचाँमे “सीता-प्रसंग”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) वियोग अर्थहीन अछि

(B) सीता-प्रसंग छोड़ा देल जाए

(C) स्त्री-पात्रक भूमिका नहि

(D) रामायणक अर्थ-गठनमे सीताक धैर्य, वियोग, साहस आ मर्यादा अनिवार्य अछि

२३४. परीक्षा-दृष्टिसँ “सीता-प्रसंग” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) वियोग अर्थहीन अछि

(B) स्त्री-पात्रक भूमिका नहि

(C) रामायणक अर्थ-गठनमे सीताक धैर्य, वियोग, साहस आ मर्यादा अनिवार्य अछि

(D) सीता-प्रसंग छोड़ा देल जाए

२३५. “सीता-प्रसंग”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) सीता-प्रसंग छोड़ा देल जाए

(B) वियोग अर्थहीन अछि

(C) रामायणक अर्थ-गठनमे सीताक धैर्य, वियोग, साहस आ मर्यादा अनिवार्य अछि

(D) स्त्री-पात्रक भूमिका नहि

२३६. रमेश्वरचरित मिथिला रामायणमे “भ्रातृत्व” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) परिवारक सम्बन्ध नहि

(B) त्याग शब्दकोशीय त्रुटि अछि

(C) राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्नक सम्बन्ध धर्म, त्याग आ परिवारक आदर्श देखबैत अछि

(D) भ्रातृत्व काव्य-विरोधी अछि

२३७. “भ्रातृत्व” केँ रमेश्वरचरित मिथिला रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) भ्रातृत्व काव्य-विरोधी अछि

(B) राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्नक सम्बन्ध धर्म, त्याग आ परिवारक आदर्श देखबैत अछि

(C) परिवारक सम्बन्ध नहि

(D) त्याग शब्दकोशीय त्रुटि अछि

२३८. नीचाँमे “भ्रातृत्व”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) भ्रातृत्व काव्य-विरोधी अछि

(B) परिवारक सम्बन्ध नहि

(C) राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्नक सम्बन्ध धर्म, त्याग आ परिवारक आदर्श देखबैत अछि

(D) त्याग शब्दकोशीय त्रुटि अछि

२३९. परीक्षा-दृष्टिसँ “भ्रातृत्व” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) परिवारक सम्बन्ध नहि

(B) राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्नक सम्बन्ध धर्म, त्याग आ परिवारक आदर्श देखबैत अछि

(C) भ्रातृत्व काव्य-विरोधी अछि

(D) त्याग शब्दकोशीय त्रुटि अछि

२४०. “भ्रातृत्व”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) त्याग शब्दकोशीय त्रुटि अछि

(B) राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्नक सम्बन्ध धर्म, त्याग आ परिवारक आदर्श देखबैत अछि

(C) परिवारक सम्बन्ध नहि

(D) भ्रातृत्व काव्य-विरोधी अछि

२४१. रमेश्वरचरित मिथिला रामायणमे “रावण-विरोध” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) संघर्ष नहि रहैत

(B) अधर्म साहित्यसँ बाहर अछि

(C) रावणक प्रसंग अहंकार, शक्ति, अधर्म आ पतनक नाटकीय आधार बनैत अछि

(D) रावण केवल छन्द-नाम अछि

२४२. “रावण-विरोध” कैँ रमेश्वरचरित मिथिला रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) रावण केवल छन्द-नाम अछि

(B) रावणक प्रसंग अहंकार, शक्ति, अधर्म आ पतनक नाटकीय आधार बनैत अछि

(C) संघर्ष नहि रहैत

(D) अधर्म साहित्यसँ बाहर अछि

२४३. नीचाँमे “रावण-विरोध”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) रावण केवल छन्द-नाम अछि

(B) संघर्ष नहि रहैत

(C) रावणक प्रसंग अहंकार, शक्ति, अधर्म आ पतनक नाटकीय आधार बनैत अछि

(D) अधर्म साहित्यसँ बाहर अछि

२४४. परीक्षा-दृष्टिसँ “रावण-विरोध” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) संघर्ष नहि रहैत

(B) रावणक प्रसंग अहंकार, शक्ति, अधर्म आ पतनक नाटकीय आधार बनैत अछि

(C) रावण केवल छन्द-नाम अछि

(D) अधर्म साहित्यसँ बाहर अछि

२४५. “रावण-विरोध”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) अधर्म साहित्यसँ बाहर अछि

(B) रावणक प्रसंग अहंकार, शक्ति, अधर्म आ पतनक नाटकीय आधार बनैत अछि

(C) संघर्ष नहि रहैत

(D) रावण केवल छन्द-नाम अछि

२४६. रमेश्वरचरित मिथिला रामायणमे “विजय-वृत्त” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) विजयक अर्थ नष्ट होइत अछि

(B) धर्म-अधर्म भेद नहि

(C) नीति असम्बद्ध अछि

(D) अन्ततः धर्मक विजय आ अन्यायक पराजय रामकाव्यक मूल नीतिगत संकेत अछि

२४७. “विजय-वृत्त” कैँ रमेश्वरचरित मिथिला रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) नीति असम्बद्ध अछि

(B) विजयक अर्थ नष्ट होइत अछि

(C) अन्ततः धर्मक विजय आ अन्यायक पराजय रामकाव्यक मूल नीतिगत संकेत अछि

(D) धर्म-अधर्म भेद नहि

२४८. नीचाँमे “विजय-वृत्त”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) नीति असम्बद्ध अछि

(B) विजयक अर्थ नष्ट होइत अछि

(C) धर्म-अधर्म भेद नहि

(D) अन्ततः धर्मक विजय आ अन्यायक पराजय रामकाव्यक मूल नीतिगत संकेत अछि

२४९. परीक्षा-दृष्टिसँ “विजय-वृत्त” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) नीति असम्बद्ध अछि

(B) धर्म-अधर्म भेद नहि

(C) अन्ततः धर्मक विजय आ अन्यायक पराजय रामकाव्यक मूल नीतिगत संकेत अछि

(D) विजयक अर्थ नष्ट होइत अछि

२५०. “विजय-वृत्त”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) विजयक अर्थ नष्ट होइत अछि

(B) नीति असम्बद्ध अछि

(C) अन्ततः धर्मक विजय आ अन्यायक पराजय रामकाव्यक मूल नीतिगत संकेत अछि

(D) धर्म-अधर्म भेद नहि

२५१. रमेश्वरचरित मिथिला रामायणमे “भाषिक आत्मीयता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) मैथिलीमे रामकथा पढ़लासँ लोकक अपन भाषा-भाव जागृत होइत अछि

(B) अपन भाषा बाधा मात्र अछि

(C) मैथिली काव्य-अयोग्य अछि

(D) भाषा आ भाव अलग अछि

२५२. “भाषिक आत्मीयता” कैँ रमेश्वरचरित मिथिला रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) मैथिली काव्य-अयोग्य अछि

(B) भाषा आ भाव अलग अछि

(C) अपन भाषा बाधा मात्र अछि

(D) मैथिलीमे रामकथा पढ़लासँ लोकक अपन भाषा-भाव जागृत होइत अछि

२५३. नीचाँमे “भाषिक आत्मीयता”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) मैथिलीमे रामकथा पढ़लासँ लोकक अपन भाषा-भाव जागृत होइत अछि

(B) भाषा आ भाव अलग अछि

(C) अपन भाषा बाधा मात्र अछि

(D) मैथिली काव्य-अयोग्य अछि

२५४. परीक्षा-दृष्टिसँ “भाषिक आत्मीयता” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) अपन भाषा बाधा मात्र अछि

(B) भाषा आ भाव अलग अछि

(C) मैथिली काव्य-अयोग्य अछि

(D) मैथिलीमे रामकथा पढ़लासँ लोकक अपन भाषा-भाव जागृत होइत अछि

२५५. “भाषिक आत्मीयता”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) मैथिली काव्य-अयोग्य अछि

(B) अपन भाषा बाधा मात्र अछि

(C) भाषा आ भाव अलग अछि

(D) मैथिलीमे रामकथा पढ़लासँ लोकक अपन भाषा-भाव जागृत होइत अछि

२५६. रमेश्वरचरित मिथिला रामायणमे “लोकश्रुति आ पाठ” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) रामायणक कथा लोककंठ, पाठ, कीर्तन आ पारिवारिक संस्कारसँ जुड़ैत अछि

(B) लोकश्रुति सदैव गलत अछि

(C) पाठक अर्थ नहि

(D) संस्कार असाहित्यिक अछि

२५७. “लोकश्रुति आ पाठ” कैँ रमेश्वरचरित मिथिला रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) पाठक अर्थ नहि

(B) संस्कार असाहित्यिक अछि

(C) लोकश्रुति सदैव गलत अछि

(D) रामायणक कथा लोककंठ, पाठ, कीर्तन आ पारिवारिक संस्कारसँ जुड़ैत अछि

२५८. नीचाँमे “लोकश्रुति आ पाठ”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) रामायणक कथा लोककंठ, पाठ, कीर्तन आ पारिवारिक संस्कारसँ जुड़ैत अछि

(B) संस्कार असाहित्यिक अछि

(C) लोकश्रुति सदैव गलत अछि

(D) पाठक अर्थ नहि

२५९. परीक्षा-दृष्टिसँ “लोकश्रुति आ पाठ” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) लोकश्रुति सदैव गलत अछि

(B) संस्कार असाहित्यिक अछि

(C) पाठक अर्थ नहि

(D) रामायणक कथा लोककंठ, पाठ, कीर्तन आ पारिवारिक संस्कारसँ जुड़ैत अछि

२६०. “लोकश्रुति आ पाठ”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) पाठक अर्थ नहि

(B) लोकश्रुति सदैव गलत अछि

(C) संस्कार असाहित्यिक अछि

(D) रामायणक कथा लोककंठ, पाठ, कीर्तन आ पारिवारिक संस्कारसँ जुड़ैत अछि

२६१. रमेश्वरचरित मिथिला रामायणमे “नीति-शिक्षा” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) मर्यादा बाधा अछि

(B) रामायण प्रसंग सत्य, वचनपालन, दया, क्षमा, साहस आ मर्यादाक शिक्षा दैत अछि

(C) नीति केवल कर-सूची अछि

(D) सत्यक चर्चा नहि

२६२. “नीति-शिक्षा” कैँ रमेश्वरचरित मिथिला रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) रामायण प्रसंग सत्य, वचनपालन, दया, क्षमा, साहस आ मर्यादाक शिक्षा दैत अछि

(B) सत्यक चर्चा नहि

(C) मर्यादा बाधा अछि

(D) नीति केवल कर-सूची अछि

२६३. नीचाँमे “नीति-शिक्षा”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) सत्यक चर्चा नहि

(B) रामायण प्रसंग सत्य, वचनपालन, दया, क्षमा, साहस आ मर्यादाक शिक्षा दैत अछि

(C) मर्यादा बाधा अछि

(D) नीति केवल कर-सूची अछि

२६४. परीक्षा-दृष्टिसँ “नीति-शिक्षा” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) रामायण प्रसंग सत्य, वचनपालन, दया, क्षमा, साहस आ मर्यादाक शिक्षा दैत अछि

(B) नीति केवल कर-सूची अछि

(C) मर्यादा बाधा अछि

(D) सत्यक चर्चा नहि

२६५. “नीति-शिक्षा”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) रामायण प्रसंग सत्य, वचनपालन, दया, क्षमा, साहस आ मर्यादाक शिक्षा दैत अछि

(B) सत्यक चर्चा नहि

(C) नीति केवल कर-सूची अछि

(D) मर्यादा बाधा अछि

२६६. रमेश्वरचरित मिथिला रामायणमे “करुणा” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) सीता-वियोग, दशरथ-वेदना, भरत-विरह आदि प्रसंग करुण रस जगबैत अछि

(B) करुणा केवल हास्य अछि

(C) वियोगक उपयोग नहि

(D) पीड़ा निषिद्ध अछि

२६७. “करुणा” कैँ रमेश्वरचरित मिथिला रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) वियोगक उपयोग नहि

(B) पीड़ा निषिद्ध अछि

(C) करुणा केवल हास्य अछि

(D) सीता-वियोग, दशरथ-वेदना, भरत-विरह आदि प्रसंग करुण रस जगबैत अछि

२६८. नीचाँमे “करुणा”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) सीता-वियोग, दशरथ-वेदना, भरत-विरह आदि प्रसंग करुण रस जगबैत अछि

(B) पीड़ा निषिद्ध अछि

(C) करुणा केवल हास्य अछि

(D) वियोगक उपयोग नहि

२६९. परीक्षा-दृष्टिसँ “करुणा” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) करुणा केवल हास्य अछि

(B) पीड़ा निषिद्ध अछि

(C) वियोगक उपयोग नहि

(D) सीता-वियोग, दशरथ-वेदना, भरत-विरह आदि प्रसंग करुण रस जगबैत अछि

२७०. “करुणा”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) वियोगक उपयोग नहि

(B) करुणा केवल हास्य अछि

(C) पीड़ा निषिद्ध अछि

(D) सीता-वियोग, दशरथ-वेदना, भरत-विरह आदि प्रसंग करुण रस जगबैत अछि

२७१. रमेश्वरचरित मिथिला रामायणमे “वीरता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) साहस असम्बद्ध अछि

(B) युद्ध, साहस, अन्याय-विरोध आ रक्षा-धर्म वीररसक आधार बनैत अछि

(C) वीरता केवल शयन-वर्णन अछि

(D) युद्ध प्रसंग नहि

२७२. “वीरता” कैँ रमेश्वरचरित मिथिला रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) युद्ध, साहस, अन्याय-विरोध आ रक्षा-धर्म वीररसक आधार बनैत अछि

(B) युद्ध प्रसंग नहि

(C) साहस असम्बद्ध अछि

(D) वीरता केवल शयन-वर्णन अछि

२७३. नीचाँमे “वीरता”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) युद्ध प्रसंग नहि

(B) युद्ध, साहस, अन्याय-विरोध आ रक्षा-धर्म वीररसक आधार बनैत अछि

(C) साहस असम्बद्ध अछि

(D) वीरता केवल शयन-वर्णन अछि

२७४. परीक्षा-दृष्टिसँ “वीरता” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) युद्ध, साहस, अन्याय-विरोध आ रक्षा-धर्म वीररसक आधार बनैत अछि

(B) वीरता केवल शयन-वर्णन अछि

(C) साहस असम्बद्ध अछि

(D) युद्ध प्रसंग नहि

२७५. “वीरता”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) युद्ध, साहस, अन्याय-विरोध आ रक्षा-धर्म वीररसक आधार बनैत अछि

(B) युद्ध प्रसंग नहि

(C) वीरता केवल शयन-वर्णन अछि

(D) साहस असम्बद्ध अछि

२७६. रमेश्वरचरित मिथिला रामायणमे “संवाद-विन्यास” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) विन्यास बेकार अछि

(B) चरित्र संवाद-विहीन रहैत

(C) चरित्र-भाव खोलबाक लेल संवाद महाकाव्यक महत्त्वपूर्ण साधन अछि

(D) संवाद कखनहुँ नहि होइत

२७७. “संवाद-विन्यास” कैँ रमेश्वरचरित मिथिला रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) संवाद कखनहुँ नहि होइत

(B) चरित्र-भाव खोलबाक लेल संवाद महाकाव्यक महत्त्वपूर्ण साधन अछि

(C) विन्यास बेकार अछि

(D) चरित्र संवाद-विहीन रहैत

२७८. नीचाँमे “संवाद-विन्यास”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) संवाद कखनहुँ नहि होइत

(B) विन्यास बेकार अछि

(C) चरित्र-भाव खोलबाक लेल संवाद महाकाव्यक महत्त्वपूर्ण साधन अछि

(D) चरित्र संवाद-विहीन रहैत

२७९. परीक्षा-दृष्टिसँ “संवाद-विन्यास” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) विन्यास बेकार अछि

(B) चरित्र-भाव खोलबाक लेल संवाद महाकाव्यक महत्त्वपूर्ण साधन अछि

(C) संवाद कखनहुँ नहि होइत

(D) चरित्र संवाद-विहीन रहैत

२८०. “संवाद-विन्यास”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) चरित्र संवाद-विहीन रहैत

(B) चरित्र-भाव खोलबाक लेल संवाद महाकाव्यक महत्त्वपूर्ण साधन अछि

(C) विन्यास बेकार अछि

(D) संवाद कखनहुँ नहि होइत

२८१. रमेश्वरचरित मिथिला रामायणमे “दृश्य-विधान” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) वन आ नगर असम्बद्ध अछि

(B) वन, समुद्र, लंका, अयोध्या आदि दृश्य काव्यक कल्पना-बोध समृद्ध करैत अछि

(C) दृश्य-विधान केवल नक्शा अछि

(D) काव्य कल्पना-विहीन रहैत

२८२. “दृश्य-विधान” कें रमेश्वरचरित मिथिला रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) वन, समुद्र, लंका, अयोध्या आदि दृश्य काव्यक कल्पना-बोध समृद्ध करैत अछि

(B) काव्य कल्पना-विहीन रहैत

(C) वन आ नगर असम्बद्ध अछि

(D) दृश्य-विधान केवल नक्शा अछि

२८३. नीचाँमे “दृश्य-विधान”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) काव्य कल्पना-विहीन रहैत

(B) वन, समुद्र, लंका, अयोध्या आदि दृश्य काव्यक कल्पना-बोध समृद्ध करैत अछि

(C) वन आ नगर असम्बद्ध अछि

(D) दृश्य-विधान केवल नक्शा अछि

२८४. परीक्षा-दृष्टिसँ “दृश्य-विधान” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) वन, समुद्र, लंका, अयोध्या आदि दृश्य काव्यक कल्पना-बोध समृद्ध करैत अछि

(B) दृश्य-विधान केवल नक्शा अछि

(C) वन आ नगर असम्बद्ध अछि

(D) काव्य कल्पना-विहीन रहैत

२८५. “दृश्य-विधान”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) वन, समुद्र, लंका, अयोध्या आदि दृश्य काव्यक कल्पना-बोध समृद्ध करैत अछि

(B) काव्य कल्पना-विहीन रहैत

(C) दृश्य-विधान केवल नक्शा अछि

(D) वन आ नगर असम्बद्ध अछि

२८६. रमेश्वरचरित मिथिला रामायणमे “तुलनात्मक रामकाव्य” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) तुलना वर्जित अछि

(B) दूनू कृति असम्बद्ध शब्द मात्र अछि

(C) रामकथा एकरूप मृत सूत्र अछि

(D) मिथिलाभाषा रामायणसँ मिलान कऽ रामकथा-परम्पराक विविध रूप बुझल जा सकैत अछि

२८७. “तुलनात्मक रामकाव्य” कें रमेश्वरचरित मिथिला रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) रामकथा एकरूप मृत सूत्र अछि

(B) तुलना वर्जित अछि

(C) मिथिलाभाषा रामायणसँ मिलान कऽ रामकथा-परम्पराक विविध रूप बुझल जा सकैत अछि

(D) दूनू कृति असम्बद्ध शब्द मात्र अछि

२८८. नीचाँमे “तुलनात्मक रामकाव्य”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) रामकथा एकरूप मृत सूत्र अछि

(B) तुलना वर्जित अछि

(C) दूनू कृति असम्बद्ध शब्द मात्र अछि

(D) मिथिलाभाषा रामायणसँ मिलान कऽ रामकथा-परम्पराक विविध रूप बुझल जा सकैत अछि

२८९. परीक्षा-दृष्टिसँ “तुलनात्मक रामकाव्य” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) रामकथा एकरूप मृत सूत्र अछि

(B) दूनू कृति असम्बद्ध शब्द मात्र अछि

(C) मिथिलाभाषा रामायणसँ मिलान कऽ रामकथा-परम्पराक विविध रूप बुझल जा सकैत अछि

(D) तुलना वर्जित अछि

२९०. “तुलनात्मक रामकाव्य”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) तुलना वर्जित अछि

(B) रामकथा एकरूप मृत सूत्र अछि

(C) मिथिलाभाषा रामायणसँ मिलान कऽ रामकथा-परम्पराक विविध रूप बुझल जा सकैत अछि

(D) दूनू कृति असम्बद्ध शब्द मात्र अछि

२९१. रमेश्वरचरित मिथिला रामायणमे “आस्था आ कला” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) आस्था आ कला एक दोसरा सँ कटि जाइत

(B) काव्यरचना नहि रहैत

(C) धर्मकथामे भाषा नहि

(D) कृति धर्मकथाकेँ काव्य-रचना, भाषा आ छन्दसँ कलात्मक बनबैत अछि

२९२. “आस्था आ कला” केँ रमेश्वरचरित मिथिला रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) धर्मकथामे भाषा नहि

(B) आस्था आ कला एक दोसरा सँ कटि जाइत

(C) कृति धर्मकथाकेँ काव्य-रचना, भाषा आ छन्दसँ कलात्मक बनबैत अछि

(D) काव्यरचना नहि रहैत

२९३. नीचाँमे “आस्था आ कला”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) धर्मकथामे भाषा नहि

(B) आस्था आ कला एक दोसरा सँ कटि जाइत

(C) काव्यरचना नहि रहैत

(D) कृति धर्मकथाकेँ काव्य-रचना, भाषा आ छन्दसँ कलात्मक बनबैत अछि

२९४. परीक्षा-दृष्टिसँ “आस्था आ कला” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) धर्मकथामे भाषा नहि

(B) काव्यरचना नहि रहैत

(C) कृति धर्मकथाकेँ काव्य-रचना, भाषा आ छन्दसँ कलात्मक बनबैत अछि

(D) आस्था आ कला एक दोसरा सँ कटि जाइत

२९५. “आस्था आ कला”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) आस्था आ कला एक दोसरा सँ कटि जाइत

(B) धर्मकथामे भाषा नहि

(C) कृति धर्मकथाकेँ काव्य-रचना, भाषा आ छन्दसँ कलात्मक बनबैत अछि

(D) काव्यरचना नहि रहैत

२९६. रमेश्वरचरित मिथिला रामायणमे “सांस्कृतिक स्मृति” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) समाजक भूमिका नहि

(B) मिथिला नाम असंगत अछि

(C) रामायणक मैथिली रूप मिथिलाक सामूहिक धार्मिक-सांस्कृतिक स्मृतिसँ जुड़ल अछि

(D) स्मृति साहित्य-विरोधी अछि

२९७. “सांस्कृतिक स्मृति” कैं रमेश्वरचरित मिथिला रामायणक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) स्मृति साहित्य-विरोधी अछि

(B) रामायणक मैथिली रूप मिथिलाक सामूहिक धार्मिक-सांस्कृतिक स्मृतिसँ जुड़ल अछि

(C) समाजक भूमिका नहि

(D) मिथिला नाम असंगत अछि

२९८. नीचाँमे “सांस्कृतिक स्मृति”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) स्मृति साहित्य-विरोधी अछि

(B) समाजक भूमिका नहि

(C) रामायणक मैथिली रूप मिथिलाक सामूहिक धार्मिक-सांस्कृतिक स्मृतिसँ जुड़ल अछि

(D) मिथिला नाम असंगत अछि

२९९. परीक्षा-दृष्टिसँ “सांस्कृतिक स्मृति” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) समाजक भूमिका नहि

(B) रामायणक मैथिली रूप मिथिलाक सामूहिक धार्मिक-सांस्कृतिक स्मृतिसँ जुड़ल अछि

(C) स्मृति साहित्य-विरोधी अछि

(D) मिथिला नाम असंगत अछि

३००. “सांस्कृतिक स्मृति”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) मिथिला नाम असंगत अछि

(B) रामायणक मैथिली रूप मिथिलाक सामूहिक धार्मिक-सांस्कृतिक स्मृतिसँ जुड़ल अछि

(C) समाजक भूमिका नहि

(D) स्मृति साहित्य-विरोधी अछि

sec3

३०१. एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितमे “एकावली-परिणय” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) काव्यसँ असम्बद्ध वस्तु

(B) शीर्षक विवाह/परिणय-प्रसंगक महाकाव्यात्मक कथा-संरचनाक संकेत दैत अछि

(C) केवल कर-वसूलीक नियम

(D) केवल शब्दकोश-प्रविष्टि

३०२. “एकावली-परिणय” कैं एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) शीर्षक विवाह/परिणय-प्रसंगक महाकाव्यात्मक कथा-संरचनाक संकेत दैत अछि

(B) केवल शब्दकोश-प्रविष्टि

(C) काव्यसँ असम्बद्ध वस्तु

(D) केवल कर-वसूलीक नियम

३०३. नीचाँमे “एकावली-परिणय”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) शीर्षक विवाह/परिणय-प्रसंगक महाकाव्यात्मक कथा-संरचनाक संकेत दैत अछि

(B) काव्यसँ असम्बद्ध वस्तु

(C) केवल कर-वसूलीक नियम

(D) केवल शब्दकोश-प्रविष्टि

३०४. परीक्षा-दृष्टिसँ “एकावली-परिणय” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल कर-वसूलीक नियम

(B) काव्यसँ असम्बद्ध वस्तु

(C) केवल शब्दकोश-प्रविष्टि

(D) शीर्षक विवाह/परिणय-प्रसंगक महाकाव्यात्मक कथा-संरचनाक संकेत दैत अछि

३०५. “एकावली-परिणय”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल शब्दकोश-प्रविष्टि

(B) केवल कर-वसूलीक नियम

(C) काव्यसँ असम्बद्ध वस्तु

(D) शीर्षक विवाह/परिणय-प्रसंगक महाकाव्यात्मक कथा-संरचनाक संकेत दैत अछि

३०६. एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितमे “परिणय प्रसंग” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) परिणय केवल गणितक चिह्न

(B) समाज अनुपस्थित

(C) विवाहक माध्यमे प्रेम, कुल, समाज, संस्कार आ नारी-पुरुष सम्बन्धक चित्रण सम्भव होइत अछि

(D) विवाहक साहित्यसँ सम्बन्ध नहि

३०७. “परिणय प्रसंग” कैं एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) विवाहक साहित्यसँ सम्बन्ध नहि

(B) विवाहक माध्यमे प्रेम, कुल, समाज, संस्कार आ नारी-पुरुष सम्बन्धक चित्रण सम्भव होइत अछि

(C) परिणय केवल गणितक चिह्न

(D) समाज अनुपस्थित

३०८. नीचाँमे “परिणय प्रसंग”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) परिणय केवल गणितक चिह्न

(B) विवाहक माध्यमे प्रेम, कुल, समाज, संस्कार आ नारी-पुरुष सम्बन्धक चित्रण सम्भव होइत अछि

(C) समाज अनुपस्थित

(D) विवाहक साहित्यसँ सम्बन्ध नहि

३०९. परीक्षा-दृष्टिसँ “परिणय प्रसंग” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) विवाहक माध्यमे प्रेम, कुल, समाज, संस्कार आ नारी-पुरुष सम्बन्धक चित्रण सम्भव होइत अछि

(B) विवाहक साहित्यसँ सम्बन्ध नहि

(C) समाज अनुपस्थित

(D) परिणय केवल गणितक चिह्न

३१०. “परिणय प्रसंग”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) विवाहक माध्यमे प्रेम, कुल, समाज, संस्कार आ नारी-पुरुष सम्बन्धक चित्रण सम्भव होइत अछि

(B) परिणय केवल गणितक चिह्न

(C) विवाहक साहित्यसँ सम्बन्ध नहि

(D) समाज अनुपस्थित

३११. एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितमे “एकावली पात्र” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) पात्रक भूमिका शून्य अछि

(B) नाम मात्र ध्वनि अछि

(C) कथा बिना पात्रक होइत अछि

(D) एकावली नामक केन्द्रक माध्यमे कथा, भाव आ सामाजिक मूल्य संगठित होइत अछि

३१२. “एकावली पात्र” कैं एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) कथा बिना पात्रक होइत अछि

(B) पात्रक भूमिका शून्य अछि

(C) एकावली नामक केन्द्रक माध्यमे कथा, भाव आ सामाजिक मूल्य संगठित होइत अछि

(D) नाम मात्र ध्वनि अछि

३१३. नीचाँमे “एकावली पात्र”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) पात्रक भूमिका शून्य अछि

(B) नाम मात्र ध्वनि अछि

(C) एकावली नामक केन्द्रक माध्यमे कथा, भाव आ सामाजिक मूल्य संगठित होइत अछि

(D) कथा बिना पात्रक होइत अछि

३१४. परीक्षा-दृष्टिसँ “एकावली पात्र” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) नाम मात्र ध्वनि अछि

(B) एकावली नामक केन्द्रक माध्यमे कथा, भाव आ सामाजिक मूल्य संगठित होइत अछि

(C) पात्रक भूमिका शून्य अछि

(D) कथा बिना पात्रक होइत अछि

३१५. “एकावली पात्र”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) कथा बिना पात्रक होइत अछि

(B) एकावली नामक केन्द्रक माध्यमे कथा, भाव आ सामाजिक मूल्य संगठित होइत अछि

(C) नाम मात्र ध्वनि अछि

(D) पात्रक भूमिका शून्य अछि

३१६. एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितमे “प्रेम आ संस्कार” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) व्यक्ति-समाज सम्बन्ध नहि

(B) परिणय-काव्यमे व्यक्तिगत प्रेम आ सामाजिक संस्कार दुनू मिलैत अछि

(C) प्रेम आ संस्कार मिलि नहि सकैत

(D) काव्य केवल दण्डसूची अछि

३१७. “प्रेम आ संस्कार” कैँ एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) परिणय-काव्यमे व्यक्तिगत प्रेम आ सामाजिक संस्कार दुनू मिलैत अछि

(B) काव्य केवल दण्डसूची अछि

(C) व्यक्ति-समाज सम्बन्ध नहि

(D) प्रेम आ संस्कार मिलि नहि सकैत

३१८. नीचाँमे “प्रेम आ संस्कार”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) परिणय-काव्यमे व्यक्तिगत प्रेम आ सामाजिक संस्कार दुनू मिलैत अछि

(B) व्यक्ति-समाज सम्बन्ध नहि

(C) प्रेम आ संस्कार मिलि नहि सकैत

(D) काव्य केवल दण्डसूची अछि

३१९. परीक्षा-दृष्टिसँ “प्रेम आ संस्कार” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) प्रेम आ संस्कार मिलि नहि सकैत

(B) व्यक्ति-समाज सम्बन्ध नहि

(C) काव्य केवल दण्डसूची अछि

(D) परिणय-काव्यमे व्यक्तिगत प्रेम आ सामाजिक संस्कार दुनू मिलैत अछि

३२०. “प्रेम आ संस्कार”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) काव्य केवल दण्डसूची अछि

(B) प्रेम आ संस्कार मिलि नहि सकैत

(C) व्यक्ति-समाज सम्बन्ध नहि

(D) परिणय-काव्यमे व्यक्तिगत प्रेम आ सामाजिक संस्कार दुनू मिलैत अछि

३२१. एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितमे “सुभद्रा-हरण” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) हरणक अर्थ केवल हिसाब अछि

(B) महाभारतसँ असम्बद्ध

(C) महाभारत-सम्बद्ध प्रसंग, जाहिमे प्रेम, साहस, कुल-राजनीति आ वीरता जुड़ल अछि

(D) केवल वनस्पति-विज्ञानक अध्याय

३२२. “सुभद्रा-हरण” कैँ एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) केवल वनस्पति-विज्ञानक अध्याय

(B) महाभारत-सम्बद्ध प्रसंग, जाहिमे प्रेम, साहस, कुल-राजनीति आ वीरता जुड़ल अछि

(C) हरणक अर्थ केवल हिसाब अछि

(D) महाभारतसँ असम्बद्ध

३२३. नीचाँमे “सुभद्रा-हरण”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) हरणक अर्थ केवल हिसाब अछि

(B) महाभारत-सम्बद्ध प्रसंग, जाहिमे प्रेम, साहस, कुल-राजनीति आ वीरता जुड़ल अछि

(C) महाभारतसँ असम्बद्ध

(D) केवल वनस्पति-विज्ञानक अध्याय

३२४. परीक्षा-दृष्टिसँ “सुभद्रा-हरण” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) महाभारत-सम्बद्ध प्रसंग, जाहिमे प्रेम, साहस, कुल-राजनीति आ वीरता जुड़ल अछि

(B) केवल वनस्पति-विज्ञानक अध्याय

(C) महाभारतसँ असम्बद्ध

(D) हरणक अर्थ केवल हिसाब अछि

३२५. “सुभद्रा-हरण”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) महाभारत-सम्बद्ध प्रसंग, जाहिमे प्रेम, साहस, कुल-राजनीति आ वीरता जुड़ल अछि

(B) हरणक अर्थ केवल हिसाब अछि

(C) केवल वनस्पति-विज्ञानक अध्याय

(D) महाभारतसँ असम्बद्ध

३२६. एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितमे “अर्जुन-सुभद्रा कथा” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) सुभद्रा-हरणक आधार प्रेम, युक्ति, साहस आ महाभारतीय पात्र-सम्बन्धमे अछि

(B) ई कथा बिना पात्रक अछि

(C) प्रेम प्रसंग नहि

(D) महाभारतमे ई सम्भव नहि

३२७. “अर्जुन-सुभद्रा कथा” कैँ एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) प्रेम प्रसंग नहि

(B) महाभारतमे ई सम्भव नहि

(C) ई कथा बिना पात्रक अछि

(D) सुभद्रा-हरणक आधार प्रेम, युक्ति, साहस आ महाभारतीय पात्र-सम्बन्धमे अछि

३२८. नीचाँमे “अर्जुन-सुभद्रा कथा”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) महाभारतमे ई सम्भव नहि

(B) ई कथा बिना पात्रक अछि

(C) प्रेम प्रसंग नहि

(D) सुभद्रा-हरणक आधार प्रेम, युक्ति, साहस आ महाभारतीय पात्र-सम्बन्धमे अछि

३२९. परीक्षा-दृष्टिसँ “अर्जुन-सुभद्रा कथा” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) महाभारतमे ई सम्भव नहि

(B) प्रेम प्रसंग नहि

(C) सुभद्रा-हरणक आधार प्रेम, युक्ति, साहस आ महाभारतीय पात्र-सम्बन्धमे अछि

(D) ई कथा बिना पात्रक अछि

३३०. “अर्जुन-सुभद्रा कथा”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई कथा बिना पात्रक अछि

(B) महाभारतमे ई सम्भव नहि

(C) सुभद्रा-हरणक आधार प्रेम, युक्ति, साहस आ महाभारतीय पात्र-सम्बन्धमे अछि

(D) प्रेम प्रसंग नहि

३३१. एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितमे “वीर आ शृङ्गार” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) रस-विन्यास नहि

(B) कथा केवल सूचना अछि

(C) सुभद्रा-हरणमे वीरता आ प्रेम-दूनूक रसात्मक सम्भावना देखल जा सकैत अछि

(D) वीरता आ प्रेम सदैव असंगत अछि

३३२. “वीर आ शृङ्गार” कैँ एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) वीरता आ प्रेम सदैव असंगत अछि

(B) सुभद्रा-हरणमे वीरता आ प्रेम-दूनूक रसात्मक सम्भावना देखल जा सकैत अछि

(C) रस-विन्यास नहि

(D) कथा केवल सूचना अछि

३३३. नीचाँमे “वीर आ शृङ्गार”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) रस-विन्यास नहि

(B) सुभद्रा-हरणमे वीरता आ प्रेम-दूनूक रसात्मक सम्भावना देखल जा सकैत अछि

(C) कथा केवल सूचना अछि

(D) वीरता आ प्रेम सदैव असंगत अछि

३३४. परीक्षा-दृष्टिसँ “वीर आ शृङ्गार” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) सुभद्रा-हरणमे वीरता आ प्रेम-दूनूक रसात्मक सम्भावना देखल जा सकैत अछि

(B) वीरता आ प्रेम सदैव असंगत अछि

(C) कथा केवल सूचना अछि

(D) रस-विन्यास नहि

३३५. “वीर आ शृङ्गार”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) सुभद्रा-हरणमे वीरता आ प्रेम-दूनूक रसात्मक सम्भावना देखल जा सकैत अछि

(B) रस-विन्यास नहि

(C) वीरता आ प्रेम सदैव असंगत अछि

(D) कथा केवल सूचना अछि

३३६. एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितमे “कुल आ राजनीति” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) कुलक काव्यमे अर्थ नहि

(B) राजनीतिक सन्दर्भ असम्भव

(C) सामाजिक स्वीकृति नहि

(D) महाभारतीय विवाह-प्रसंगमे कुल-सम्बन्ध, शक्ति-संतुलन आ सामाजिक स्वीकृति उभरैत अछि

३३७. “कुल आ राजनीति” कैं एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) सामाजिक स्वीकृति नहि

(B) कुलक काव्यमे अर्थ नहि

(C) महाभारतीय विवाह-प्रसंगमे कुल-सम्बन्ध, शक्ति-संतुलन आ सामाजिक स्वीकृति उभरैत अछि

(D) राजनीतिक सन्दर्भ असम्भव

३३८. नीचाँमे “कुल आ राजनीति”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) कुलक काव्यमे अर्थ नहि

(B) राजनीतिक सन्दर्भ असम्भव

(C) महाभारतीय विवाह-प्रसंगमे कुल-सम्बन्ध, शक्ति-संतुलन आ सामाजिक स्वीकृति उभरैत अछि

(D) सामाजिक स्वीकृति नहि

३३९. परीक्षा-दृष्टिसँ “कुल आ राजनीति” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) राजनीतिक सन्दर्भ असम्भव

(B) महाभारतीय विवाह-प्रसंगमे कुल-सम्बन्ध, शक्ति-संतुलन आ सामाजिक स्वीकृति उभरैत अछि

(C) कुलक काव्यमे अर्थ नहि

(D) सामाजिक स्वीकृति नहि

३४०. “कुल आ राजनीति”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) सामाजिक स्वीकृति नहि

(B) महाभारतीय विवाह-प्रसंगमे कुल-सम्बन्ध, शक्ति-संतुलन आ सामाजिक स्वीकृति उभरैत अछि

(C) राजनीतिक सन्दर्भ असम्भव

(D) कुलक काव्यमे अर्थ नहि

३४१. एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितमे “अम्बचरित” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) पात्रक नाम वर्जित

(B) चरित-काव्य रूपमे अम्बा/अम्ब सम्बन्धी कथा, संघर्ष, पीड़ा वा प्रतिज्ञाक विस्तार सम्भव अछि

(C) केवल पशु-सूची

(D) चरितमे भाव नहि

३४२. “अम्बचरित” कैं एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) चरित-काव्य रूपमे अम्बा/अम्ब सम्बन्धी कथा, संघर्ष, पीड़ा वा प्रतिज्ञाक विस्तार सम्भव अछि

(B) चरितमे भाव नहि

(C) पात्रक नाम वर्जित

(D) केवल पशु-सूची

३४३. नीचाँमे “अम्बचरित”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) चरित-काव्य रूपमे अम्बा/अम्ब सम्बन्धी कथा, संघर्ष, पीड़ा वा प्रतिज्ञाक विस्तार सम्भव अछि

(B) पात्रक नाम वर्जित

(C) केवल पशु-सूची

(D) चरितमे भाव नहि

३४४. परीक्षा-दृष्टिसँ “अम्बचरित” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल पशु-सूची

(B) पात्रक नाम वर्जित

(C) चरितमे भाव नहि

(D) चरित-काव्य रूपमे अम्बा/अम्ब सम्बन्धी कथा, संघर्ष, पीड़ा वा प्रतिज्ञाक विस्तार सम्भव अछि

३४५. “अम्बचरित”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) चरितमे भाव नहि

(B) केवल पशु-सूची

(C) पात्रक नाम वर्जित

(D) चरित-काव्य रूपमे अम्बा/अम्ब सम्बन्धी कथा, संघर्ष, पीड़ा वा प्रतिज्ञाक विस्तार सम्भव अछि

३४६. एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितमे “अम्बा प्रसंग” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) प्रतिशोधक अर्थ नहि

(B) नियति प्रसंग नहि

(C) महाभारत-परम्परामे अम्बा प्रसंग अपमान, प्रतिशोध, संकल्प आ नियतिक भाव लऽ सकैत अछि

(D) अम्बा केवल नदी-माप अछि

३४७. “अम्बा प्रसंग” कैं एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) अम्बा केवल नदी-माप अछि

(B) महाभारत-परम्परामे अम्बा प्रसंग अपमान, प्रतिशोध, संकल्प आ नियतिक भाव लऽ सकैत अछि

(C) प्रतिशोधक अर्थ नहि

(D) नियति प्रसंग नहि

३४८. नीचाँमे “अम्बा प्रसंग”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) प्रतिशोधक अर्थ नहि

(B) महाभारत-परम्परामे अम्बा प्रसंग अपमान, प्रतिशोध, संकल्प आ नियतिक भाव लऽ सकैत अछि

(C) नियति प्रसंग नहि

(D) अम्बा केवल नदी-माप अछि

३४९. परीक्षा-दृष्टिसँ “अम्बा प्रसंग” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) महाभारत-परम्परामे अम्बा प्रसंग अपमान, प्रतिशोध, संकल्प आ नियतिक भाव लऽ सकैत अछि

(B) अम्बा केवल नदी-माप अछि

(C) नियति प्रसंग नहि

(D) प्रतिशोधक अर्थ नहि

३५०. “अम्बा प्रसंग”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) महाभारत-परम्परामे अम्बा प्रसंग अपमान, प्रतिशोध, संकल्प आ नियतिक भाव लऽ सकैत अछि

(B) प्रतिशोधक अर्थ नहि

(C) अम्बा केवल नदी-माप अछि

(D) नियति प्रसंग नहि

३५१. एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितमे “स्त्री-संघर्ष” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) न्यायक विषय नहि

(B) अनुभव निषिद्ध

(C) अम्बचरित जकाँ काव्यमे स्त्री-अनुभव, अपमान, प्रतिरोध आ न्याय-चेतना उभरि सकैत अछि

(D) स्त्री-संघर्ष साहित्य-विरोधी अछि

३५२. “स्त्री-संघर्ष” कैं एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) स्त्री-संघर्ष साहित्य-विरोधी अछि

(B) अम्बचरित जकाँ काव्यमे स्त्री-अनुभव, अपमान, प्रतिरोध आ न्याय-चेतना उभरि सकैत अछि

(C) न्यायक विषय नहि

(D) अनुभव निषिद्ध

३५३. नीचाँमे “स्त्री-संघर्ष”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) न्यायक विषय नहि

(B) अम्बचरित जकाँ काव्यमे स्त्री-अनुभव, अपमान, प्रतिरोध आ न्याय-चेतना उभरि सकैत अछि

(C) अनुभव निषिद्ध

(D) स्त्री-संघर्ष साहित्य-विरोधी अछि

३५४. परीक्षा-दृष्टिसँ “स्त्री-संघर्ष” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) अम्बचरित जकाँ काव्यमे स्त्री-अनुभव, अपमान, प्रतिरोध आ न्याय-चेतना उभरि सकैत अछि

(B) स्त्री-संघर्ष साहित्य-विरोधी अछि

(C) अनुभव निषिद्ध

(D) न्यायक विषय नहि

३५५. “स्त्री-संघर्ष”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) अम्बचरित जकाँ काव्यमे स्त्री-अनुभव, अपमान, प्रतिरोध आ न्याय-चेतना उभरि सकैत अछि

(B) न्यायक विषय नहि

(C) स्त्री-संघर्ष साहित्य-विरोधी अछि

(D) अनुभव निषिद्ध

३५६. एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितमे “चरित-विकास” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) जीवन-विकास नहि

(B) निर्णय असम्बद्ध अछि

(C) चरितकाव्य पात्रक जीवन, संकट, निर्णय आ परिणामकेँ विस्तारसँ देखबैत अछि

(D) चरित केवल शीर्षक-तालिका अछि

३५७. “चरित-विकास” केँ एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) चरित केवल शीर्षक-तालिका अछि

(B) चरितकाव्य पात्रक जीवन, संकट, निर्णय आ परिणामकेँ विस्तारसँ देखबैत अछि

(C) जीवन-विकास नहि

(D) निर्णय असम्बद्ध अछि

३५८. नीचाँमे “चरित-विकास”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) जीवन-विकास नहि

(B) चरितकाव्य पात्रक जीवन, संकट, निर्णय आ परिणामकेँ विस्तारसँ देखबैत अछि

(C) निर्णय असम्बद्ध अछि

(D) चरित केवल शीर्षक-तालिका अछि

३५९. परीक्षा-दृष्टिसँ “चरित-विकास” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) चरितकाव्य पात्रक जीवन, संकट, निर्णय आ परिणामकेँ विस्तारसँ देखबैत अछि

(B) चरित केवल शीर्षक-तालिका अछि

(C) निर्णय असम्बद्ध अछि

(D) जीवन-विकास नहि

३६०. “चरित-विकास”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) चरितकाव्य पात्रक जीवन, संकट, निर्णय आ परिणामकेँ विस्तारसँ देखबैत अछि

(B) जीवन-विकास नहि

(C) चरित केवल शीर्षक-तालिका अछि

(D) निर्णय असम्बद्ध अछि

३६१. एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितमे “महाभारतीय सामग्री” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) सुभद्रा-हरण आ अम्बचरित महाभारत-कथासामग्रीक नव काव्य-रूप बुझबैत अछि

(B) महाभारत सामग्री सदैव अनावश्यक अछि

(C) कथास्रोत नहि

(D) नव रूप असम्भव

३६२. “महाभारतीय सामग्री” कैं एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) कथास्रोत नहि

(B) नव रूप असम्भव

(C) महाभारत सामग्री सदैव अनावश्यक अछि

(D) सुभद्रा-हरण आ अम्बचरित महाभारत-कथासामग्रीक नव काव्य-रूप बुझबैत अछि

३६३. नीचाँमे “महाभारतीय सामग्री”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) नव रूप असम्भव

(B) महाभारत सामग्री सदैव अनावश्यक अछि

(C) कथास्रोत नहि

(D) सुभद्रा-हरण आ अम्बचरित महाभारत-कथासामग्रीक नव काव्य-रूप बुझबैत अछि

३६४. परीक्षा-दृष्टिसँ “महाभारतीय सामग्री” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) नव रूप असम्भव

(B) कथास्रोत नहि

(C) सुभद्रा-हरण आ अम्बचरित महाभारत-कथासामग्रीक नव काव्य-रूप बुझबैत अछि

(D) महाभारत सामग्री सदैव अनावश्यक अछि

३६५. “महाभारतीय सामग्री”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) महाभारत सामग्री सदैव अनावश्यक अछि

(B) नव रूप असम्भव

(C) सुभद्रा-हरण आ अम्बचरित महाभारत-कथासामग्रीक नव काव्य-रूप बुझबैत अछि

(D) कथास्रोत नहि

३६६. एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितमे “कथा-नाटकीयता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) तनाव नहि होइत

(B) कथा चलैत नहि

(C) हरण, परिणय, प्रतिज्ञा आ संघर्षक प्रसंग नाटकीय तनाव बनबैत अछि

(D) नाटकीयता काव्य-विरोधी अछि

३६७. “कथा-नाटकीयता” कैं एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) नाटकीयता काव्य-विरोधी अछि

(B) हरण, परिणय, प्रतिज्ञा आ संघर्षक प्रसंग नाटकीय तनाव बनबैत अछि

(C) तनाव नहि होइत

(D) कथा चलैत नहि

३६८. नीचाँमे “कथा-नाटकीयता”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) तनाव नहि होइत

(B) हरण, परिणय, प्रतिज्ञा आ संघर्षक प्रसंग नाटकीय तनाव बनबैत अछि

(C) कथा चलैत नहि

(D) नाटकीयता काव्य-विरोधी अछि

३६९. परीक्षा-दृष्टिसँ “कथा-नाटकीयता” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) हरण, परिणय, प्रतिज्ञा आ संघर्षक प्रसंग नाटकीय तनाव बनबैत अछि

(B) नाटकीयता काव्य-विरोधी अछि

(C) कथा चलैत नहि

(D) तनाव नहि होइत

३७०. “कथा-नाटकीयता”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) हरण, परिणय, प्रतिज्ञा आ संघर्षक प्रसंग नाटकीय तनाव बनबैत अछि

(B) तनाव नहि होइत

(C) नाटकीयता काव्य-विरोधी अछि

(D) कथा चलैत नहि

३७१. एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितमे “सामाजिक मर्यादा” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) परिणय आ कुल-सम्बन्धक कथामे समाजक नियम आ मर्यादा प्रश्न बनैत अछि

(B) मर्यादा अर्थहीन अछि

(C) समाज बिना कथा

(D) नियम सदैव साहित्यसँ बाहर

३७२. “सामाजिक मर्यादा” कैँ एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) समाज बिना कथा

(B) नियम सदैव साहित्यसँ बाहर

(C) मर्यादा अर्थहीन अछि

(D) परिणय आ कुल-सम्बन्धक कथामे समाजक नियम आ मर्यादा प्रश्न बनैत अछि

३७३. नीचाँमे “सामाजिक मर्यादा”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) नियम सदैव साहित्यसँ बाहर

(B) मर्यादा अर्थहीन अछि

(C) समाज बिना कथा

(D) परिणय आ कुल-सम्बन्धक कथामे समाजक नियम आ मर्यादा प्रश्न बनैत अछि

३७४. परीक्षा-दृष्टिसँ “सामाजिक मर्यादा” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) नियम सदैव साहित्यसँ बाहर

(B) समाज बिना कथा

(C) परिणय आ कुल-सम्बन्धक कथामे समाजक नियम आ मर्यादा प्रश्न बनैत अछि

(D) मर्यादा अर्थहीन अछि

३७५. “सामाजिक मर्यादा”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) मर्यादा अर्थहीन अछि

(B) नियम सदैव साहित्यसँ बाहर

(C) परिणय आ कुल-सम्बन्धक कथामे समाजक नियम आ मर्यादा प्रश्न बनैत अछि

(D) समाज बिना कथा

३७६. एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितमे “रसमिश्रण” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) एहि कृतिसभमे शृङ्गार, वीर, करुण आ शान्त भावक मिश्रण सम्भव अछि

(B) रस सदैव एकटा नहि होइत

(C) रस-विचार नहि

(D) काव्य भावहीन होइत

३७७. “रसमिश्रण” कैं एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) रस-विचार नहि

(B) काव्य भावहीन होइत

(C) रस सदैव एकटा नहि होइत

(D) एहि कृतिसभमे शृङ्गार, वीर, करुण आ शान्त भावक मिश्रण सम्भव अछि

३७८. नीचाँमे “रसमिश्रण”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) काव्य भावहीन होइत

(B) रस सदैव एकटा नहि होइत

(C) रस-विचार नहि

(D) एहि कृतिसभमे शृङ्गार, वीर, करुण आ शान्त भावक मिश्रण सम्भव अछि

३७९. परीक्षा-दृष्टिसँ “रसमिश्रण” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) काव्य भावहीन होइत

(B) रस-विचार नहि

(C) एहि कृतिसभमे शृङ्गार, वीर, करुण आ शान्त भावक मिश्रण सम्भव अछि

(D) रस सदैव एकटा नहि होइत

३८०. “रसमिश्रण”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) रस सदैव एकटा नहि होइत

(B) काव्य भावहीन होइत

(C) एहि कृतिसभमे शृङ्गार, वीर, करुण आ शान्त भावक मिश्रण सम्भव अछि

(D) रस-विचार नहि

३८१. एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितमे “महाकाव्यात्मक विस्तार” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) लघु प्रसंग सेहो कविक विस्तार-दृष्टिसँ महाकाव्य रूप लऽ सकैत अछि

(B) प्रसंग विस्तार सदैव असम्भव

(C) महाकाव्य केवल एक पंक्ति

(D) विस्तारक अर्थ नहि

३८२. “महाकाव्यात्मक विस्तार” कैं एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) महाकाव्य केवल एक पंक्ति

(B) विस्तारक अर्थ नहि

(C) प्रसंग विस्तार सदैव असम्भव

(D) लघु प्रसंग सेहो कविक विस्तार-दृष्टिसँ महाकाव्य रूप लऽ सकैत अछि

३८३. नीचाँमे “महाकाव्यात्मक विस्तार”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) विस्तारक अर्थ नहि

(B) प्रसंग विस्तार सदैव असम्भव

(C) महाकाव्य केवल एक पंक्ति

(D) लघु प्रसंग सेहो कविक विस्तार-दृष्टिसँ महाकाव्य रूप लऽ सकैत अछि

३८४. परीक्षा-दृष्टिसँ “महाकाव्यात्मक विस्तार” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) विस्तारक अर्थ नहि

(B) महाकाव्य केवल एक पंक्ति

(C) लघु प्रसंग सेहो कविक विस्तार-दृष्टिसँ महाकाव्य रूप लऽ सकैत अछि

(D) प्रसंग विस्तार सदैव असम्भव

३८५. “महाकाव्यात्मक विस्तार”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) प्रसंग विस्तार सदैव असम्भव

(B) विस्तारक अर्थ नहि

(C) लघु प्रसंग सेहो कविक विस्तार-दृष्टिसँ महाकाव्य रूप लऽ सकैत अछि

(D) महाकाव्य केवल एक पंक्ति

३८६. एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितमे “पात्र-केन्द्रितता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) कथ्य बिना पात्रक अछि

(B) तीनू कृतिमे पात्रक नाम शीर्षकमे वा कथ्यकेन्द्रमे महत्त्व रखैत अछि

(C) पात्र-केन्द्र साहित्य-विरोधी अछि

(D) नामक कोनो अर्थ नहि

३८७. “पात्र-केन्द्रितता” कैं एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) तीनू कृतिमे पात्रक नाम शीर्षकमे वा कथ्यकेन्द्रमे महत्त्व रखैत अछि

(B) नामक कोनो अर्थ नहि

(C) कथ्य बिना पात्रक अछि

(D) पात्र-केन्द्र साहित्य-विरोधी अछि

३८८. नीचाँमे “पात्र-केन्द्रितता”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) तीनू कृतिमे पात्रक नाम शीर्षकमे वा कथ्यकेन्द्रमे महत्त्व रखैत अछि

(B) कथ्य बिना पात्रक अछि

(C) पात्र-केन्द्र साहित्य-विरोधी अछि

(D) नामक कोनो अर्थ नहि

३८९. परीक्षा-दृष्टिसँ “पात्र-केन्द्रितता” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) पात्र-केन्द्र साहित्य-विरोधी अछि

(B) कथ्य बिना पात्रक अछि

(C) नामक कोनो अर्थ नहि

(D) तीनू कृतिमे पात्रक नाम शीर्षकमे वा कथ्यकेन्द्रमे महत्त्व रखैत अछि

३९०. “पात्र-केन्द्रितता”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) नामक कोनो अर्थ नहि

(B) पात्र-केन्द्र साहित्य-विरोधी अछि

(C) कथ्य बिना पात्रक अछि

(D) तीनू कृतिमे पात्रक नाम शीर्षकमे वा कथ्यकेन्द्रमे महत्त्व रखैत अछि

३९१. एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितमे “संस्कृतिक मूल्य” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) विवाह, प्रतिज्ञा, कुल, न्याय आ प्रेम समाज-संस्कृतिक मूल्य रूपमे उभरैत अछि

(B) मूल्य केवल बाजार-दर अछि

(C) प्रेम आ न्यायक अर्थ नहि

(D) संस्कृति अनुपस्थित

३९२. “संस्कृतिक मूल्य” कैं एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) प्रेम आ न्यायक अर्थ नहि

(B) संस्कृति अनुपस्थित

(C) मूल्य केवल बाजार-दर अछि

(D) विवाह, प्रतिज्ञा, कुल, न्याय आ प्रेम समाज-संस्कृतिक मूल्य रूपमे उभरैत अछि

३९३. नीचाँमे “संस्कृतिक मूल्य”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) संस्कृति अनुपस्थित

(B) मूल्य केवल बाजार-दर अछि

(C) प्रेम आ न्यायक अर्थ नहि

(D) विवाह, प्रतिज्ञा, कुल, न्याय आ प्रेम समाज-संस्कृतिक मूल्य रूपमे उभरैत अछि

३९४. परीक्षा-दृष्टिसँ “संस्कृतिक मूल्य” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) संस्कृति अनुपस्थित

(B) प्रेम आ न्यायक अर्थ नहि

(C) विवाह, प्रतिज्ञा, कुल, न्याय आ प्रेम समाज-संस्कृतिक मूल्य रूपमे उभरैत अछि

(D) मूल्य केवल बाजार-दर अछि

३९५. “संस्कृतिक मूल्य”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) मूल्य केवल बाजार-दर अछि

(B) संस्कृति अनुपस्थित

(C) विवाह, प्रतिज्ञा, कुल, न्याय आ प्रेम समाज-संस्कृतिक मूल्य रूपमे उभरैत अछि

(D) प्रेम आ न्यायक अर्थ नहि

३९६. एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितमे “परीक्षा-संबंध” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल अनुमान लिखब

(B) सभ कृति रामकाव्य कहब

(C) महाभारत प्रसंग छोड़ब

(D) एहि कृतिसभ पर प्रश्नमे शीर्षक, स्रोत-कथा, रस, पात्र आ सामाजिक अर्थ जोड़ि उत्तर देब चाही

३९७. “परीक्षा-संबंध” कैँ एकावली-परिणय, सुभद्रा-हरण आ अम्बचरितक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) महाभारत प्रसंग छोड़ब

(B) केवल अनुमान लिखब

(C) एहि कृतिसभ पर प्रश्नमे शीर्षक, स्रोत-कथा, रस, पात्र आ सामाजिक अर्थ जोड़ि उत्तर देब चाही

(D) सभ कृति रामकाव्य कहब

३९८. नीचाँमे “परीक्षा-संबंध”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल अनुमान लिखब

(B) सभ कृति रामकाव्य कहब

(C) एहि कृतिसभ पर प्रश्नमे शीर्षक, स्रोत-कथा, रस, पात्र आ सामाजिक अर्थ जोड़ि उत्तर देब चाही

(D) महाभारत प्रसंग छोड़ब

३९९. परीक्षा-दृष्टिसँ “परीक्षा-संबंध” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) सभ कृति रामकाव्य कहब

(B) एहि कृतिसभ पर प्रश्नमे शीर्षक, स्रोत-कथा, रस, पात्र आ सामाजिक अर्थ जोड़ि उत्तर देब चाही

(C) केवल अनुमान लिखब

(D) महाभारत प्रसंग छोड़ब

४००. “परीक्षा-संबंध”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) महाभारत प्रसंग छोड़ब

(B) एहि कृतिसभ पर प्रश्नमे शीर्षक, स्रोत-कथा, रस, पात्र आ सामाजिक अर्थ जोड़ि उत्तर देब चाही

(C) सभ कृति रामकाव्य कहब

(D) केवल अनुमान लिखब

sec4

४०१. चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवमे “चाणक्य” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) नैतिकता-विहीन सूची

(B) नीति, राजनीति, बुद्धि, राजकौशल आ चरित्र-बलकेँ काव्यात्मक रूपमे देखबाक अवसर दैत अछि

(C) केवल प्रेम-पत्रक शीर्षक

(D) केवल बाल-खेल

४०२. “चाणक्य” केँ चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) नीति, राजनीति, बुद्धि, राजकौशल आ चरित्र-बलकेँ काव्यात्मक रूपमे देखबाक अवसर दैत अछि

(B) केवल बाल-खेल

(C) नैतिकता-विहीन सूची

(D) केवल प्रेम-पत्रक शीर्षक

४०३. नीचाँमे “चाणक्य”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल प्रेम-पत्रक शीर्षक

(B) केवल बाल-खेल

(C) नीति, राजनीति, बुद्धि, राजकौशल आ चरित्र-बलकेँ काव्यात्मक रूपमे देखबाक अवसर दैत अछि

(D) नैतिकता-विहीन सूची

४०४. परीक्षा-दृष्टिसँ “चाणक्य” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल बाल-खेल

(B) नीति, राजनीति, बुद्धि, राजकौशल आ चरित्र-बलकेँ काव्यात्मक रूपमे देखबाक अवसर दैत अछि

(C) केवल प्रेम-पत्रक शीर्षक

(D) नैतिकता-विहीन सूची

४०५. “चाणक्य”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) नैतिकता-विहीन सूची

(B) नीति, राजनीति, बुद्धि, राजकौशल आ चरित्र-बलकेँ काव्यात्मक रूपमे देखबाक अवसर दैत अछि

(C) केवल बाल-खेल

(D) केवल प्रेम-पत्रक शीर्षक

४०६. चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवमे “नीति-चेतना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) शासनक कथा नहि

(B) दूरदृष्टि निरर्थक

(C) चाणक्य-आधारित काव्यमे शासन, युक्ति, धैर्य, दूरदृष्टि आ लोकहितक विचार उभरैत अछि

(D) नीति केवल खेत-माप अछि

४०७. “नीति-चेतना” केँ चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) नीति केवल खेत-माप अछि

(B) चाणक्य-आधारित काव्यमे शासन, युक्ति, धैर्य, दूरदृष्टि आ लोकहितक विचार उभरैत अछि

(C) शासनक कथा नहि

(D) दूरदृष्टि निरर्थक

४०८. नीचाँमे “नीति-चेतना”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) दूरदृष्टि निरर्थक

(B) नीति केवल खेत-माप अछि

(C) शासनक कथा नहि

(D) चाणक्य-आधारित काव्यमे शासन, युक्ति, धैर्य, दूरदृष्टि आ लोकहितक विचार उभरैत अछि

४०९. परीक्षा-दृष्टिसँ “नीति-चेतना” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) दूरदृष्टि निरर्थक

(B) शासनक कथा नहि

(C) चाणक्य-आधारित काव्यमे शासन, युक्ति, धैर्य, दूरदृष्टि आ लोकहितक विचार उभरैत अछि

(D) नीति केवल खेत-माप अछि

४१०. “नीति-चेतना”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) नीति केवल खेत-माप अछि

(B) दूरदृष्टि निरर्थक

(C) चाणक्य-आधारित काव्यमे शासन, युक्ति, धैर्य, दूरदृष्टि आ लोकहितक विचार उभरैत अछि

(D) शासनक कथा नहि

४११. चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवमे “राजधर्म” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) प्रजाक उल्लेख नहि

(B) न्याय असम्बद्ध

(C) राज्य, न्याय, सुरक्षा आ प्रजाहितक प्रश्न चरित-काव्यमे महत्त्वपूर्ण बनैत अछि

(D) राजधर्म साहित्य-विरोधी अछि

४१२. “राजधर्म” कैँ चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) राजधर्म साहित्य-विरोधी अछि

(B) राज्य, न्याय, सुरक्षा आ प्रजाहितक प्रश्न चरित-काव्यमे महत्त्वपूर्ण बनैत अछि

(C) प्रजाक उल्लेख नहि

(D) न्याय असम्बद्ध

४१३. नीचाँमे “राजधर्म”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) न्याय असम्बद्ध

(B) राजधर्म साहित्य-विरोधी अछि

(C) प्रजाक उल्लेख नहि

(D) राज्य, न्याय, सुरक्षा आ प्रजाहितक प्रश्न चरित-काव्यमे महत्त्वपूर्ण बनैत अछि

४१४. परीक्षा-दृष्टिसँ “राजधर्म” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) न्याय असम्बद्ध

(B) प्रजाक उल्लेख नहि

(C) राज्य, न्याय, सुरक्षा आ प्रजाहितक प्रश्न चरित-काव्यमे महत्त्वपूर्ण बनैत अछि

(D) राजधर्म साहित्य-विरोधी अछि

४१५. “राजधर्म”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) राजधर्म साहित्य-विरोधी अछि

(B) न्याय असम्बद्ध

(C) राज्य, न्याय, सुरक्षा आ प्रजाहितक प्रश्न चरित-काव्यमे महत्त्वपूर्ण बनैत अछि

(D) प्रजाक उल्लेख नहि

४१६. चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवमे “कृष्णचरित” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) चरित बिना पात्रक होइत

(B) कृष्णक बाललीला, नीति, प्रेम, धर्म, युद्ध-भूमिका वा दिव्य-मानवीय रूपक काव्य-विस्तार सम्भव अछि

(C) कृष्णचरित केवल शब्द-सूची अछि

(D) कृष्णक कथासँ सम्बन्ध नहि

४१७. “कृष्णचरित” कैँ चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) कृष्णक बाललीला, नीति, प्रेम, धर्म, युद्ध-भूमिका वा दिव्य-मानवीय रूपक काव्य-विस्तार सम्भव अछि

(B) कृष्णक कथासँ सम्बन्ध नहि

(C) चरित बिना पात्रक होइत

(D) कृष्णचरित केवल शब्द-सूची अछि

४१८. नीचाँमे “कृष्णचरित”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) कृष्णचरित केवल शब्द-सूची अछि

(B) कृष्णक कथासँ सम्बन्ध नहि

(C) कृष्णक बाललीला, नीति, प्रेम, धर्म, युद्ध-भूमिका वा दिव्य-मानवीय रूपक काव्य-विस्तार सम्भव अछि

(D) चरित बिना पात्रक होइत

४१९. परीक्षा-दृष्टिसँ “कृष्णचरित” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) कृष्णक कथासँ सम्बन्ध नहि

(B) कृष्णक बाललीला, नीति, प्रेम, धर्म, युद्ध-भूमिका वा दिव्य-मानवीय रूपक काव्य-विस्तार सम्भव अछि

(C) कृष्णचरित केवल शब्द-सूची अछि

(D) चरित बिना पात्रक होइत

४२०. “कृष्णचरित”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) चरित बिना पात्रक होइत

(B) कृष्णक बाललीला, नीति, प्रेम, धर्म, युद्ध-भूमिका वा दिव्य-मानवीय रूपक काव्य-विस्तार सम्भव अछि

(C) कृष्णक कथासँ सम्बन्ध नहि

(D) कृष्णचरित केवल शब्द-सूची अछि

४२१. चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवमे “लीला-तत्त्व” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) कृष्णक चरितमे खेल, प्रेम, नीति, करुणा आ अध्यात्मक बहुस्तरीय अर्थ जुड़ैत अछि

(B) लीला केवल खिलौना अछि

(C) अध्यात्म नहि होइत

(D) प्रेम वर्जित अछि

४२२. “लीला-तत्त्व” कैँ चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) अध्यात्म नहि होइत

(B) प्रेम वर्जित अछि

(C) लीला केवल खिलौना अछि

(D) कृष्णक चरितमे खेल, प्रेम, नीति, करुणा आ अध्यात्मक बहुस्तरीय अर्थ जुड़ैत अछि

४२३. नीचाँमे “लीला-तत्त्व”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) अध्यात्म नहि होइत

(B) कृष्णक चरितमे खेल, प्रेम, नीति, करुणा आ अध्यात्मक बहुस्तरीय अर्थ जुड़ैत अछि

(C) प्रेम वर्जित अछि

(D) लीला केवल खिलौना अछि

४२४. परीक्षा-दृष्टिसँ “लीला-तत्त्व” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) कृष्णक चरितमे खेल, प्रेम, नीति, करुणा आ अध्यात्मक बहुस्तरीय अर्थ जुड़ैत अछि

(B) लीला केवल खिलौना अछि

(C) प्रेम वर्जित अछि

(D) अध्यात्म नहि होइत

४२५. “लीला-तत्त्व”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) कृष्णक चरितमे खेल, प्रेम, नीति, करुणा आ अध्यात्मक बहुस्तरीय अर्थ जुड़ैत अछि

(B) अध्यात्म नहि होइत

(C) लीला केवल खिलौना अछि

(D) प्रेम वर्जित अछि

४२६. चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवमे “धर्म आ नीति” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) कथा अर्थहीन अछि

(B) कृष्णक चरित धर्मसंकट, नीति-युक्ति आ लोक-रक्षा पर विचार करबैत अछि

(C) धर्म-नीति असम्बद्ध अछि

(D) लोक-रक्षा नहि

४२७. “धर्म आ नीति” कैं चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) कृष्णक चरित धर्मसंकट, नीति-युक्ति आ लोक-रक्षा पर विचार करबैत अछि

(B) लोक-रक्षा नहि

(C) कथा अर्थहीन अछि

(D) धर्म-नीति असम्बद्ध अछि

४२८. नीचाँमे “धर्म आ नीति”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) धर्म-नीति असम्बद्ध अछि

(B) लोक-रक्षा नहि

(C) कृष्णक चरित धर्मसंकट, नीति-युक्ति आ लोक-रक्षा पर विचार करबैत अछि

(D) कथा अर्थहीन अछि

४२९. परीक्षा-दृष्टिसँ “धर्म आ नीति” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) लोक-रक्षा नहि

(B) कृष्णक चरित धर्मसंकट, नीति-युक्ति आ लोक-रक्षा पर विचार करबैत अछि

(C) धर्म-नीति असम्बद्ध अछि

(D) कथा अर्थहीन अछि

४३०. “धर्म आ नीति”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) कथा अर्थहीन अछि

(B) कृष्णक चरित धर्मसंकट, नीति-युक्ति आ लोक-रक्षा पर विचार करबैत अछि

(C) लोक-रक्षा नहि

(D) धर्म-नीति असम्बद्ध अछि

४३१. चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवमे “शकुन्तला चन्द्रभानु सिंह” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) प्रेमक प्रश्न नहि

(B) शकुन्तला-प्रसंगक महाकाव्यात्मक रूप, प्रेम, स्मृति, विरह आ राजधर्मक कथ्यसँ जुड़ल अछि

(C) केवल छन्द-कसरत

(D) शकुन्तला पात्र नहि

४३२. “शकुन्तला चन्द्रभानु सिंह” कैं चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) शकुन्तला-प्रसंगक महाकाव्यात्मक रूप, प्रेम, स्मृति, विरह आ राजधर्मक कथ्यसँ जुड़ल अछि

(B) शकुन्तला पात्र नहि

(C) प्रेमक प्रश्न नहि

(D) केवल छन्द-कसरत

४३३. नीचाँमे “शकुन्तला चन्द्रभानु सिंह”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल छन्द-कसरत

(B) शकुन्तला पात्र नहि

(C) शकुन्तला-प्रसंगक महाकाव्यात्मक रूप, प्रेम, स्मृति, विरह आ राजधर्मक कथ्यसँ जुड़ल अछि

(D) प्रेमक प्रश्न नहि

४३४. परीक्षा-दृष्टिसँ “शकुन्तला चन्द्रभानु सिंह” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) शकुन्तला पात्र नहि

(B) शकुन्तला-प्रसंगक महाकाव्यात्मक रूप, प्रेम, स्मृति, विरह आ राजधर्मक कथ्यसँ जुड़ल अछि

(C) केवल छन्द-कसरत

(D) प्रेमक प्रश्न नहि

४३५. “शकुन्तला चन्द्रभानु सिंह”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) प्रेमक प्रश्न नहि

(B) शकुन्तला-प्रसंगक महाकाव्यात्मक रूप, प्रेम, स्मृति, विरह आ राजधर्मक कथ्यसँ जुड़ल अछि

(C) शकुन्तला पात्र नहि

(D) केवल छन्द-कसरत

४३६. चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवमे “दुष्यन्त-शकुन्तला” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) प्रेम वा राज्य नहि

(B) प्रेम, विस्मृति, अंगूठी-संकेत, स्वीकृति आ पुत्र-परम्पराक प्रसंग एहि कथा-दृष्टिमे महत्त्वपूर्ण अछि

(C) ई कथा केवल कर-सूची अछि

(D) स्मृति-विस्मृति नहि

४३७. “दुष्यन्त-शकुन्तला” कैँ चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) प्रेम, विस्मृति, अंगूठी-संकेत, स्वीकृति आ पुत्र-परम्पराक प्रसंग एहि कथा-दृष्टिमे महत्त्वपूर्ण अछि

(B) स्मृति-विस्मृति नहि

(C) प्रेम वा राज्य नहि

(D) ई कथा केवल कर-सूची अछि

४३८. नीचाँमे “दुष्यन्त-शकुन्तला”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) ई कथा केवल कर-सूची अछि

(B) स्मृति-विस्मृति नहि

(C) प्रेम, विस्मृति, अंगूठी-संकेत, स्वीकृति आ पुत्र-परम्पराक प्रसंग एहि कथा-दृष्टिमे महत्त्वपूर्ण अछि

(D) प्रेम वा राज्य नहि

४३९. परीक्षा-दृष्टिसँ “दुष्यन्त-शकुन्तला” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) स्मृति-विस्मृति नहि

(B) प्रेम, विस्मृति, अंगूठी-संकेत, स्वीकृति आ पुत्र-परम्पराक प्रसंग एहि कथा-दृष्टिमे महत्त्वपूर्ण अछि

(C) ई कथा केवल कर-सूची अछि

(D) प्रेम वा राज्य नहि

४४०. “दुष्यन्त-शकुन्तला”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) प्रेम वा राज्य नहि

(B) प्रेम, विस्मृति, अंगूठी-संकेत, स्वीकृति आ पुत्र-परम्पराक प्रसंग एहि कथा-दृष्टिमे महत्त्वपूर्ण अछि

(C) स्मृति-विस्मृति नहि

(D) ई कथा केवल कर-सूची अछि

४४१. चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवमे “अभिज्ञान प्रसंग” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) शकुन्तला-कथामे पहचान, स्मृति आ सत्य-स्वीकृतिक नाटकीय आधार बनैत अछि

(B) अभिज्ञान केवल गणित अछि

(C) पहचानक अर्थ नहि

(D) सत्य असम्बद्ध अछि

४४२. “अभिज्ञान प्रसंग” कैँ चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) पहचानक अर्थ नहि

(B) सत्य असम्बद्ध अछि

(C) अभिज्ञान केवल गणित अछि

(D) शकुन्तला-कथामे पहचान, स्मृति आ सत्य-स्वीकृतिक नाटकीय आधार बनैत अछि

४४३. नीचाँमे “अभिज्ञान प्रसंग”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) पहचानक अर्थ नहि

(B) शकुन्तला-कथामे पहचान, स्मृति आ सत्य-स्वीकृतिक नाटकीय आधार बनैत अछि

(C) सत्य असम्बद्ध अछि

(D) अभिज्ञान केवल गणित अछि

४४४. परीक्षा-दृष्टिसँ “अभिज्ञान प्रसंग” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) शकुन्तला-कथामे पहचान, स्मृति आ सत्य-स्वीकृतिक नाटकीय आधार बनैत अछि

(B) अभिज्ञान केवल गणित अछि

(C) सत्य असम्बद्ध अछि

(D) पहचानक अर्थ नहि

४४५. “अभिज्ञान प्रसंग”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) शकुन्तला-कथामे पहचान, स्मृति आ सत्य-स्वीकृतिक नाटकीय आधार बनैत अछि

(B) पहचानक अर्थ नहि

(C) अभिज्ञान केवल गणित अछि

(D) सत्य असम्बद्ध अछि

४४६. चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवमे “प्रतिज्ञा पाण्डव” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) महाभारतीय पाण्डव-प्रसंगक संकल्प, अपमान, धर्मयुद्ध आ न्याय-संघर्षक काव्यात्मक रूप

(B) केवल पाक-विधि

(C) प्रतिज्ञाक कथा नहि

(D) पाण्डव असम्बद्ध

४४७. “प्रतिज्ञा पाण्डव” कैँ चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) प्रतिज्ञाक कथा नहि

(B) पाण्डव असम्बद्ध

(C) केवल पाक-विधि

(D) महाभारतीय पाण्डव-प्रसंगक संकल्प, अपमान, धर्मयुद्ध आ न्याय-संघर्षक काव्यात्मक रूप

४४८. नीचाँमे “प्रतिज्ञा पाण्डव”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) प्रतिज्ञाक कथा नहि

(B) महाभारतीय पाण्डव-प्रसंगक संकल्प, अपमान, धर्मयुद्ध आ न्याय-संघर्षक काव्यात्मक रूप

(C) पाण्डव असम्बद्ध

(D) केवल पाक-विधि

४४९. परीक्षा-दृष्टिसँ “प्रतिज्ञा पाण्डव” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) महाभारतीय पाण्डव-प्रसंगक संकल्प, अपमान, धर्मयुद्ध आ न्याय-संघर्षक काव्यात्मक रूप

(B) केवल पाक-विधि

(C) पाण्डव असम्बद्ध

(D) प्रतिज्ञाक कथा नहि

४५०. “प्रतिज्ञा पाण्डव”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) महाभारतीय पाण्डव-प्रसंगक संकल्प, अपमान, धर्मयुद्ध आ न्याय-संघर्षक काव्यात्मक रूप

(B) प्रतिज्ञाक कथा नहि

(C) केवल पाक-विधि

(D) पाण्डव असम्बद्ध

४५१. चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवमे “संकल्प-धुरी” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) धुरी केवल पहिया अछि

(B) नाटकत्व अनुपस्थित

(C) प्रतिज्ञा कथा आगाँ बढ़ाबयवला नैतिक आ नाटकीय केन्द्र बनि सकैत अछि

(D) संकल्पक भूमिका नहि

४५२. “संकल्प-धुरी” कैँ चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) संकल्पक भूमिका नहि

(B) प्रतिज्ञा कथा आगाँ बढ़ाबयवला नैतिक आ नाटकीय केन्द्र बनि सकैत अछि

(C) धुरी केवल पहिया अछि

(D) नाटकत्व अनुपस्थित

४५३. नीचाँमे “संकल्प-धुरी”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) नाटकत्व अनुपस्थित

(B) संकल्पक भूमिका नहि

(C) धुरी केवल पहिया अछि

(D) प्रतिज्ञा कथा आगाँ बढ़ाबयवला नैतिक आ नाटकीय केन्द्र बनि सकैत अछि

४५४. परीक्षा-दृष्टिसँ “संकल्प-धुरी” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) नाटकत्व अनुपस्थित

(B) धुरी केवल पहिया अछि

(C) प्रतिज्ञा कथा आगाँ बढ़ाबयवला नैतिक आ नाटकीय केन्द्र बनि सकैत अछि

(D) संकल्पक भूमिका नहि

४५५. “संकल्प-धुरी”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) संकल्पक भूमिका नहि

(B) नाटकत्व अनुपस्थित

(C) प्रतिज्ञा कथा आगाँ बढ़ाबयवला नैतिक आ नाटकीय केन्द्र बनि सकैत अछि

(D) धुरी केवल पहिया अछि

४५६. चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवमे “धर्मयुद्ध” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) संघर्ष वर्जित

(B) पाण्डव प्रसंगमे न्याय, अधर्म-विरोध, प्रतिज्ञा आ संघर्षक अर्थ उभरैत अछि

(C) धर्मयुद्ध केवल खेल अछि

(D) न्यायक सम्बन्ध नहि

४५७. “धर्मयुद्ध” कैँ चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) पाण्डव प्रसंगमे न्याय, अधर्म-विरोध, प्रतिज्ञा आ संघर्षक अर्थ उभरैत अछि

(B) न्यायक सम्बन्ध नहि

(C) संघर्ष वर्जित

(D) धर्मयुद्ध केवल खेल अछि

४५८. नीचाँमे “धर्मयुद्ध”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) धर्मयुद्ध केवल खेल अछि

(B) न्यायक सम्बन्ध नहि

(C) पाण्डव प्रसंगमे न्याय, अधर्म-विरोध, प्रतिज्ञा आ संघर्षक अर्थ उभरैत अछि

(D) संघर्ष वर्जित

४५९. परीक्षा-दृष्टिसँ “धर्मयुद्ध” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) न्यायक सम्बन्ध नहि

(B) पाण्डव प्रसंगमे न्याय, अधर्म-विरोध, प्रतिज्ञा आ संघर्षक अर्थ उभरैत अछि

(C) धर्मयुद्ध केवल खेल अछि

(D) संघर्ष वर्जित

४६०. “धर्मयुद्ध”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) संघर्ष वर्जित

(B) पाण्डव प्रसंगमे न्याय, अधर्म-विरोध, प्रतिज्ञा आ संघर्षक अर्थ उभरैत अछि

(C) न्यायक सम्बन्ध नहि

(D) धर्मयुद्ध केवल खेल अछि

४६१. चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवमे “चरित आ आदर्श” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) पात्र सदैव सपाट होइत

(B) आदर्श नहि

(C) जटिलता काव्य-विरोधी

(D) चाणक्य, कृष्ण आ पाण्डव-जकाँ पात्र चरितक माध्यमे आदर्श आ जटिलता दुनू देखबैत छथि

४६२. “चरित आ आदर्श” कैँ चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) जटिलता काव्य-विरोधी

(B) पात्र सदैव सपाट होइत

(C) चाणक्य, कृष्ण आ पाण्डव-जकाँ पात्र चरितक माध्यमे आदर्श आ जटिलता दुनू देखबैत छथि

(D) आदर्श नहि

४६३. नीचाँमे “चरित आ आदर्श”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) चाणक्य, कृष्ण आ पाण्डव-जकाँ पात्र चरितक माध्यमे आदर्श आ जटिलता दुनू देखबैत छथि

(B) जटिलता काव्य-विरोधी

(C) पात्र सदैव सपाट होइत

(D) आदर्श नहि

४६४. परीक्षा-दृष्टिसँ “चरित आ आदर्श” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) पात्र सदैव सपाट होइत

(B) जटिलता काव्य-विरोधी

(C) आदर्श नहि

(D) चाणक्य, कृष्ण आ पाण्डव-जकाँ पात्र चरितक माध्यमे आदर्श आ जटिलता दुनू देखबैत छथि

४६५. “चरित आ आदर्श”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) आदर्श नहि

(B) पात्र सदैव सपाट होइत

(C) जटिलता काव्य-विरोधी

(D) चाणक्य, कृष्ण आ पाण्डव-जकाँ पात्र चरितक माध्यमे आदर्श आ जटिलता दुनू देखबैत छथि

४६६. चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवमे “पुराणक नव पाठ” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) रूपान्तरण असम्भव अछि

(B) पुराणक काव्यसँ सम्बन्ध नहि

(C) नव भाषा दोष अछि

(D) पुराण-इतिहासक सामग्रीकेँ मैथिली काव्यमे नव भाषा आ भावसँ रूपान्तरित कएल जा सकैत अछि

४६७. “पुराणक नव पाठ” केँ चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) नव भाषा दोष अछि

(B) रूपान्तरण असम्भव अछि

(C) पुराण-इतिहासक सामग्रीकेँ मैथिली काव्यमे नव भाषा आ भावसँ रूपान्तरित कएल जा सकैत अछि

(D) पुराणक काव्यसँ सम्बन्ध नहि

४६८. नीचाँमे “पुराणक नव पाठ”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) पुराण-इतिहासक सामग्रीकेँ मैथिली काव्यमे नव भाषा आ भावसँ रूपान्तरित कएल जा सकैत अछि

(B) नव भाषा दोष अछि

(C) रूपान्तरण असम्भव अछि

(D) पुराणक काव्यसँ सम्बन्ध नहि

४६९. परीक्षा-दृष्टिसँ “पुराणक नव पाठ” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) रूपान्तरण असम्भव अछि

(B) नव भाषा दोष अछि

(C) पुराणक काव्यसँ सम्बन्ध नहि

(D) पुराण-इतिहासक सामग्रीकेँ मैथिली काव्यमे नव भाषा आ भावसँ रूपान्तरित कएल जा सकैत अछि

४७०. “पुराणक नव पाठ”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) पुराणक काव्यसँ सम्बन्ध नहि

(B) रूपान्तरण असम्भव अछि

(C) नव भाषा दोष अछि

(D) पुराण-इतिहासक सामग्रीकेँ मैथिली काव्यमे नव भाषा आ भावसँ रूपान्तरित कएल जा सकैत अछि

४७१. चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवमे “वीरता आ बुद्धि” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) वीरता बिना बुद्धिक होइत अछि

(B) युक्ति साहित्य-विरोधी

(C) संघर्ष नहि

(D) चाणक्यक युक्ति, कृष्णक नीति आ पाण्डवक संघर्ष वीर-बुद्धि समन्वय देखबैत अछि

४७२. “वीरता आ बुद्धि” केँ चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) संघर्ष नहि

(B) वीरता बिना बुद्धिक होइत अछि

(C) चाणक्यक युक्ति, कृष्णक नीति आ पाण्डवक संघर्ष वीर-बुद्धि समन्वय देखबैत अछि

(D) युक्ति साहित्य-विरोधी

४७३. नीचाँमे “वीरता आ बुद्धि”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) चाणक्यक युक्ति, कृष्णक नीति आ पाण्डवक संघर्ष वीर-बुद्धि समन्वय देखबैत अछि

(B) संघर्ष नहि

(C) वीरता बिना बुद्धिक होइत अछि

(D) युक्ति साहित्य-विरोधी

४७४. परीक्षा-दृष्टिसँ “वीरता आ बुद्धि” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) वीरता बिना बुद्धिक होइत अछि

(B) संघर्ष नहि

(C) युक्ति साहित्य-विरोधी

(D) चाणक्यक युक्ति, कृष्णक नीति आ पाण्डवक संघर्ष वीर-बुद्धि समन्वय देखबैत अछि

४७५. “वीरता आ बुद्धि”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) युक्ति साहित्य-विरोधी

(B) वीरता बिना बुद्धिक होइत अछि

(C) संघर्ष नहि

(D) चाणक्यक युक्ति, कृष्णक नीति आ पाण्डवक संघर्ष वीर-बुद्धि समन्वय देखबैत अछि

४७६. चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवमे “स्त्री-पात्रक भूमिका” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) मातृत्व असम्बद्ध

(B) राज्यक भूमिका नहि

(C) शकुन्तला कथा प्रेम, स्मृति, मातृत्व आ राजकीय स्वीकृतिक स्त्री-पक्ष खोलैत अछि

(D) स्त्री-पक्ष नहि

४७७. “स्त्री-पात्रक भूमिका” कैँ चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) स्त्री-पक्ष नहि

(B) शकुन्तला कथा प्रेम, स्मृति, मातृत्व आ राजकीय स्वीकृतिक स्त्री-पक्ष खोलैत अछि

(C) मातृत्व असम्बद्ध

(D) राज्यक भूमिका नहि

४७८. नीचाँमे “स्त्री-पात्रक भूमिका”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) राज्यक भूमिका नहि

(B) स्त्री-पक्ष नहि

(C) मातृत्व असम्बद्ध

(D) शकुन्तला कथा प्रेम, स्मृति, मातृत्व आ राजकीय स्वीकृतिक स्त्री-पक्ष खोलैत अछि

४७९. परीक्षा-दृष्टिसँ “स्त्री-पात्रक भूमिका” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) राज्यक भूमिका नहि

(B) मातृत्व असम्बद्ध

(C) शकुन्तला कथा प्रेम, स्मृति, मातृत्व आ राजकीय स्वीकृतिक स्त्री-पक्ष खोलैत अछि

(D) स्त्री-पक्ष नहि

४८०. “स्त्री-पात्रक भूमिका”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) स्त्री-पक्ष नहि

(B) राज्यक भूमिका नहि

(C) शकुन्तला कथा प्रेम, स्मृति, मातृत्व आ राजकीय स्वीकृतिक स्त्री-पक्ष खोलैत अछि

(D) मातृत्व असम्बद्ध

४८१. चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवमे “राजसत्ता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) राजसत्ता काव्य-वर्जित अछि

(B) वंशक कथासँ सम्बन्ध नहि

(C) न्याय नहि

(D) चाणक्य, शकुन्तला आ पाण्डव प्रसंगमे राज्य, वंश, नीति आ न्यायक प्रश्न उठैत अछि

४८२. “राजसत्ता” कैँ चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) न्याय नहि

(B) राजसत्ता काव्य-वर्जित अछि

(C) चाणक्य, शकुन्तला आ पाण्डव प्रसंगमे राज्य, वंश, नीति आ न्यायक प्रश्न उठैत अछि

(D) वंशक कथासँ सम्बन्ध नहि

४८३. नीचाँमे “राजसत्ता”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) चाणक्य, शकुन्तला आ पाण्डव प्रसंगमे राज्य, वंश, नीति आ न्यायक प्रश्न उठैत अछि

(B) न्याय नहि

(C) राजसत्ता काव्य-वर्जित अछि

(D) वंशक कथासँ सम्बन्ध नहि

४८४. परीक्षा-दृष्टिसँ “राजसत्ता” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) राजसत्ता काव्य-वर्जित अछि

(B) न्याय नहि

(C) वंशक कथासँ सम्बन्ध नहि

(D) चाणक्य, शकुन्तला आ पाण्डव प्रसंगमे राज्य, वंश, नीति आ न्यायक प्रश्न उठैत अछि

४८५. “राजसत्ता”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) वंशक कथासँ सम्बन्ध नहि

(B) राजसत्ता काव्य-वर्जित अछि

(C) न्याय नहि

(D) चाणक्य, शकुन्तला आ पाण्डव प्रसंगमे राज्य, वंश, नीति आ न्यायक प्रश्न उठैत अछि

४८६. चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवमे “नैतिक दुविधा” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) महाकाव्य पात्रसभ केवल सरल आदर्श नहि, अनेक संकट आ निर्णयक बीच देखल जाइत छथि

(B) दुविधा कविता बिगाड़ैत अछि

(C) निर्णय प्रसंग नहि

(D) संकट असाहित्यिक

४८७. “नैतिक दुविधा” कैँ चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) निर्णय प्रसंग नहि

(B) संकट असाहित्यिक

(C) दुविधा कविता बिगाड़ैत अछि

(D) महाकाव्य पात्रसभ केवल सरल आदर्श नहि, अनेक संकट आ निर्णयक बीच देखल जाइत छथि

४८८. नीचाँमे “नैतिक दुविधा”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) निर्णय प्रसंग नहि

(B) महाकाव्य पात्रसभ केवल सरल आदर्श नहि, अनेक संकट आ निर्णयक बीच देखल जाइत छथि

(C) संकट असाहित्यिक

(D) दुविधा कविता बिगाड़ैत अछि

४८९. परीक्षा-दृष्टिसँ “नैतिक दुविधा” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) महाकाव्य पात्रसभ केवल सरल आदर्श नहि, अनेक संकट आ निर्णयक बीच देखल जाइत छथि

(B) दुविधा कविता बिगाड़ैत अछि

(C) संकट असाहित्यिक

(D) निर्णय प्रसंग नहि

४९०. “नैतिक दुविधा”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) महाकाव्य पात्रसभ केवल सरल आदर्श नहि, अनेक संकट आ निर्णयक बीच देखल जाइत छथि

(B) निर्णय प्रसंग नहि

(C) दुविधा कविता बिगाड़ैत अछि

(D) संकट असाहित्यिक

४९१. चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवमे “रसात्मकता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) एहि कृतिसभमे वीर, करुण, शृङ्गार, अद्भुत, शान्त आदि रसक विविधता सम्भव अछि

(B) रसक विविधता नहि

(C) एहि सभमे केवल हास्य होइत

(D) रस-सिद्धान्त असम्बद्ध

४९२. “रसात्मकता” कैँ चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) एहि सभमे केवल हास्य होइत

(B) रस-सिद्धान्त असम्बद्ध

(C) रसक विविधता नहि

(D) एहि कृतिसभमे वीर, करुण, शृङ्गार, अद्भुत, शान्त आदि रसक विविधता सम्भव अछि

४९३. नीचाँमे “रसात्मकता”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) एहि सभमे केवल हास्य होइत

(B) एहि कृतिसभमे वीर, करुण, शृङ्गार, अद्भुत, शान्त आदि रसक विविधता सम्भव अछि

(C) रस-सिद्धान्त असम्बद्ध

(D) रसक विविधता नहि

४९४. परीक्षा-दृष्टिसँ “रसात्मकता” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) एहि कृतिसभमे वीर, करुण, शृङ्गार, अद्भुत, शान्त आदि रसक विविधता सम्भव अछि

(B) रसक विविधता नहि

(C) रस-सिद्धान्त असम्बद्ध

(D) एहि सभमे केवल हास्य होइत

४९५. “रसात्मकता”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) एहि कृतिसभमे वीर, करुण, शृङ्गार, अद्भुत, शान्त आदि रसक विविधता सम्भव अछि

(B) एहि सभमे केवल हास्य होइत

(C) रसक विविधता नहि

(D) रस-सिद्धान्त असम्बद्ध

४९६. चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवमे “कृति-स्थान” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डव महाकाव्य-सूचीमे विषयानुसार अलग-अलग कथाक्षेत्र खोलैत अछि

(B) सभ केवल खण्डकाव्यक नाम

(C) सभ पत्रिका-शीर्षक

(D) कृतिसभमे कथ्य नहि

४९७. “कृति-स्थान” कैँ चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डवक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) सभ पत्रिका-शीर्षक

(B) कृतिसभमे कथ्य नहि

(C) सभ केवल खण्डकाव्यक नाम

(D) चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डव महाकाव्य-सूचीमे विषयानुसार अलग-अलग कथाक्षेत्र खोलैत अछि

४९८. नीचाँमे “कृति-स्थान”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) सभ पत्रिका-शीर्षक

(B) चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डव महाकाव्य-सूचीमे विषयानुसार अलग-अलग कथाक्षेत्र खोलैत अछि

(C) कृतिसभमे कथ्य नहि

(D) सभ केवल खण्डकाव्यक नाम

४९९. परीक्षा-दृष्टिसँ “कृति-स्थान” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डव महाकाव्य-सूचीमे विषयानुसार अलग-अलग कथाक्षेत्र खोलैत अछि

(B) सभ केवल खण्डकाव्यक नाम

(C) कृतिसभमे कथ्य नहि

(D) सभ पत्रिका-शीर्षक

५००. “कृति-स्थान”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डव महाकाव्य-सूचीमे विषयानुसार अलग-अलग कथाक्षेत्र खोलैत अछि

(B) सभ पत्रिका-शीर्षक

(C) सभ केवल खण्डकाव्यक नाम

(D) कृतिसभमे कथ्य नहि

sec5

५०१. खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदमे “खण्डकाव्य” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) पूर्ण समाचार-विज्ञापन

(B) कथा वा जीवनक एक महत्त्वपूर्ण खण्ड, प्रसंग वा भावकेँ केन्द्र बनाबयवला काव्य-रूप

(C) सर्वग्रासी विश्वकोश

(D) केवल व्याकरण-सूत्र

५०२. “खण्डकाव्य” कैँ खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) कथा वा जीवनक एक महत्त्वपूर्ण खण्ड, प्रसंग वा भावकेँ केन्द्र बनाबयवला काव्य-रूप

(B) केवल व्याकरण-सूत्र

(C) पूर्ण समाचार-विज्ञापन

(D) सर्वग्रासी विश्वकोश

५०३. नीचाँमे “खण्डकाव्य”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) पूर्ण समाचार-विज्ञापन

(B) सर्वग्रासी विश्वकोश

(C) केवल व्याकरण-सूत्र

(D) कथा वा जीवनक एक महत्त्वपूर्ण खण्ड, प्रसंग वा भावकेँ केन्द्र बनाबयवला काव्य-रूप

५०४. परीक्षा-दृष्टिसँ “खण्डकाव्य” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) पूर्ण समाचार-विज्ञापन

(B) केवल व्याकरण-सूत्र

(C) कथा वा जीवनक एक महत्त्वपूर्ण खण्ड, प्रसंग वा भावकेँ केन्द्र बनाबयवला काव्य-रूप

(D) सर्वग्रासी विश्वकोश

५०५. “खण्डकाव्य”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) सर्वग्रासी विश्वकोश

(B) पूर्ण समाचार-विज्ञापन

(C) कथा वा जीवनक एक महत्त्वपूर्ण खण्ड, प्रसंग वा भावकेँ केन्द्र बनाबयवला काव्य-रूप

(D) केवल व्याकरण-सूत्र

५०६. खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदमे “महाकाव्यसँ भेद” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) महाकाव्य एक पंक्ति मात्र

(B) खण्डकाव्य सीमित प्रसंग पर केन्द्रित रहैत अछि, महाकाव्य व्यापक कथा-विस्तार लैत अछि

(C) दूनूमे कोनो भेद नहि

(D) खण्डकाव्य सदैव हजार सर्गक होइत

५०७. “महाकाव्यसँ भेद” केँ खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) खण्डकाव्य सीमित प्रसंग पर केन्द्रित रहैत अछि, महाकाव्य व्यापक कथा-विस्तार लैत अछि

(B) खण्डकाव्य सदैव हजार सर्गक होइत

(C) महाकाव्य एक पंक्ति मात्र

(D) दूनूमे कोनो भेद नहि

५०८. नीचाँमे “महाकाव्यसँ भेद”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) महाकाव्य एक पंक्ति मात्र

(B) दूनूमे कोनो भेद नहि

(C) खण्डकाव्य सदैव हजार सर्गक होइत

(D) खण्डकाव्य सीमित प्रसंग पर केन्द्रित रहैत अछि, महाकाव्य व्यापक कथा-विस्तार लैत अछि

५०९. परीक्षा-दृष्टिसँ “महाकाव्यसँ भेद” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) महाकाव्य एक पंक्ति मात्र

(B) खण्डकाव्य सदैव हजार सर्गक होइत

(C) खण्डकाव्य सीमित प्रसंग पर केन्द्रित रहैत अछि, महाकाव्य व्यापक कथा-विस्तार लैत अछि

(D) दूनूमे कोनो भेद नहि

५१०. “महाकाव्यसँ भेद”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) दूनूमे कोनो भेद नहि

(B) महाकाव्य एक पंक्ति मात्र

(C) खण्डकाव्य सीमित प्रसंग पर केन्द्रित रहैत अछि, महाकाव्य व्यापक कथा-विस्तार लैत अछि

(D) खण्डकाव्य सदैव हजार सर्गक होइत

५११. खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदमे “एक प्रसंगक गहनता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) खण्डकाव्य विस्तार कम राखि भाव, संकट वा चरित्रक एक बिन्दु गाढ़ करैत अछि

(B) गहनता नहि होइत

(C) एक प्रसंग काव्य नहि बनि सकैत

(D) भावक भूमिका नहि

५१२. “एक प्रसंगक गहनता” केँ खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) एक प्रसंग काव्य नहि बनि सकैत

(B) भावक भूमिका नहि

(C) गहनता नहि होइत

(D) खण्डकाव्य विस्तार कम राखि भाव, संकट वा चरित्रक एक बिन्दु गाढ़ करैत अछि

५१३. नीचाँमे “एक प्रसंगक गहनता”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) गहनता नहि होइत

(B) एक प्रसंग काव्य नहि बनि सकैत

(C) खण्डकाव्य विस्तार कम राखि भाव, संकट वा चरित्रक एक बिन्दु गाढ़ करैत अछि

(D) भावक भूमिका नहि

५१४. परीक्षा-दृष्टिसँ “एक प्रसंगक गहनता” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) एक प्रसंग काव्य नहि बनि सकैत

(B) खण्डकाव्य विस्तार कम राखि भाव, संकट वा चरित्रक एक बिन्दु गाढ़ करैत अछि

(C) गहनता नहि होइत

(D) भावक भूमिका नहि

५१५. “एक प्रसंगक गहनता”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) भावक भूमिका नहि

(B) खण्डकाव्य विस्तार कम राखि भाव, संकट वा चरित्रक एक बिन्दु गाढ़ करैत अछि

(C) एक प्रसंग काव्य नहि बनि सकैत

(D) गहनता नहि होइत

५१६. खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदमे “नाटकीय केन्द्र” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) नाटकीयता वर्जित

(B) मोड़ अर्थहीन

(C) मनोस्थिति नहि

(D) संक्षिप्त कथ्यक कारण खण्डकाव्यमे घटना, मोड़ वा मनोस्थिति तीव्र बनैत अछि

५१७. “नाटकीय केन्द्र” कैँ खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) मनोस्थिति नहि

(B) नाटकीयता वर्जित

(C) संक्षिप्त कथ्यक कारण खण्डकाव्यमे घटना, मोड़ वा मनोस्थिति तीव्र बनैत अछि

(D) मोड़ अर्थहीन

५१८. नीचाँमे “नाटकीय केन्द्र”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) मोड़ अर्थहीन

(B) संक्षिप्त कथ्यक कारण खण्डकाव्यमे घटना, मोड़ वा मनोस्थिति तीव्र बनैत अछि

(C) मनोस्थिति नहि

(D) नाटकीयता वर्जित

५१९. परीक्षा-दृष्टिसँ “नाटकीय केन्द्र” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) संक्षिप्त कथ्यक कारण खण्डकाव्यमे घटना, मोड़ वा मनोस्थिति तीव्र बनैत अछि

(B) नाटकीयता वर्जित

(C) मनोस्थिति नहि

(D) मोड़ अर्थहीन

५२०. “नाटकीय केन्द्र”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) संक्षिप्त कथ्यक कारण खण्डकाव्यमे घटना, मोड़ वा मनोस्थिति तीव्र बनैत अछि

(B) मोड़ अर्थहीन

(C) नाटकीयता वर्जित

(D) मनोस्थिति नहि

५२१. खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदमे “भाव-सघनता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) काव्य सदैव भावहीन

(B) छोट फलक पर करुण, वीर, शृङ्गार वा चिन्तनक तीव्रता व्यक्त होइत अछि

(C) भाव-सघनता दोष अछि

(D) छोट फलकमे रस नहि

५२२. “भाव-सघनता” कैँ खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) छोट फलक पर करुण, वीर, शृङ्गार वा चिन्तनक तीव्रता व्यक्त होइत अछि

(B) छोट फलकमे रस नहि

(C) काव्य सदैव भावहीन

(D) भाव-सघनता दोष अछि

५२३. नीचाँमे “भाव-सघनता”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) काव्य सदैव भावहीन

(B) भाव-सघनता दोष अछि

(C) छोट फलकमे रस नहि

(D) छोट फलक पर करुण, वीर, शृङ्गार वा चिन्तनक तीव्रता व्यक्त होइत अछि

५२४. परीक्षा-दृष्टिसँ “भाव-सघनता” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) काव्य सदैव भावहीन

(B) छोट फलकमे रस नहि

(C) छोट फलक पर करुण, वीर, शृङ्गार वा चिन्तनक तीव्रता व्यक्त होइत अछि

(D) भाव-सघनता दोष अछि

५२५. “भाव-सघनता”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) भाव-सघनता दोष अछि

(B) काव्य सदैव भावहीन

(C) छोट फलक पर करुण, वीर, शृङ्गार वा चिन्तनक तीव्रता व्यक्त होइत अछि

(D) छोट फलकमे रस नहि

५२६. खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदमे “चरित्र-क्षण” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) पात्रक जीवनक निर्णायक क्षण खण्डकाव्यक केन्द्र बनि सकैत अछि

(B) चरित्र क्षण नहि होइत

(C) निर्णय असम्बद्ध

(D) पात्रक अर्थ नहि

५२७. “चरित्र-क्षण” कैँ खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) निर्णय असम्बद्ध

(B) पात्रक अर्थ नहि

(C) चरित्र क्षण नहि होइत

(D) पात्रक जीवनक निर्णायक क्षण खण्डकाव्यक केन्द्र बनि सकैत अछि

५२८. नीचाँमे “चरित्र-क्षण”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) चरित्र क्षण नहि होइत

(B) निर्णय असम्बद्ध

(C) पात्रक जीवनक निर्णायक क्षण खण्डकाव्यक केन्द्र बनि सकैत अछि

(D) पात्रक अर्थ नहि

५२९. परीक्षा-दृष्टिसँ “चरित्र-क्षण” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) निर्णय असम्बद्ध

(B) पात्रक जीवनक निर्णायक क्षण खण्डकाव्यक केन्द्र बनि सकैत अछि

(C) चरित्र क्षण नहि होइत

(D) पात्रक अर्थ नहि

५३०. “चरित्र-क्षण”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) पात्रक अर्थ नहि

(B) पात्रक जीवनक निर्णायक क्षण खण्डकाव्यक केन्द्र बनि सकैत अछि

(C) निर्णय असम्बद्ध

(D) चरित्र क्षण नहि होइत

५३१. खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदमे “सांकेतिकता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) सीमित प्रसंग निरर्थक

(B) मानवीय अर्थ नहि

(C) सीमित प्रसंग व्यापक मानवीय अर्थक प्रतीक बनि सकैत अछि

(D) प्रतीक काव्य-विरोधी

५३२. “सांकेतिकता” कैँ खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) प्रतीक काव्य-विरोधी

(B) सीमित प्रसंग व्यापक मानवीय अर्थक प्रतीक बनि सकैत अछि

(C) सीमित प्रसंग निरर्थक

(D) मानवीय अर्थ नहि

५३३. नीचाँमे “सांकेतिकता”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) सीमित प्रसंग व्यापक मानवीय अर्थक प्रतीक बनि सकैत अछि

(B) मानवीय अर्थ नहि

(C) प्रतीक काव्य-विरोधी

(D) सीमित प्रसंग निरर्थक

५३४. परीक्षा-दृष्टिसँ “सांकेतिकता” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) प्रतीक काव्य-विरोधी

(B) मानवीय अर्थ नहि

(C) सीमित प्रसंग निरर्थक

(D) सीमित प्रसंग व्यापक मानवीय अर्थक प्रतीक बनि सकैत अछि

५३५. “सांकेतिकता”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) सीमित प्रसंग निरर्थक

(B) प्रतीक काव्य-विरोधी

(C) मानवीय अर्थ नहि

(D) सीमित प्रसंग व्यापक मानवीय अर्थक प्रतीक बनि सकैत अछि

५३६. खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदमे “भाषिक कसावट” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) भाषा शिथिल होएबे चाही

(B) संक्षिप्ति दोष मात्र

(C) खण्डकाव्यमे अनावश्यक विस्तार छोड़ि सघन भाषा अपेक्षित होइत अछि

(D) कसावट असाहित्यिक

५३७. “भाषिक कसावट” कैँ खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) कसावट असाहित्यिक

(B) खण्डकाव्यमे अनावश्यक विस्तार छोड़ि सघन भाषा अपेक्षित होइत अछि

(C) भाषा शिथिल होएबे चाही

(D) संक्षिप्ति दोष मात्र

५३८. नीचाँमे “भाषिक कसावट”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) खण्डकाव्यमे अनावश्यक विस्तार छोड़ि सघन भाषा अपेक्षित होइत अछि

(B) संक्षिप्ति दोष मात्र

(C) कसावट असाहित्यिक

(D) भाषा शिथिल होएबे चाही

५३९. परीक्षा-दृष्टिसँ “भाषिक कसावट” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) कसावट असाहित्यिक

(B) संक्षिप्ति दोष मात्र

(C) भाषा शिथिल होएबे चाही

(D) खण्डकाव्यमे अनावश्यक विस्तार छोड़ि सघन भाषा अपेक्षित होइत अछि

५४०. “भाषिक कसावट”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) भाषा शिथिल होएबे चाही

(B) कसावट असाहित्यिक

(C) संक्षिप्ति दोष मात्र

(D) खण्डकाव्यमे अनावश्यक विस्तार छोड़ि सघन भाषा अपेक्षित होइत अछि

५४१. खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदमे “विषय-विविधता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) विषय-भेद नहि

(B) नामक अर्थ नहि

(C) शकुन्तला, भारती, पतन, उत्तरा, उत्सर्ग, एकलव्य, नोर—सभ अलग भाव-क्षेत्र खोलैत अछि

(D) सभ एकहि घटना अछि

५४२. “विषय-विविधता” कैँ खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) सभ एकहि घटना अछि

(B) शकुन्तला, भारती, पतन, उत्तरा, उत्सर्ग, एकलव्य, नोर—सभ अलग भाव-क्षेत्र खोलैत अछि

(C) विषय-भेद नहि

(D) नामक अर्थ नहि

५४३. नीचाँमे “विषय-विविधता”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) शकुन्तला, भारती, पतन, उत्तरा, उत्सर्ग, एकलव्य, नोर—सभ अलग भाव-क्षेत्र खोलैत अछि

(B) नामक अर्थ नहि

(C) सभ एकहि घटना अछि

(D) विषय-भेद नहि

५४४. परीक्षा-दृष्टिसँ “विषय-विविधता” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) सभ एकहि घटना अछि

(B) नामक अर्थ नहि

(C) विषय-भेद नहि

(D) शकुन्तला, भारती, पतन, उत्तरा, उत्सर्ग, एकलव्य, नोर—सभ अलग भाव-क्षेत्र खोलैत अछि

५४५. “विषय-विविधता”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) विषय-भेद नहि

(B) सभ एकहि घटना अछि

(C) नामक अर्थ नहि

(D) शकुन्तला, भारती, पतन, उत्तरा, उत्सर्ग, एकलव्य, नोर—सभ अलग भाव-क्षेत्र खोलैत अछि

५४६. खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदमे “काव्यात्मक एकता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) खण्डकाव्यक प्रभाव ओकर केन्द्र, भाव आ संरचनाक एकतासँ बनैत अछि

(B) एकता निरर्थक अछि

(C) काव्य बिखरल होएबे चाही

(D) संरचना नष्ट करबाक वस्तु

५४७. “काव्यात्मक एकता” कैं खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) काव्य बिखरल होएबे चाही

(B) संरचना नष्ट करबाक वस्तु

(C) एकता निरर्थक अछि

(D) खण्डकाव्यक प्रभाव ओकर केन्द्र, भाव आ संरचनाक एकतासँ बनैत अछि

५४८. नीचाँमे “काव्यात्मक एकता”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) एकता निरर्थक अछि

(B) काव्य बिखरल होएबे चाही

(C) खण्डकाव्यक प्रभाव ओकर केन्द्र, भाव आ संरचनाक एकतासँ बनैत अछि

(D) संरचना नष्ट करबाक वस्तु

५४९. परीक्षा-दृष्टिसँ “काव्यात्मक एकता” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) काव्य बिखरल होएबे चाही

(B) खण्डकाव्यक प्रभाव ओकर केन्द्र, भाव आ संरचनाक एकतासँ बनैत अछि

(C) एकता निरर्थक अछि

(D) संरचना नष्ट करबाक वस्तु

५५०. “काव्यात्मक एकता”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) संरचना नष्ट करबाक वस्तु

(B) खण्डकाव्यक प्रभाव ओकर केन्द्र, भाव आ संरचनाक एकतासँ बनैत अछि

(C) काव्य बिखरल होएबे चाही

(D) एकता निरर्थक अछि

५५१. खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदमे “शीर्षकक अर्थ” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) खण्डकाव्यक शीर्षक प्रायः पात्र, घटना, भाव वा प्रतीकक संकेत दैत अछि

(B) शीर्षक सदैव संयोग मात्र

(C) शीर्षक पढ़बाक नहि

(D) अर्थहीन ध्वनि मात्र

५५२. “शीर्षकक अर्थ” कैं खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) शीर्षक पढ़बाक नहि

(B) अर्थहीन ध्वनि मात्र

(C) शीर्षक सदैव संयोग मात्र

(D) खण्डकाव्यक शीर्षक प्रायः पात्र, घटना, भाव वा प्रतीकक संकेत दैत अछि

५५३. नीचाँमे “शीर्षकक अर्थ”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) शीर्षक सदैव संयोग मात्र

(B) शीर्षक पढ़बाक नहि

(C) खण्डकाव्यक शीर्षक प्रायः पात्र, घटना, भाव वा प्रतीकक संकेत दैत अछि

(D) अर्थहीन ध्वनि मात्र

५५४. परीक्षा-दृष्टिसँ “शीर्षकक अर्थ” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) शीर्षक पढ़बाक नहि

(B) खण्डकाव्यक शीर्षक प्रायः पात्र, घटना, भाव वा प्रतीकक संकेत दैत अछि

(C) शीर्षक सदैव संयोग मात्र

(D) अर्थहीन ध्वनि मात्र

५५५. “शीर्षकक अर्थ”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) अर्थहीन ध्वनि मात्र

(B) खण्डकाव्यक शीर्षक प्रायः पात्र, घटना, भाव वा प्रतीकक संकेत दैत अछि

(C) शीर्षक पढ़बाक नहि

(D) शीर्षक सदैव संयोग मात्र

५५६. खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदमे “आधुनिक संवेदना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) आधुनिक प्रश्न वर्जित

(B) पुरान कथा सदैव मृत

(C) संवेदना नहि

(D) किछु खण्डकाव्य पुरान कथा वा प्रतीकद्वारा आधुनिक प्रश्न उठबैत अछि

५५७. “आधुनिक संवेदना” केँ खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) संवेदना नहि

(B) आधुनिक प्रश्न वर्जित

(C) किछु खण्डकाव्य पुरान कथा वा प्रतीकद्वारा आधुनिक प्रश्न उठबैत अछि

(D) पुरान कथा सदैव मृत

५५८. नीचाँमे “आधुनिक संवेदना”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) पुरान कथा सदैव मृत

(B) किछु खण्डकाव्य पुरान कथा वा प्रतीकद्वारा आधुनिक प्रश्न उठबैत अछि

(C) संवेदना नहि

(D) आधुनिक प्रश्न वर्जित

५५९. परीक्षा-दृष्टिसँ “आधुनिक संवेदना” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) किछु खण्डकाव्य पुरान कथा वा प्रतीकद्वारा आधुनिक प्रश्न उठबैत अछि

(B) आधुनिक प्रश्न वर्जित

(C) संवेदना नहि

(D) पुरान कथा सदैव मृत

५६०. “आधुनिक संवेदना”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) किछु खण्डकाव्य पुरान कथा वा प्रतीकद्वारा आधुनिक प्रश्न उठबैत अछि

(B) पुरान कथा सदैव मृत

(C) आधुनिक प्रश्न वर्जित

(D) संवेदना नहि

५६१. खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदमे “करुण रस” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) करुण रस असम्भव

(B) नोर केवल हँसीक अर्थ

(C) पतन सुख-उत्सव मात्र

(D) उत्तरा, पतन, नोर जकाँ शीर्षक करुण भावक सम्भावना खोलि सकैत अछि

५६२. “करुण रस” कैँ खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) पतन सुख-उत्सव मात्र

(B) करुण रस असम्भव

(C) उत्तरा, पतन, नोर जकाँ शीर्षक करुण भावक सम्भावना खोलि सकैत अछि

(D) नोर केवल हँसीक अर्थ

५६३. नीचाँमे “करुण रस”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) नोर केवल हँसीक अर्थ

(B) उत्तरा, पतन, नोर जकाँ शीर्षक करुण भावक सम्भावना खोलि सकैत अछि

(C) पतन सुख-उत्सव मात्र

(D) करुण रस असम्भव

५६४. परीक्षा-दृष्टिसँ “करुण रस” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) उत्तरा, पतन, नोर जकाँ शीर्षक करुण भावक सम्भावना खोलि सकैत अछि

(B) करुण रस असम्भव

(C) पतन सुख-उत्सव मात्र

(D) नोर केवल हँसीक अर्थ

५६५. “करुण रस”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) उत्तरा, पतन, नोर जकाँ शीर्षक करुण भावक सम्भावना खोलि सकैत अछि

(B) नोर केवल हँसीक अर्थ

(C) करुण रस असम्भव

(D) पतन सुख-उत्सव मात्र

५६६. खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदमे “वीर प्रसंग” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) स्वाभिमान असाहित्यिक

(B) एकलव्य वा प्रतिज्ञा-जकाँ प्रसंग संघर्ष, स्वाभिमान आ साहसक भाव दैत अछि

(C) वीरता नष्ट करबयवला तत्त्व

(D) संघर्ष नहि

५६७. “वीर प्रसंग” कैँ खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) एकलव्य वा प्रतिज्ञा-जकाँ प्रसंग संघर्ष, स्वाभिमान आ साहसक भाव दैत अछि

(B) संघर्ष नहि

(C) स्वाभिमान असाहित्यिक

(D) वीरता नष्ट करबयवला तत्त्व

५६८. नीचाँमे “वीर प्रसंग”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) स्वाभिमान असाहित्यिक

(B) वीरता नष्ट करबयवला तत्त्व

(C) संघर्ष नहि

(D) एकलव्य वा प्रतिज्ञा-जकाँ प्रसंग संघर्ष, स्वाभिमान आ साहसक भाव दैत अछि

५६९. परीक्षा-दृष्टिसँ “वीर प्रसंग” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) स्वाभिमान असाहित्यिक

(B) संघर्ष नहि

(C) एकलव्य वा प्रतिज्ञा-जकाँ प्रसंग संघर्ष, स्वाभिमान आ साहसक भाव दैत अछि

(D) वीरता नष्ट करबयवला तत्त्व

५७०. “वीर प्रसंग”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) वीरता नष्ट करबयवला तत्त्व

(B) स्वाभिमान असाहित्यिक

(C) एकलव्य वा प्रतिज्ञा-जकाँ प्रसंग संघर्ष, स्वाभिमान आ साहसक भाव दैत अछि

(D) संघर्ष नहि

५७१. खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदमे “राष्ट्र वा जन-चेतना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) भारती केवल निरर्थक शब्द

(B) भारती वा उत्सर्ग जकाँ शीर्षक सामूहिक समर्पण, भाषा वा देश-भावक संकेत दऽ सकैत अछि

(C) समूह भावना नहि

(D) उत्सर्गक अर्थ संग्रह

५७२. “राष्ट्र वा जन-चेतना” कैँ खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) भारती वा उत्सर्ग जकाँ शीर्षक सामूहिक समर्पण, भाषा वा देश-भावक संकेत दऽ सकैत अछि

(B) उत्सर्गक अर्थ संग्रह

(C) भारती केवल निरर्थक शब्द

(D) समूह भावना नहि

५७३. नीचाँमे “राष्ट्र वा जन-चेतना”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) भारती केवल निरर्थक शब्द

(B) समूह भावना नहि

(C) उत्सर्गक अर्थ संग्रह

(D) भारती वा उत्सर्ग जकाँ शीर्षक सामूहिक समर्पण, भाषा वा देश-भावक संकेत दऽ सकैत अछि

५७४. परीक्षा-दृष्टिसँ “राष्ट्र वा जन-चेतना” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) भारती केवल निरर्थक शब्द

(B) उत्सर्गक अर्थ संग्रह

(C) भारती वा उत्सर्ग जकाँ शीर्षक सामूहिक समर्पण, भाषा वा देश-भावक संकेत दऽ सकैत अछि

(D) समूह भावना नहि

५७५. “राष्ट्र वा जन-चेतना”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) समूह भावना नहि

(B) भारती केवल निरर्थक शब्द

(C) भारती वा उत्सर्ग जकाँ शीर्षक सामूहिक समर्पण, भाषा वा देश-भावक संकेत दऽ सकैत अछि

(D) उत्सर्गक अर्थ संग्रह

५७६. खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदमे “मनोवैज्ञानिकता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) भीतरक द्वन्द्व नहि

(B) मनोविज्ञान काव्य-विरोधी

(C) भावोच्छ्वास नहि

(D) सीमित कथावस्तु पात्रक भीतरक द्वन्द्व आ भावोच्छ्वास खोलबाक अवसर दैत अछि

५७७. “मनोवैज्ञानिकता” कैँ खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) भावोच्छ्वास नहि

(B) भीतरक द्वन्द्व नहि

(C) सीमित कथावस्तु पात्रक भीतरक द्वन्द्व आ भावोच्छ्वास खोलबाक अवसर दैत अछि

(D) मनोविज्ञान काव्य-विरोधी

५७८. नीचाँमे “मनोवैज्ञानिकता”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) मनोविज्ञान काव्य-विरोधी

(B) सीमित कथावस्तु पात्रक भीतरक द्वन्द्व आ भावोच्छ्वास खोलबाक अवसर दैत अछि

(C) भावोच्छ्वास नहि

(D) भीतरक द्वन्द्व नहि

५७९. परीक्षा-दृष्टिसँ “मनोवैज्ञानिकता” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) सीमित कथावस्तु पात्रक भीतरक द्वन्द्व आ भावोच्छ्वास खोलबाक अवसर दैत अछि

(B) भीतरक द्वन्द्व नहि

(C) भावोच्छ्वास नहि

(D) मनोविज्ञान काव्य-विरोधी

५८०. “मनोवैज्ञानिकता”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) सीमित कथावस्तु पात्रक भीतरक द्वन्द्व आ भावोच्छ्वास खोलबाक अवसर दैत अछि

(B) मनोविज्ञान काव्य-विरोधी

(C) भीतरक द्वन्द्व नहि

(D) भावोच्छ्वास नहि

५८१. खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदमे “अध्ययन-पद्धति” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) भाव न देखब

(B) प्रत्येक खण्डकाव्यकेँ शीर्षक, कथ्य, भाव, पात्र, प्रतीक आ भाषा सँ पढ़ब चाही

(C) केवल पन्ना गनब

(D) शीर्षक छोड़ब

५८२. “अध्ययन-पद्धति” कैँ खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) प्रत्येक खण्डकाव्यकेँ शीर्षक, कथ्य, भाव, पात्र, प्रतीक आ भाषा सँ पढ़ब चाही

(B) शीर्षक छोड़ब

(C) भाव न देखब

(D) केवल पन्ना गनब

५८३. नीचाँमे “अध्ययन-पद्धति”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) भाव न देखब

(B) केवल पन्ना गनब

(C) शीर्षक छोड़ब

(D) प्रत्येक खण्डकाव्यकेँ शीर्षक, कथ्य, भाव, पात्र, प्रतीक आ भाषा सँ पढ़ब चाही

५८४. परीक्षा-दृष्टिसँ “अध्ययन-पद्धति” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) भाव न देखब

(B) शीर्षक छोड़ब

(C) प्रत्येक खण्डकाव्यकेँ शीर्षक, कथ्य, भाव, पात्र, प्रतीक आ भाषा सँ पढ़ब चाही

(D) केवल पन्ना गनब

५८५. “अध्ययन-पद्धति”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) केवल पन्ना गनब

(B) भाव न देखब

(C) प्रत्येक खण्डकाव्यकेँ शीर्षक, कथ्य, भाव, पात्र, प्रतीक आ भाषा सँ पढ़ब चाही

(D) शीर्षक छोड़ब

५८६. खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदमे “पाठ्यक्रमीय महत्त्व” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) खण्डकाव्य-सूची मैथिली आधुनिक काव्य-विकास आ विधा-विस्तार बुझबामे सहायक अछि

(B) पाठ्यक्रममे एकर उपयोग नहि

(C) विधा-विस्तार असम्भव

(D) आधुनिक काव्य नहि

५८७. “पाठ्यक्रमीय महत्त्व” केँ खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) विधा-विस्तार असम्भव

(B) आधुनिक काव्य नहि

(C) पाठ्यक्रममे एकर उपयोग नहि

(D) खण्डकाव्य-सूची मैथिली आधुनिक काव्य-विकास आ विधा-विस्तार बुझबामे सहायक अछि

५८८. नीचाँमे “पाठ्यक्रमीय महत्त्व”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) पाठ्यक्रममे एकर उपयोग नहि

(B) विधा-विस्तार असम्भव

(C) खण्डकाव्य-सूची मैथिली आधुनिक काव्य-विकास आ विधा-विस्तार बुझबामे सहायक अछि

(D) आधुनिक काव्य नहि

५८९. परीक्षा-दृष्टिसँ “पाठ्यक्रमीय महत्त्व” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) विधा-विस्तार असम्भव

(B) खण्डकाव्य-सूची मैथिली आधुनिक काव्य-विकास आ विधा-विस्तार बुझबामे सहायक अछि

(C) पाठ्यक्रममे एकर उपयोग नहि

(D) आधुनिक काव्य नहि

५९०. “पाठ्यक्रमीय महत्त्व”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) आधुनिक काव्य नहि

(B) खण्डकाव्य-सूची मैथिली आधुनिक काव्य-विकास आ विधा-विस्तार बुझबामे सहायक अछि

(C) विधा-विस्तार असम्भव

(D) पाठ्यक्रममे एकर उपयोग नहि

५९१. खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदमे “आलोचनात्मक उत्तर” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) उत्तर लिखैत खण्डकाव्यक सीमा, केन्द्र, प्रतीक आ प्रभाव साफ करब जरूरी अछि

(B) केवल लेखकक जन्मतिथि लिखब

(C) सीमाक चर्चा नहि

(D) प्रतीक शब्द छोड़ब

५९२. “आलोचनात्मक उत्तर” केँ खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) सीमाक चर्चा नहि

(B) प्रतीक शब्द छोड़ब

(C) केवल लेखकक जन्मतिथि लिखब

(D) उत्तर लिखैत खण्डकाव्यक सीमा, केन्द्र, प्रतीक आ प्रभाव साफ करब जरूरी अछि

५९३. नीचाँमे “आलोचनात्मक उत्तर”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल लेखकक जन्मतिथि लिखब

(B) सीमाक चर्चा नहि

(C) उत्तर लिखैत खण्डकाव्यक सीमा, केन्द्र, प्रतीक आ प्रभाव साफ करब जरूरी अछि

(D) प्रतीक शब्द छोड़ब

५९४. परीक्षा-दृष्टिसँ “आलोचनात्मक उत्तर” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) सीमाक चर्चा नहि

(B) उत्तर लिखैत खण्डकाव्यक सीमा, केन्द्र, प्रतीक आ प्रभाव साफ करब जरूरी अछि

(C) केवल लेखकक जन्मतिथि लिखब

(D) प्रतीक शब्द छोड़ब

५९५. “आलोचनात्मक उत्तर”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) प्रतीक शब्द छोड़ब

(B) उत्तर लिखैत खण्डकाव्यक सीमा, केन्द्र, प्रतीक आ प्रभाव साफ करब जरूरी अछि

(C) सीमाक चर्चा नहि

(D) केवल लेखकक जन्मतिथि लिखब

५९६. खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदमे “विधा-सूझ” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) कृति-रूप महत्त्वहीन

(B) महाकाव्य आ खण्डकाव्य दूनूकेँ एकहि तराजूमे नहि, अलग रचना-दृष्टिसँ पढ़ब चाही

(C) सभक उत्तर एकहि होएत

(D) विधा-सूझ निरर्थक

५९७. “विधा-सूझ” केँ खण्डकाव्यक स्वरूप आ भेदक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) महाकाव्य आ खण्डकाव्य दूनूकेँ एकहि तराजूमे नहि, अलग रचना-दृष्टिसँ पढ़ब चाही

(B) विधा-सूझ निरर्थक

(C) कृति-रूप महत्त्वहीन

(D) सभक उत्तर एकहि होएत

५९८. नीचाँमे “विधा-सूझ”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) कृति-रूप महत्त्वहीन

(B) सभक उत्तर एकहि होएत

(C) विधा-सूझ निरर्थक

(D) महाकाव्य आ खण्डकाव्य दूनूकेँ एकहि तराजूमे नहि, अलग रचना-दृष्टिसँ पढ़ब चाही

५९९. परीक्षा-दृष्टिसँ “विधा-सूझ” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) कृति-रूप महत्त्वहीन

(B) विधा-सूझ निरर्थक

(C) महाकाव्य आ खण्डकाव्य दूनूकेँ एकहि तराजूमे नहि, अलग रचना-दृष्टिसँ पढ़ब चाही

(D) सभक उत्तर एकहि होएत

६००. “विधा-सूझ”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) सभक उत्तर एकहि होएत

(B) कृति-रूप महत्त्वहीन

(C) महाकाव्य आ खण्डकाव्य दूनूकेँ एकहि तराजूमे नहि, अलग रचना-दृष्टिसँ पढ़ब चाही

(D) विधा-सूझ निरर्थक

sec6

६०१. शकुन्तला आ भारतीमे “शकुन्तला दामोदर लालदास” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल कर-विधान

(B) केवल नाटक-मंचक पर्दा

(C) शकुन्तला नाम असम्बद्ध

(D) शकुन्तला-प्रसंगक खण्डकाव्यात्मक रूप, जे प्रेम, विस्मृति, पहचान आ करुणा पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि

६०२. “शकुन्तला दामोदर लालदास” कैं शकुन्तला आ भारतीक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) शकुन्तला नाम असम्बद्ध

(B) केवल कर-विधान

(C) शकुन्तला-प्रसंगक खण्डकाव्यात्मक रूप, जे प्रेम, विस्मृति, पहचान आ करुणा पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि

(D) केवल नाटक-मंचक पर्दा

६०३. नीचाँमे “शकुन्तला दामोदर लालदास”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल कर-विधान

(B) केवल नाटक-मंचक पर्दा

(C) शकुन्तला-प्रसंगक खण्डकाव्यात्मक रूप, जे प्रेम, विस्मृति, पहचान आ करुणा पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि

(D) शकुन्तला नाम असम्बद्ध

६०४. परीक्षा-दृष्टिसँ “शकुन्तला दामोदर लालदास” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) केवल नाटक-मंचक पर्दा

(B) शकुन्तला-प्रसंगक खण्डकाव्यात्मक रूप, जे प्रेम, विस्मृति, पहचान आ करुणा पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि

(C) केवल कर-विधान

(D) शकुन्तला नाम असम्बद्ध

६०५. “शकुन्तला दामोदर लालदास”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) शकुन्तला नाम असम्बद्ध

(B) शकुन्तला-प्रसंगक खण्डकाव्यात्मक रूप, जे प्रेम, विस्मृति, पहचान आ करुणा पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि

(C) केवल नाटक-मंचक पर्दा

(D) केवल कर-विधान

६०६. शकुन्तला आ भारतीमे “शकुन्तला चन्द्रभानु सिंहसँ भेद” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) दामोदर लालदासक शकुन्तला खण्डकाव्य-सूचीमे, चन्द्रभानु सिंहक शकुन्तला महाकाव्य-सूचीमे राखल गेल अछि

(B) दूनू एकहि सूचीमे बिना भेद अछि

(C) दूनू समाचार-पत्र अछि

(D) भेदक कोनो कारण नहि

६०७. “शकुन्तला चन्द्रभानु सिंहसँ भेद” कैं शकुन्तला आ भारतीक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) दूनू समाचार-पत्र अछि

(B) भेदक कोनो कारण नहि

(C) दूनू एकहि सूचीमे बिना भेद अछि

(D) दामोदर लालदासक शकुन्तला खण्डकाव्य-सूचीमे, चन्द्रभानु सिंहक शकुन्तला महाकाव्य-सूचीमे राखल गेल अछि

६०८. नीचाँमे “शकुन्तला चन्द्रभानु सिंहसँ भेद”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) भेदक कोनो कारण नहि

(B) दूनू एकहि सूचीमे बिना भेद अछि

(C) दूनू समाचार-पत्र अछि

(D) दामोदर लालदासक शकुन्तला खण्डकाव्य-सूचीमे, चन्द्रभानु सिंहक शकुन्तला महाकाव्य-सूचीमे राखल गेल अछि

६०९. परीक्षा-दृष्टिसँ "शकुन्तला चन्द्रभानु सिंहसँ भेद" पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) भेदक कोनो कारण नहि

(B) दूनू समाचार-पत्र अछि

(C) दामोदर लालदासक शकुन्तला खण्डकाव्य-सूचीमे, चन्द्रभानु सिंहक शकुन्तला महाकाव्य-सूचीमे राखल गेल अछि

(D) दूनू एकहि सूचीमे बिना भेद अछि

६१०. "शकुन्तला चन्द्रभानु सिंहसँ भेद"क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) दूनू एकहि सूचीमे बिना भेद अछि

(B) भेदक कोनो कारण नहि

(C) दामोदर लालदासक शकुन्तला खण्डकाव्य-सूचीमे, चन्द्रभानु सिंहक शकुन्तला महाकाव्य-सूचीमे राखल गेल अछि

(D) दूनू समाचार-पत्र अछि

६११. शकुन्तला आ भारतीमे "प्रेम-प्रसंग" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) प्रेम प्रसंग नहि

(B) विश्वास असाहित्यिक

(C) स्मृति अर्थहीन

(D) शकुन्तला कथा प्रेम, विश्वास, विरह आ स्मृति-स्वीकृतिक गहन भाव खोलैत अछि

६१२. "प्रेम-प्रसंग" कैँ शकुन्तला आ भारतीक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) स्मृति अर्थहीन

(B) प्रेम प्रसंग नहि

(C) शकुन्तला कथा प्रेम, विश्वास, विरह आ स्मृति-स्वीकृतिक गहन भाव खोलैत अछि

(D) विश्वास असाहित्यिक

६१३. नीचाँमे "प्रेम-प्रसंग"क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) प्रेम प्रसंग नहि

(B) विश्वास असाहित्यिक

(C) शकुन्तला कथा प्रेम, विश्वास, विरह आ स्मृति-स्वीकृतिक गहन भाव खोलैत अछि

(D) स्मृति अर्थहीन

६१४. परीक्षा-दृष्टिसँ "प्रेम-प्रसंग" पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) विश्वास असाहित्यिक

(B) शकुन्तला कथा प्रेम, विश्वास, विरह आ स्मृति-स्वीकृतिक गहन भाव खोलैत अछि

(C) प्रेम प्रसंग नहि

(D) स्मृति अर्थहीन

६१५. "प्रेम-प्रसंग"क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) स्मृति अर्थहीन

(B) शकुन्तला कथा प्रेम, विश्वास, विरह आ स्मृति-स्वीकृतिक गहन भाव खोलैत अछि

(C) विश्वास असाहित्यिक

(D) प्रेम प्रसंग नहि

६१६. शकुन्तला आ भारतीमे "दुष्यन्त" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) दुष्यन्तक माध्यमे राजधर्म, स्मृति-विस्मृति आ स्वीकृतिक प्रश्न उठैत अछि

(B) दुष्यन्त केवल वनस्पति अछि

(C) राजधर्म नहि

(D) स्मृति प्रश्न नहि

६१७. “दुष्यन्त” कैं शकुन्तला आ भारतीक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) राजधर्म नहि

(B) स्मृति प्रश्न नहि

(C) दुष्यन्त केवल वनस्पति अछि

(D) दुष्यन्तक माध्यमे राजधर्म, स्मृति-विस्मृति आ स्वीकृतिक प्रश्न उठैत अछि

६१८. नीचाँमे “दुष्यन्त”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) स्मृति प्रश्न नहि

(B) दुष्यन्त केवल वनस्पति अछि

(C) राजधर्म नहि

(D) दुष्यन्तक माध्यमे राजधर्म, स्मृति-विस्मृति आ स्वीकृतिक प्रश्न उठैत अछि

६१९. परीक्षा-दृष्टिसँ “दुष्यन्त” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) स्मृति प्रश्न नहि

(B) राजधर्म नहि

(C) दुष्यन्तक माध्यमे राजधर्म, स्मृति-विस्मृति आ स्वीकृतिक प्रश्न उठैत अछि

(D) दुष्यन्त केवल वनस्पति अछि

६२०. “दुष्यन्त”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) दुष्यन्त केवल वनस्पति अछि

(B) स्मृति प्रश्न नहि

(C) दुष्यन्तक माध्यमे राजधर्म, स्मृति-विस्मृति आ स्वीकृतिक प्रश्न उठैत अछि

(D) राजधर्म नहि

६२१. शकुन्तला आ भारतीमे “अभिज्ञान” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) सम्बन्ध असम्भव

(B) पहचानक संकेत कथामे सत्य, स्मृति आ सम्बन्धक पुनर्स्थापन करैत अछि

(C) अभिज्ञान केवल अंकतालिका अछि

(D) पहचान नहि

६२२. “अभिज्ञान” कैं शकुन्तला आ भारतीक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) पहचानक संकेत कथामे सत्य, स्मृति आ सम्बन्धक पुनर्स्थापन करैत अछि

(B) पहचान नहि

(C) सम्बन्ध असम्भव

(D) अभिज्ञान केवल अंकतालिका अछि

६२३. नीचाँमे “अभिज्ञान”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) पहचानक संकेत कथामे सत्य, स्मृति आ सम्बन्धक पुनर्स्थापन करैत अछि

(B) सम्बन्ध असम्भव

(C) अभिज्ञान केवल अंकतालिका अछि

(D) पहचान नहि

६२४. परीक्षा-दृष्टिसँ “अभिज्ञान” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) अभिज्ञान केवल अंकतालिका अछि

(B) सम्बन्ध असम्भव

(C) पहचान नहि

(D) पहचानक संकेत कथामे सत्य, स्मृति आ सम्बन्धक पुनर्स्थापन करैत अछि

६२५. “अभिज्ञान”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) पहचान नहि

(B) अभिज्ञान केवल अंकतालिका अछि

(C) सम्बन्ध असम्भव

(D) पहचानक संकेत कथामे सत्य, स्मृति आ सम्बन्धक पुनर्स्थापन करैत अछि

६२६. शकुन्तला आ भारतीमे “विरह आ प्रतीक्षा” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) प्रतीक्षा नहि

(B) करुणा निषिद्ध

(C) शकुन्तला-प्रसंग विरह, प्रतीक्षा, अपमान आ आशाक करुण धरातल दैत अछि

(D) विरह सदैव हास्य अछि

६२७. “विरह आ प्रतीक्षा” कैँ शकुन्तला आ भारतीक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) विरह सदैव हास्य अछि

(B) शकुन्तला-प्रसंग विरह, प्रतीक्षा, अपमान आ आशाक करुण धरातल दैत अछि

(C) प्रतीक्षा नहि

(D) करुणा निषिद्ध

६२८. नीचाँमे “विरह आ प्रतीक्षा”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) प्रतीक्षा नहि

(B) शकुन्तला-प्रसंग विरह, प्रतीक्षा, अपमान आ आशाक करुण धरातल दैत अछि

(C) करुणा निषिद्ध

(D) विरह सदैव हास्य अछि

६२९. परीक्षा-दृष्टिसँ “विरह आ प्रतीक्षा” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) शकुन्तला-प्रसंग विरह, प्रतीक्षा, अपमान आ आशाक करुण धरातल दैत अछि

(B) विरह सदैव हास्य अछि

(C) करुणा निषिद्ध

(D) प्रतीक्षा नहि

६३०. “विरह आ प्रतीक्षा”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) शकुन्तला-प्रसंग विरह, प्रतीक्षा, अपमान आ आशाक करुण धरातल दैत अछि

(B) प्रतीक्षा नहि

(C) विरह सदैव हास्य अछि

(D) करुणा निषिद्ध

६३१. शकुन्तला आ भारतीमे “प्रकृति-परिवेश” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) वन नहि

(B) आश्रम, वन, ऋतु आ जीव-जगत शकुन्तलाक भावजगतक सहचर बनैत अछि

(C) प्रकृति काव्य-विरोधी

(D) आश्रमक अर्थ नहि

६३२. “प्रकृति-परिवेश” कैँ शकुन्तला आ भारतीक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) आश्रम, वन, ऋतु आ जीव-जगत शकुन्तलाक भावजगतक सहचर बनैत अछि

(B) आश्रमक अर्थ नहि

(C) वन नहि

(D) प्रकृति काव्य-विरोधी

६३३. नीचाँमे “प्रकृति-परिवेश”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) आश्रम, वन, ऋतु आ जीव-जगत शकुन्तलाक भावजगतक सहचर बनैत अछि

(B) वन नहि

(C) प्रकृति काव्य-विरोधी

(D) आश्रमक अर्थ नहि

६३४. परीक्षा-दृष्टिसँ “प्रकृति-परिवेश” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) प्रकृति काव्य-विरोधी

(B) वन नहि

(C) आश्रमक अर्थ नहि

(D) आश्रम, वन, ऋतु आ जीव-जगत शकुन्तलाक भावजगतक सहचर बनैत अछि

६३५. “प्रकृति-परिवेश”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) आश्रमक अर्थ नहि

(B) प्रकृति काव्य-विरोधी

(C) वन नहि

(D) आश्रम, वन, ऋतु आ जीव-जगत शकुन्तलाक भावजगतक सहचर बनैत अछि

६३६. शकुन्तला आ भारतीमे “स्त्री-मर्यादा” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) मातृत्व नहि

(B) स्वाभिमान वर्जित

(C) शकुन्तलाक स्थिति प्रेम, मातृत्व, स्वाभिमान आ सामाजिक स्वीकृतिक प्रश्न उठबैत अछि

(D) स्त्री-मर्यादा असम्बद्ध

६३७. “स्त्री-मर्यादा” कैँ शकुन्तला आ भारतीक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) स्त्री-मर्यादा असम्बद्ध

(B) शकुन्तलाक स्थिति प्रेम, मातृत्व, स्वाभिमान आ सामाजिक स्वीकृतिक प्रश्न उठबैत अछि

(C) मातृत्व नहि

(D) स्वाभिमान वर्जित

६३८. नीचाँमे “स्त्री-मर्यादा”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) मातृत्व नहि

(B) शकुन्तलाक स्थिति प्रेम, मातृत्व, स्वाभिमान आ सामाजिक स्वीकृतिक प्रश्न उठबैत अछि

(C) स्वाभिमान वर्जित

(D) स्त्री-मर्यादा असम्बद्ध

६३९. परीक्षा-दृष्टिसँ “स्त्री-मर्यादा” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) शकुन्तलाक स्थिति प्रेम, मातृत्व, स्वाभिमान आ सामाजिक स्वीकृतिक प्रश्न उठबैत अछि

(B) स्त्री-मर्यादा असम्बद्ध

(C) स्वाभिमान वर्जित

(D) मातृत्व नहि

६४०. “स्त्री-मर्यादा”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) शकुन्तलाक स्थिति प्रेम, मातृत्व, स्वाभिमान आ सामाजिक स्वीकृतिक प्रश्न उठबैत अछि

(B) मातृत्व नहि

(C) स्त्री-मर्यादा असम्बद्ध

(D) स्वाभिमान वर्जित

६४१. शकुन्तला आ भारतीमे “खण्डकाव्यात्मक कसावट” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) भाव-सघनता दोष

(B) शकुन्तला-कथा सँ चुनल निर्णायक प्रसंग भाव-सघन रूपमे प्रस्तुत भऽ सकैत अछि

(C) कसावट नहि चाही

(D) प्रसंग असीम होएब आवश्यक

६४२. “खण्डकाव्यात्मक कसावट” कैँ शकुन्तला आ भारतीक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) शकुन्तला-कथा सँ चुनल निर्णायक प्रसंग भाव-सघन रूपमे प्रस्तुत भऽ सकैत अछि

(B) प्रसंग असीम होएब आवश्यक

(C) भाव-सघनता दोष

(D) कसावट नहि चाही

६४३. नीचाँमे “खण्डकाव्यात्मक कसावट”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) शकुन्तला-कथा सँ चुनल निर्णायक प्रसंग भाव-सघन रूपमे प्रस्तुत भऽ सकैत अछि

(B) भाव-सघनता दोष

(C) कसावट नहि चाही

(D) प्रसंग असीम होएब आवश्यक

६४४. परीक्षा-दृष्टिसँ “खण्डकाव्यात्मक कसावट” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) कसावट नहि चाही

(B) भाव-सघनता दोष

(C) प्रसंग असीम होएब आवश्यक

(D) शकुन्तला-कथा सँ चुनल निर्णायक प्रसंग भाव-सघन रूपमे प्रस्तुत भऽ सकैत अछि

६४५. “खण्डकाव्यात्मक कसावट”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) प्रसंग असीम होएब आवश्यक

(B) कसावट नहि चाही

(C) भाव-सघनता दोष

(D) शकुन्तला-कथा सँ चुनल निर्णायक प्रसंग भाव-सघन रूपमे प्रस्तुत भऽ सकैत अछि

६४६. शकुन्तला आ भारतीमे “भारती” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) देश-भाव असम्भव

(B) शीर्षक भाषा, विद्या, देश, जन-चेतना वा सांस्कृतिक मातृ-रूपक संकेत दऽ सकैत अछि

(C) भारती केवल माप-इकाई अछि

(D) विद्या-संकेत नहि

६४७. “भारती” कैँ शकुन्तला आ भारतीक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) शीर्षक भाषा, विद्या, देश, जन-चेतना वा सांस्कृतिक मातृ-रूपक संकेत दऽ सकैत अछि

(B) विद्या-संकेत नहि

(C) देश-भाव असम्भव

(D) भारती केवल माप-इकाई अछि

६४८. नीचाँमे “भारती”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) शीर्षक भाषा, विद्या, देश, जन-चेतना वा सांस्कृतिक मातृ-रूपक संकेत दऽ सकैत अछि

(B) देश-भाव असम्भव

(C) भारती केवल माप-इकाई अछि

(D) विद्या-संकेत नहि

६४९. परीक्षा-दृष्टिसँ “भारती” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) भारती केवल माप-इकाई अछि

(B) देश-भाव असम्भव

(C) विद्या-संकेत नहि

(D) शीर्षक भाषा, विद्या, देश, जन-चेतना वा सांस्कृतिक मातृ-रूपक संकेत दऽ सकैत अछि

६५०. “भारती”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) विद्या-संकेत नहि

(B) भारती केवल माप-इकाई अछि

(C) देश-भाव असम्भव

(D) शीर्षक भाषा, विद्या, देश, जन-चेतना वा सांस्कृतिक मातृ-रूपक संकेत दऽ सकैत अछि

६५१. शकुन्तला आ भारतीमे “भारतीक प्रतीक” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) ज्ञान असाहित्यिक

(B) सामूहिक चेतना निरर्थक

(C) भारती ज्ञान, भाषा, संस्कार आ सामूहिक चेतनाक स्त्री-प्रतीक बनि सकैत अछि

(D) प्रतीक नहि होइत

६५२. “भारतीक प्रतीक” कैँ शकुन्तला आ भारतीक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) प्रतीक नहि होइत

(B) भारती ज्ञान, भाषा, संस्कार आ सामूहिक चेतनाक स्त्री-प्रतीक बनि सकैत अछि

(C) ज्ञान असाहित्यिक

(D) सामूहिक चेतना निरर्थक

६५३. नीचाँमे “भारतीक प्रतीक”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) ज्ञान असाहित्यिक

(B) भारती ज्ञान, भाषा, संस्कार आ सामूहिक चेतनाक स्त्री-प्रतीक बनि सकैत अछि

(C) सामूहिक चेतना निरर्थक

(D) प्रतीक नहि होइत

६५४. परीक्षा-दृष्टिसँ “भारतीक प्रतीक” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) भारती ज्ञान, भाषा, संस्कार आ सामूहिक चेतनाक स्त्री-प्रतीक बनि सकैत अछि

(B) प्रतीक नहि होइत

(C) सामूहिक चेतना निरर्थक

(D) ज्ञान असाहित्यिक

६५५. “भारतीक प्रतीक”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) भारती ज्ञान, भाषा, संस्कार आ सामूहिक चेतनाक स्त्री-प्रतीक बनि सकैत अछि

(B) ज्ञान असाहित्यिक

(C) प्रतीक नहि होइत

(D) सामूहिक चेतना निरर्थक

६५६. शकुन्तला आ भारतीमे “भाषा-चेतना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) साहित्य आ अस्मिता कटि जाइत

(B) शीर्षक बेकार

(C) भारती शीर्षक मैथिली भाषा, साहित्य आ सांस्कृतिक अस्मिताक प्रश्नसँ जोड़ल जा सकैत अछि

(D) भाषा चेतना नहि

६५७. “भाषा-चेतना” कैँ शकुन्तला आ भारतीक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) भाषा चेतना नहि

(B) भारती शीर्षक मैथिली भाषा, साहित्य आ सांस्कृतिक अस्मिताक प्रश्नसँ जोड़ल जा सकैत अछि

(C) साहित्य आ अस्मिता कटि जाइत

(D) शीर्षक बेकार

६५८. नीचाँमे “भाषा-चेतना”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) साहित्य आ अस्मिता कटि जाइत

(B) भारती शीर्षक मैथिली भाषा, साहित्य आ सांस्कृतिक अस्मिताक प्रश्नसँ जोड़ल जा सकैत अछि

(C) शीर्षक बेकार

(D) भाषा चेतना नहि

६५९. परीक्षा-दृष्टिसँ “भाषा-चेतना” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) भारती शीर्षक मैथिली भाषा, साहित्य आ सांस्कृतिक अस्मिताक प्रश्नसँ जोड़ल जा सकैत अछि

(B) भाषा चेतना नहि

(C) शीर्षक बेकार

(D) साहित्य आ अस्मिता कटि जाइत

६६०. “भाषा-चेतना”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) भारती शीर्षक मैथिली भाषा, साहित्य आ सांस्कृतिक अस्मिताक प्रश्नसँ जोड़ल जा सकैत अछि

(B) साहित्य आ अस्मिता कटि जाइत

(C) भाषा चेतना नहि

(D) शीर्षक बेकार

६६१. शकुन्तला आ भारतीमे “उत्साह आ जागरण” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) जागरण असम्भव

(B) आत्मगौरव दोष

(C) काव्य निस्तेज रहै

(D) भारती-जकाँ खण्डकाव्य नव चेतना, जागरण आ आत्मगौरवक स्वर देबाक सामर्थ्य रखैत अछि

६६२. “उत्साह आ जागरण” कैँ शकुन्तला आ भारतीक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) काव्य निस्तेज रहै

(B) जागरण असम्भव

(C) भारती-जकाँ खण्डकाव्य नव चेतना, जागरण आ आत्मगौरवक स्वर देबाक सामर्थ्य रखैत अछि

(D) आत्मगौरव दोष

६६३. नीचाँमे “उत्साह आ जागरण”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) जागरण असम्भव

(B) आत्मगौरव दोष

(C) भारती-जकाँ खण्डकाव्य नव चेतना, जागरण आ आत्मगौरवक स्वर देबाक सामर्थ्य रखैत अछि

(D) काव्य निस्तेज रहै

६६४. परीक्षा-दृष्टिसँ “उत्साह आ जागरण” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) आत्मगौरव दोष

(B) भारती-जकाँ खण्डकाव्य नव चेतना, जागरण आ आत्मगौरवक स्वर देबाक सामर्थ्य रखैत अछि

(C) जागरण असम्भव

(D) काव्य निस्तेज रहै

६६५. “उत्साह आ जागरण”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) काव्य निस्तेज रहै

(B) भारती-जकाँ खण्डकाव्य नव चेतना, जागरण आ आत्मगौरवक स्वर देबाक सामर्थ्य रखैत अछि

(C) आत्मगौरव दोष

(D) जागरण असम्भव

६६६. शकुन्तला आ भारतीमे “शकुन्तला बनाम भारती” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) दूनूक विषय पूर्ण एकहि अछि

(B) दूनूमे कोनो भाव नहि

(C) दूनू केवल शब्दकोश

(D) एकटा प्रेम-करुणा-प्रकृति केन्द्रित, दोसर सामूहिक भाषा/विद्या प्रतीकक दिशा खोलैत अछि

६६७. “शकुन्तला बनाम भारती” कैँ शकुन्तला आ भारतीक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) दूनू केवल शब्दकोश

(B) दूनूक विषय पूर्ण एकहि अछि

(C) एकटा प्रेम-करुणा-प्रकृति केन्द्रित, दोसर सामूहिक भाषा/विद्या प्रतीकक दिशा खोलैत अछि

(D) दूनूमे कोनो भाव नहि

६६८. नीचाँमे “शकुन्तला बनाम भारती”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) दूनूक विषय पूर्ण एकहि अछि

(B) दूनूमे कोनो भाव नहि

(C) एकटा प्रेम-करुणा-प्रकृति केन्द्रित, दोसर सामूहिक भाषा/विद्या प्रतीकक दिशा खोलैत अछि

(D) दूनू केवल शब्दकोश

६६९. परीक्षा-दृष्टिसँ “शकुन्तला बनाम भारती” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) दूनूमे कोनो भाव नहि

(B) एकटा प्रेम-करुणा-प्रकृति केन्द्रित, दोसर सामूहिक भाषा/विद्या प्रतीकक दिशा खोलैत अछि

(C) दूनूक विषय पूर्ण एकहि अछि

(D) दूनू केवल शब्दकोश

६७०. “शकुन्तला बनाम भारती”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) दूनू केवल शब्दकोश

(B) एकटा प्रेम-करुणा-प्रकृति केन्द्रित, दोसर सामूहिक भाषा/विद्या प्रतीकक दिशा खोलैत अछि

(C) दूनूमे कोनो भाव नहि

(D) दूनूक विषय पूर्ण एकहि अछि

६७१. शकुन्तला आ भारतीमे “करुणा आ स्मृति” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) द्वन्द्व नहि

(B) शकुन्तलाक मूल प्रभाव करुणा, स्मृति आ पहचानक द्वन्द्वसँ बनैत अछि

(C) स्मृति नहि

(D) करुणा असम्बद्ध

६७२. “करुणा आ स्मृति” कैँ शकुन्तला आ भारतीक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) शकुन्तलाक मूल प्रभाव करुणा, स्मृति आ पहचानक द्वन्द्वसँ बनैत अछि

(B) करुणा असम्बद्ध

(C) द्वन्द्व नहि

(D) स्मृति नहि

६७३. नीचाँमे “करुणा आ स्मृति”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) शकुन्तलाक मूल प्रभाव करुणा, स्मृति आ पहचानक द्वन्द्वसँ बनैत अछि

(B) द्वन्द्व नहि

(C) स्मृति नहि

(D) करुणा असम्बद्ध

६७४. परीक्षा-दृष्टिसँ “करुणा आ स्मृति” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) स्मृति नहि

(B) द्वन्द्व नहि

(C) करुणा असम्बद्ध

(D) शकुन्तलाक मूल प्रभाव करुणा, स्मृति आ पहचानक द्वन्द्वसँ बनैत अछि

६७५. “करुणा आ स्मृति”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) करुणा असम्बद्ध

(B) स्मृति नहि

(C) द्वन्द्व नहि

(D) शकुन्तलाक मूल प्रभाव करुणा, स्मृति आ पहचानक द्वन्द्वसँ बनैत अछि

६७६. शकुन्तला आ भारतीमे “सांस्कृतिक मातृत्व” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) संस्कृति नहि

(B) विद्या दोष

(C) भारती शीर्षक भाषामाता, विद्यादायिनी वा संस्कृतिक पोषण-शक्ति रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि

(D) मातृत्व वर्जित

६७७. “सांस्कृतिक मातृत्व” केँ शकुन्तला आ भारतीक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) मातृत्व वर्जित

(B) भारती शीर्षक भाषामाता, विद्यादायिनी वा संस्कृतिक पोषण-शक्ति रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि

(C) संस्कृति नहि

(D) विद्या दोष

६७८. नीचाँमे “सांस्कृतिक मातृत्व”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) संस्कृति नहि

(B) भारती शीर्षक भाषामाता, विद्यादायिनी वा संस्कृतिक पोषण-शक्ति रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि

(C) विद्या दोष

(D) मातृत्व वर्जित

६७९. परीक्षा-दृष्टिसँ “सांस्कृतिक मातृत्व” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) भारती शीर्षक भाषामाता, विद्यादायिनी वा संस्कृतिक पोषण-शक्ति रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि

(B) मातृत्व वर्जित

(C) विद्या दोष

(D) संस्कृति नहि

६८०. “सांस्कृतिक मातृत्व”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) भारती शीर्षक भाषामाता, विद्यादायिनी वा संस्कृतिक पोषण-शक्ति रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि

(B) संस्कृति नहि

(C) मातृत्व वर्जित

(D) विद्या दोष

६८१. शकुन्तला आ भारतीमे “काव्य-स्वर” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) स्वरक कोनो अन्तर नहि

(B) कोमलता वर्जित

(C) उद्बोधन असाहित्यिक

(D) शकुन्तला मे कोमलता, भारतीमे उद्बोधन वा गौरव-स्वरक सम्भावना रहैत अछि

६८२. “काव्य-स्वर” कैँ शकुन्तला आ भारतीक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) उद्बोधन असाहित्यिक

(B) स्वरक कोनो अन्तर नहि

(C) शकुन्तला मे कोमलता, भारतीमे उद्बोधन वा गौरव-स्वरक सम्भावना रहैत अछि

(D) कोमलता वर्जित

६८३. नीचाँमे “काव्य-स्वर”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) स्वरक कोनो अन्तर नहि

(B) कोमलता वर्जित

(C) शकुन्तला मे कोमलता, भारतीमे उद्बोधन वा गौरव-स्वरक सम्भावना रहैत अछि

(D) उद्बोधन असाहित्यिक

६८४. परीक्षा-दृष्टिसँ “काव्य-स्वर” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) कोमलता वर्जित

(B) शकुन्तला मे कोमलता, भारतीमे उद्बोधन वा गौरव-स्वरक सम्भावना रहैत अछि

(C) स्वरक कोनो अन्तर नहि

(D) उद्बोधन असाहित्यिक

६८५. “काव्य-स्वर”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) उद्बोधन असाहित्यिक

(B) शकुन्तला मे कोमलता, भारतीमे उद्बोधन वा गौरव-स्वरक सम्भावना रहैत अछि

(C) कोमलता वर्जित

(D) स्वरक कोनो अन्तर नहि

६८६. शकुन्तला आ भारतीमे “पात्र आ प्रतीक” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) शकुन्तला पात्र-केंद्रित, भारती अधिक प्रतीक-केंद्रित पठनक माँग करैत अछि

(B) पात्र आ प्रतीक एकदम असम्बद्ध

(C) केंद्रक बात नहि

(D) पठन असम्भव

६८७. “पात्र आ प्रतीक” कैँ शकुन्तला आ भारतीक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) केंद्रक बात नहि

(B) पठन असम्भव

(C) पात्र आ प्रतीक एकदम असम्बद्ध

(D) शकुन्तला पात्र-केंद्रित, भारती अधिक प्रतीक-केंद्रित पठनक माँग करैत अछि

६८८. नीचाँमे “पात्र आ प्रतीक”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) पठन असम्भव

(B) पात्र आ प्रतीक एकदम असम्बद्ध

(C) केंद्रक बात नहि

(D) शकुन्तला पात्र-केंद्रित, भारती अधिक प्रतीक-केंद्रित पठनक माँग करैत अछि

६८९. परीक्षा-दृष्टिसँ “पात्र आ प्रतीक” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) पठन असम्भव

(B) केंद्रक बात नहि

(C) शकुन्तला पात्र-केंद्रित, भारती अधिक प्रतीक-केंद्रित पठनक माँग करैत अछि

(D) पात्र आ प्रतीक एकदम असम्बद्ध

६९०. “पात्र आ प्रतीक”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) पात्र आ प्रतीक एकदम असम्बद्ध

(B) पठन असम्भव

(C) शकुन्तला पात्र-केंद्रित, भारती अधिक प्रतीक-केंद्रित पठनक माँग करैत अछि

(D) केंद्रक बात नहि

६९१. शकुन्तला आ भारतीमे “परीक्षा तुलना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) भेद नहि लिखू

(B) रस न देखू

(C) शकुन्तला आ भारती पर उत्तरमे कथ्य-भेद, रस-भेद आ प्रतीक-भेद जरूर लिखब चाही

(D) केवल शीर्षक दोहराउ

६९२. “परीक्षा तुलना” कैँ शकुन्तला आ भारतीक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) केवल शीर्षक दोहराउ

(B) शकुन्तला आ भारती पर उत्तरमे कथ्य-भेद, रस-भेद आ प्रतीक-भेद जरूर लिखब चाही

(C) भेद नहि लिखू

(D) रस न देखू

६९३. नीचाँमे “परीक्षा तुलना”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) भेद नहि लिखू

(B) शकुन्तला आ भारती पर उत्तरमे कथ्य-भेद, रस-भेद आ प्रतीक-भेद जरूर लिखब चाही

(C) रस न देखू

(D) केवल शीर्षक दोहराउ

६९४. परीक्षा-दृष्टिसँ “परीक्षा तुलना” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) शकुन्तला आ भारती पर उत्तरमे कथ्य-भेद, रस-भेद आ प्रतीक-भेद जरूर लिखब चाही

(B) केवल शीर्षक दोहराउ

(C) रस न देखू

(D) भेद नहि लिखू

६९५. “परीक्षा तुलना”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) शकुन्तला आ भारती पर उत्तरमे कथ्य-भेद, रस-भेद आ प्रतीक-भेद जरूर लिखब चाही

(B) भेद नहि लिखू

(C) केवल शीर्षक दोहराउ

(D) रस न देखू

६९६. शकुन्तला आ भारतीमे “साहित्यिक स्थान” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) संवेदना अनुपस्थित

(B) ई दुनू खण्डकाव्य मैथिली काव्य-विकासक अलग-अलग संवेदनात्मक दिशा देखबैत अछि

(C) स्थान निरर्थक अछि

(D) विकास नहि

६९७. “साहित्यिक स्थान” कैं शकुन्तला आ भारतीक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) ई दुनू खण्डकाव्य मैथिली काव्य-विकासक अलग-अलग संवेदनात्मक दिशा देखबैत अछि

(B) विकास नहि

(C) संवेदना अनुपस्थित

(D) स्थान निरर्थक अछि

६९८. नीचाँमे “साहित्यिक स्थान”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) ई दुनू खण्डकाव्य मैथिली काव्य-विकासक अलग-अलग संवेदनात्मक दिशा देखबैत अछि

(B) संवेदना अनुपस्थित

(C) स्थान निरर्थक अछि

(D) विकास नहि

६९९. परीक्षा-दृष्टिसँ “साहित्यिक स्थान” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) स्थान निरर्थक अछि

(B) संवेदना अनुपस्थित

(C) विकास नहि

(D) ई दुनू खण्डकाव्य मैथिली काव्य-विकासक अलग-अलग संवेदनात्मक दिशा देखबैत अछि

७००. “साहित्यिक स्थान”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) विकास नहि

(B) स्थान निरर्थक अछि

(C) संवेदना अनुपस्थित

(D) ई दुनू खण्डकाव्य मैथिली काव्य-विकासक अलग-अलग संवेदनात्मक दिशा देखबैत अछि

sec7

७०१. पतन आ उत्तरामे “पतन” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) अवनति विषय नहि

(B) काव्यक प्रतीक नहि

(C) शीर्षक नैतिक, सामाजिक, राजनीतिक वा मानवीय अवनतिक काव्य-प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

(D) पतन केवल आरोहण अछि

७०२. “पतन” कैं पतन आ उत्तराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) पतन केवल आरोहण अछि

(B) शीर्षक नैतिक, सामाजिक, राजनीतिक वा मानवीय अवनतिक काव्य-प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

(C) अवनति विषय नहि

(D) काव्यक प्रतीक नहि

७०३. नीचाँमे “पतन”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) अवनति विषय नहि

(B) शीर्षक नैतिक, सामाजिक, राजनीतिक वा मानवीय अवनतिक काव्य-प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

(C) काव्यक प्रतीक नहि

(D) पतन केवल आरोहण अछि

७०४. परीक्षा-दृष्टिसँ “पतन” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) शीर्षक नैतिक, सामाजिक, राजनीतिक वा मानवीय अवनतिक काव्य-प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

(B) पतन केवल आरोहण अछि

(C) काव्यक प्रतीक नहि

(D) अवनति विषय नहि

७०५. “पतन”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) शीर्षक नैतिक, सामाजिक, राजनीतिक वा मानवीय अवनतिक काव्य-प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

(B) अवनति विषय नहि

(C) पतन केवल आरोहण अछि

(D) काव्यक प्रतीक नहि

७०६. पतन आ उत्तरामे “अवनतिक भाव” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) पतन काव्यमे मूल्य-भंग, हानि, संकट वा चरित्रक गिरावट चित्रित होएबाक सम्भावना अछि

(B) मूल्य भंग असम्भव

(C) संकट नहि

(D) चरित्र नञि

७०७. “अवनतिक भाव” कैँ पतन आ उत्तराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) संकट नहि

(B) चरित्र नञि

(C) मूल्य भंग असम्भव

(D) पतन काव्यमे मूल्य-भंग, हानि, संकट वा चरित्रक गिरावट चित्रित होएबाक सम्भावना अछि

७०८. नीचाँमे “अवनतिक भाव”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) चरित्र नञि

(B) मूल्य भंग असम्भव

(C) संकट नहि

(D) पतन काव्यमे मूल्य-भंग, हानि, संकट वा चरित्रक गिरावट चित्रित होएबाक सम्भावना अछि

७०९. परीक्षा-दृष्टिसँ “अवनतिक भाव” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) चरित्र नञि

(B) संकट नहि

(C) पतन काव्यमे मूल्य-भंग, हानि, संकट वा चरित्रक गिरावट चित्रित होएबाक सम्भावना अछि

(D) मूल्य भंग असम्भव

७१०. “अवनतिक भाव”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) मूल्य भंग असम्भव

(B) चरित्र नञि

(C) पतन काव्यमे मूल्य-भंग, हानि, संकट वा चरित्रक गिरावट चित्रित होएबाक सम्भावना अछि

(D) संकट नहि

७११. पतन आ उत्तरामे “करुण दृष्टि” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) पतनक कथ्य करुणा, चेतावनी आ आत्मनिरीक्षणक भाव जगाबैत अछि

(B) करुणा केवल उत्सव अछि

(C) आत्मनिरीक्षण नहि

(D) चेतावनी बेकार

७१२. “करुण दृष्टि” कैँ पतन आ उत्तराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) आत्मनिरीक्षण नहि

(B) चेतावनी बेकार

(C) करुणा केवल उत्सव अछि

(D) पतनक कथ्य करुणा, चेतावनी आ आत्मनिरीक्षणक भाव जगाबैत अछि

७१३. नीचाँमे “करुण दृष्टि”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) चेतावनी बेकार

(B) करुणा केवल उत्सव अछि

(C) आत्मनिरीक्षण नहि

(D) पतनक कथ्य करुणा, चेतावनी आ आत्मनिरीक्षणक भाव जगाबैत अछि

७१४. परीक्षा-दृष्टिसँ “करुण दृष्टि” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) चेतावनी बेकार

(B) आत्मनिरीक्षण नहि

(C) पतनक कथ्य करुणा, चेतावनी आ आत्मनिरीक्षणक भाव जगाबैत अछि

(D) करुणा केवल उत्सव अछि

७१५. “करुण दृष्टि”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) करुणा केवल उत्सव अछि

(B) चेतावनी बेकार

(C) पतनक कथ्य करुणा, चेतावनी आ आत्मनिरीक्षणक भाव जगाबैत अछि

(D) आत्मनिरीक्षण नहि

७१६. पतन आ उत्तरामे “सामाजिक संकेत” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) समाजक प्रश्न नहि

(B) विघटन साहित्य-विरोधी

(C) अन्यायक चर्चा नहि

(D) पतन शीर्षक समाजक विघटन, अन्याय वा नैतिक संकटक संकेत दऽ सकैत अछि

७१७. “सामाजिक संकेत” कैँ पतन आ उत्तराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) अन्यायक चर्चा नहि

(B) समाजक प्रश्न नहि

(C) पतन शीर्षक समाजक विघटन, अन्याय वा नैतिक संकटक संकेत दऽ सकैत अछि

(D) विघटन साहित्य-विरोधी

७१८. नीचाँमे “सामाजिक संकेत”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) समाजक प्रश्न नहि

(B) विघटन साहित्य-विरोधी

(C) पतन शीर्षक समाजक विघटन, अन्याय वा नैतिक संकटक संकेत दऽ सकैत अछि

(D) अन्यायक चर्चा नहि

७१९. परीक्षा-दृष्टिसँ “सामाजिक संकेत” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) विघटन साहित्य-विरोधी

(B) पतन शीर्षक समाजक विघटन, अन्याय वा नैतिक संकटक संकेत दऽ सकैत अछि

(C) समाजक प्रश्न नहि

(D) अन्यायक चर्चा नहि

७२०. “सामाजिक संकेत”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) अन्यायक चर्चा नहि

(B) पतन शीर्षक समाजक विघटन, अन्याय वा नैतिक संकटक संकेत दऽ सकैत अछि

(C) विघटन साहित्य-विरोधी

(D) समाजक प्रश्न नहि

७२१. पतन आ उत्तरामे “नैतिक प्रश्न” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) दोषक अर्थ नहि

(B) पतन कथ्य मनुष्यक निर्णय, दोष, लोभ वा दुर्बलताक परिणाम देखबैत अछि

(C) नैतिक प्रश्न असम्बद्ध

(D) निर्णय नहि

७२२. “नैतिक प्रश्न” कैँ पतन आ उत्तराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) पतन कथ्य मनुष्यक निर्णय, दोष, लोभ वा दुर्बलताक परिणाम देखबैत अछि

(B) निर्णय नहि

(C) दोषक अर्थ नहि

(D) नैतिक प्रश्न असम्बद्ध

७२३. नीचाँमे “नैतिक प्रश्न”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) पतन कथ्य मनुष्यक निर्णय, दोष, लोभ वा दुर्बलताक परिणाम देखबैत अछि

(B) दोषक अर्थ नहि

(C) नैतिक प्रश्न असम्बद्ध

(D) निर्णय नहि

७२४. परीक्षा-दृष्टिसँ “नैतिक प्रश्न” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) नैतिक प्रश्न असम्बद्ध

(B) दोषक अर्थ नहि

(C) निर्णय नहि

(D) पतन कथ्य मनुष्यक निर्णय, दोष, लोभ वा दुर्बलताक परिणाम देखबैत अछि

७२५. “नैतिक प्रश्न”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) निर्णय नहि

(B) नैतिक प्रश्न असम्बद्ध

(C) दोषक अर्थ नहि

(D) पतन कथ्य मनुष्यक निर्णय, दोष, लोभ वा दुर्बलताक परिणाम देखबैत अछि

७२६. पतन आ उत्तरामे “उत्तरा” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) महाभारत-सम्बद्ध स्त्री-पात्र, जकर माध्यमे युद्धोत्तर पीड़ा, मातृत्व आ आशाक भाव उभरैत अछि

(B) उत्तरा केवल दिशा-सूचक शब्द

(C) स्त्री-पात्र नहि

(D) महाभारतसँ सम्बन्ध नहि

७२७. “उत्तरा” कैँ पतन आ उत्तराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) स्त्री-पात्र नहि

(B) महाभारतसँ सम्बन्ध नहि

(C) उत्तरा केवल दिशा-सूचक शब्द

(D) महाभारत-सम्बद्ध स्त्री-पात्र, जकर माध्यमे युद्धोत्तर पीड़ा, मातृत्व आ आशाक भाव उभरैत अछि

७२८. नीचाँमे “उत्तरा”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) महाभारतसँ सम्बन्ध नहि

(B) उत्तरा केवल दिशा-सूचक शब्द

(C) स्त्री-पात्र नहि

(D) महाभारत-सम्बद्ध स्त्री-पात्र, जकर माध्यमे युद्धोत्तर पीड़ा, मातृत्व आ आशाक भाव उभरैत अछि

७२९. परीक्षा-दृष्टिसँ “उत्तरा” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) महाभारतसँ सम्बन्ध नहि

(B) स्त्री-पात्र नहि

(C) महाभारत-सम्बद्ध स्त्री-पात्र, जकर माध्यमे युद्धोत्तर पीड़ा, मातृत्व आ आशाक भाव उभरैत अछि

(D) उत्तरा केवल दिशा-सूचक शब्द

७३०. “उत्तरा”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) उत्तरा केवल दिशा-सूचक शब्द

(B) महाभारतसँ सम्बन्ध नहि

(C) महाभारत-सम्बद्ध स्त्री-पात्र, जकर माध्यमे युद्धोत्तर पीड़ा, मातृत्व आ आशाक भाव उभरैत अछि

(D) स्त्री-पात्र नहि

७३१. पतन आ उत्तरामे “युद्धोत्तर करुणा” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) युद्धोत्तर पीड़ा नहि

(B) आशा असम्भव

(C) विनाशक प्रश्न नहि

(D) उत्तरा प्रसंग युद्धक विनाश, विधवापन, अजन्म बालक आ आशा-रक्षा पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि

७३२. “युद्धोत्तर करुणा” कैँ पतन आ उत्तराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) विनाशक प्रश्न नहि

(B) युद्धोत्तर पीड़ा नहि

(C) उत्तरा प्रसंग युद्धक विनाश, विधवापन, अजन्म बालक आ आशा-रक्षा पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि

(D) आशा असम्भव

७३३. नीचाँमे “युद्धोत्तर करुणा”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) युद्धोत्तर पीड़ा नहि

(B) आशा असम्भव

(C) उत्तरा प्रसंग युद्धक विनाश, विधवापन, अजन्म बालक आ आशा-रक्षा पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि

(D) विनाशक प्रश्न नहि

७३४. परीक्षा-दृष्टिसँ “युद्धोत्तर करुणा” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) आशा असम्भव

(B) उत्तरा प्रसंग युद्धक विनाश, विधवापन, अजन्म बालक आ आशा-रक्षा पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि

(C) युद्धोत्तर पीड़ा नहि

(D) विनाशक प्रश्न नहि

७३५. “युद्धोत्तर करुणा”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) विनाशक प्रश्न नहि

(B) उत्तरा प्रसंग युद्धक विनाश, विधवापन, अजन्म बालक आ आशा-रक्षा पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि

(C) आशा असम्भव

(D) युद्धोत्तर पीड़ा नहि

७३६. पतन आ उत्तरामे “अभिमन्यु-स्मृति” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) स्मृति दोष

(B) उत्तरा कथा अभिमन्युक वीरता आ मृत्यु-स्मृतिक करुण संदर्भ खोलैत अछि

(C) अभिमन्यु असम्बद्ध

(D) वीरता नहि

७३७. “अभिमन्यु-स्मृति” कैँ पतन आ उत्तराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) उत्तरा कथा अभिमन्युक वीरता आ मृत्यु-स्मृतिक करुण संदर्भ खोलैत अछि

(B) वीरता नहि

(C) स्मृति दोष

(D) अभिमन्यु असम्बद्ध

७३८. नीचाँमे “अभिमन्यु-स्मृति”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) उत्तरा कथा अभिमन्युक वीरता आ मृत्यु-स्मृतिक करुण संदर्भ खोलैत अछि

(B) स्मृति दोष

(C) अभिमन्यु असम्बद्ध

(D) वीरता नहि

७३९. परीक्षा-दृष्टिसँ “अभिमन्यु-स्मृति” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) अभिमन्यु असम्बद्ध

(B) स्मृति दोष

(C) वीरता नहि

(D) उत्तरा कथा अभिमन्युक वीरता आ मृत्यु-स्मृतिक करुण संदर्भ खोलैत अछि

७४०. “अभिमन्यु-स्मृति”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) वीरता नहि

(B) अभिमन्यु असम्बद्ध

(C) स्मृति दोष

(D) उत्तरा कथा अभिमन्युक वीरता आ मृत्यु-स्मृतिक करुण संदर्भ खोलैत अछि

७४१. पतन आ उत्तरामे “मातृत्व” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) भविष्यक अर्थ नहि

(B) वंश-रक्षा असम्बद्ध

(C) उत्तरा प्रसंग मातृत्व, वंश-रक्षा आ भविष्यक आशा कैँ केन्द्रीय बना सकैत अछि

(D) मातृत्व काव्य-विरोधी

७४२. “मातृत्व” कैँ पतन आ उत्तराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) मातृत्व काव्य-विरोधी

(B) उत्तरा प्रसंग मातृत्व, वंश-रक्षा आ भविष्यक आशा कैँ केन्द्रीय बना सकैत अछि

(C) भविष्यक अर्थ नहि

(D) वंश-रक्षा असम्बद्ध

७४३. नीचाँमे “मातृत्व”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) भविष्यक अर्थ नहि

(B) उत्तरा प्रसंग मातृत्व, वंश-रक्षा आ भविष्यक आशा कैँ केन्द्रीय बना सकैत अछि

(C) वंश-रक्षा असम्बद्ध

(D) मातृत्व काव्य-विरोधी

७४४. परीक्षा-दृष्टिसँ “मातृत्व” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) उत्तरा प्रसंग मातृत्व, वंश-रक्षा आ भविष्यक आशा कैँ केन्द्रीय बना सकैत अछि

(B) मातृत्व काव्य-विरोधी

(C) वंश-रक्षा असम्बद्ध

(D) भविष्यक अर्थ नहि

७४५. “मातृत्व”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) उत्तरा प्रसंग मातृत्व, वंश-रक्षा आ भविष्यक आशा कैँ केन्द्रीय बना सकैत अछि

(B) भविष्यक अर्थ नहि

(C) मातृत्व काव्य-विरोधी

(D) वंश-रक्षा असम्बद्ध

७४६. पतन आ उत्तरामे “परीक्षित संकेत” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) उत्तरा सन्दर्भमे अजन्म बालक आ वंश-निरन्तरताक आशा महत्त्वपूर्ण होइत अछि

(B) अजन्म बालकक अर्थ नहि

(C) निरन्तरता नहि

(D) ई केवल सूची अछि

७४७. “परीक्षित संकेत” कैँ पतन आ उत्तराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) निरन्तरता नहि

(B) ई केवल सूची अछि

(C) अजन्म बालकक अर्थ नहि

(D) उत्तरा सन्दर्भमे अजन्म बालक आ वंश-निरन्तरताक आशा महत्त्वपूर्ण होइत अछि

७४८. नीचाँमे “परीक्षित संकेत”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) ई केवल सूची अछि

(B) अजन्म बालकक अर्थ नहि

(C) निरन्तरता नहि

(D) उत्तरा सन्दर्भमे अजन्म बालक आ वंश-निरन्तरताक आशा महत्त्वपूर्ण होइत अछि

७४९. परीक्षा-दृष्टिसँ “परीक्षित संकेत” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) ई केवल सूची अछि

(B) निरन्तरता नहि

(C) उत्तरा सन्दर्भमे अजन्म बालक आ वंश-निरन्तरताक आशा महत्त्वपूर्ण होइत अछि

(D) अजन्म बालकक अर्थ नहि

७५०. “परीक्षित संकेत”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) अजन्म बालकक अर्थ नहि

(B) ई केवल सूची अछि

(C) उत्तरा सन्दर्भमे अजन्म बालक आ वंश-निरन्तरताक आशा महत्त्वपूर्ण होइत अछि

(D) निरन्तरता नहि

७५१. पतन आ उत्तरामे “पतन बनाम उत्तरा” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) पतन अवनति/संकटक प्रतीक, उत्तरा विनाशोपरान्त आशा आ मातृत्वक प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

(B) दूनूमें कोनो भेद नहि

(C) दूनू हास्य-नाटक अछि

(D) दूनू केवल व्याकरण

७५२. “पतन बनाम उत्तरा” कैँ पतन आ उत्तराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) दूनू हास्य-नाटक अछि

(B) दूनू केवल व्याकरण

(C) दूनूमें कोनो भेद नहि

(D) पतन अवनति/संकटक प्रतीक, उत्तरा विनाशोपरान्त आशा आ मातृत्वक प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

७५३. नीचाँमे “पतन बनाम उत्तरा”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) दूनू केवल व्याकरण

(B) दूनूमें कोनो भेद नहि

(C) दूनू हास्य-नाटक अछि

(D) पतन अवनति/संकटक प्रतीक, उत्तरा विनाशोपरान्त आशा आ मातृत्वक प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

७५४. परीक्षा-दृष्टिसँ “पतन बनाम उत्तरा” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) दूनू केवल व्याकरण

(B) दूनू हास्य-नाटक अछि

(C) पतन अवनति/संकटक प्रतीक, उत्तरा विनाशोपरान्त आशा आ मातृत्वक प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

(D) दूनूमें कोनो भेद नहि

७५५. “पतन बनाम उत्तरा”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) दूनूमें कोनो भेद नहि

(B) दूनू केवल व्याकरण

(C) पतन अवनति/संकटक प्रतीक, उत्तरा विनाशोपरान्त आशा आ मातृत्वक प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

(D) दूनू हास्य-नाटक अछि

७५६. पतन आ उत्तरामे “करुण-वीर समन्वय” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) करुणा नहि

(B) उत्तरा प्रसंग अभिमन्युक वीरता आ उत्तराक करुणा केँ जोड़ैत अछि

(C) करुण आ वीर मिलि नहि सकैत

(D) वीरता नहि

७५७. “करुण-वीर समन्वय” केँ पतन आ उत्तराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) उत्तरा प्रसंग अभिमन्युक वीरता आ उत्तराक करुणा केँ जोड़ैत अछि

(B) वीरता नहि

(C) करुणा नहि

(D) करुण आ वीर मिलि नहि सकैत

७५८. नीचाँमे “करुण-वीर समन्वय”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) उत्तरा प्रसंग अभिमन्युक वीरता आ उत्तराक करुणा केँ जोड़ैत अछि

(B) करुणा नहि

(C) करुण आ वीर मिलि नहि सकैत

(D) वीरता नहि

७५९. परीक्षा-दृष्टिसँ “करुण-वीर समन्वय” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) करुण आ वीर मिलि नहि सकैत

(B) करुणा नहि

(C) वीरता नहि

(D) उत्तरा प्रसंग अभिमन्युक वीरता आ उत्तराक करुणा केँ जोड़ैत अछि

७६०. “करुण-वीर समन्वय”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) वीरता नहि

(B) करुण आ वीर मिलि नहि सकैत

(C) करुणा नहि

(D) उत्तरा प्रसंग अभिमन्युक वीरता आ उत्तराक करुणा केँ जोड़ैत अछि

७६१. पतन आ उत्तरामे “स्त्री-साक्ष्य” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) स्त्री-दृष्टि निरर्थक

(B) युद्धक परिणाम नहि

(C) साक्ष्य असम्बद्ध

(D) उत्तरा युद्धक परिणाम स्त्री-दृष्टिसँ देखबैत अछि

७६२. “स्त्री-साक्ष्य” कैँ पतन आ उत्तराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) साक्ष्य असम्बद्ध

(B) स्त्री-दृष्टि निरर्थक

(C) उत्तरा युद्धक परिणाम स्त्री-दृष्टिसँ देखबैत अछि

(D) युद्धक परिणाम नहि

७६३. नीचाँमे “स्त्री-साक्ष्य”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) स्त्री-दृष्टि निरर्थक

(B) युद्धक परिणाम नहि

(C) उत्तरा युद्धक परिणाम स्त्री-दृष्टिसँ देखबैत अछि

(D) साक्ष्य असम्बद्ध

७६४. परीक्षा-दृष्टिसँ “स्त्री-साक्ष्य” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) युद्धक परिणाम नहि

(B) उत्तरा युद्धक परिणाम स्त्री-दृष्टिसँ देखबैत अछि

(C) स्त्री-दृष्टि निरर्थक

(D) साक्ष्य असम्बद्ध

७६५. “स्त्री-साक्ष्य”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) साक्ष्य असम्बद्ध

(B) उत्तरा युद्धक परिणाम स्त्री-दृष्टिसँ देखबैत अछि

(C) युद्धक परिणाम नहि

(D) स्त्री-दृष्टि निरर्थक

७६६. पतन आ उत्तरामे “भविष्य-चिन्ता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) बचाव असम्भव

(B) उत्तरा कथा अतीतक हानि सँ आगाँ भविष्य बचाबयक भाव उठबैत अछि

(C) भविष्यक चिन्ता नहि

(D) हानि नहि

७६७. “भविष्य-चिन्ता” कैँ पतन आ उत्तराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) उत्तरा कथा अतीतक हानि सँ आगाँ भविष्य बचाबयक भाव उठबैत अछि

(B) हानि नहि

(C) बचाव असम्भव

(D) भविष्यक चिन्ता नहि

७६८. नीचाँमे “भविष्य-चिन्ता”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) उत्तरा कथा अतीतक हानि सँ आगाँ भविष्य बचाबयक भाव उठबैत अछि

(B) बचाव असम्भव

(C) भविष्यक चिन्ता नहि

(D) हानि नहि

७६९. परीक्षा-दृष्टिसँ “भविष्य-चिन्ता” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) भविष्यक चिन्ता नहि

(B) बचाव असम्भव

(C) हानि नहि

(D) उत्तरा कथा अतीतक हानि सँ आगाँ भविष्य बचाबयक भाव उठबैत अछि

७७०. “भविष्य-चिन्ता”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) हानि नहि

(B) भविष्यक चिन्ता नहि

(C) बचाव असम्भव

(D) उत्तरा कथा अतीतक हानि सँ आगाँ भविष्य बचाबयक भाव उठबैत अछि

७७१. पतन आ उत्तरामे “दुःख आ प्रतिरोध” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) पतन आ उत्तरा दुनू दुःखक अलग रूप, चेतना आ प्रतिरोधक सम्भावना खोलैत अछि

(B) दुःख अर्थहीन

(C) प्रतिरोध नहि

(D) चेतना नहि

७७२. “दुःख आ प्रतिरोध” कैँ पतन आ उत्तराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) प्रतिरोध नहि

(B) चेतना नहि

(C) दुःख अर्थहीन

(D) पतन आ उत्तरा दुनू दुःखक अलग रूप, चेतना आ प्रतिरोधक सम्भावना खोलैत अछि

७७३. नीचाँमे “दुःख आ प्रतिरोध”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) चेतना नहि

(B) दुःख अर्थहीन

(C) प्रतिरोध नहि

(D) पतन आ उत्तरा दुनू दुःखक अलग रूप, चेतना आ प्रतिरोधक सम्भावना खोलैत अछि

७७४. परीक्षा-दृष्टिसँ “दुःख आ प्रतिरोध” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) चेतना नहि

(B) प्रतिरोध नहि

(C) पतन आ उत्तरा दुनू दुःखक अलग रूप, चेतना आ प्रतिरोधक सम्भावना खोलैत अछि

(D) दुःख अर्थहीन

७७५. “दुःख आ प्रतिरोध”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) दुःख अर्थहीन

(B) चेतना नहि

(C) पतन आ उत्तरा दुनू दुःखक अलग रूप, चेतना आ प्रतिरोधक सम्भावना खोलैत अछि

(D) प्रतिरोध नहि

७७६. पतन आ उत्तरामे “शीर्षक-पठन” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) भावदिशा नहि

(B) अनुमान असम्भव

(C) पतन आ उत्तरा शीर्षकहि सँ काव्यक भावदिशा अनुमानित कएल जा सकैत अछि

(D) शीर्षक पढ़ब मना अछि

७७७. “शीर्षक-पठन” कैं पतन आ उत्तराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) शीर्षक पढ़ब मना अछि

(B) पतन आ उत्तरा शीर्षकहि सँ काव्यक भावदिशा अनुमानित कएल जा सकैत अछि

(C) भावदिशा नहि

(D) अनुमान असम्भव

७७८. नीचाँमे “शीर्षक-पठन”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) भावदिशा नहि

(B) पतन आ उत्तरा शीर्षकहि सँ काव्यक भावदिशा अनुमानित कएल जा सकैत अछि

(C) अनुमान असम्भव

(D) शीर्षक पढ़ब मना अछि

७७९. परीक्षा-दृष्टिसँ “शीर्षक-पठन” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) पतन आ उत्तरा शीर्षकहि सँ काव्यक भावदिशा अनुमानित कएल जा सकैत अछि

(B) शीर्षक पढ़ब मना अछि

(C) अनुमान असम्भव

(D) भावदिशा नहि

७८०. “शीर्षक-पठन”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) पतन आ उत्तरा शीर्षकहि सँ काव्यक भावदिशा अनुमानित कएल जा सकैत अछि

(B) भावदिशा नहि

(C) शीर्षक पढ़ब मना अछि

(D) अनुमान असम्भव

७८१. पतन आ उत्तरामे “प्रतीक-धर्मिता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) प्रतीक नहि

(B) मूल्य-संकट नहि

(C) घटना असम्बद्ध

(D) पतन घटना सँ अधिक व्यापक मूल्य-संकटक प्रतीक बनि सकैत अछि

७८२. “प्रतीक-धर्मिता” कैं पतन आ उत्तराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) घटना असम्बद्ध

(B) प्रतीक नहि

(C) पतन घटना सँ अधिक व्यापक मूल्य-संकटक प्रतीक बनि सकैत अछि

(D) मूल्य-संकट नहि

७८३. नीचाँमे “प्रतीक-धर्मिता”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) प्रतीक नहि

(B) मूल्य-संकट नहि

(C) पतन घटना सँ अधिक व्यापक मूल्य-संकटक प्रतीक बनि सकैत अछि

(D) घटना असम्बद्ध

७८४. परीक्षा-दृष्टिसँ “प्रतीक-धर्मिता” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) मूल्य-संकट नहि

(B) पतन घटना सँ अधिक व्यापक मूल्य-संकटक प्रतीक बनि सकैत अछि

(C) प्रतीक नहि

(D) घटना असम्बद्ध

७८५. “प्रतीक-धर्मिता”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) घटना असम्बद्ध

(B) पतन घटना सँ अधिक व्यापक मूल्य-संकटक प्रतीक बनि सकैत अछि

(C) मूल्य-संकट नहि

(D) प्रतीक नहि

७८६. पतन आ उत्तरामे “महाभारतीय पृष्ठभूमि” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) महाभारत पृष्ठभूमि नहि

(B) युद्धोत्तर नहि

(C) वंशक प्रश्न नहि

(D) उत्तरा महाभारतक युद्धोत्तर वातावरण, वंश आ करुणाक सन्दर्भमे पढ़ल जाएत अछि

७८७. “महाभारतीय पृष्ठभूमि” कैँ पतन आ उत्तराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) वंशक प्रश्न नहि

(B) महाभारत पृष्ठभूमि नहि

(C) उत्तरा महाभारतक युद्धोत्तर वातावरण, वंश आ करुणाक सन्दर्भमे पढ़ल जाएत अछि

(D) युद्धोत्तर नहि

७८८. नीचाँमे “महाभारतीय पृष्ठभूमि”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) महाभारत पृष्ठभूमि नहि

(B) युद्धोत्तर नहि

(C) उत्तरा महाभारतक युद्धोत्तर वातावरण, वंश आ करुणाक सन्दर्भमे पढ़ल जाएत अछि

(D) वंशक प्रश्न नहि

७८९. परीक्षा-दृष्टिसँ “महाभारतीय पृष्ठभूमि” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) युद्धोत्तर नहि

(B) उत्तरा महाभारतक युद्धोत्तर वातावरण, वंश आ करुणाक सन्दर्भमे पढ़ल जाएत अछि

(C) महाभारत पृष्ठभूमि नहि

(D) वंशक प्रश्न नहि

७९०. “महाभारतीय पृष्ठभूमि”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) वंशक प्रश्न नहि

(B) उत्तरा महाभारतक युद्धोत्तर वातावरण, वंश आ करुणाक सन्दर्भमे पढ़ल जाएत अछि

(C) युद्धोत्तर नहि

(D) महाभारत पृष्ठभूमि नहि

७९१. पतन आ उत्तरामे “खण्डकाव्य प्रभाव” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) तीव्रता नहि

(B) प्रसंग सीमित नहि

(C) भावोच्छ्वास दोष

(D) सीमित प्रसंगक कारण पतन आ उत्तरा दुनू तीव्र भावोच्छ्वास देबाक सामर्थ्य रखैत अछि

७९२. “खण्डकाव्य प्रभाव” कैँ पतन आ उत्तराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) भावोच्छ्वास दोष

(B) तीव्रता नहि

(C) सीमित प्रसंगक कारण पतन आ उत्तरा दुनू तीव्र भावोच्छ्वास देबाक सामर्थ्य रखैत अछि

(D) प्रसंग सीमित नहि

७९३. नीचाँमे “खण्डकाव्य प्रभाव”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) तीव्रता नहि

(B) प्रसंग सीमित नहि

(C) सीमित प्रसंगक कारण पतन आ उत्तरा दुनू तीव्र भावोच्छ्वास देबाक सामर्थ्य रखैत अछि

(D) भावोच्छ्वास दोष

७९४. परीक्षा-दृष्टिसँ “खण्डकाव्य प्रभाव” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) प्रसंग सीमित नहि

(B) सीमित प्रसंगक कारण पतन आ उत्तरा दुनू तीव्र भावोच्छ्वास देबाक सामर्थ्य रखैत अछि

(C) तीव्रता नहि

(D) भावोच्छ्वास दोष

७९५. “खण्डकाव्य प्रभाव”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) भावोच्छ्वास दोष

(B) सीमित प्रसंगक कारण पतन आ उत्तरा दुनू तीव्र भावोच्छ्वास देबाक सामर्थ्य रखैत अछि

(C) प्रसंग सीमित नहि

(D) तीव्रता नहि

७९६. पतन आ उत्तरामे “उत्तर लेखन” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) रस छोड़ब

(B) सामाजिक अर्थ न देखब

(C) एहि खण्डमे शीर्षक, प्रतीक, रस, पात्र आ सामाजिक अर्थ जोड़ि उत्तर देब चाही

(D) केवल कृति-सूची लिखब

७९७. “उत्तर लेखन” कैँ पतन आ उत्तराक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) केवल कृति-सूची लिखब

(B) एहि खण्डमे शीर्षक, प्रतीक, रस, पात्र आ सामाजिक अर्थ जोड़ि उत्तर देब चाही

(C) रस छोड़ब

(D) सामाजिक अर्थ न देखब

७९८. नीचाँमे “उत्तर लेखन”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) रस छोड़ब

(B) एहि खण्डमे शीर्षक, प्रतीक, रस, पात्र आ सामाजिक अर्थ जोड़ि उत्तर देब चाही

(C) सामाजिक अर्थ न देखब

(D) केवल कृति-सूची लिखब

७९९. परीक्षा-दृष्टिसँ “उत्तर लेखन” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) एहि खण्डमे शीर्षक, प्रतीक, रस, पात्र आ सामाजिक अर्थ जोड़ि उत्तर देब चाही

(B) केवल कृति-सूची लिखब

(C) सामाजिक अर्थ न देखब

(D) रस छोड़ब

८००. “उत्तर लेखन”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) एहि खण्डमे शीर्षक, प्रतीक, रस, पात्र आ सामाजिक अर्थ जोड़ि उत्तर देब चाही

(B) रस छोड़ब

(C) केवल कृति-सूची लिखब

(D) सामाजिक अर्थ न देखब

sec8

८०१. उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरमे “उत्सर्ग” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) समर्पण असाहित्यिक

(B) समर्पण, त्याग, लोकहित, देश-भाव वा उच्च मूल्य लेल अपनेकेँ अर्पित करबाक भाव-संकेत

(C) केवल संग्रहालयक टिकट

(D) त्यागक अर्थ नहि

८०२. “उत्सर्ग” केँ उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) समर्पण, त्याग, लोकहित, देश-भाव वा उच्च मूल्य लेल अपनेकेँ अर्पित करबाक भाव-संकेत

(B) त्यागक अर्थ नहि

(C) समर्पण असाहित्यिक

(D) केवल संग्रहालयक टिकट

८०३. नीचाँमे “उत्सर्ग”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) त्यागक अर्थ नहि

(B) समर्पण, त्याग, लोकहित, देश-भाव वा उच्च मूल्य लेल अपनेकेँ अर्पित करबाक भाव-संकेत

(C) समर्पण असाहित्यिक

(D) केवल संग्रहालयक टिकट

८०४. परीक्षा-दृष्टिसँ “उत्सर्ग” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) समर्पण, त्याग, लोकहित, देश-भाव वा उच्च मूल्य लेल अपनेकेँ अर्पित करबाक भाव-संकेत

(B) केवल संग्रहालयक टिकट

(C) समर्पण असाहित्यिक

(D) त्यागक अर्थ नहि

८०५. “उत्सर्ग”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) समर्पण, त्याग, लोकहित, देश-भाव वा उच्च मूल्य लेल अपनेकेँ अर्पित करबाक भाव-संकेत

(B) त्यागक अर्थ नहि

(C) केवल संग्रहालयक टिकट

(D) समर्पण असाहित्यिक

८०६. उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरमे “समर्पण-भाव” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) स्वार्थहि सर्वोच्च अछि

(B) लक्ष्य नहि

(C) प्रतीक नहि

(D) उत्सर्ग शीर्षक व्यक्तिगत स्वार्थसँ ऊपर उठि व्यापक लक्ष्यक लेल त्यागक प्रतीक बनैत अछि

८०७. “समर्पण-भाव” केँ उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) प्रतीक नहि

(B) स्वार्थहि सर्वोच्च अछि

(C) उत्सर्ग शीर्षक व्यक्तिगत स्वार्थसँ ऊपर उठि व्यापक लक्ष्यक लेल त्यागक प्रतीक बनैत अछि

(D) लक्ष्य नहि

८०८. नीचाँमे “समर्पण-भाव”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) प्रतीक नहि

(B) स्वार्थहि सर्वोच्च अछि

(C) लक्ष्य नहि

(D) उत्सर्ग शीर्षक व्यक्तिगत स्वार्थसँ ऊपर उठि व्यापक लक्ष्यक लेल त्यागक प्रतीक बनैत अछि

८०९. परीक्षा-दृष्टिसँ “समर्पण-भाव” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) प्रतीक नहि

(B) लक्ष्य नहि

(C) उत्सर्ग शीर्षक व्यक्तिगत स्वार्थसँ ऊपर उठि व्यापक लक्ष्यक लेल त्यागक प्रतीक बनैत अछि

(D) स्वार्थहि सर्वोच्च अछि

८१०. “समर्पण-भाव”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) स्वार्थहि सर्वोच्च अछि

(B) प्रतीक नहि

(C) उत्सर्ग शीर्षक व्यक्तिगत स्वार्थसँ ऊपर उठि व्यापक लक्ष्यक लेल त्यागक प्रतीक बनैत अछि

(D) लक्ष्य नहि

८११. उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरमे “लोकहित” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) उत्सर्गक भाव समाज, भाषा, देश वा मानवता लेल सेवा-संकल्पसँ जुड़ि सकैत अछि

(B) लोकहित काव्य-विरोधी

(C) सेवा नहि

(D) मानवता असम्बद्ध

८१२. “लोकहित” कैँ उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) सेवा नहि

(B) मानवता असम्बद्ध

(C) लोकहित काव्य-विरोधी

(D) उत्सर्गक भाव समाज, भाषा, देश वा मानवता लेल सेवा-संकल्पसँ जुड़ि सकैत अछि

८१३. नीचाँमे “लोकहित”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) उत्सर्गक भाव समाज, भाषा, देश वा मानवता लेल सेवा-संकल्पसँ जुड़ि सकैत अछि

(B) मानवता असम्बद्ध

(C) लोकहित काव्य-विरोधी

(D) सेवा नहि

८१४. परीक्षा-दृष्टिसँ “लोकहित” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) लोकहित काव्य-विरोधी

(B) मानवता असम्बद्ध

(C) सेवा नहि

(D) उत्सर्गक भाव समाज, भाषा, देश वा मानवता लेल सेवा-संकल्पसँ जुड़ि सकैत अछि

८१५. “लोकहित”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) सेवा नहि

(B) लोकहित काव्य-विरोधी

(C) मानवता असम्बद्ध

(D) उत्सर्गक भाव समाज, भाषा, देश वा मानवता लेल सेवा-संकल्पसँ जुड़ि सकैत अछि

८१६. उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरमे “वीर-शान्त भाव” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) आदर्श असम्भव

(B) साहस दोष

(C) उत्सर्गमे साहसक संग शान्त स्वीकृति आ उच्च आदर्शक भाव सम्भव अछि

(D) वीर आ शान्त रस नहि

८१७. “वीर-शान्त भाव” कैँ उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) वीर आ शान्त रस नहि

(B) उत्सर्गमे साहसक संग शान्त स्वीकृति आ उच्च आदर्शक भाव सम्भव अछि

(C) आदर्श असम्भव

(D) साहस दोष

८१८. नीचाँमे “वीर-शान्त भाव”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) वीर आ शान्त रस नहि

(B) आदर्श असम्भव

(C) उत्सर्गमे साहसक संग शान्त स्वीकृति आ उच्च आदर्शक भाव सम्भव अछि

(D) साहस दोष

८१९. परीक्षा-दृष्टिसँ “वीर-शान्त भाव” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) आदर्श असम्भव

(B) उत्सर्गमे साहसक संग शान्त स्वीकृति आ उच्च आदर्शक भाव सम्भव अछि

(C) वीर आ शान्त रस नहि

(D) साहस दोष

८२०. “वीर-शान्त भाव”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) साहस दोष

(B) उत्सर्गमे साहसक संग शान्त स्वीकृति आ उच्च आदर्शक भाव सम्भव अछि

(C) आदर्श असम्भव

(D) वीर आ शान्त रस नहि

८२१. उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरमे “एकलव्य” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) शिष्यत्व नहि

(B) महाभारतसँ सम्बन्ध नहि

(C) महाभारतक वनवासी/शिष्य पात्र, जकर कथा गुरु-भक्ति, प्रतिभा, अन्याय आ स्वाभिमानक प्रश्न उठबैत अछि

(D) एकलव्य केवल संख्या

८२२. “एकलव्य” कैँ उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) एकलव्य केवल संख्या

(B) महाभारतक वनवासी/शिष्य पात्र, जकर कथा गुरु-भक्ति, प्रतिभा, अन्याय आ स्वाभिमानक प्रश्न उठबैत अछि

(C) शिष्यत्व नहि

(D) महाभारतसँ सम्बन्ध नहि

८२३. नीचाँमे “एकलव्य”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) एकलव्य केवल संख्या

(B) शिष्यत्व नहि

(C) महाभारतक वनवासी/शिष्य पात्र, जकर कथा गुरु-भक्ति, प्रतिभा, अन्याय आ स्वाभिमानक प्रश्न उठबैत अछि

(D) महाभारतसँ सम्बन्ध नहि

८२४. परीक्षा-दृष्टिसँ “एकलव्य” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) शिष्यत्व नहि

(B) महाभारतक वनवासी/शिष्य पात्र, जकर कथा गुरु-भक्ति, प्रतिभा, अन्याय आ स्वाभिमानक प्रश्न उठबैत अछि

(C) एकलव्य केवल संख्या

(D) महाभारतसँ सम्बन्ध नहि

८२५. “एकलव्य”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) महाभारतसँ सम्बन्ध नहि

(B) महाभारतक वनवासी/शिष्य पात्र, जकर कथा गुरु-भक्ति, प्रतिभा, अन्याय आ स्वाभिमानक प्रश्न उठबैत अछि

(C) शिष्यत्व नहि

(D) एकलव्य केवल संख्या

८२६. उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरमे “गुरु-दक्षिणा” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) न्याय निरर्थक

(B) एकलव्य कथा गुरु-दक्षिणा, जाति-व्यवस्था, प्रतिभा आ न्याय पर गम्भीर प्रश्न उठबैत अछि

(C) गुरु-दक्षिणा विषय नहि

(D) जाति-प्रश्न नहि

८२७. “गुरु-दक्षिणा” कैं उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) एकलव्य कथा गुरु-दक्षिणा, जाति-व्यवस्था, प्रतिभा आ न्याय पर गम्भीर प्रश्न उठबैत अछि

(B) जाति-प्रश्न नहि

(C) न्याय निरर्थक

(D) गुरु-दक्षिणा विषय नहि

८२८. नीचाँमे “गुरु-दक्षिणा”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) जाति-प्रश्न नहि

(B) एकलव्य कथा गुरु-दक्षिणा, जाति-व्यवस्था, प्रतिभा आ न्याय पर गम्भीर प्रश्न उठबैत अछि

(C) न्याय निरर्थक

(D) गुरु-दक्षिणा विषय नहि

८२९. परीक्षा-दृष्टिसँ “गुरु-दक्षिणा” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) एकलव्य कथा गुरु-दक्षिणा, जाति-व्यवस्था, प्रतिभा आ न्याय पर गम्भीर प्रश्न उठबैत अछि

(B) गुरु-दक्षिणा विषय नहि

(C) न्याय निरर्थक

(D) जाति-प्रश्न नहि

८३०. “गुरु-दक्षिणा”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) एकलव्य कथा गुरु-दक्षिणा, जाति-व्यवस्था, प्रतिभा आ न्याय पर गम्भीर प्रश्न उठबैत अछि

(B) जाति-प्रश्न नहि

(C) गुरु-दक्षिणा विषय नहि

(D) न्याय निरर्थक

८३१. उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरमे “स्वाध्याय” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) आत्मबल नहि

(B) एकलव्य अपन अभ्यास, लगन आ आत्मबलसँ साधना करैत पात्र रूपमे पढ़ल जाइत अछि

(C) स्वाध्याय असम्भव

(D) अभ्यास नहि

८३२. “स्वाध्याय” कैं उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) एकलव्य अपन अभ्यास, लगन आ आत्मबलसँ साधना करैत पात्र रूपमे पढ़ल जाइत अछि

(B) अभ्यास नहि

(C) आत्मबल नहि

(D) स्वाध्याय असम्भव

८३३. नीचाँमे “स्वाध्याय”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) अभ्यास नहि

(B) एकलव्य अपन अभ्यास, लगन आ आत्मबलसँ साधना करैत पात्र रूपमे पढ़ल जाइत अछि

(C) आत्मबल नहि

(D) स्वाध्याय असम्भव

८३४. परीक्षा-दृष्टिसँ “स्वाध्याय” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) एकलव्य अपन अभ्यास, लगन आ आत्मबलसँ साधना करैत पात्र रूपमे पढ़ल जाइत अछि

(B) स्वाध्याय असम्भव

(C) आत्मबल नहि

(D) अभ्यास नहि

८३५. “स्वाध्याय”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) एकलव्य अपन अभ्यास, लगन आ आत्मबलसँ साधना करैत पात्र रूपमे पढ़ल जाइत अछि

(B) अभ्यास नहि

(C) स्वाध्याय असम्भव

(D) आत्मबल नहि

८३६. उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरमे “सामाजिक अन्याय” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) वंचना विषय नहि

(B) एकलव्य प्रसंग ज्ञानक अधिकार, वंचना आ व्यवस्था-विमर्शक प्रतीक बनैत अछि

(C) अन्याय नहि

(D) ज्ञान अधिकार असंगत

८३७. “सामाजिक अन्याय” कैँ उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) एकलव्य प्रसंग ज्ञानक अधिकार, वंचना आ व्यवस्था-विमर्शक प्रतीक बनैत अछि

(B) ज्ञान अधिकार असंगत

(C) वंचना विषय नहि

(D) अन्याय नहि

८३८. नीचाँमे “सामाजिक अन्याय”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) ज्ञान अधिकार असंगत

(B) एकलव्य प्रसंग ज्ञानक अधिकार, वंचना आ व्यवस्था-विमर्शक प्रतीक बनैत अछि

(C) वंचना विषय नहि

(D) अन्याय नहि

८३९. परीक्षा-दृष्टिसँ “सामाजिक अन्याय” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) एकलव्य प्रसंग ज्ञानक अधिकार, वंचना आ व्यवस्था-विमर्शक प्रतीक बनैत अछि

(B) अन्याय नहि

(C) वंचना विषय नहि

(D) ज्ञान अधिकार असंगत

८४०. “सामाजिक अन्याय”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) एकलव्य प्रसंग ज्ञानक अधिकार, वंचना आ व्यवस्था-विमर्शक प्रतीक बनैत अछि

(B) ज्ञान अधिकार असंगत

(C) अन्याय नहि

(D) वंचना विषय नहि

८४१. उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरमे “प्रतिभा आ वंचना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) करुणा असम्भव

(B) एकलव्यक प्रतिभा सामाजिक अवरोधसँ टकरबैत अछि, जे काव्यक करुण-वीर आधार बनैत अछि

(C) प्रतिभा नहि

(D) अवरोध नहि

८४२. “प्रतिभा आ वंचना” कैँ उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) एकलव्यक प्रतिभा सामाजिक अवरोधसँ टकरबैत अछि, जे काव्यक करुण-वीर आधार बनैत अछि

(B) अवरोध नहि

(C) करुणा असम्भव

(D) प्रतिभा नहि

८४३. नीचाँमे “प्रतिभा आ वंचना”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) अवरोध नहि

(B) एकलव्यक प्रतिभा सामाजिक अवरोधसँ टकरबैत अछि, जे काव्यक करुण-वीर आधार बनैत अछि

(C) करुणा असम्भव

(D) प्रतिभा नहि

८४४. परीक्षा-दृष्टिसँ “प्रतिभा आ वंचना” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) एकलव्यक प्रतिभा सामाजिक अवरोधसँ टकरबैत अछि, जे काव्यक करुण-वीर आधार बनैत अछि

(B) प्रतिभा नहि

(C) करुणा असम्भव

(D) अवरोध नहि

८४५. “प्रतिभा आ वंचना”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) एकलव्यक प्रतिभा सामाजिक अवरोधसँ टकरबैत अछि, जे काव्यक करुण-वीर आधार बनैत अछि

(B) अवरोध नहि

(C) प्रतिभा नहि

(D) करुणा असम्भव

८४६. उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरमे “नोर” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) आँसू नहि

(B) करुणा वर्जित

(C) शीर्षक आँसू, पीड़ा, करुणा, स्मृति वा लोकदुःखक भाव-प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

(D) नोर केवल हँसीक नाम

८४७. “नोर” कैँ उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) नोर केवल हँसीक नाम

(B) शीर्षक आँसू, पीड़ा, करुणा, स्मृति वा लोकदुःखक भाव-प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

(C) आँसू नहि

(D) करुणा वर्जित

८४८. नीचाँमे “नोर”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) नोर केवल हँसीक नाम

(B) आँसू नहि

(C) शीर्षक आँसू, पीड़ा, करुणा, स्मृति वा लोकदुःखक भाव-प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

(D) करुणा वर्जित

८४९. परीक्षा-दृष्टिसँ “नोर” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) आँसू नहि

(B) शीर्षक आँसू, पीड़ा, करुणा, स्मृति वा लोकदुःखक भाव-प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

(C) नोर केवल हँसीक नाम

(D) करुणा वर्जित

८५०. “नोर”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) करुणा वर्जित

(B) शीर्षक आँसू, पीड़ा, करुणा, स्मृति वा लोकदुःखक भाव-प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि

(C) आँसू नहि

(D) नोर केवल हँसीक नाम

८५१. उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरमे “करुण प्रतीक” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) पीड़ा अर्थहीन

(B) प्रतीक निषिद्ध

(C) सामूहिक भाव नहि

(D) नोर काव्यमे व्यक्तिगत वा सामूहिक पीड़ाकेँ संक्षिप्त, तीव्र प्रतीकमे व्यक्त कएल जा सकैत अछि

८५२. “करुण प्रतीक” केँ उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) सामूहिक भाव नहि

(B) पीड़ा अर्थहीन

(C) नोर काव्यमे व्यक्तिगत वा सामूहिक पीड़ाकेँ संक्षिप्त, तीव्र प्रतीकमे व्यक्त कएल जा सकैत अछि

(D) प्रतीक निषिद्ध

८५३. नीचाँमे “करुण प्रतीक”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) सामूहिक भाव नहि

(B) पीड़ा अर्थहीन

(C) प्रतीक निषिद्ध

(D) नोर काव्यमे व्यक्तिगत वा सामूहिक पीड़ाकेँ संक्षिप्त, तीव्र प्रतीकमे व्यक्त कएल जा सकैत अछि

८५४. परीक्षा-दृष्टिसँ “करुण प्रतीक” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) सामूहिक भाव नहि

(B) प्रतीक निषिद्ध

(C) नोर काव्यमे व्यक्तिगत वा सामूहिक पीड़ाकेँ संक्षिप्त, तीव्र प्रतीकमे व्यक्त कएल जा सकैत अछि

(D) पीड़ा अर्थहीन

८५५. “करुण प्रतीक”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) पीड़ा अर्थहीन

(B) सामूहिक भाव नहि

(C) नोर काव्यमे व्यक्तिगत वा सामूहिक पीड़ाकेँ संक्षिप्त, तीव्र प्रतीकमे व्यक्त कएल जा सकैत अछि

(D) प्रतीक निषिद्ध

८५६. उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरमे “स्मृति आ क्षति” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) भीतरक भाव नहि

(B) नोरक भाव स्मरण, हानि, वियोग आ मनुष्यक आन्तरिक टूटनसँ जुड़ल होइत अछि

(C) स्मृति नहि

(D) क्षति असम्बद्ध

८५७. “स्मृति आ क्षति” कैँ उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) नोरक भाव स्मरण, हानि, वियोग आ मनुष्यक आन्तरिक टूटनसँ जुड़ल होइत अछि

(B) क्षति असम्बद्ध

(C) भीतरक भाव नहि

(D) स्मृति नहि

८५८. नीचाँमे “स्मृति आ क्षति”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) क्षति असम्बद्ध

(B) नोरक भाव स्मरण, हानि, वियोग आ मनुष्यक आन्तरिक टूटनसँ जुड़ल होइत अछि

(C) भीतरक भाव नहि

(D) स्मृति नहि

८५९. परीक्षा-दृष्टिसँ “स्मृति आ क्षति” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) नोरक भाव स्मरण, हानि, वियोग आ मनुष्यक आन्तरिक टूटनसँ जुड़ल होइत अछि

(B) स्मृति नहि

(C) भीतरक भाव नहि

(D) क्षति असम्बद्ध

८६०. “स्मृति आ क्षति”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) नोरक भाव स्मरण, हानि, वियोग आ मनुष्यक आन्तरिक टूटनसँ जुड़ल होइत अछि

(B) क्षति असम्बद्ध

(C) स्मृति नहि

(D) भीतरक भाव नहि

८६१. उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरमे “उत्सर्ग बनाम नोर” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) उत्सर्ग सक्रिय समर्पणक, नोर करुण अनुभवक प्रतीक रूपमे अलग भावदिशा दैत अछि

(B) दूनू एकहि अर्थक शब्द

(C) दूनू केवल हास्य

(D) भावदिशा नहि

८६२. “उत्सर्ग बनाम नोर” कैँ उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) दूनू केवल हास्य

(B) भावदिशा नहि

(C) दूनू एकहि अर्थक शब्द

(D) उत्सर्ग सक्रिय समर्पणक, नोर करुण अनुभवक प्रतीक रूपमे अलग भावदिशा दैत अछि

८६३. नीचाँमे “उत्सर्ग बनाम नोर”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) उत्सर्ग सक्रिय समर्पणक, नोर करुण अनुभवक प्रतीक रूपमे अलग भावदिशा दैत अछि

(B) भावदिशा नहि

(C) दूनू एकहि अर्थक शब्द

(D) दूनू केवल हास्य

८६४. परीक्षा-दृष्टिसँ “उत्सर्ग बनाम नोर” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) दूनू एकहि अर्थक शब्द

(B) भावदिशा नहि

(C) दूनू केवल हास्य

(D) उत्सर्ग सक्रिय समर्पणक, नोर करुण अनुभवक प्रतीक रूपमे अलग भावदिशा दैत अछि

८६५. “उत्सर्ग बनाम नोर”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) दूनू केवल हास्य

(B) दूनू एकहि अर्थक शब्द

(C) भावदिशा नहि

(D) उत्सर्ग सक्रिय समर्पणक, नोर करुण अनुभवक प्रतीक रूपमे अलग भावदिशा दैत अछि

८६६. उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरमे “एकलव्य बनाम उत्सर्ग” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) एकलव्य निष्क्रिय अछि

(B) उत्सर्गमे त्याग नहि

(C) एकलव्यक त्याग प्रश्नाकुल अन्यायसँ जुड़ैत अछि, उत्सर्ग व्यापक स्वैच्छिक समर्पणक स्वर लैत अछि

(D) कोनो भेद नहि

८६७. “एकलव्य बनाम उत्सर्ग” कैं उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) कोनो भेद नहि

(B) एकलव्यक त्याग प्रश्नाकुल अन्यायसँ जुड़ैत अछि, उत्सर्ग व्यापक स्वैच्छिक समर्पणक स्वर लैत अछि

(C) एकलव्य निष्क्रिय अछि

(D) उत्सर्गमे त्याग नहि

८६८. नीचाँमे “एकलव्य बनाम उत्सर्ग”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) कोनो भेद नहि

(B) एकलव्य निष्क्रिय अछि

(C) एकलव्यक त्याग प्रश्नाकुल अन्यायसँ जुड़ैत अछि, उत्सर्ग व्यापक स्वैच्छिक समर्पणक स्वर लैत अछि

(D) उत्सर्गमे त्याग नहि

८६९. परीक्षा-दृष्टिसँ “एकलव्य बनाम उत्सर्ग” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) एकलव्य निष्क्रिय अछि

(B) एकलव्यक त्याग प्रश्नाकुल अन्यायसँ जुड़ैत अछि, उत्सर्ग व्यापक स्वैच्छिक समर्पणक स्वर लैत अछि

(C) कोनो भेद नहि

(D) उत्सर्गमे त्याग नहि

८७०. “एकलव्य बनाम उत्सर्ग”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) उत्सर्गमे त्याग नहि

(B) एकलव्यक त्याग प्रश्नाकुल अन्यायसँ जुड़ैत अछि, उत्सर्ग व्यापक स्वैच्छिक समर्पणक स्वर लैत अछि

(C) एकलव्य निष्क्रिय अछि

(D) कोनो भेद नहि

८७१. उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरमे “शोषित स्वर” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) एकलव्य काव्य शोषित, वंचित आ प्रतिभाशाली व्यक्तिक आवाज बनि सकैत अछि

(B) शोषित स्वर नहि

(C) वंचितक काव्यमे स्थान नहि

(D) आवाज असम्भव

८७२. “शोषित स्वर” कैं उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) वंचितक काव्यमे स्थान नहि

(B) आवाज असम्भव

(C) शोषित स्वर नहि

(D) एकलव्य काव्य शोषित, वंचित आ प्रतिभाशाली व्यक्तिक आवाज बनि सकैत अछि

८७३. नीचाँमे “शोषित स्वर”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) एकलव्य काव्य शोषित, वंचित आ प्रतिभाशाली व्यक्तिक आवाज बनि सकैत अछि

(B) आवाज असम्भव

(C) शोषित स्वर नहि

(D) वंचितक काव्यमे स्थान नहि

८७४. परीक्षा-दृष्टिसँ “शोषित स्वर” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) शोषित स्वर नहि

(B) आवाज असम्भव

(C) वंचितक काव्यमे स्थान नहि

(D) एकलव्य काव्य शोषित, वंचित आ प्रतिभाशाली व्यक्तिक आवाज बनि सकैत अछि

८७५. “शोषित स्वर”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) वंचितक काव्यमे स्थान नहि

(B) शोषित स्वर नहि

(C) आवाज असम्भव

(D) एकलव्य काव्य शोषित, वंचित आ प्रतिभाशाली व्यक्तिक आवाज बनि सकैत अछि

८७६. उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरमे “नैतिक जटिलता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) जटिलता नहि

(B) गुरु-भक्ति नहि

(C) अन्यायक प्रश्न नहि

(D) एकलव्य प्रसंग गुरु-भक्ति आ अन्याय दुनूक बीच जटिल प्रश्न उठबैत अछि

८७७. “नैतिक जटिलता” कैँ उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) अन्यायक प्रश्न नहि

(B) जटिलता नहि

(C) एकलव्य प्रसंग गुरु-भक्ति आ अन्याय दुनूक बीच जटिल प्रश्न उठबैत अछि

(D) गुरु-भक्ति नहि

८७८. नीचाँमे “नैतिक जटिलता”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) अन्यायक प्रश्न नहि

(B) जटिलता नहि

(C) गुरु-भक्ति नहि

(D) एकलव्य प्रसंग गुरु-भक्ति आ अन्याय दुनूक बीच जटिल प्रश्न उठबैत अछि

८७९. परीक्षा-दृष्टिसँ “नैतिक जटिलता” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) अन्यायक प्रश्न नहि

(B) गुरु-भक्ति नहि

(C) एकलव्य प्रसंग गुरु-भक्ति आ अन्याय दुनूक बीच जटिल प्रश्न उठबैत अछि

(D) जटिलता नहि

८८०. “नैतिक जटिलता”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) जटिलता नहि

(B) अन्यायक प्रश्न नहि

(C) एकलव्य प्रसंग गुरु-भक्ति आ अन्याय दुनूक बीच जटिल प्रश्न उठबैत अछि

(D) गुरु-भक्ति नहि

८८१. उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरमे "आधुनिक प्रासंगिकता" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) सामाजिक न्याय असम्बद्ध

(B) मानवीय पीड़ा निषिद्ध

(C) एकलव्य आ नोर जकाँ शीर्षक आधुनिक सामाजिक न्याय आ मानवीय पीड़ाक प्रश्नसँ जोड़ल जा सकैत अछि

(D) आधुनिक प्रासंगिकता नहि

८८२. "आधुनिक प्रासंगिकता" कैं उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) आधुनिक प्रासंगिकता नहि

(B) एकलव्य आ नोर जकाँ शीर्षक आधुनिक सामाजिक न्याय आ मानवीय पीड़ाक प्रश्नसँ जोड़ल जा सकैत अछि

(C) सामाजिक न्याय असम्बद्ध

(D) मानवीय पीड़ा निषिद्ध

८८३. नीचाँमे "आधुनिक प्रासंगिकता"क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) आधुनिक प्रासंगिकता नहि

(B) सामाजिक न्याय असम्बद्ध

(C) एकलव्य आ नोर जकाँ शीर्षक आधुनिक सामाजिक न्याय आ मानवीय पीड़ाक प्रश्नसँ जोड़ल जा सकैत अछि

(D) मानवीय पीड़ा निषिद्ध

८८४. परीक्षा-दृष्टिसँ "आधुनिक प्रासंगिकता" पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) सामाजिक न्याय असम्बद्ध

(B) एकलव्य आ नोर जकाँ शीर्षक आधुनिक सामाजिक न्याय आ मानवीय पीड़ाक प्रश्नसँ जोड़ल जा सकैत अछि

(C) आधुनिक प्रासंगिकता नहि

(D) मानवीय पीड़ा निषिद्ध

८८५. "आधुनिक प्रासंगिकता"क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) मानवीय पीड़ा निषिद्ध

(B) एकलव्य आ नोर जकाँ शीर्षक आधुनिक सामाजिक न्याय आ मानवीय पीड़ाक प्रश्नसँ जोड़ल जा सकैत अछि

(C) सामाजिक न्याय असम्बद्ध

(D) आधुनिक प्रासंगिकता नहि

८८६. उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरमे "त्यागक आलोचना" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) उत्सर्गक अर्थ केवल प्रशंसा नहि, त्यागक कारण आ परिणामक आलोचनात्मक पठन सेहो सम्भव अछि

(B) आलोचना वर्जित

(C) कारण नहि देखू

(D) परिणाम नहि

८८७. "त्यागक आलोचना" कैं उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) कारण नहि देखू

(B) परिणाम नहि

(C) आलोचना वर्जित

(D) उत्सर्गक अर्थ केवल प्रशंसा नहि, त्यागक कारण आ परिणामक आलोचनात्मक पठन सेहो सम्भव अछि

८८८. नीचाँमे "त्यागक आलोचना"क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) उत्सर्गक अर्थ केवल प्रशंसा नहि, त्यागक कारण आ परिणामक आलोचनात्मक पठन सेहो सम्भव अछि

(B) परिणाम नहि

(C) आलोचना वर्जित

(D) कारण नहि देखू

८८९. परीक्षा-दृष्टिसँ “त्यागक आलोचना” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) आलोचना वर्जित

(B) परिणाम नहि

(C) कारण नहि देखू

(D) उत्सर्गक अर्थ केवल प्रशंसा नहि, त्यागक कारण आ परिणामक आलोचनात्मक पठन सेहो सम्भव अछि

८९०. “त्यागक आलोचना”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) कारण नहि देखू

(B) आलोचना वर्जित

(C) परिणाम नहि

(D) उत्सर्गक अर्थ केवल प्रशंसा नहि, त्यागक कारण आ परिणामक आलोचनात्मक पठन सेहो सम्भव अछि

८९१. उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरमे “खण्डकाव्य-सघनता” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) शीर्षकमे भावार्थ नहि

(B) सीमा नहि

(C) व्यापकता असम्भव

(D) एहि तीनू कृतिमे सीमित शीर्षक भीतर व्यापक भावार्थ समेटबाक सम्भावना अछि

८९२. “खण्डकाव्य-सघनता” कैँ उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) व्यापकता असम्भव

(B) शीर्षकमे भावार्थ नहि

(C) एहि तीनू कृतिमे सीमित शीर्षक भीतर व्यापक भावार्थ समेटबाक सम्भावना अछि

(D) सीमा नहि

८९३. नीचाँमे “खण्डकाव्य-सघनता”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) व्यापकता असम्भव

(B) शीर्षकमे भावार्थ नहि

(C) सीमा नहि

(D) एहि तीनू कृतिमे सीमित शीर्षक भीतर व्यापक भावार्थ समेटबाक सम्भावना अछि

८९४. परीक्षा-दृष्टिसँ “खण्डकाव्य-सघनता” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) व्यापकता असम्भव

(B) सीमा नहि

(C) एहि तीनू कृतिमे सीमित शीर्षक भीतर व्यापक भावार्थ समेटबाक सम्भावना अछि

(D) शीर्षकमे भावार्थ नहि

८९५. “खण्डकाव्य-सघनता”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) शीर्षकमे भावार्थ नहि

(B) व्यापकता असम्भव

(C) एहि तीनू कृतिमे सीमित शीर्षक भीतर व्यापक भावार्थ समेटबाक सम्भावना अछि

(D) सीमा नहि

८९६. उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरमे “परीक्षा-उत्तर” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) प्रतीक छोड़ब

(B) नैतिक प्रश्न नहि

(C) उत्सर्ग, एकलव्य आ नोर पर उत्तरमे प्रतीक, सामाजिक अर्थ, रस आ नैतिक प्रश्न जोड़ब जरूरी अछि

(D) केवल नाम लिखब

८९७. “परीक्षा-उत्तर” कैँ उत्सर्ग, एकलव्य आ नोरक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) केवल नाम लिखब

(B) उत्सर्ग, एकलव्य आ नोर पर उत्तरमे प्रतीक, सामाजिक अर्थ, रस आ नैतिक प्रश्न जोड़ब जरूरी अछि

(C) प्रतीक छोड़ब

(D) नैतिक प्रश्न नहि

८९८. नीचाँमे “परीक्षा-उत्तर”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल नाम लिखब

(B) प्रतीक छोड़ब

(C) उत्सर्ग, एकलव्य आ नोर पर उत्तरमे प्रतीक, सामाजिक अर्थ, रस आ नैतिक प्रश्न जोड़ब जरूरी अछि

(D) नैतिक प्रश्न नहि

८९९. परीक्षा-दृष्टिसँ “परीक्षा-उत्तर” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) प्रतीक छोड़ब

(B) उत्सर्ग, एकलव्य आ नोर पर उत्तरमे प्रतीक, सामाजिक अर्थ, रस आ नैतिक प्रश्न जोड़ब जरूरी अछि

(C) केवल नाम लिखब

(D) नैतिक प्रश्न नहि

९००. “परीक्षा-उत्तर”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) नैतिक प्रश्न नहि

(B) उत्सर्ग, एकलव्य आ नोर पर उत्तरमे प्रतीक, सामाजिक अर्थ, रस आ नैतिक प्रश्न जोड़ब जरूरी अछि

(C) प्रतीक छोड़ब

(D) केवल नाम लिखब

sec9

९०१. तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिमे “महाकाव्य बनाम खण्डकाव्य” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) खण्डकाव्य सदैव महाकाव्यसँ लम्बा

(B) महाकाव्य बिना कथाक होइत

(C) महाकाव्य विस्तृत कथा-विश्व बनबैत अछि, खण्डकाव्य सीमित प्रसंगक गहन अर्थ पर केन्द्रित रहैत अछि

(D) दूनूमें कोनो संरचनात्मक भेद नहि

९०२. “महाकाव्य बनाम खण्डकाव्य” कैँ तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) दूनूमें कोनो संरचनात्मक भेद नहि

(B) महाकाव्य विस्तृत कथा-विश्व बनबैत अछि, खण्डकाव्य सीमित प्रसंगक गहन अर्थ पर केन्द्रित रहैत अछि

(C) खण्डकाव्य सदैव महाकाव्यसँ लम्बा

(D) महाकाव्य बिना कथाक होइत

९०३. नीचाँमे “महाकाव्य बनाम खण्डकाव्य”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) खण्डकाव्य सदैव महाकाव्यसँ लम्बा

(B) महाकाव्य विस्तृत कथा-विश्व बनबैत अछि, खण्डकाव्य सीमित प्रसंगक गहन अर्थ पर केन्द्रित रहैत अछि

(C) महाकाव्य बिना कथाक होइत

(D) दूनूमें कोनो संरचनात्मक भेद नहि

९०४. परीक्षा-दृष्टिसँ “महाकाव्य बनाम खण्डकाव्य” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) महाकाव्य विस्तृत कथा-विश्व बनबैत अछि, खण्डकाव्य सीमित प्रसंगक गहन अर्थ पर केन्द्रित रहैत अछि

(B) दूनूमें कोनो संरचनात्मक भेद नहि

(C) महाकाव्य बिना कथाक होइत

(D) खण्डकाव्य सदैव महाकाव्यसँ लम्बा

९०५. "महाकाव्य बनाम खण्डकाव्य"क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) महाकाव्य विस्तृत कथा-विश्व बनबैत अछि, खण्डकाव्य सीमित प्रसंगक गहन अर्थ पर केन्द्रित रहैत अछि

(B) खण्डकाव्य सदैव महाकाव्यसँ लम्बा

(C) दूनूमें कोनो संरचनात्मक भेद नहि

(D) महाकाव्य बिना कथाक होइत

९०६. तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिमे "रामकाव्य तुलना" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) मिथिलाभाषा रामायण आ रमेश्वरचरित मिथिला रामायणकेँ रामकथा-आधारित महाकाव्य परम्पराक दृष्टिसँ पढ़ब चाही

(B) दूनू प्रेमगीत मात्र अछि

(C) रामकथा असम्बद्ध

(D) तुलना निरर्थक

९०७. "रामकाव्य तुलना" केँ तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) रामकथा असम्बद्ध

(B) तुलना निरर्थक

(C) दूनू प्रेमगीत मात्र अछि

(D) मिथिलाभाषा रामायण आ रमेश्वरचरित मिथिला रामायणकेँ रामकथा-आधारित महाकाव्य परम्पराक दृष्टिसँ पढ़ब चाही

९०८. नीचाँमे "रामकाव्य तुलना"क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) तुलना निरर्थक

(B) दूनू प्रेमगीत मात्र अछि

(C) रामकथा असम्बद्ध

(D) मिथिलाभाषा रामायण आ रमेश्वरचरित मिथिला रामायणकेँ रामकथा-आधारित महाकाव्य परम्पराक दृष्टिसँ पढ़ब चाही

९०९. परीक्षा-दृष्टिसँ "रामकाव्य तुलना" पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) तुलना निरर्थक

(B) रामकथा असम्बद्ध

(C) मिथिलाभाषा रामायण आ रमेश्वरचरित मिथिला रामायणकेँ रामकथा-आधारित महाकाव्य परम्पराक दृष्टिसँ पढ़ब चाही

(D) दूनू प्रेमगीत मात्र अछि

९१०. "रामकाव्य तुलना"क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) दूनू प्रेमगीत मात्र अछि

(B) तुलना निरर्थक

(C) मिथिलाभाषा रामायण आ रमेश्वरचरित मिथिला रामायणकेँ रामकथा-आधारित महाकाव्य परम्पराक दृष्टिसँ पढ़ब चाही

(D) रामकथा असम्बद्ध

९११. तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिमे "महाभारत सामग्री" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) सुभद्रा-हरण, अम्बचरित, प्रतिज्ञा पाण्डव, उत्तरा, एकलव्य आदि कृति महाभारतीय प्रसंगक विविध रूप खोलैत अछि

(B) महाभारत सामग्री नहि

(C) सभ रामकथा अछि

(D) प्रसंग-विविधता असम्भव

९१२. "महाभारत सामग्री" केँ तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) सभ रामकथा अछि

(B) प्रसंग-विविधता असम्भव

(C) महाभारत सामग्री नहि

(D) सुभद्रा-हरण, अम्बचरित, प्रतिज्ञा पाण्डव, उत्तरा, एकलव्य आदि कृति महाभारतीय प्रसंगक विविध रूप खोलैत अछि

९१३. नीचाँमे "महाभारत सामग्री"क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) प्रसंग-विविधता असम्भव

(B) महाभारत सामग्री नहि

(C) सभ रामकथा अछि

(D) सुभद्रा-हरण, अम्बचरित, प्रतिज्ञा पाण्डव, उत्तरा, एकलव्य आदि कृति महाभारतीय प्रसंगक विविध रूप खोलैत अछि

९१४. परीक्षा-दृष्टिसँ "महाभारत सामग्री" पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) प्रसंग-विविधता असम्भव

(B) सभ रामकथा अछि

(C) सुभद्रा-हरण, अम्बचरित, प्रतिज्ञा पाण्डव, उत्तरा, एकलव्य आदि कृति महाभारतीय प्रसंगक विविध रूप खोलैत अछि

(D) महाभारत सामग्री नहि

९१५. "महाभारत सामग्री"क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) महाभारत सामग्री नहि

(B) प्रसंग-विविधता असम्भव

(C) सुभद्रा-हरण, अम्बचरित, प्रतिज्ञा पाण्डव, उत्तरा, एकलव्य आदि कृति महाभारतीय प्रसंगक विविध रूप खोलैत अछि

(D) सभ रामकथा अछि

९१६. तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिमे "चरित-केन्द्र" सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) चाणक्य, कृष्णचरित आ अम्बचरित जकाँ कृति व्यक्तित्व, आदर्श आ संघर्षक चरित रूप विकसित करैत अछि

(B) चरितक अर्थ नहि

(C) व्यक्तित्व नहि

(D) संघर्ष असाहित्यिक

९१७. "चरित-केन्द्र" कैँ तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) व्यक्तित्व नहि

(B) संघर्ष असाहित्यिक

(C) चरितक अर्थ नहि

(D) चाणक्य, कृष्णचरित आ अम्बचरित जकाँ कृति व्यक्तित्व, आदर्श आ संघर्षक चरित रूप विकसित करैत अछि

९१८. नीचाँमे "चरित-केन्द्र"क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) संघर्ष असाहित्यिक

(B) चरितक अर्थ नहि

(C) व्यक्तित्व नहि

(D) चाणक्य, कृष्णचरित आ अम्बचरित जकाँ कृति व्यक्तित्व, आदर्श आ संघर्षक चरित रूप विकसित करैत अछि

९१९. परीक्षा-दृष्टिसँ "चरित-केन्द्र" पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) संघर्ष असाहित्यिक

(B) व्यक्तित्व नहि

(C) चाणक्य, कृष्णचरित आ अम्बचरित जकाँ कृति व्यक्तित्व, आदर्श आ संघर्षक चरित रूप विकसित करैत अछि

(D) चरितक अर्थ नहि

९२०. "चरित-केन्द्र"क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) चरितक अर्थ नहि

(B) संघर्ष असाहित्यिक

(C) चाणक्य, कृष्णचरित आ अम्बचरित जकाँ कृति व्यक्तित्व, आदर्श आ संघर्षक चरित रूप विकसित करैत अछि

(D) व्यक्तित्व नहि

९२१. तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिमे “स्त्री-पात्र तुलना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) स्त्री-पात्रक महत्त्व नहि

(B) दूनू सूची मात्र

(C) पीड़ा असम्बद्ध

(D) सीता, शकुन्तला, उत्तरा, अम्बा/अम्ब प्रसंग स्त्री-धैर्य, पीड़ा, प्रतिरोध आ मर्यादाक अलग रूप देखबैत अछि

९२२. “स्त्री-पात्र तुलना” कैँ तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) पीड़ा असम्बद्ध

(B) स्त्री-पात्रक महत्त्व नहि

(C) सीता, शकुन्तला, उत्तरा, अम्बा/अम्ब प्रसंग स्त्री-धैर्य, पीड़ा, प्रतिरोध आ मर्यादाक अलग रूप देखबैत अछि

(D) दूनू सूची मात्र

९२३. नीचाँमे “स्त्री-पात्र तुलना”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) स्त्री-पात्रक महत्त्व नहि

(B) दूनू सूची मात्र

(C) सीता, शकुन्तला, उत्तरा, अम्बा/अम्ब प्रसंग स्त्री-धैर्य, पीड़ा, प्रतिरोध आ मर्यादाक अलग रूप देखबैत अछि

(D) पीड़ा असम्बद्ध

९२४. परीक्षा-दृष्टिसँ “स्त्री-पात्र तुलना” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) दूनू सूची मात्र

(B) सीता, शकुन्तला, उत्तरा, अम्बा/अम्ब प्रसंग स्त्री-धैर्य, पीड़ा, प्रतिरोध आ मर्यादाक अलग रूप देखबैत अछि

(C) स्त्री-पात्रक महत्त्व नहि

(D) पीड़ा असम्बद्ध

९२५. “स्त्री-पात्र तुलना”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) पीड़ा असम्बद्ध

(B) सीता, शकुन्तला, उत्तरा, अम्बा/अम्ब प्रसंग स्त्री-धैर्य, पीड़ा, प्रतिरोध आ मर्यादाक अलग रूप देखबैत अछि

(C) दूनू सूची मात्र

(D) स्त्री-पात्रक महत्त्व नहि

९२६. तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिमे “वीरता तुलना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) वीरता नहि

(B) प्रतिरोध वर्जित

(C) साहस असम्भव

(D) सुभद्रा-हरण, प्रतिज्ञा पाण्डव, एकलव्य आ युद्ध-प्रसंग वीरता, साहस वा प्रतिरोधक अलग रूप प्रस्तुत करैत अछि

९२७. “वीरता तुलना” कैँ तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) साहस असम्भव

(B) वीरता नहि

(C) सुभद्रा-हरण, प्रतिज्ञा पाण्डव, एकलव्य आ युद्ध-प्रसंग वीरता, साहस वा प्रतिरोधक अलग रूप प्रस्तुत करैत अछि

(D) प्रतिरोध वर्जित

९२८. नीचाँमे “वीरता तुलना”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) वीरता नहि

(B) प्रतिरोध वर्जित

(C) सुभद्रा-हरण, प्रतिज्ञा पाण्डव, एकलव्य आ युद्ध-प्रसंग वीरता, साहस वा प्रतिरोधक अलग रूप प्रस्तुत करैत अछि

(D) साहस असम्भव

९२९. परीक्षा-दृष्टिसँ “वीरता तुलना” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) प्रतिरोध वर्जित

(B) सुभद्रा-हरण, प्रतिज्ञा पाण्डव, एकलव्य आ युद्ध-प्रसंग वीरता, साहस वा प्रतिरोधक अलग रूप प्रस्तुत करैत अछि

(C) वीरता नहि

(D) साहस असम्भव

९३०. “वीरता तुलना”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) साहस असम्भव

(B) सुभद्रा-हरण, प्रतिज्ञा पाण्डव, एकलव्य आ युद्ध-प्रसंग वीरता, साहस वा प्रतिरोधक अलग रूप प्रस्तुत करैत अछि

(C) प्रतिरोध वर्जित

(D) वीरता नहि

९३१. तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिमे “करुणा तुलना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) उत्तरा, नोर, पतन, शकुन्तला आ सीता-प्रसंग करुण भावक भिन्न रूप खोलैत अछि

(B) करुणा नहि

(C) सभ हास्य-काव्य अछि

(D) वियोग असम्बद्ध

९३२. “करुणा तुलना” कैँ तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) सभ हास्य-काव्य अछि

(B) वियोग असम्बद्ध

(C) करुणा नहि

(D) उत्तरा, नोर, पतन, शकुन्तला आ सीता-प्रसंग करुण भावक भिन्न रूप खोलैत अछि

९३३. नीचाँमे “करुणा तुलना”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) वियोग असम्बद्ध

(B) करुणा नहि

(C) सभ हास्य-काव्य अछि

(D) उत्तरा, नोर, पतन, शकुन्तला आ सीता-प्रसंग करुण भावक भिन्न रूप खोलैत अछि

९३४. परीक्षा-दृष्टिसँ “करुणा तुलना” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) वियोग असम्बद्ध

(B) सभ हास्य-काव्य अछि

(C) उत्तरा, नोर, पतन, शकुन्तला आ सीता-प्रसंग करुण भावक भिन्न रूप खोलैत अछि

(D) करुणा नहि

९३५. “करुणा तुलना”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) करुणा नहि

(B) वियोग असम्बद्ध

(C) उत्तरा, नोर, पतन, शकुन्तला आ सीता-प्रसंग करुण भावक भिन्न रूप खोलैत अछि

(D) सभ हास्य-काव्य अछि

९३६. तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिमे “भक्ति आ धर्म” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) रामकाव्य आ कृष्णचरितमे भक्ति, धर्म, मर्यादा आ दिव्य-मानवीय सम्बन्धक चर्चा महत्त्वपूर्ण अछि

(B) धर्मक चर्चा नहि

(C) भक्ति असाहित्यिक

(D) कथा केवल शुष्क तथ्य

९३७. “भक्ति आ धर्म” कैँ तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) भक्ति असाहित्यिक

(B) कथा केवल शुष्क तथ्य

(C) धर्मक चर्चा नहि

(D) रामकाव्य आ कृष्णचरितमे भक्ति, धर्म, मर्यादा आ दिव्य-मानवीय सम्बन्धक चर्चा महत्त्वपूर्ण अछि

९३८. नीचाँमे “भक्ति आ धर्म”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) कथा केवल शुष्क तथ्य

(B) धर्मक चर्चा नहि

(C) भक्ति असाहित्यिक

(D) रामकाव्य आ कृष्णचरितमे भक्ति, धर्म, मर्यादा आ दिव्य-मानवीय सम्बन्धक चर्चा महत्त्वपूर्ण अछि

९३९. परीक्षा-दृष्टिसँ “भक्ति आ धर्म” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) कथा केवल शुष्क तथ्य

(B) भक्ति असाहित्यिक

(C) रामकाव्य आ कृष्णचरितमे भक्ति, धर्म, मर्यादा आ दिव्य-मानवीय सम्बन्धक चर्चा महत्त्वपूर्ण अछि

(D) धर्मक चर्चा नहि

९४०. “भक्ति आ धर्म”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) धर्मक चर्चा नहि

(B) कथा केवल शुष्क तथ्य

(C) रामकाव्य आ कृष्णचरितमे भक्ति, धर्म, मर्यादा आ दिव्य-मानवीय सम्बन्धक चर्चा महत्त्वपूर्ण अछि

(D) भक्ति असाहित्यिक

९४१. तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिमे “नीति-चेतना तुलना” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) प्रतिज्ञाक अर्थ नहि

(B) चाणक्यक नीति, कृष्णक युक्ति, रामक मर्यादा आ पाण्डवक प्रतिज्ञा काव्यमे नैतिक प्रश्न खोलैत अछि

(C) नीति नहि

(D) युक्ति काव्य-विरोधी

९४२. “नीति-चेतना तुलना” कैँ तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) चाणक्यक नीति, कृष्णक युक्ति, रामक मर्यादा आ पाण्डवक प्रतिज्ञा काव्यमे नैतिक प्रश्न खोलैत अछि

(B) युक्ति काव्य-विरोधी

(C) प्रतिज्ञाक अर्थ नहि

(D) नीति नहि

९४३. नीचाँमे “नीति-चेतना तुलना”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) चाणक्यक नीति, कृष्णक युक्ति, रामक मर्यादा आ पाण्डवक प्रतिज्ञा काव्यमे नैतिक प्रश्न खोलैत अछि

(B) प्रतिज्ञाक अर्थ नहि

(C) नीति नहि

(D) युक्ति काव्य-विरोधी

९४४. परीक्षा-दृष्टिसँ “नीति-चेतना तुलना” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) नीति नहि

(B) प्रतिज्ञाक अर्थ नहि

(C) युक्ति काव्य-विरोधी

(D) चाणक्यक नीति, कृष्णक युक्ति, रामक मर्यादा आ पाण्डवक प्रतिज्ञा काव्यमे नैतिक प्रश्न खोलैत अछि

९४५. “नीति-चेतना तुलना”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) युक्ति काव्य-विरोधी

(B) नीति नहि

(C) प्रतिज्ञाक अर्थ नहि

(D) चाणक्यक नीति, कृष्णक युक्ति, रामक मर्यादा आ पाण्डवक प्रतिज्ञा काव्यमे नैतिक प्रश्न खोलैत अछि

९४६. तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिमे “भाषा-शैली” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) प्रवाह असम्भव

(B) मैथिली काव्यरूप लोकभाषिक माधुर्य, कथात्मक प्रवाह, छन्द आ सांस्कृतिक शब्दावलीसँ विशिष्ट बनैत अछि

(C) भाषा महत्त्वहीन

(D) छन्द नहि

९४७. “भाषा-शैली” कैँ तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) मैथिली काव्यरूप लोकभाषिक माधुर्य, कथात्मक प्रवाह, छन्द आ सांस्कृतिक शब्दावलीसँ विशिष्ट बनैत अछि

(B) छन्द नहि

(C) प्रवाह असम्भव

(D) भाषा महत्त्वहीन

९४८. नीचाँमे “भाषा-शैली”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) मैथिली काव्यरूप लोकभाषिक माधुर्य, कथात्मक प्रवाह, छन्द आ सांस्कृतिक शब्दावलीसँ विशिष्ट बनैत अछि

(B) प्रवाह असम्भव

(C) भाषा महत्त्वहीन

(D) छन्द नहि

९४९. परीक्षा-दृष्टिसँ “भाषा-शैली” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) भाषा महत्त्वहीन

(B) प्रवाह असम्भव

(C) छन्द नहि

(D) मैथिली काव्यरूप लोकभाषिक माधुर्य, कथात्मक प्रवाह, छन्द आ सांस्कृतिक शब्दावलीसँ विशिष्ट बनैत अछि

९५०. “भाषा-शैली”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) छन्द नहि

(B) भाषा महत्त्वहीन

(C) प्रवाह असम्भव

(D) मैथिली काव्यरूप लोकभाषिक माधुर्य, कथात्मक प्रवाह, छन्द आ सांस्कृतिक शब्दावलीसँ विशिष्ट बनैत अछि

९५१. तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिमे “छन्द-विधान” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) भाव-संप्रेषण नहि

(B) महाकाव्य आ खण्डकाव्य दुनूमे लय आ छन्द भाव-संप्रेषणक साधन बनैत अछि

(C) छन्द केवल बाधा अछि

(D) लय नहि

९५२. “छन्द-विधान” कैँ तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) महाकाव्य आ खण्डकाव्य दुनूमे लय आ छन्द भाव-संप्रेषणक साधन बनैत अछि

(B) लय नहि

(C) भाव-संप्रेषण नहि

(D) छन्द केवल बाधा अछि

९५३. नीचाँमे “छन्द-विधान”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) महाकाव्य आ खण्डकाव्य दुनूमे लय आ छन्द भाव-संप्रेषणक साधन बनैत अछि

(B) भाव-संप्रेषण नहि

(C) छन्द केवल बाधा अछि

(D) लय नहि

९५४. परीक्षा-दृष्टिसँ “छन्द-विधान” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) छन्द केवल बाधा अछि

(B) भाव-संप्रेषण नहि

(C) लय नहि

(D) महाकाव्य आ खण्डकाव्य दुनूमे लय आ छन्द भाव-संप्रेषणक साधन बनैत अछि

९५५. “छन्द-विधान”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) लय नहि

(B) छन्द केवल बाधा अछि

(C) भाव-संप्रेषण नहि

(D) महाकाव्य आ खण्डकाव्य दुनूमे लय आ छन्द भाव-संप्रेषणक साधन बनैत अछि

९५६. तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिमे “प्रतीक-पठन” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) प्रतीकक जगह नहि

(B) व्याख्या नहि

(C) भारती, पतन, उत्सर्ग, नोर जकाँ शीर्षक प्रतीकात्मक व्याख्याक माँग करैत अछि

(D) शीर्षक निरर्थक

९५७. “प्रतीक-पठन” केँ तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) शीर्षक निरर्थक

(B) भारती, पतन, उत्सर्ग, नोर जकाँ शीर्षक प्रतीकात्मक व्याख्याक माँग करैत अछि

(C) प्रतीकक जगह नहि

(D) व्याख्या नहि

९५८. नीचाँमे “प्रतीक-पठन”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) प्रतीकक जगह नहि

(B) भारती, पतन, उत्सर्ग, नोर जकाँ शीर्षक प्रतीकात्मक व्याख्याक माँग करैत अछि

(C) व्याख्या नहि

(D) शीर्षक निरर्थक

९५९. परीक्षा-दृष्टिसँ “प्रतीक-पठन” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) भारती, पतन, उत्सर्ग, नोर जकाँ शीर्षक प्रतीकात्मक व्याख्याक माँग करैत अछि

(B) शीर्षक निरर्थक

(C) व्याख्या नहि

(D) प्रतीकक जगह नहि

९६०. “प्रतीक-पठन”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) भारती, पतन, उत्सर्ग, नोर जकाँ शीर्षक प्रतीकात्मक व्याख्याक माँग करैत अछि

(B) प्रतीकक जगह नहि

(C) शीर्षक निरर्थक

(D) व्याख्या नहि

९६१. तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिमे “कथास्रोत” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) लोक-संस्कार वर्जित

(B) रामायण, महाभारत, पुराण, लोक-संस्कार आ आधुनिक चेतना काव्यक कथास्रोत बनि सकैत अछि

(C) कथास्रोत नहि

(D) सभ कृति बिना आधारक

९६२. “कथास्रोत” कैँ तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) रामायण, महाभारत, पुराण, लोक-संस्कार आ आधुनिक चेतना काव्यक कथास्रोत बनि सकैत अछि

(B) सभ कृति बिना आधारक

(C) लोक-संस्कार वर्जित

(D) कथास्रोत नहि

९६३. नीचाँमे “कथास्रोत”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) रामायण, महाभारत, पुराण, लोक-संस्कार आ आधुनिक चेतना काव्यक कथास्रोत बनि सकैत अछि

(B) लोक-संस्कार वर्जित

(C) कथास्रोत नहि

(D) सभ कृति बिना आधारक

९६४. परीक्षा-दृष्टिसँ “कथास्रोत” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) कथास्रोत नहि

(B) लोक-संस्कार वर्जित

(C) सभ कृति बिना आधारक

(D) रामायण, महाभारत, पुराण, लोक-संस्कार आ आधुनिक चेतना काव्यक कथास्रोत बनि सकैत अछि

९६५. “कथास्रोत”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) सभ कृति बिना आधारक

(B) कथास्रोत नहि

(C) लोक-संस्कार वर्जित

(D) रामायण, महाभारत, पुराण, लोक-संस्कार आ आधुनिक चेतना काव्यक कथास्रोत बनि सकैत अछि

९६६. तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिमे “आधुनिक पुनर्पाठ” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) पुनर्पाठ असम्भव

(B) पुरान कथा मृत अछि

(C) आधुनिक प्रश्न असाहित्यिक

(D) पुरान कथाकेँ आधुनिक सामाजिक, नैतिक आ मानवीय प्रश्नक प्रकाशमे पढ़ल जा सकैत अछि

९६७. “आधुनिक पुनर्पाठ” कैँ तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) आधुनिक प्रश्न असाहित्यिक

(B) पुनर्पाठ असम्भव

(C) पुरान कथाकेँ आधुनिक सामाजिक, नैतिक आ मानवीय प्रश्नक प्रकाशमे पढ़ल जा सकैत अछि

(D) पुरान कथा मृत अछि

९६८. नीचाँमे “आधुनिक पुनर्पाठ”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) पुनर्पाठ असम्भव

(B) पुरान कथा मृत अछि

(C) पुरान कथाकेँ आधुनिक सामाजिक, नैतिक आ मानवीय प्रश्नक प्रकाशमे पढ़ल जा सकैत अछि

(D) आधुनिक प्रश्न असाहित्यिक

९६९. परीक्षा-दृष्टिसँ “आधुनिक पुनर्पाठ” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) पुरान कथा मृत अछि

(B) पुरान कथाकेँ आधुनिक सामाजिक, नैतिक आ मानवीय प्रश्नक प्रकाशमे पढ़ल जा सकैत अछि

(C) पुनर्पाठ असम्भव

(D) आधुनिक प्रश्न असाहित्यिक

९७०. “आधुनिक पुनर्पाठ”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) आधुनिक प्रश्न असाहित्यिक

(B) पुरान कथाकेँ आधुनिक सामाजिक, नैतिक आ मानवीय प्रश्नक प्रकाशमे पढ़ल जा सकैत अछि

(C) पुरान कथा मृत अछि

(D) पुनर्पाठ असम्भव

९७१. तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिमे “परीक्षा-लेखन” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) केवल शीर्षक लिखब

(B) उदाहरण नहि देब

(C) निष्कर्ष छोड़ब

(D) उत्तरमे परिभाषा, कृति-सूची, उदाहरण, रस, भाषा, शैली आ निष्कर्ष क्रमबद्ध देब चाही

९७२. “परीक्षा-लेखन” केँ तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) निष्कर्ष छोड़ब

(B) केवल शीर्षक लिखब

(C) उत्तरमे परिभाषा, कृति-सूची, उदाहरण, रस, भाषा, शैली आ निष्कर्ष क्रमबद्ध देब चाही

(D) उदाहरण नहि देब

९७३. नीचाँमे “परीक्षा-लेखन”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) केवल शीर्षक लिखब

(B) उदाहरण नहि देब

(C) उत्तरमे परिभाषा, कृति-सूची, उदाहरण, रस, भाषा, शैली आ निष्कर्ष क्रमबद्ध देब चाही

(D) निष्कर्ष छोड़ब

९७४. परीक्षा-दृष्टिसँ “परीक्षा-लेखन” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) उदाहरण नहि देब

(B) उत्तरमे परिभाषा, कृति-सूची, उदाहरण, रस, भाषा, शैली आ निष्कर्ष क्रमबद्ध देब चाही

(C) केवल शीर्षक लिखब

(D) निष्कर्ष छोड़ब

९७५. “परीक्षा-लेखन”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) निष्कर्ष छोड़ब

(B) उत्तरमे परिभाषा, कृति-सूची, उदाहरण, रस, भाषा, शैली आ निष्कर्ष क्रमबद्ध देब चाही

(C) उदाहरण नहि देब

(D) केवल शीर्षक लिखब

९७६. तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिमे “वर्गीकरण” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) देल कृतिसभकेँ महाकाव्य आ खण्डकाव्य खण्डमे ठीक-ठीक अलग करब प्रथम अभ्यास अछि

(B) वर्गीकरण बेकार

(C) सभ एकहि खण्डमे

(D) भेद न देखू

९७७. “वर्गीकरण” कैँ तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) सभ एकहि खण्डमे

(B) भेद न देखू

(C) वर्गीकरण बेकार

(D) देल कृतिसभकेँ महाकाव्य आ खण्डकाव्य खण्डमे ठीक-ठीक अलग करब प्रथम अभ्यास अछि

९७८. नीचाँमे “वर्गीकरण”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) भेद न देखू

(B) वर्गीकरण बेकार

(C) सभ एकहि खण्डमे

(D) देल कृतिसभकेँ महाकाव्य आ खण्डकाव्य खण्डमे ठीक-ठीक अलग करब प्रथम अभ्यास अछि

९७९. परीक्षा-दृष्टिसँ “वर्गीकरण” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) भेद न देखू

(B) सभ एकहि खण्डमे

(C) देल कृतिसभकेँ महाकाव्य आ खण्डकाव्य खण्डमे ठीक-ठीक अलग करब प्रथम अभ्यास अछि

(D) वर्गीकरण बेकार

९८०. “वर्गीकरण”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) वर्गीकरण बेकार

(B) भेद न देखू

(C) देल कृतिसभकेँ महाकाव्य आ खण्डकाव्य खण्डमे ठीक-ठीक अलग करब प्रथम अभ्यास अछि

(D) सभ एकहि खण्डमे

९८१. तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिमे “सांस्कृतिक धरातल” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) लोक-संस्कार असम्बद्ध

(B) मैथिली महाकाव्य-खण्डकाव्य मिथिला, रामायण-महाभारत, भक्ति, नीति आ लोक-संस्कारक संयुक्त धरातल पर उभरैत अछि

(C) संस्कृतिक धरातल नहि

(D) मिथिलाक अर्थ नहि

९८२. “सांस्कृतिक धरातल” कैँ तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) मैथिली महाकाव्य-खण्डकाव्य मिथिला, रामायण-महाभारत, भक्ति, नीति आ लोक-संस्कारक संयुक्त धरातल पर उभरैत अछि

(B) मिथिलाक अर्थ नहि

(C) लोक-संस्कार असम्बद्ध

(D) संस्कृतिक धरातल नहि

९८३. नीचाँमे “सांस्कृतिक धरातल”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) मैथिली महाकाव्य-खण्डकाव्य मिथिला, रामायण-महाभारत, भक्ति, नीति आ लोक-संस्कारक संयुक्त धरातल पर उभरैत अछि

(B) लोक-संस्कार असम्बद्ध

(C) संस्कृतिक धरातल नहि

(D) मिथिलाक अर्थ नहि

९८४. परीक्षा-दृष्टिसँ “सांस्कृतिक धरातल” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) संस्कृतिक धरातल नहि

(B) लोक-संस्कार असम्बद्ध

(C) मिथिलाक अर्थ नहि

(D) मैथिली महाकाव्य-खण्डकाव्य मिथिला, रामायण-महाभारत, भक्ति, नीति आ लोक-संस्कारक संयुक्त धरातल पर उभरैत अछि

९८५. “सांस्कृतिक धरातल”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) मिथिलाक अर्थ नहि

(B) संस्कृतिक धरातल नहि

(C) लोक-संस्कार असम्बद्ध

(D) मैथिली महाकाव्य-खण्डकाव्य मिथिला, रामायण-महाभारत, भक्ति, नीति आ लोक-संस्कारक संयुक्त धरातल पर उभरैत अछि

९८६. तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिमे “रचना-दृष्टि” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) दृष्टि नहि

(B) चयन असम्भव

(C) विस्तार दोष

(D) महाकाव्य विस्तार-दृष्टि आ खण्डकाव्य चयन-दृष्टि द्वारा अपन प्रभाव बनबैत अछि

९८७. “रचना-दृष्टि” कैँ तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) विस्तार दोष

(B) दृष्टि नहि

(C) महाकाव्य विस्तार-दृष्टि आ खण्डकाव्य चयन-दृष्टि द्वारा अपन प्रभाव बनबैत अछि

(D) चयन असम्भव

९८८. नीचाँमे “रचना-दृष्टि”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) दृष्टि नहि

(B) चयन असम्भव

(C) महाकाव्य विस्तार-दृष्टि आ खण्डकाव्य चयन-दृष्टि द्वारा अपन प्रभाव बनबैत अछि

(D) विस्तार दोष

९८९. परीक्षा-दृष्टिसँ “रचना-दृष्टि” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) चयन असम्भव

(B) महाकाव्य विस्तार-दृष्टि आ खण्डकाव्य चयन-दृष्टि द्वारा अपन प्रभाव बनबैत अछि

(C) दृष्टि नहि

(D) विस्तार दोष

९९०. “रचना-दृष्टि”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) विस्तार दोष

(B) महाकाव्य विस्तार-दृष्टि आ खण्डकाव्य चयन-दृष्टि द्वारा अपन प्रभाव बनबैत अछि

(C) चयन असम्भव

(D) दृष्टि नहि

९९१. तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिमे “आलोचना-दृष्टि” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) भाषा न देखू

(B) इतिहास-विमर्श वर्जित

(C) कृति पढ़ैत समय केवल कथानक नहि, मूल्य, पात्र, भाषा, छन्द, प्रतीक आ इतिहासक संकेत देखब जरूरी अछि

(D) केवल कथानक पर्याप्त

९९२. “आलोचना-दृष्टि” कैँ तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) केवल कथानक पर्याप्त

(B) कृति पढ़ैत समय केवल कथानक नहि, मूल्य, पात्र, भाषा, छन्द, प्रतीक आ इतिहासक संकेत देखब जरूरी अछि

(C) भाषा न देखू

(D) इतिहास-विमर्श वर्जित

९९३. नीचाँमे “आलोचना-दृष्टि”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) भाषा न देखू

(B) कृति पढ़ैत समय केवल कथानक नहि, मूल्य, पात्र, भाषा, छन्द, प्रतीक आ इतिहासक संकेत देखब जरूरी अछि

(C) इतिहास-विमर्श वर्जित

(D) केवल कथानक पर्याप्त

९९४. परीक्षा-दृष्टिसँ “आलोचना-दृष्टि” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) कृति पढ़ैत समय केवल कथानक नहि, मूल्य, पात्र, भाषा, छन्द, प्रतीक आ इतिहासक संकेत देखब जरूरी अछि

(B) केवल कथानक पर्याप्त

(C) इतिहास-विमर्श वर्जित

(D) भाषा न देखू

९९५. “आलोचना-दृष्टि”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) कृति पढ़ैत समय केवल कथानक नहि, मूल्य, पात्र, भाषा, छन्द, प्रतीक आ इतिहासक संकेत देखब जरूरी अछि

(B) भाषा न देखू

(C) केवल कथानक पर्याप्त

(D) इतिहास-विमर्श वर्जित

९९६. तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिमे “समग्र निष्कर्ष” सम्बन्धी सही कथन कोन अछि?

(A) कथात्मक शक्ति नहि

(B) आधुनिक अर्थ नहि

(C) महाकाव्य आ खण्डकाव्य मैथिली काव्यक कथात्मक शक्ति, सांस्कृतिक स्मृति आ आधुनिक अर्थ-क्षमता देखबैत अछि

(D) ई विधासभ कमजोर आ असम्बद्ध अछि

९९७. “समग्र निष्कर्ष” कैं तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-शैली आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे किएक ध्यानमे राखल जाइत अछि?

(A) ई विधासभ कमजोर आ असम्बद्ध अछि

(B) महाकाव्य आ खण्डकाव्य मैथिली काव्यक कथात्मक शक्ति, सांस्कृतिक स्मृति आ आधुनिक अर्थ-क्षमता देखबैत अछि

(C) कथात्मक शक्ति नहि

(D) आधुनिक अर्थ नहि

९९८. नीचाँमे “समग्र निष्कर्ष”क उपयुक्त व्याख्या चुनू।

(A) कथात्मक शक्ति नहि

(B) महाकाव्य आ खण्डकाव्य मैथिली काव्यक कथात्मक शक्ति, सांस्कृतिक स्मृति आ आधुनिक अर्थ-क्षमता देखबैत अछि

(C) आधुनिक अर्थ नहि

(D) ई विधासभ कमजोर आ असम्बद्ध अछि

९९९. परीक्षा-दृष्टिसँ “समग्र निष्कर्ष” पर प्रश्न आयल तँ सही उत्तर कोना बनत?

(A) महाकाव्य आ खण्डकाव्य मैथिली काव्यक कथात्मक शक्ति, सांस्कृतिक स्मृति आ आधुनिक अर्थ-क्षमता देखबैत अछि

(B) ई विधासभ कमजोर आ असम्बद्ध अछि

(C) आधुनिक अर्थ नहि

(D) कथात्मक शक्ति नहि

१०००. “समग्र निष्कर्ष”क साहित्यिक उपयोगिता कोन बातसँ स्पष्ट होइत अछि?

(A) महाकाव्य आ खण्डकाव्य मैथिली काव्यक कथात्मक शक्ति, सांस्कृतिक स्मृति आ आधुनिक अर्थ-क्षमता देखबैत अछि

(B) कथात्मक शक्ति नहि

(C) ई विधासभ कमजोर आ असम्बद्ध अछि

(D) आधुनिक अर्थ नहि

उत्तरमाला — अध्याय ३ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (A) दीर्घ कथात्मक काव्य, जाहिमे व्यापक कथावस्तु, नायक, प्रसंग, समाज आ आदर्शक विस्तार होइत अछि — “महाकाव्य” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

२. (D) दीर्घ कथात्मक काव्य, जाहिमे व्यापक कथावस्तु, नायक, प्रसंग, समाज आ आदर्शक विस्तार होइत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

३. (A) दीर्घ कथात्मक काव्य, जाहिमे व्यापक कथावस्तु, नायक, प्रसंग, समाज आ आदर्शक विस्तार होइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

४. (D) दीर्घ कथात्मक काव्य, जाहिमे व्यापक कथावस्तु, नायक, प्रसंग, समाज आ आदर्शक विस्तार होइत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

५. (D) दीर्घ कथात्मक काव्य, जाहिमे व्यापक कथावस्तु, नायक, प्रसंग, समाज आ आदर्शक विस्तार होइत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

६. (C) महाकाव्य प्रायः विस्तृत जीवन-कथा वा महान प्रसंगक विस्तार करैत अछि — “खण्डकाव्यसँ भिन्नता” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

७. (B) महाकाव्य प्रायः विस्तृत जीवन-कथा वा महान प्रसंगक विस्तार करैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

८. (C) महाकाव्य प्रायः विस्तृत जीवन-कथा वा महान प्रसंगक विस्तार करैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

९. (B) महाकाव्य प्रायः विस्तृत जीवन-कथा वा महान प्रसंगक विस्तार करैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

१०. (B) महाकाव्य प्रायः विस्तृत जीवन-कथा वा महान प्रसंगक विस्तार करैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

११. (A) महाकाव्यमे कथाकेँ अलग-अलग प्रसंग वा सर्गमे बाँटल जा सकैत अछि — “सर्गबद्धता” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

१२. (D) महाकाव्यमे कथाकेँ अलग-अलग प्रसंग वा सर्गमे बाँटल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

१३. (A) महाकाव्यमे कथाकेँ अलग-अलग प्रसंग वा सर्गमे बाँटल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

१४. (D) महाकाव्यमे कथाकेँ अलग-अलग प्रसंग वा सर्गमे बाँटल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

१५. (D) महाकाव्यमे कथाकेँ अलग-अलग प्रसंग वा सर्गमे बाँटल जा सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

१६. (A) महाकाव्यक नायक सामूहिक आदर्श, संघर्ष वा चरित्र-ऊर्जा कैं धारण करैत अछि — “नायकत्व” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

१७. (D) महाकाव्यक नायक सामूहिक आदर्श, संघर्ष वा चरित्र-ऊर्जा कैं धारण करैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

१८. (A) महाकाव्यक नायक सामूहिक आदर्श, संघर्ष वा चरित्र-ऊर्जा कैं धारण करैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

१९. (D) महाकाव्यक नायक सामूहिक आदर्श, संघर्ष वा चरित्र-ऊर्जा कैं धारण करैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

२०. (D) महाकाव्यक नायक सामूहिक आदर्श, संघर्ष वा चरित्र-ऊर्जा कैं धारण करैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

२१. (A) महाकाव्य अनेक प्रसंग, पात्र, संघर्ष आ आदर्शकेँ जोड़ैत अछि — “विस्तृत कथावस्तु” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

२२. (D) महाकाव्य अनेक प्रसंग, पात्र, संघर्ष आ आदर्शकेँ जोड़ैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

२३. (A) महाकाव्य अनेक प्रसंग, पात्र, संघर्ष आ आदर्शकेँ जोड़ैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

२४. (D) महाकाव्य अनेक प्रसंग, पात्र, संघर्ष आ आदर्शकेँ जोड़ैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

२५. (D) महाकाव्य अनेक प्रसंग, पात्र, संघर्ष आ आदर्शकेँ जोड़ैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

२६. (A) महाकाव्यमे वीर, करुण, शृङ्गार, भक्ति, शान्त आदि अनेक रसक सम्भावना रहैत अछि — “रस-बहुलता” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

२७. (D) महाकाव्यमे वीर, करुण, शृङ्गार, भक्ति, शान्त आदि अनेक रसक सम्भावना रहैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

२८. (A) महाकाव्यमे वीर, करुण, शृङ्गार, भक्ति, शान्त आदि अनेक रसक सम्भावना रहैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

२९. (D) महाकाव्यमे वीर, करुण, शृङ्गार, भक्ति, शान्त आदि अनेक रसक सम्भावना रहैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

३०. (D) महाकाव्यमे वीर, करुण, शृङ्गार, भक्ति, शान्त आदि अनेक रसक सम्भावना रहैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

३१. (B) नगर, वन, युद्ध, यात्रा, ऋतु, सभा आदि वर्णन महाकाव्यक गरिमा बढ़बैत अछि — “वर्णन-विस्तार” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

३२. (A) नगर, वन, युद्ध, यात्रा, ऋतु, सभा आदि वर्णन महाकाव्यक गरिमा बढ़बैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

३३. (B) नगर, वन, युद्ध, यात्रा, ऋतु, सभा आदि वर्णन महाकाव्यक गरिमा बढ़बैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

३४. (A) नगर, वन, युद्ध, यात्रा, ऋतु, सभा आदि वर्णन महाकाव्यक गरिमा बढ़बैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

३५. (A) नगर, वन, युद्ध, यात्रा, ऋतु, सभा आदि वर्णन महाकाव्यक गरिमा बढ़बैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

३६. (C) महाकाव्य समाजक नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आ मानवीय मूल्यकेँ रूप दैत अछि — “आदर्श आ मूल्य” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

३७. (B) महाकाव्य समाजक नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आ मानवीय मूल्यकेँ रूप दैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

३८. (C) महाकाव्य समाजक नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आ मानवीय मूल्यकेँ रूप दैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

३९. (B) महाकाव्य समाजक नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आ मानवीय मूल्यकेँ रूप दैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

४०. (B) महाकाव्य समाजक नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आ मानवीय मूल्यकेँ रूप दैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

४१. (C) मैथिली महाकाव्य प्रायः रामायण, महाभारत, पुराण वा चरित-कथासँ सम्बद्ध भेटैत अछि — “इतिहास आ पुराण” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

४२. (B) मैथिली महाकाव्य प्रायः रामायण, महाभारत, पुराण वा चरित-कथासँ सम्बद्ध भेटैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

४३. (C) मैथिली महाकाव्य प्रायः रामायण, महाभारत, पुराण वा चरित-कथासँ सम्बद्ध भेटैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

४४. (B) मैथिली महाकाव्य प्रायः रामायण, महाभारत, पुराण वा चरित-कथासँ सम्बद्ध भेटैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

४५. (B) मैथिली महाकाव्य प्रायः रामायण, महाभारत, पुराण वा चरित-कथासँ सम्बद्ध भेटैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

४६. (B) मिथिलाभाषा रामायण आ रमेश्वरचरित मिथिला रामायण रामकथा-आधारित महाकाव्य-धारा बुझबैत अछि — "रामकाव्य परम्परा" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

४७. (A) मिथिलाभाषा रामायण आ रमेश्वरचरित मिथिला रामायण रामकथा-आधारित महाकाव्य-धारा बुझबैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

४८. (B) मिथिलाभाषा रामायण आ रमेश्वरचरित मिथिला रामायण रामकथा-आधारित महाकाव्य-धारा बुझबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

४९. (A) मिथिलाभाषा रामायण आ रमेश्वरचरित मिथिला रामायण रामकथा-आधारित महाकाव्य-धारा बुझबैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

५०. (A) मिथिलाभाषा रामायण आ रमेश्वरचरित मिथिला रामायण रामकथा-आधारित महाकाव्य-धारा बुझबैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

५१. (A) सुभद्रा-हरण, एकलव्य, उत्तरा, प्रतिज्ञा पाण्डव आदि काव्य महाभारतीय सामग्रीसँ सम्बन्धित मानल जा सकैत अछि — "महाभारत प्रसंग" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

५२. (D) सुभद्रा-हरण, एकलव्य, उत्तरा, प्रतिज्ञा पाण्डव आदि काव्य महाभारतीय सामग्रीसँ सम्बन्धित मानल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

५३. (A) सुभद्रा-हरण, एकलव्य, उत्तरा, प्रतिज्ञा पाण्डव आदि काव्य महाभारतीय सामग्रीसँ सम्बन्धित मानल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

५४. (D) सुभद्रा-हरण, एकलव्य, उत्तरा, प्रतिज्ञा पाण्डव आदि काव्य महाभारतीय सामग्रीसँ सम्बन्धित मानल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

५५. (D) सुभद्रा-हरण, एकलव्य, उत्तरा, प्रतिज्ञा पाण्डव आदि काव्य महाभारतीय सामग्रीसँ सम्बन्धित मानल जा सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

५६. (B) कृष्णचरित, अम्बचरित, चाणक्य आदि नाम चरित्र-केंद्रित काव्य-दृष्टिक संकेत दैत अछि — "चरित काव्य" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

५७. (A) कृष्णचरित, अम्बचरित, चाणक्य आदि नाम चरित्र-केंद्रित काव्य-दृष्टिक संकेत दैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

५८. (B) कृष्णचरित, अम्बचरित, चाणक्य आदि नाम चरित्र-केंद्रित काव्य-दृष्टिक संकेत दैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

५९. (A) कृष्णचरित, अम्बचरित, चाणक्य आदि नाम चरित्र-केंद्रित काव्य-दृष्टिक संकेत दैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

६०. (A) कृष्णचरित, अम्बचरित, चाणक्य आदि नाम चरित्र-केंद्रित काव्य-दृष्टिक संकेत दैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

६१. (D) मैथिली महाकाव्य अपन भाषा, लोक-संस्कार आ मिथिला-दृष्टिसँ विशिष्ट बनैत अछि — "मिथिला-परिवेश" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

६२. (C) मैथिली महाकाव्य अपन भाषा, लोक-संस्कार आ मिथिला-दृष्टिसँ विशिष्ट बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

६३. (D) मैथिली महाकाव्य अपन भाषा, लोक-संस्कार आ मिथिला-दृष्टिसँ विशिष्ट बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

६४. (C) मैथिली महाकाव्य अपन भाषा, लोक-संस्कार आ मिथिला-दृष्टिसँ विशिष्ट बनैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

६५. (C) मैथिली महाकाव्य अपन भाषा, लोक-संस्कार आ मिथिला-दृष्टिसँ विशिष्ट बनैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

६६. (A) महाकाव्य-रचना मैथिली भाषाक कथात्मक क्षमता आ साहित्यिक गरिमाक प्रमाण अछि — "भाषा-गौरव" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

६७. (D) महाकाव्य-रचना मैथिली भाषाक कथात्मक क्षमता आ साहित्यिक गरिमाक प्रमाण अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

६८. (A) महाकाव्य-रचना मैथिली भाषाक कथात्मक क्षमता आ साहित्यिक गरिमाक प्रमाण अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

६९. (D) महाकाव्य-रचना मैथिली भाषाक कथात्मक क्षमता आ साहित्यिक गरिमाक प्रमाण अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

७०. (D) महाकाव्य-रचना मैथिली भाषाक कथात्मक क्षमता आ साहित्यिक गरिमाक प्रमाण अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

७१. (A) महाकाव्य आ खण्डकाव्यमे छन्द, लय आ पद-संरचना अर्थ-प्रभाव बढ़बैत अछि — "छन्द-विधान" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

७२. (D) महाकाव्य आ खण्डकाव्यमे छन्द, लय आ पद-संरचना अर्थ-प्रभाव बढ़बैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

७३. (A) महाकाव्य आ खण्डकाव्यमे छन्द, लय आ पद-संरचना अर्थ-प्रभाव बढ़बैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

७४. (D) महाकाव्य आ खण्डकाव्यमे छन्द, लय आ पद-संरचना अर्थ-प्रभाव बढ़बैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

७५. (D) महाकाव्य आ खण्डकाव्यमे छन्द, लय आ पद-संरचना अर्थ-प्रभाव बढ़बैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

७६. (B) दीर्घ काव्यमे संवाद, वर्णन आ प्रसंग-विन्यास कथा आगाँ बढ़बैत अछि — "संवाद आ प्रसंग" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

७७. (A) दीर्घ काव्यमे संवाद, वर्णन आ प्रसंग-विन्यास कथा आगाँ बढ़बैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

७८. (B) दीर्घ काव्यमे संवाद, वर्णन आ प्रसंग-विन्यास कथा आगाँ बढ़बैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

७९. (A) दीर्घ काव्यमे संवाद, वर्णन आ प्रसंग-विन्यास कथा आगाँ बढ़बैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

८०. (A) दीर्घ काव्यमे संवाद, वर्णन आ प्रसंग-विन्यास कथा आगाँ बढ़बैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

८१. (A) राम, कृष्ण, अम्बा, शकुन्तला आदि प्रसंगमे दिव्य, मानवीय आ सांस्कृतिक अर्थ जुड़ैत अछि — "देव-मानव सम्बन्ध" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

८२. (D) राम, कृष्ण, अम्बा, शकुन्तला आदि प्रसंगमे दिव्य, मानवीय आ सांस्कृतिक अर्थ जुड़ैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

८३. (A) राम, कृष्ण, अम्बा, शकुन्तला आदि प्रसंगमे दिव्य, मानवीय आ सांस्कृतिक अर्थ जुड़ैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

८४. (D) राम, कृष्ण, अम्बा, शकुन्तला आदि प्रसंगमे दिव्य, मानवीय आ सांस्कृतिक अर्थ जुड़ैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

८५. (D) राम, कृष्ण, अम्बा, शकुन्तला आदि प्रसंगमे दिव्य, मानवीय आ सांस्कृतिक अर्थ जुड़ैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

८६. (B) परिभाषा, कृति-नाम, कथ्य, शैली आ महत्त्व जोड़ि उत्तर लिखब उपयुक्त अछि — "परीक्षा-उत्तर संरचना" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

८७. (A) परिभाषा, कृति-नाम, कथ्य, शैली आ महत्त्व जोड़ि उत्तर लिखब उपयुक्त अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

८८. (B) परिभाषा, कृति-नाम, कथ्य, शैली आ महत्त्व जोड़ि उत्तर लिखब उपयुक्त अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

८९. (A) परिभाषा, कृति-नाम, कथ्य, शैली आ महत्त्व जोड़ि उत्तर लिखब उपयुक्त अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

९०. (A) परिभाषा, कृति-नाम, कथ्य, शैली आ महत्त्व जोड़ि उत्तर लिखब उपयुक्त अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

९१. (D) कृति महाकाव्य अछि कि खण्डकाव्य, ई ओकर विस्तार, कथ्य आ संरचनासँ चिन्हल जाएत अछि — "विधा-पहिचान" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

९२. (C) कृति महाकाव्य अछि कि खण्डकाव्य, ई ओकर विस्तार, कथ्य आ संरचनासँ चिन्हल जाएत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

९३. (D) कृति महाकाव्य अछि कि खण्डकाव्य, ई ओकर विस्तार, कथ्य आ संरचनासँ चिन्हल जाएत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

९४. (C) कृति महाकाव्य अछि कि खण्डकाव्य, ई ओकर विस्तार, कथ्य आ संरचनासँ चिन्हल जाएत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

९५. (C) कृति महाकाव्य अछि कि खण्डकाव्य, ई ओकर विस्तार, कथ्य आ संरचनासँ चिन्हल जाएत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

९६. (D) महाकाव्य आ खण्डकाव्यक भेद बुझि कृतिसभक स्थान तय करब साहित्येतिहासक आवश्यक अभ्यास अछि — "तुलनात्मक दृष्टि" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

९७. (C) महाकाव्य आ खण्डकाव्यक भेद बुझि कृतिसभक स्थान तय करब साहित्येतिहासक आवश्यक अभ्यास अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

९८. (D) महाकाव्य आ खण्डकाव्यक भेद बुझि कृतिसभक स्थान तय करब साहित्येतिहासक आवश्यक अभ्यास अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

९९. (C) महाकाव्य आ खण्डकाव्यक भेद बुझि कृतिसभक स्थान तय करब साहित्येतिहासक आवश्यक अभ्यास अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

१००. (C) महाकाव्य आ खण्डकाव्यक भेद बुझि कृतिसभक स्थान तय करब साहित्येतिहासक आवश्यक अभ्यास अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

१०१. (D) रामकथा कैँ मैथिली भाषामे महाकाव्यात्मक रूप देनिहार प्रमुख कृति रूपमे पढ़ल जाइत अछि — "मिथिलाभाषा रामायण" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

१०२. (C) रामकथा कैँ मैथिली भाषामे महाकाव्यात्मक रूप देनिहार प्रमुख कृति रूपमे पढ़ल जाइत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

१०३. (D) रामकथा कैँ मैथिली भाषामे महाकाव्यात्मक रूप देनिहार प्रमुख कृति रूपमे पढ़ल जाइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

१०४. (C) रामकथा कैँ मैथिली भाषामे महाकाव्यात्मक रूप देनिहार प्रमुख कृति रूपमे पढ़ल जाइत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

१०५. (C) रामकथा कैँ मैथिली भाषामे महाकाव्यात्मक रूप देनिहार प्रमुख कृति रूपमे पढ़ल जाइत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

१०६. (D) कृति रामक जीवन, आदर्श, वनगमन, संघर्ष आ धर्म-दृष्टिक कथात्मक आधार लैत अछि — "रामकथा" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

१०७. (C) कृति रामक जीवन, आदर्श, वनगमन, संघर्ष आ धर्म-दृष्टिक कथात्मक आधार लैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

१०८. (D) कृति रामक जीवन, आदर्श, वनगमन, संघर्ष आ धर्म-दृष्टिक कथात्मक आधार लैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

१०९. (C) कृति रामक जीवन, आदर्श, वनगमन, संघर्ष आ धर्म-दृष्टिक कथात्मक आधार लैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

११०. (C) कृति रामक जीवन, आदर्श, वनगमन, संघर्ष आ धर्म-दृष्टिक कथात्मक आधार लैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

१११. (A) रामक जन्म, परिवार, राजधर्म आ राज्य-संस्कृतिक आरम्भिक आधार बनैत अछि — "अयोध्या प्रसंग" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

११२. (D) रामक जन्म, परिवार, राजधर्म आ राज्य-संस्कृतिक आरम्भिक आधार बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

११३. (A) रामक जन्म, परिवार, राजधर्म आ राज्य-संस्कृतिक आरम्भिक आधार बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

११४. (D) रामक जन्म, परिवार, राजधर्म आ राज्य-संस्कृतिक आरम्भिक आधार बनैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

११५. (D) रामक जन्म, परिवार, राजधर्म आ राज्य-संस्कृतिक आरम्भिक आधार बनैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

११६. (C) वनगमन त्याग, धर्मपालन, कर्तव्य आ मानवीय परीक्षा कैँ उभारैत अछि — "वनगमन" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

११७. (B) वनगमन त्याग, धर्मपालन, कर्तव्य आ मानवीय परीक्षा कैँ उभारैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

११८. (C) वनगमन त्याग, धर्मपालन, कर्तव्य आ मानवीय परीक्षा कैँ उभारैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

११९. (B) वनगमन त्याग, धर्मपालन, कर्तव्य आ मानवीय परीक्षा कैँ उभारैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

१२०. (B) वनगमन त्याग, धर्मपालन, कर्तव्य आ मानवीय परीक्षा कैँ उभारैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

१२१. (B) सीता धैर्य, पवित्रता, साहस, करुणा आ मर्यादाक केन्द्रीय प्रतीक छथि — "सीता-चरित्र" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

१२२. (A) सीता धैर्य, पवित्रता, साहस, करुणा आ मर्यादाक केन्द्रीय प्रतीक छथि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

१२३. (B) सीता धैर्य, पवित्रता, साहस, करुणा आ मर्यादाक केन्द्रीय प्रतीक छथि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

१२४. (A) सीता धैर्य, पवित्रता, साहस, करुणा आ मर्यादाक केन्द्रीय प्रतीक छथि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

१२५. (A) सीता धैर्य, पवित्रता, साहस, करुणा आ मर्यादाक केन्द्रीय प्रतीक छथि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

१२६. (A) भक्ति, सेवा, साहस आ संदेश-वाहनक आदर्श रूपमे हनुमानक महत्त्व अछि — "हनुमान प्रसंग" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

१२७. (D) भक्ति, सेवा, साहस आ संदेश-वाहनक आदर्श रूपमे हनुमानक महत्त्व अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

१२८. (A) भक्ति, सेवा, साहस आ संदेश-वाहनक आदर्श रूपमे हनुमानक महत्त्व अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

१२९. (D) भक्ति, सेवा, साहस आ संदेश-वाहनक आदर्श रूपमे हनुमानक महत्त्व अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

१३०. (D) भक्ति, सेवा, साहस आ संदेश-वाहनक आदर्श रूपमे हनुमानक महत्त्व अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

१३१. (B) धर्म-अधर्म संघर्ष, युद्ध, नीति आ विजयक कथात्मक शिखर रूपमे देखल जा सकैत अछि — "लंकाकाण्ड" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

१३२. (A) धर्म-अधर्म संघर्ष, युद्ध, नीति आ विजयक कथात्मक शिखर रूपमे देखल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

१३३. (B) धर्म-अधर्म संघर्ष, युद्ध, नीति आ विजयक कथात्मक शिखर रूपमे देखल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

१३४. (A) धर्म-अधर्म संघर्ष, युद्ध, नीति आ विजयक कथात्मक शिखर रूपमे देखल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

१३५. (A) धर्म-अधर्म संघर्ष, युद्ध, नीति आ विजयक कथात्मक शिखर रूपमे देखल जा सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

१३६. (C) मैथिलीमे रामकथा आनलासँ मिथिला-भाषिक पाठकक सांस्कृतिक अपनत्व बनैत अछि — "मिथिला-दृष्टि" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

१३७. (B) मैथिलीमे रामकथा आनलासँ मिथिला-भाषिक पाठकक सांस्कृतिक अपनत्व बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

१३८. (C) मैथिलीमे रामकथा आनलासँ मिथिला-भाषिक पाठकक सांस्कृतिक अपनत्व बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

१३९. (B) मैथिलीमे रामकथा आनलासँ मिथिला-भाषिक पाठकक सांस्कृतिक अपनत्व बनैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

१४०. (B) मैथिलीमे रामकथा आनलासँ मिथिला-भाषिक पाठकक सांस्कृतिक अपनत्व बनैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

१४१. (C) कृति रामकथाकैँ जनभाषामे पठनीय आ श्रव्य बनबैत अछि — "लोकभाषिकता" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

१४२. (B) कृति रामकथाकैँ जनभाषामे पठनीय आ श्रव्य बनबैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

१४३. (C) कृति रामकथाकैँ जनभाषामे पठनीय आ श्रव्य बनबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

१४४. (B) कृति रामकथाकैँ जनभाषामे पठनीय आ श्रव्य बनबैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

१४५. (B) कृति रामकथाकेँ जनभाषामे पठनीय आ श्रव्य बनबैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

१४६. (A) रामक प्रति श्रद्धा, धर्म आ समर्पण काव्यक भाव-भूमि बनैत अछि — “भक्ति-भाव” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

१४७. (D) रामक प्रति श्रद्धा, धर्म आ समर्पण काव्यक भाव-भूमि बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

१४८. (A) रामक प्रति श्रद्धा, धर्म आ समर्पण काव्यक भाव-भूमि बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

१४९. (D) रामक प्रति श्रद्धा, धर्म आ समर्पण काव्यक भाव-भूमि बनैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

१५०. (D) रामक प्रति श्रद्धा, धर्म आ समर्पण काव्यक भाव-भूमि बनैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

१५१. (D) रामक चरित्र मर्यादा, सत्य, वचनपालन आ धर्मनिष्ठाक प्रतीक बनैत अछि — “मर्यादा” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

१५२. (C) रामक चरित्र मर्यादा, सत्य, वचनपालन आ धर्मनिष्ठाक प्रतीक बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

१५३. (D) रामक चरित्र मर्यादा, सत्य, वचनपालन आ धर्मनिष्ठाक प्रतीक बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

१५४. (C) रामक चरित्र मर्यादा, सत्य, वचनपालन आ धर्मनिष्ठाक प्रतीक बनैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

१५५. (C) रामक चरित्र मर्यादा, सत्य, वचनपालन आ धर्मनिष्ठाक प्रतीक बनैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

१५६. (B) दीर्घ कथा क्रमबद्ध प्रसंग, पात्र आ संघर्षसँ आगाँ बढ़ैत अछि — “कथात्मक प्रवाह” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

१५७. (A) दीर्घ कथा क्रमबद्ध प्रसंग, पात्र आ संघर्षसँ आगाँ बढ़ैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

१५८. (B) दीर्घ कथा क्रमबद्ध प्रसंग, पात्र आ संघर्षसँ आगाँ बढ़ैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

१५९. (A) दीर्घ कथा क्रमबद्ध प्रसंग, पात्र आ संघर्षसँ आगाँ बढ़ैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

१६०. (A) दीर्घ कथा क्रमबद्ध प्रसंग, पात्र आ संघर्षसँ आगाँ बढ़ैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

१६१. (D) सीता, कौशल्या, कैकेयी आदि पात्रक माध्यमे परिवार, नीति आ भावनात्मक संघर्ष उभरैत अछि — “स्त्री-दृष्टि” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

१६२. (C) सीता, कौशल्या, कैकेयी आदि पात्रक माध्यमे परिवार, नीति आ भावनात्मक संघर्ष उभरैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

१६३. (D) सीता, कौशल्या, कैकेयी आदि पात्रक माध्यमे परिवार, नीति आ भावनात्मक संघर्ष उभरैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

१६४. (C) सीता, कौशल्या, कैकेयी आदि पात्रक माध्यमे परिवार, नीति आ भावनात्मक संघर्ष उभरैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

१६५. (C) सीता, कौशल्या, कैकेयी आदि पात्रक माध्यमे परिवार, नीति आ भावनात्मक संघर्ष उभरैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

१६६. (C) रामायणक प्रसंग राज्य, परिवार, मित्रता, शत्रुता आ धर्मक नीति-शिक्षा दैत अछि — “नीति-दृष्टि” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

१६७. (B) रामायणक प्रसंग राज्य, परिवार, मित्रता, शत्रुता आ धर्मक नीति-शिक्षा दैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

१६८. (C) रामायणक प्रसंग राज्य, परिवार, मित्रता, शत्रुता आ धर्मक नीति-शिक्षा दैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

१६९. (B) रामायणक प्रसंग राज्य, परिवार, मित्रता, शत्रुता आ धर्मक नीति-शिक्षा दैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

१७०. (B) रामायणक प्रसंग राज्य, परिवार, मित्रता, शत्रुता आ धर्मक नीति-शिक्षा दैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

१७१. (B) मैथिली रूपान्तरणमे सरलता, भाव-संप्रेषण आ लोक-माधुर्य महत्त्वपूर्ण अछि — “भाषा-शैली” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

१७२. (A) मैथिली रूपान्तरणमे सरलता, भाव-संप्रेषण आ लोक-माधुर्य महत्त्वपूर्ण अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

१७३. (B) मैथिली रूपान्तरणमे सरलता, भाव-संप्रेषण आ लोक-माधुर्य महत्त्वपूर्ण अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

१७४. (A) मैथिली रूपान्तरणमे सरलता, भाव-संप्रेषण आ लोक-माधुर्य महत्त्वपूर्ण अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

१७५. (A) मैथिली रूपान्तरणमे सरलता, भाव-संप्रेषण आ लोक-माधुर्य महत्त्वपूर्ण अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

१७६. (C) रामकथा काव्यात्मक छन्द, लय आ श्रव्यता द्वारा स्मरणीय बनैत अछि — “छन्द आ लय” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

१७७. (B) रामकथा काव्यात्मक छन्द, लय आ श्रव्यता द्वारा स्मरणीय बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

१७८. (C) रामकथा काव्यात्मक छन्द, लय आ श्रव्यता द्वारा स्मरणीय बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

१७९. (B) रामकथा काव्यात्मक छन्द, लय आ श्रव्यता द्वारा स्मरणीय बनैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

१८०. (B) रामकथा काव्यात्मक छन्द, लय आ श्रव्यता द्वारा स्मरणीय बनैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

१८१. (A) वन, नगर, युद्ध, यात्रा, विरह आ मिलनक वर्णन काव्य-सौन्दर्य बनबैत अछि — “काव्यात्मक वर्णन” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

१८२. (D) वन, नगर, युद्ध, यात्रा, विरह आ मिलनक वर्णन काव्य-सौन्दर्य बनबैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

१८३. (A) वन, नगर, युद्ध, यात्रा, विरह आ मिलनक वर्णन काव्य-सौन्दर्य बनबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

१८४. (D) वन, नगर, युद्ध, यात्रा, विरह आ मिलनक वर्णन काव्य-सौन्दर्य बनबैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

१८५. (D) वन, नगर, युद्ध, यात्रा, विरह आ मिलनक वर्णन काव्य-सौन्दर्य बनबैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

१८६. (B) रामकथामे धर्मपालनक संग करुणा, वियोग आ मानवीय पीड़ा सेहो जुड़ल अछि — “धर्म आ करुणा” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

१८७. (A) रामकथामे धर्मपालनक संग करुणा, वियोग आ मानवीय पीड़ा सेहो जुड़ल अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

१८८. (B) रामकथामे धर्मपालनक संग करुणा, वियोग आ मानवीय पीड़ा सेहो जुड़ल अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

१८९. (A) रामकथामे धर्मपालनक संग करुणा, वियोग आ मानवीय पीड़ा सेहो जुड़ल अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

१९०. (A) रामकथामे धर्मपालनक संग करुणा, वियोग आ मानवीय पीड़ा सेहो जुड़ल अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

१९१. (A) राम आदर्श नायक रूपमे धर्म, साहस, दया आ मर्यादाक धारक छथि — “आदर्श नायक” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

१९२. (D) राम आदर्श नायक रूपमे धर्म, साहस, दया आ मर्यादाक धारक छथि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

१९३. (A) राम आदर्श नायक रूपमे धर्म, साहस, दया आ मर्यादाक धारक छथि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

१९४. (D) राम आदर्श नायक रूपमे धर्म, साहस, दया आ मर्यादाक धारक छथि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

१९५. (D) राम आदर्श नायक रूपमे धर्म, साहस, दया आ मर्यादाक धारक छथि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

१९६. (D) मिथिलाभाषा रामायण मैथिली महाकाव्य-परम्परामे रामकाव्यक प्रमुख उदाहरण मानल जाइत अछि — “साहित्येतिहासक स्थान” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

१९७. (C) मिथिलाभाषा रामायण मैथिली महाकाव्य-परम्परामे रामकाव्यक प्रमुख उदाहरण मानल जाइत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

१९८. (D) मिथिलाभाषा रामायण मैथिली महाकाव्य-परम्परामे रामकाव्यक प्रमुख उदाहरण मानल जाइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

१९९. (C) मिथिलाभाषा रामायण मैथिली महाकाव्य-परम्परामे रामकाव्यक प्रमुख उदाहरण मानल जाइत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

२००. (C) मिथिलाभाषा रामायण मैथिली महाकाव्य-परम्परामे रामकाव्यक प्रमुख उदाहरण मानल जाइत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

२०१. (D) रामकथा-आधारित मैथिली महाकाव्य-धाराक एक महत्त्वपूर्ण कृति रूपमे पढ़ल जाइत अछि — “रमेश्वरचरित मिथिला रामायण” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

२०२. (C) रामकथा-आधारित मैथिली महाकाव्य-धाराक एक महत्त्वपूर्ण कृति रूपमे पढ़ल जाइत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

२०३. (D) रामकथा-आधारित मैथिली महाकाव्य-धाराक एक महत्त्वपूर्ण कृति रूपमे पढ़ल जाइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

२०४. (C) रामकथा-आधारित मैथिली महाकाव्य-धाराक एक महत्त्वपूर्ण कृति रूपमे पढ़ल जाइत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

२०५. (C) रामकथा-आधारित मैथिली महाकाव्य-धाराक एक महत्त्वपूर्ण कृति रूपमे पढ़ल जाइत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

२०६. (A) शीर्षक स्वयं रामकथा आ मिथिला-भाषिक सांस्कृतिक सम्बन्धक संकेत दैत अछि — “मिथिला रामायण नाम” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

२०७. (D) शीर्षक स्वयं रामकथा आ मिथिला-भाषिक सांस्कृतिक सम्बन्धक संकेत दैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

२०८. (A) शीर्षक स्वयं रामकथा आ मिथिला-भाषिक सांस्कृतिक सम्बन्धक संकेत दैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

२०९. (D) शीर्षक स्वयं रामकथा आ मिथिला-भाषिक सांस्कृतिक सम्बन्धक संकेत दैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

२१०. (D) शीर्षक स्वयं रामकथा आ मिथिला-भाषिक सांस्कृतिक सम्बन्धक संकेत दैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

२११. (D) रामक जीवन, धर्म, संघर्ष आ आदर्शक काव्यात्मक प्रस्तुति ई कृतिक केन्द्र होइत अछि — "रामचरित" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

२१२. (C) रामक जीवन, धर्म, संघर्ष आ आदर्शक काव्यात्मक प्रस्तुति ई कृतिक केन्द्र होइत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

२१३. (D) रामक जीवन, धर्म, संघर्ष आ आदर्शक काव्यात्मक प्रस्तुति ई कृतिक केन्द्र होइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

२१४. (C) रामक जीवन, धर्म, संघर्ष आ आदर्शक काव्यात्मक प्रस्तुति ई कृतिक केन्द्र होइत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

२१५. (C) रामक जीवन, धर्म, संघर्ष आ आदर्शक काव्यात्मक प्रस्तुति ई कृतिक केन्द्र होइत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

२१६. (B) रामक प्रति श्रद्धा, समर्पण आ धर्म-बोध कृतिक भाव-धुरी बनैत अछि — "भक्तिपरकता" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

२१७. (A) रामक प्रति श्रद्धा, समर्पण आ धर्म-बोध कृतिक भाव-धुरी बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

२१८. (B) रामक प्रति श्रद्धा, समर्पण आ धर्म-बोध कृतिक भाव-धुरी बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

२१९. (A) रामक प्रति श्रद्धा, समर्पण आ धर्म-बोध कृतिक भाव-धुरी बनैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

२२०. (A) रामक प्रति श्रद्धा, समर्पण आ धर्म-बोध कृतिक भाव-धुरी बनैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

२२१. (C) महाकाव्य रूपमे प्रसंग-दर-प्रसंग कथा-विकास आ भाव-विस्तार अपेक्षित अछि — "कथाविस्तार" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

२२२. (B) महाकाव्य रूपमे प्रसंग-दर-प्रसंग कथा-विकास आ भाव-विस्तार अपेक्षित अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

२२३. (C) महाकाव्य रूपमे प्रसंग-दर-प्रसंग कथा-विकास आ भाव-विस्तार अपेक्षित अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

२२४. (B) महाकाव्य रूपमे प्रसंग-दर-प्रसंग कथा-विकास आ भाव-विस्तार अपेक्षित अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

२२५. (B) महाकाव्य रूपमे प्रसंग-दर-प्रसंग कथा-विकास आ भाव-विस्तार अपेक्षित अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

२२६. (B) रामक चरित्र दिव्य आ मानवीय दुनू धरातल पर देखल जा सकैत अछि — "अवतार-दृष्टि" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

२२७. (A) रामक चरित्र दिव्य आ मानवीय दुनू धरातल पर देखल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

२२८. (B) रामक चरित्र दिव्य आ मानवीय दुनू धरातल पर देखल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

२२९. (A) रामक चरित्र दिव्य आ मानवीय दुनू धरातल पर देखल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

२३०. (A) रामक चरित्र दिव्य आ मानवीय दुनू धरातल पर देखल जा सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

२३१. (D) रामायणक अर्थ-गठनमे सीताक धैर्य, वियोग, साहस आ मर्यादा अनिवार्य अछि — "सीता-प्रसंग" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

२३२. (C) रामायणक अर्थ-गठनमे सीताक धैर्य, वियोग, साहस आ मर्यादा अनिवार्य अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

२३३. (D) रामायणक अर्थ-गठनमे सीताक धैर्य, वियोग, साहस आ मर्यादा अनिवार्य अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

२३४. (C) रामायणक अर्थ-गठनमे सीताक धैर्य, वियोग, साहस आ मर्यादा अनिवार्य अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

२३५. (C) रामायणक अर्थ-गठनमे सीताक धैर्य, वियोग, साहस आ मर्यादा अनिवार्य अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

२३६. (C) राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्नक सम्बन्ध धर्म, त्याग आ परिवारक आदर्श देखबैत अछि — "भ्रातृत्व" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

२३७. (B) राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्नक सम्बन्ध धर्म, त्याग आ परिवारक आदर्श देखबैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

२३८. (C) राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्नक सम्बन्ध धर्म, त्याग आ परिवारक आदर्श देखबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

२३९. (B) राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्नक सम्बन्ध धर्म, त्याग आ परिवारक आदर्श देखबैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

२४०. (B) राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्नक सम्बन्ध धर्म, त्याग आ परिवारक आदर्श देखबैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

२४१. (C) रावणक प्रसंग अहंकार, शक्ति, अधर्म आ पतनक नाटकीय आधार बनैत अछि — "रावण-विरोध" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

२४२. (B) रावणक प्रसंग अहंकार, शक्ति, अधर्म आ पतनक नाटकीय आधार बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

२४३. (C) रावणक प्रसंग अहंकार, शक्ति, अधर्म आ पतनक नाटकीय आधार बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

२४४. (B) रावणक प्रसंग अहंकार, शक्ति, अधर्म आ पतनक नाटकीय आधार बनैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

२४५. (B) रावणक प्रसंग अहंकार, शक्ति, अधर्म आ पतनक नाटकीय आधार बनैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

२४६. (D) अन्ततः धर्मक विजय आ अन्यायक पराजय रामकाव्यक मूल नीतिगत संकेत अछि — "विजय-वृत्त" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

२४७. (C) अन्ततः धर्मक विजय आ अन्यायक पराजय रामकाव्यक मूल नीतिगत संकेत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

२४८. (D) अन्ततः धर्मक विजय आ अन्यायक पराजय रामकाव्यक मूल नीतिगत संकेत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

२४९. (C) अन्ततः धर्मक विजय आ अन्यायक पराजय रामकाव्यक मूल नीतिगत संकेत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

२५०. (C) अन्ततः धर्मक विजय आ अन्यायक पराजय रामकाव्यक मूल नीतिगत संकेत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

२५१. (A) मैथिलीमे रामकथा पढ़लासँ लोकक अपन भाषा-भाव जागृत होइत अछि — "भाषिक आत्मीयता" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

२५२. (D) मैथिलीमे रामकथा पढ़लासँ लोकक अपन भाषा-भाव जागृत होइत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

२५३. (A) मैथिलीमे रामकथा पढ़लासँ लोकक अपन भाषा-भाव जागृत होइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

२५४. (D) मैथिलीमे रामकथा पढ़लासँ लोकक अपन भाषा-भाव जागृत होइत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

२५५. (D) मैथिलीमे रामकथा पढ़लासँ लोकक अपन भाषा-भाव जागृत होइत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

२५६. (A) रामायणक कथा लोककंठ, पाठ, कीर्तन आ पारिवारिक संस्कारसँ जुड़ैत अछि — "लोकश्रुति आ पाठ" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

२५७. (D) रामायणक कथा लोककंठ, पाठ, कीर्तन आ पारिवारिक संस्कारसँ जुड़ैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

२५८. (A) रामायणक कथा लोककंठ, पाठ, कीर्तन आ पारिवारिक संस्कारसँ जुड़ैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

२५९. (D) रामायणक कथा लोककंठ, पाठ, कीर्तन आ पारिवारिक संस्कारसँ जुड़ैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

२६०. (D) रामायणक कथा लोककंठ, पाठ, कीर्तन आ पारिवारिक संस्कारसँ जुड़ैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

२६१. (B) रामायण प्रसंग सत्य, वचनपालन, दया, क्षमा, साहस आ मर्यादाक शिक्षा दैत अछि — "नीति-शिक्षा" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

२६२. (A) रामायण प्रसंग सत्य, वचनपालन, दया, क्षमा, साहस आ मर्यादाक शिक्षा दैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

२६३. (B) रामायण प्रसंग सत्य, वचनपालन, दया, क्षमा, साहस आ मर्यादाक शिक्षा दैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

२६४. (A) रामायण प्रसंग सत्य, वचनपालन, दया, क्षमा, साहस आ मर्यादाक शिक्षा दैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

२६५. (A) रामायण प्रसंग सत्य, वचनपालन, दया, क्षमा, साहस आ मर्यादाक शिक्षा दैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

२६६. (A) सीता-वियोग, दशरथ-वेदना, भरत-विरह आदि प्रसंग करुण रस जगबैत अछि — "करुणा" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

२६७. (D) सीता-वियोग, दशरथ-वेदना, भरत-विरह आदि प्रसंग करुण रस जगबैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

२६८. (A) सीता-वियोग, दशरथ-वेदना, भरत-विरह आदि प्रसंग करुण रस जगबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

२६९. (D) सीता-वियोग, दशरथ-वेदना, भरत-विरह आदि प्रसंग करुण रस जगबैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

२७०. (D) सीता-वियोग, दशरथ-वेदना, भरत-विरह आदि प्रसंग करुण रस जगबैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

२७१. (B) युद्ध, साहस, अन्याय-विरोध आ रक्षा-धर्म वीररसक आधार बनैत अछि — "वीरता" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

२७२. (A) युद्ध, साहस, अन्याय-विरोध आ रक्षा-धर्म वीररसक आधार बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

२७३. (B) युद्ध, साहस, अन्याय-विरोध आ रक्षा-धर्म वीररसक आधार बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

२७४. (A) युद्ध, साहस, अन्याय-विरोध आ रक्षा-धर्म वीररसक आधार बनैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

२७५. (A) युद्ध, साहस, अन्याय-विरोध आ रक्षा-धर्म वीररसक आधार बनैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

२७६. (C) चरित्र-भाव खोलबाक लेल संवाद महाकाव्यक महत्त्वपूर्ण साधन अछि — "संवाद-विन्यास" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

२७७. (B) चरित्र-भाव खोलबाक लेल संवाद महाकाव्यक महत्त्वपूर्ण साधन अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

२७८. (C) चरित्र-भाव खोलबाक लेल संवाद महाकाव्यक महत्त्वपूर्ण साधन अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

२७९. (B) चरित्र-भाव खोलबाक लेल संवाद महाकाव्यक महत्त्वपूर्ण साधन अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

२८०. (B) चरित्र-भाव खोलबाक लेल संवाद महाकाव्यक महत्त्वपूर्ण साधन अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

२८१. (B) वन, समुद्र, लंका, अयोध्या आदि दृश्य काव्यक कल्पना-बोध समृद्ध करैत अछि — "दृश्य-विधान" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

२८२. (A) वन, समुद्र, लंका, अयोध्या आदि दृश्य काव्यक कल्पना-बोध समृद्ध करैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

२८३. (B) वन, समुद्र, लंका, अयोध्या आदि दृश्य काव्यक कल्पना-बोध समृद्ध करैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

२८४. (A) वन, समुद्र, लंका, अयोध्या आदि दृश्य काव्यक कल्पना-बोध समृद्ध करैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

२८५. (A) वन, समुद्र, लंका, अयोध्या आदि दृश्य काव्यक कल्पना-बोध समृद्ध करैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

२८६. (D) मिथिलाभाषा रामायणसँ मिलान कऽ रामकथा-परम्पराक विविध रूप बुझल जा सकैत अछि — "तुलनात्मक रामकाव्य" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

२८७. (C) मिथिलाभाषा रामायणसँ मिलान कऽ रामकथा-परम्पराक विविध रूप बुझल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

२८८. (D) मिथिलाभाषा रामायणसँ मिलान कऽ रामकथा-परम्पराक विविध रूप बुझल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

२८९. (C) मिथिलाभाषा रामायणसँ मिलान कऽ रामकथा-परम्पराक विविध रूप बुझल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

२९०. (C) मिथिलाभाषा रामायणसँ मिलान कऽ रामकथा-परम्पराक विविध रूप बुझल जा सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

२९१. (D) कृति धर्मकथाकेँ काव्य-रचना, भाषा आ छन्दसँ कलात्मक बनबैत अछि — “आस्था आ कला” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

२९२. (C) कृति धर्मकथाकेँ काव्य-रचना, भाषा आ छन्दसँ कलात्मक बनबैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

२९३. (D) कृति धर्मकथाकेँ काव्य-रचना, भाषा आ छन्दसँ कलात्मक बनबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

२९४. (C) कृति धर्मकथाकेँ काव्य-रचना, भाषा आ छन्दसँ कलात्मक बनबैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

२९५. (C) कृति धर्मकथाकेँ काव्य-रचना, भाषा आ छन्दसँ कलात्मक बनबैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

२९६. (C) रामायणक मैथिली रूप मिथिलाक सामूहिक धार्मिक-सांस्कृतिक स्मृतिसँ जुड़ल अछि — “सांस्कृतिक स्मृति” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

२९७. (B) रामायणक मैथिली रूप मिथिलाक सामूहिक धार्मिक-सांस्कृतिक स्मृतिसँ जुड़ल अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

२९८. (C) रामायणक मैथिली रूप मिथिलाक सामूहिक धार्मिक-सांस्कृतिक स्मृतिसँ जुड़ल अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

२९९. (B) रामायणक मैथिली रूप मिथिलाक सामूहिक धार्मिक-सांस्कृतिक स्मृतिसँ जुड़ल अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

३००. (B) रामायणक मैथिली रूप मिथिलाक सामूहिक धार्मिक-सांस्कृतिक स्मृतिसँ जुड़ल अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

३०१. (B) शीर्षक विवाह/परिणय-प्रसंगक महाकाव्यात्मक कथा-संरचनाक संकेत दैत अछि — “एकावली-परिणय” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

३०२. (A) शीर्षक विवाह/परिणय-प्रसंगक महाकाव्यात्मक कथा-संरचनाक संकेत दैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

३०३. (A) शीर्षक विवाह/परिणय-प्रसंगक महाकाव्यात्मक कथा-संरचनाक संकेत दैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

३०४. (D) शीर्षक विवाह/परिणय-प्रसंगक महाकाव्यात्मक कथा-संरचनाक संकेत दैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

३०५. (D) शीर्षक विवाह/परिणय-प्रसंगक महाकाव्यात्मक कथा-संरचनाक संकेत दैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

३०६. (C) विवाहक माध्यमे प्रेम, कुल, समाज, संस्कार आ नारी-पुरुष सम्बन्धक चित्रण सम्भव होइत अछि — “परिणय प्रसंग” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

३०७. (B) विवाहक माध्यमे प्रेम, कुल, समाज, संस्कार आ नारी-पुरुष सम्बन्धक चित्रण सम्भव होइत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

३०८. (B) विवाहक माध्यमे प्रेम, कुल, समाज, संस्कार आ नारी-पुरुष सम्बन्धक चित्रण सम्भव होइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

३०९. (A) विवाहक माध्यमे प्रेम, कुल, समाज, संस्कार आ नारी-पुरुष सम्बन्धक चित्रण सम्भव होइत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

३१०. (A) विवाहक माध्यमे प्रेम, कुल, समाज, संस्कार आ नारी-पुरुष सम्बन्धक चित्रण सम्भव होइत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

३११. (D) एकावली नामक केन्द्रक माध्यमे कथा, भाव आ सामाजिक मूल्य संगठित होइत अछि — “एकावली पात्र” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

३१२. (C) एकावली नामक केन्द्रक माध्यमे कथा, भाव आ सामाजिक मूल्य संगठित होइत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

३१३. (C) एकावली नामक केन्द्रक माध्यमे कथा, भाव आ सामाजिक मूल्य संगठित होइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

३१४. (B) एकावली नामक केन्द्रक माध्यमे कथा, भाव आ सामाजिक मूल्य संगठित होइत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

३१५. (B) एकावली नामक केन्द्रक माध्यमे कथा, भाव आ सामाजिक मूल्य संगठित होइत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

३१६. (B) परिणय-काव्यमे व्यक्तिगत प्रेम आ सामाजिक संस्कार दुनू मिलैत अछि — “प्रेम आ संस्कार” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

३१७. (A) परिणय-काव्यमे व्यक्तिगत प्रेम आ सामाजिक संस्कार दुनू मिलैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

३१८. (A) परिणय-काव्यमे व्यक्तिगत प्रेम आ सामाजिक संस्कार दुनू मिलैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

३१९. (D) परिणय-काव्यमे व्यक्तिगत प्रेम आ सामाजिक संस्कार दुनू मिलैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

३२०. (D) परिणय-काव्यमे व्यक्तिगत प्रेम आ सामाजिक संस्कार दुनू मिलैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

३२१. (C) महाभारत-सम्बद्ध प्रसंग, जाहिमे प्रेम, साहस, कुल-राजनीति आ वीरता जुड़ल अछि — “सुभद्रा-हरण” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

३२२. (B) महाभारत-सम्बद्ध प्रसंग, जाहिमे प्रेम, साहस, कुल-राजनीति आ वीरता जुड़ल अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

३२३. (B) महाभारत-सम्बद्ध प्रसंग, जाहिमे प्रेम, साहस, कुल-राजनीति आ वीरता जुड़ल अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

३२४. (A) महाभारत-सम्बद्ध प्रसंग, जाहिमे प्रेम, साहस, कुल-राजनीति आ वीरता जुड़ल अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

३२५. (A) महाभारत-सम्बद्ध प्रसंग, जाहिमे प्रेम, साहस, कुल-राजनीति आ वीरता जुड़ल अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

३२६. (A) सुभद्रा-हरणक आधार प्रेम, युक्ति, साहस आ महाभारतीय पात्र-सम्बन्धमे अछि — “अर्जुन-सुभद्रा कथा” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

३२७. (D) सुभद्रा-हरणक आधार प्रेम, युक्ति, साहस आ महाभारतीय पात्र-सम्बन्धमे अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

३२८. (D) सुभद्रा-हरणक आधार प्रेम, युक्ति, साहस आ महाभारतीय पात्र-सम्बन्धमे अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

३२९. (C) सुभद्रा-हरणक आधार प्रेम, युक्ति, साहस आ महाभारतीय पात्र-सम्बन्धमे अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

३३०. (C) सुभद्रा-हरणक आधार प्रेम, युक्ति, साहस आ महाभारतीय पात्र-सम्बन्धमे अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

३३१. (C) सुभद्रा-हरणमे वीरता आ प्रेम-दूनूक रसात्मक सम्भावना देखल जा सकैत अछि — “वीर आ शृङ्गार” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

३३२. (B) सुभद्रा-हरणमे वीरता आ प्रेम-दूनूक रसात्मक सम्भावना देखल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

३३३. (B) सुभद्रा-हरणमे वीरता आ प्रेम-दूनूक रसात्मक सम्भावना देखल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

३३४. (A) सुभद्रा-हरणमे वीरता आ प्रेम-दूनूक रसात्मक सम्भावना देखल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

३३५. (A) सुभद्रा-हरणमे वीरता आ प्रेम-दूनूक रसात्मक सम्भावना देखल जा सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

३३६. (D) महाभारतीय विवाह-प्रसंगमे कुल-सम्बन्ध, शक्ति-संतुलन आ सामाजिक स्वीकृति उभरैत अछि — "कुल आ राजनीति" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

३३७. (C) महाभारतीय विवाह-प्रसंगमे कुल-सम्बन्ध, शक्ति-संतुलन आ सामाजिक स्वीकृति उभरैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

३३८. (C) महाभारतीय विवाह-प्रसंगमे कुल-सम्बन्ध, शक्ति-संतुलन आ सामाजिक स्वीकृति उभरैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

३३९. (B) महाभारतीय विवाह-प्रसंगमे कुल-सम्बन्ध, शक्ति-संतुलन आ सामाजिक स्वीकृति उभरैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

३४०. (B) महाभारतीय विवाह-प्रसंगमे कुल-सम्बन्ध, शक्ति-संतुलन आ सामाजिक स्वीकृति उभरैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

३४१. (B) चरित-काव्य रूपमे अम्बा/अम्ब सम्बन्धी कथा, संघर्ष, पीड़ा वा प्रतिज्ञाक विस्तार सम्भव अछि — "अम्बचरित" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

३४२. (A) चरित-काव्य रूपमे अम्बा/अम्ब सम्बन्धी कथा, संघर्ष, पीड़ा वा प्रतिज्ञाक विस्तार सम्भव अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

३४३. (A) चरित-काव्य रूपमे अम्बा/अम्ब सम्बन्धी कथा, संघर्ष, पीड़ा वा प्रतिज्ञाक विस्तार सम्भव अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

३४४. (D) चरित-काव्य रूपमे अम्बा/अम्ब सम्बन्धी कथा, संघर्ष, पीड़ा वा प्रतिज्ञाक विस्तार सम्भव अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

३४५. (D) चरित-काव्य रूपमे अम्बा/अम्ब सम्बन्धी कथा, संघर्ष, पीड़ा वा प्रतिज्ञाक विस्तार सम्भव अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

३४६. (C) महाभारत-परम्परामे अम्बा प्रसंग अपमान, प्रतिशोध, संकल्प आ नियतिक भाव लऽ सकैत अछि — "अम्बा प्रसंग" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

३४७. (B) महाभारत-परम्परामे अम्बा प्रसंग अपमान, प्रतिशोध, संकल्प आ नियतिक भाव लऽ सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

३४८. (B) महाभारत-परम्परामे अम्बा प्रसंग अपमान, प्रतिशोध, संकल्प आ नियतिक भाव लऽ सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

३४९. (A) महाभारत-परम्परामे अम्बा प्रसंग अपमान, प्रतिशोध, संकल्प आ नियतिक भाव लऽ सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

३५०. (A) महाभारत-परम्परामे अम्बा प्रसंग अपमान, प्रतिशोध, संकल्प आ नियतिक भाव लऽ सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

३५१. (C) अम्बचरित जकाँ काव्यमे स्त्री-अनुभव, अपमान, प्रतिरोध आ न्याय-चेतना उभरि सकैत अछि — "स्त्री-संघर्ष" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

३५२. (B) अम्बचरित जकाँ काव्यमे स्त्री-अनुभव, अपमान, प्रतिरोध आ न्याय-चेतना उभरि सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

३५३. (B) अम्बचरित जकाँ काव्यमे स्त्री-अनुभव, अपमान, प्रतिरोध आ न्याय-चेतना उभरि सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

३५४. (A) अम्बचरित जकाँ काव्यमे स्त्री-अनुभव, अपमान, प्रतिरोध आ न्याय-चेतना उभरि सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

३५५. (A) अम्बचरित जकाँ काव्यमे स्त्री-अनुभव, अपमान, प्रतिरोध आ न्याय-चेतना उभरि सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

३५६. (C) चरितकाव्य पात्रक जीवन, संकट, निर्णय आ परिणामकैं विस्तारसँ देखबैत अछि — "चरित-विकास" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

३५७. (B) चरितकाव्य पात्रक जीवन, संकट, निर्णय आ परिणामकैं विस्तारसँ देखबैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

३५८. (B) चरितकाव्य पात्रक जीवन, संकट, निर्णय आ परिणामकैं विस्तारसँ देखबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

३५९. (A) चरितकाव्य पात्रक जीवन, संकट, निर्णय आ परिणामकैं विस्तारसँ देखबैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

३६०. (A) चरितकाव्य पात्रक जीवन, संकट, निर्णय आ परिणामकैं विस्तारसँ देखबैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

३६१. (A) सुभद्रा-हरण आ अम्बचरित महाभारत-कथासामग्रीक नव काव्य-रूप बुझबैत अछि — "महाभारतीय सामग्री" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

३६२. (D) सुभद्रा-हरण आ अम्बचरित महाभारत-कथासामग्रीक नव काव्य-रूप बुझबैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

३६३. (D) सुभद्रा-हरण आ अम्बचरित महाभारत-कथासामग्रीक नव काव्य-रूप बुझबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

३६४. (C) सुभद्रा-हरण आ अम्बचरित महाभारत-कथासामग्रीक नव काव्य-रूप बुझबैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

३६५. (C) सुभद्रा-हरण आ अम्बचरित महाभारत-कथासामग्रीक नव काव्य-रूप बुझबैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

३६६. (C) हरण, परिणय, प्रतिज्ञा आ संघर्षक प्रसंग नाटकीय तनाव बनबैत अछि — "कथा-नाटकीयता" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

३६७. (B) हरण, परिणय, प्रतिज्ञा आ संघर्षक प्रसंग नाटकीय तनाव बनबैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

३६८. (B) हरण, परिणय, प्रतिज्ञा आ संघर्षक प्रसंग नाटकीय तनाव बनबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

३६९. (A) हरण, परिणय, प्रतिज्ञा आ संघर्षक प्रसंग नाटकीय तनाव बनबैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

३७०. (A) हरण, परिणय, प्रतिज्ञा आ संघर्षक प्रसंग नाटकीय तनाव बनबैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

३७१. (A) परिणय आ कुल-सम्बन्धक कथामे समाजक नियम आ मर्यादा प्रश्न बनैत अछि — "सामाजिक मर्यादा" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

३७२. (D) परिणय आ कुल-सम्बन्धक कथामे समाजक नियम आ मर्यादा प्रश्न बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

३७३. (D) परिणय आ कुल-सम्बन्धक कथामे समाजक नियम आ मर्यादा प्रश्न बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

३७४. (C) परिणय आ कुल-सम्बन्धक कथामे समाजक नियम आ मर्यादा प्रश्न बनैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

३७५. (C) परिणय आ कुल-सम्बन्धक कथामे समाजक नियम आ मर्यादा प्रश्न बनैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

३७६. (A) एहि कृतिसभमे शृङ्गार, वीर, करुण आ शान्त भावक मिश्रण सम्भव अछि — "रसमिश्रण" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

३७७. (D) एहि कृतिसभमे शृङ्गार, वीर, करुण आ शान्त भावक मिश्रण सम्भव अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

३७८. (D) एहि कृतिसभमे शृङ्गार, वीर, करुण आ शान्त भावक मिश्रण सम्भव अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

३७९. (C) एहि कृतिसभमे शृङ्गार, वीर, करुण आ शान्त भावक मिश्रण सम्भव अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

३८०. (C) एहि कृतिसभमे शृङ्गार, वीर, करुण आ शान्त भावक मिश्रण सम्भव अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

३८१. (A) लघु प्रसंग सेहो कविक विस्तार-दृष्टिसँ महाकाव्य रूप लऽ सकैत अछि — "महाकाव्यात्मक विस्तार" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

३८२. (D) लघु प्रसंग सेहो कविक विस्तार-दृष्टिसँ महाकाव्य रूप लऽ सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

३८३. (D) लघु प्रसंग सेहो कविक विस्तार-दृष्टिसँ महाकाव्य रूप लऽ सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

३८४. (C) लघु प्रसंग सेहो कविक विस्तार-दृष्टिसँ महाकाव्य रूप लऽ सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

३८५. (C) लघु प्रसंग सेहो कविक विस्तार-दृष्टिसँ महाकाव्य रूप लऽ सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

३८६. (B) तीनू कृतिमे पात्रक नाम शीर्षकमे वा कथ्यकेन्द्रमे महत्त्व रखैत अछि — "पात्र-केन्द्रितता" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

३८७. (A) तीनू कृतिमे पात्रक नाम शीर्षकमे वा कथ्यकेन्द्रमे महत्त्व रखैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

३८८. (A) तीनू कृतिमे पात्रक नाम शीर्षकमे वा कथ्यकेन्द्रमे महत्त्व रखैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

३८९. (D) तीनू कृतिमे पात्रक नाम शीर्षकमे वा कथ्यकेन्द्रमे महत्त्व रखैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

३९०. (D) तीनू कृतिमे पात्रक नाम शीर्षकमे वा कथ्यकेन्द्रमे महत्त्व रखैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

३९१. (A) विवाह, प्रतिज्ञा, कुल, न्याय आ प्रेम समाज-संस्कृतिक मूल्य रूपमे उभरैत अछि — "संस्कृतिक मूल्य" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

३९२. (D) विवाह, प्रतिज्ञा, कुल, न्याय आ प्रेम समाज-संस्कृतिक मूल्य रूपमे उभरैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

३९३. (D) विवाह, प्रतिज्ञा, कुल, न्याय आ प्रेम समाज-संस्कृतिक मूल्य रूपमे उभरैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

३९४. (C) विवाह, प्रतिज्ञा, कुल, न्याय आ प्रेम समाज-संस्कृतिक मूल्य रूपमे उभरैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

३९५. (C) विवाह, प्रतिज्ञा, कुल, न्याय आ प्रेम समाज-संस्कृतिक मूल्य रूपमे उभरैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

३९६. (D) एहि कृतिसभ पर प्रश्नमे शीर्षक, स्रोत-कथा, रस, पात्र आ सामाजिक अर्थ जोड़ि उत्तर देब चाही — "परीक्षा-संबंध" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

३९७. (C) एहि कृतिसभ पर प्रश्नमे शीर्षक, स्रोत-कथा, रस, पात्र आ सामाजिक अर्थ जोड़ि उत्तर देब चाही — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

३९८. (C) एहि कृतिसभ पर प्रश्नमे शीर्षक, स्रोत-कथा, रस, पात्र आ सामाजिक अर्थ जोड़ि उत्तर देब चाही — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

३९९. (B) एहि कृतिसभ पर प्रश्नमे शीर्षक, स्रोत-कथा, रस, पात्र आ सामाजिक अर्थ जोड़ि उत्तर देब चाही — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

४००. (B) एहि कृतिसभ पर प्रश्नमे शीर्षक, स्रोत-कथा, रस, पात्र आ सामाजिक अर्थ जोड़ि उत्तर देब चाही — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

४०१. (B) नीति, राजनीति, बुद्धि, राजकौशल आ चरित्र-बलकेँ काव्यात्मक रूपमे देखबाक अवसर दैत अछि — "चाणक्य" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

४०२. (A) नीति, राजनीति, बुद्धि, राजकौशल आ चरित्र-बलकेँ काव्यात्मक रूपमे देखबाक अवसर दैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

४०३. (C) नीति, राजनीति, बुद्धि, राजकौशल आ चरित्र-बलकेँ काव्यात्मक रूपमे देखबाक अवसर दैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

४०४. (B) नीति, राजनीति, बुद्धि, राजकौशल आ चरित्र-बलकेँ काव्यात्मक रूपमे देखबाक अवसर दैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

४०५. (B) नीति, राजनीति, बुद्धि, राजकौशल आ चरित्र-बलकेँ काव्यात्मक रूपमे देखबाक अवसर दैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

४०६. (C) चाणक्य-आधारित काव्यमे शासन, युक्ति, धैर्य, दूरदृष्टि आ लोकहितक विचार उभरैत अछि — "नीति-चेतना" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

४०७. (B) चाणक्य-आधारित काव्यमे शासन, युक्ति, धैर्य, दूरदृष्टि आ लोकहितक विचार उभरैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

४०८. (D) चाणक्य-आधारित काव्यमे शासन, युक्ति, धैर्य, दूरदृष्टि आ लोकहितक विचार उभरैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

४०९. (C) चाणक्य-आधारित काव्यमे शासन, युक्ति, धैर्य, दूरदृष्टि आ लोकहितक विचार उभरैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

४१०. (C) चाणक्य-आधारित काव्यमे शासन, युक्ति, धैर्य, दूरदृष्टि आ लोकहितक विचार उभरैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

४११. (C) राज्य, न्याय, सुरक्षा आ प्रजाहितक प्रश्न चरित-काव्यमे महत्त्वपूर्ण बनैत अछि — "राजधर्म" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

४१२. (B) राज्य, न्याय, सुरक्षा आ प्रजाहितक प्रश्न चरित-काव्यमे महत्त्वपूर्ण बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

४१३. (D) राज्य, न्याय, सुरक्षा आ प्रजाहितक प्रश्न चरित-काव्यमे महत्त्वपूर्ण बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

४१४. (C) राज्य, न्याय, सुरक्षा आ प्रजाहितक प्रश्न चरित-काव्यमे महत्त्वपूर्ण बनैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

४१५. (C) राज्य, न्याय, सुरक्षा आ प्रजाहितक प्रश्न चरित-काव्यमे महत्त्वपूर्ण बनैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

४१६. (B) कृष्णक बाललीला, नीति, प्रेम, धर्म, युद्ध-भूमिका वा दिव्य-मानवीय रूपक काव्य-विस्तार सम्भव अछि — "कृष्णचरित" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

४१७. (A) कृष्णक बाललीला, नीति, प्रेम, धर्म, युद्ध-भूमिका वा दिव्य-मानवीय रूपक काव्य-विस्तार सम्भव अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

४१८. (C) कृष्णक बाललीला, नीति, प्रेम, धर्म, युद्ध-भूमिका वा दिव्य-मानवीय रूपक काव्य-विस्तार सम्भव अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

४१९. (B) कृष्णक बाललीला, नीति, प्रेम, धर्म, युद्ध-भूमिका वा दिव्य-मानवीय रूपक काव्य-विस्तार सम्भव अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

४२०. (B) कृष्णक बाललीला, नीति, प्रेम, धर्म, युद्ध-भूमिका वा दिव्य-मानवीय रूपक काव्य-विस्तार सम्भव अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

४२१. (A) कृष्णक चरितमे खेल, प्रेम, नीति, करुणा आ अध्यात्मक बहुस्तरीय अर्थ जुड़ैत अछि — "लीला-तत्त्व" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

४२२. (D) कृष्णक चरितमे खेल, प्रेम, नीति, करुणा आ अध्यात्मक बहुस्तरीय अर्थ जुड़ैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

४२३. (B) कृष्णक चरितमे खेल, प्रेम, नीति, करुणा आ अध्यात्मक बहुस्तरीय अर्थ जुड़ैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

४२४. (A) कृष्णक चरितमे खेल, प्रेम, नीति, करुणा आ अध्यात्मक बहुस्तरीय अर्थ जुड़ैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

४२५. (A) कृष्णक चरितमे खेल, प्रेम, नीति, करुणा आ अध्यात्मक बहुस्तरीय अर्थ जुड़ैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

४२६. (B) कृष्णक चरित धर्मसंकट, नीति-युक्ति आ लोक-रक्षा पर विचार करबैत अछि — "धर्म आ नीति" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

४२७. (A) कृष्णक चरित धर्मसंकट, नीति-युक्ति आ लोक-रक्षा पर विचार करबैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

४२८. (C) कृष्णक चरित धर्मसंकट, नीति-युक्ति आ लोक-रक्षा पर विचार करबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

४२९. (B) कृष्णक चरित धर्मसंकट, नीति-युक्ति आ लोक-रक्षा पर विचार करबैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

४३०. (B) कृष्णक चरित धर्मसंकट, नीति-युक्ति आ लोक-रक्षा पर विचार करबैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

४३१. (B) शकुन्तला-प्रसंगक महाकाव्यात्मक रूप, प्रेम, स्मृति, विरह आ राजधर्मक कथ्यसँ जुड़ल अछि — "शकुन्तला चन्द्रभानु सिंह" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

४३२. (A) शकुन्तला-प्रसंगक महाकाव्यात्मक रूप, प्रेम, स्मृति, विरह आ राजधर्मक कथ्यसँ जुड़ल अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

४३३. (C) शकुन्तला-प्रसंगक महाकाव्यात्मक रूप, प्रेम, स्मृति, विरह आ राजधर्मक कथ्यसँ जुड़ल अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

४३४. (B) शकुन्तला-प्रसंगक महाकाव्यात्मक रूप, प्रेम, स्मृति, विरह आ राजधर्मक कथ्यसँ जुड़ल अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

४३५. (B) शकुन्तला-प्रसंगक महाकाव्यात्मक रूप, प्रेम, स्मृति, विरह आ राजधर्मक कथ्यसँ जुड़ल अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

४३६. (B) प्रेम, विस्मृति, अंगूठी-संकेत, स्वीकृति आ पुत्र-परम्पराक प्रसंग एहि कथा-दृष्टिमे महत्त्वपूर्ण अछि — "दुष्यन्त-शकुन्तला" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

४३७. (A) प्रेम, विस्मृति, अंगूठी-संकेत, स्वीकृति आ पुत्र-परम्पराक प्रसंग एहि कथा-दृष्टिमे महत्त्वपूर्ण अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

४३८. (C) प्रेम, विस्मृति, अंगूठी-संकेत, स्वीकृति आ पुत्र-परम्पराक प्रसंग एहि कथा-दृष्टिमे महत्त्वपूर्ण अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

४३९. (B) प्रेम, विस्मृति, अंगूठी-संकेत, स्वीकृति आ पुत्र-परम्पराक प्रसंग एहि कथा-दृष्टिमे महत्त्वपूर्ण अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

४४०. (B) प्रेम, विस्मृति, अंगूठी-संकेत, स्वीकृति आ पुत्र-परम्पराक प्रसंग एहि कथा-दृष्टिमे महत्त्वपूर्ण अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

४४१. (A) शकुन्तला-कथामे पहचान, स्मृति आ सत्य-स्वीकृतिक नाटकीय आधार बनैत अछि — "अभिज्ञान प्रसंग" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

४४२. (D) शकुन्तला-कथामे पहचान, स्मृति आ सत्य-स्वीकृतिक नाटकीय आधार बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

४४३. (B) शकुन्तला-कथामे पहचान, स्मृति आ सत्य-स्वीकृतिक नाटकीय आधार बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

४४४. (A) शकुन्तला-कथामे पहचान, स्मृति आ सत्य-स्वीकृतिक नाटकीय आधार बनैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

४४५. (A) शकुन्तला-कथामे पहचान, स्मृति आ सत्य-स्वीकृतिक नाटकीय आधार बनैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

४४६. (A) महाभारतीय पाण्डव-प्रसंगक संकल्प, अपमान, धर्मयुद्ध आ न्याय-संघर्षक काव्यात्मक रूप — "प्रतिज्ञा पाण्डव" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

४४७. (D) महाभारतीय पाण्डव-प्रसंगक संकल्प, अपमान, धर्मयुद्ध आ न्याय-संघर्षक काव्यात्मक रूप — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

४४८. (B) महाभारतीय पाण्डव-प्रसंगक संकल्प, अपमान, धर्मयुद्ध आ न्याय-संघर्षक काव्यात्मक रूप — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

४४९. (A) महाभारतीय पाण्डव-प्रसंगक संकल्प, अपमान, धर्मयुद्ध आ न्याय-संघर्षक काव्यात्मक रूप — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

४५०. (A) महाभारतीय पाण्डव-प्रसंगक संकल्प, अपमान, धर्मयुद्ध आ न्याय-संघर्षक काव्यात्मक रूप — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

४५१. (C) प्रतिज्ञा कथा आगाँ बढ़ाबयवला नैतिक आ नाटकीय केन्द्र बनि सकैत अछि — "संकल्प-धुरी" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

४५२. (B) प्रतिज्ञा कथा आगाँ बढ़ाबयवला नैतिक आ नाटकीय केन्द्र बनि सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

४५३. (D) प्रतिज्ञा कथा आगाँ बढ़ाबयवला नैतिक आ नाटकीय केन्द्र बनि सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

४५४. (C) प्रतिज्ञा कथा आगाँ बढ़ाबयवला नैतिक आ नाटकीय केन्द्र बनि सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

४५५. (C) प्रतिज्ञा कथा आगाँ बढ़ाबयवला नैतिक आ नाटकीय केन्द्र बनि सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

४५६. (B) पाण्डव प्रसंगमे न्याय, अधर्म-विरोध, प्रतिज्ञा आ संघर्षक अर्थ उभरैत अछि — “धर्मयुद्ध” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

४५७. (A) पाण्डव प्रसंगमे न्याय, अधर्म-विरोध, प्रतिज्ञा आ संघर्षक अर्थ उभरैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

४५८. (C) पाण्डव प्रसंगमे न्याय, अधर्म-विरोध, प्रतिज्ञा आ संघर्षक अर्थ उभरैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

४५९. (B) पाण्डव प्रसंगमे न्याय, अधर्म-विरोध, प्रतिज्ञा आ संघर्षक अर्थ उभरैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

४६०. (B) पाण्डव प्रसंगमे न्याय, अधर्म-विरोध, प्रतिज्ञा आ संघर्षक अर्थ उभरैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

४६१. (D) चाणक्य, कृष्ण आ पाण्डव-जकाँ पात्र चरितक माध्यमे आदर्श आ जटिलता दुनू देखबैत छथि — “चरित आ आदर्श” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

४६२. (C) चाणक्य, कृष्ण आ पाण्डव-जकाँ पात्र चरितक माध्यमे आदर्श आ जटिलता दुनू देखबैत छथि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

४६३. (A) चाणक्य, कृष्ण आ पाण्डव-जकाँ पात्र चरितक माध्यमे आदर्श आ जटिलता दुनू देखबैत छथि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

४६४. (D) चाणक्य, कृष्ण आ पाण्डव-जकाँ पात्र चरितक माध्यमे आदर्श आ जटिलता दुनू देखबैत छथि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

४६५. (D) चाणक्य, कृष्ण आ पाण्डव-जकाँ पात्र चरितक माध्यमे आदर्श आ जटिलता दुनू देखबैत छथि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

४६६. (D) पुराण-इतिहासक सामग्रीकैँ मैथिली काव्यमे नव भाषा आ भावसँ रूपान्तरित कएल जा सकैत अछि — “पुराणक नव पाठ” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

४६७. (C) पुराण-इतिहासक सामग्रीकैँ मैथिली काव्यमे नव भाषा आ भावसँ रूपान्तरित कएल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

४६८. (A) पुराण-इतिहासक सामग्रीकैँ मैथिली काव्यमे नव भाषा आ भावसँ रूपान्तरित कएल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

४६९. (D) पुराण-इतिहासक सामग्रीकैँ मैथिली काव्यमे नव भाषा आ भावसँ रूपान्तरित कएल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

४७०. (D) पुराण-इतिहासक सामग्रीकैँ मैथिली काव्यमे नव भाषा आ भावसँ रूपान्तरित कएल जा सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

४७१. (D) चाणक्यक युक्ति, कृष्णक नीति आ पाण्डवक संघर्ष वीर-बुद्धि समन्वय देखबैत अछि — “वीरता आ बुद्धि” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

४७२. (C) चाणक्यक युक्ति, कृष्णक नीति आ पाण्डवक संघर्ष वीर-बुद्धि समन्वय देखबैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

४७३. (A) चाणक्यक युक्ति, कृष्णक नीति आ पाण्डवक संघर्ष वीर-बुद्धि समन्वय देखबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

४७४. (D) चाणक्यक युक्ति, कृष्णक नीति आ पाण्डवक संघर्ष वीर-बुद्धि समन्वय देखबैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

४७५. (D) चाणक्यक युक्ति, कृष्णक नीति आ पाण्डवक संघर्ष वीर-बुद्धि समन्वय देखबैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

४७६. (C) शकुन्तला कथा प्रेम, स्मृति, मातृत्व आ राजकीय स्वीकृतिक स्त्री-पक्ष खोलैत अछि — “स्त्री-पात्रक भूमिका” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

४७७. (B) शकुन्तला कथा प्रेम, स्मृति, मातृत्व आ राजकीय स्वीकृतिक स्त्री-पक्ष खोलैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

४७८. (D) शकुन्तला कथा प्रेम, स्मृति, मातृत्व आ राजकीय स्वीकृतिक स्त्री-पक्ष खोलैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

४७९. (C) शकुन्तला कथा प्रेम, स्मृति, मातृत्व आ राजकीय स्वीकृतिक स्त्री-पक्ष खोलैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

४८०. (C) शकुन्तला कथा प्रेम, स्मृति, मातृत्व आ राजकीय स्वीकृतिक स्त्री-पक्ष खोलैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

४८१. (D) चाणक्य, शकुन्तला आ पाण्डव प्रसंगमे राज्य, वंश, नीति आ न्यायक प्रश्न उठैत अछि — "राजसत्ता" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

४८२. (C) चाणक्य, शकुन्तला आ पाण्डव प्रसंगमे राज्य, वंश, नीति आ न्यायक प्रश्न उठैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

४८३. (A) चाणक्य, शकुन्तला आ पाण्डव प्रसंगमे राज्य, वंश, नीति आ न्यायक प्रश्न उठैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

४८४. (D) चाणक्य, शकुन्तला आ पाण्डव प्रसंगमे राज्य, वंश, नीति आ न्यायक प्रश्न उठैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

४८५. (D) चाणक्य, शकुन्तला आ पाण्डव प्रसंगमे राज्य, वंश, नीति आ न्यायक प्रश्न उठैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

४८६. (A) महाकाव्य पात्रसभ केवल सरल आदर्श नहि, अनेक संकट आ निर्णयक बीच देखल जाइत छथि — "नैतिक दुविधा" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

४८७. (D) महाकाव्य पात्रसभ केवल सरल आदर्श नहि, अनेक संकट आ निर्णयक बीच देखल जाइत छथि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

४८८. (B) महाकाव्य पात्रसभ केवल सरल आदर्श नहि, अनेक संकट आ निर्णयक बीच देखल जाइत छथि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

४८९. (A) महाकाव्य पात्रसभ केवल सरल आदर्श नहि, अनेक संकट आ निर्णयक बीच देखल जाइत छथि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

४९०. (A) महाकाव्य पात्रसभ केवल सरल आदर्श नहि, अनेक संकट आ निर्णयक बीच देखल जाइत छथि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

४९१. (A) एहि कृतिसभमे वीर, करुण, शृङ्गार, अद्भुत, शान्त आदि रसक विविधता सम्भव अछि — "रसात्मकता" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

४९२. (D) एहि कृतिसभमे वीर, करुण, शृङ्गार, अद्भुत, शान्त आदि रसक विविधता सम्भव अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

४९३. (B) एहि कृतिसभमे वीर, करुण, शृङ्गार, अद्भुत, शान्त आदि रसक विविधता सम्भव अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

४९४. (A) एहि कृतिसभमे वीर, करुण, शृङ्गार, अद्भुत, शान्त आदि रसक विविधता सम्भव अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

४९५. (A) एहि कृतिसभमे वीर, करुण, शृङ्गार, अद्भुत, शान्त आदि रसक विविधता सम्भव अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

४९६. (A) चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डव महाकाव्य-सूचीमे विषयानुसार अलग-अलग कथाक्षेत्र खोलैत अछि — "कृति-स्थान" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

४९७. (D) चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डव महाकाव्य-सूचीमे विषयानुसार अलग-अलग कथाक्षेत्र खोलैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

४९८. (B) चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डव महाकाव्य-सूचीमे विषयानुसार अलग-अलग कथाक्षेत्र खोलैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

४९९. (A) चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डव महाकाव्य-सूचीमे विषयानुसार अलग-अलग कथाक्षेत्र खोलैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

५००. (A) चाणक्य, कृष्णचरित, शकुन्तला आ प्रतिज्ञा पाण्डव महाकाव्य-सूचीमे विषयानुसार अलग-अलग कथाक्षेत्र खोलैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

५०१. (B) कथा वा जीवनक एक महत्त्वपूर्ण खण्ड, प्रसंग वा भावकैँ केन्द्र बनाबयवला काव्य-रूप — “खण्डकाव्य” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

५०२. (A) कथा वा जीवनक एक महत्त्वपूर्ण खण्ड, प्रसंग वा भावकैँ केन्द्र बनाबयवला काव्य-रूप — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

५०३. (D) कथा वा जीवनक एक महत्त्वपूर्ण खण्ड, प्रसंग वा भावकैँ केन्द्र बनाबयवला काव्य-रूप — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

५०४. (C) कथा वा जीवनक एक महत्त्वपूर्ण खण्ड, प्रसंग वा भावकैँ केन्द्र बनाबयवला काव्य-रूप — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

५०५. (C) कथा वा जीवनक एक महत्त्वपूर्ण खण्ड, प्रसंग वा भावकैँ केन्द्र बनाबयवला काव्य-रूप — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

५०६. (B) खण्डकाव्य सीमित प्रसंग पर केन्द्रित रहैत अछि, महाकाव्य व्यापक कथा-विस्तार लैत अछि — “महाकाव्यसँ भेद” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

५०७. (A) खण्डकाव्य सीमित प्रसंग पर केन्द्रित रहैत अछि, महाकाव्य व्यापक कथा-विस्तार लैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

५०८. (D) खण्डकाव्य सीमित प्रसंग पर केन्द्रित रहैत अछि, महाकाव्य व्यापक कथा-विस्तार लैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

५०९. (C) खण्डकाव्य सीमित प्रसंग पर केन्द्रित रहैत अछि, महाकाव्य व्यापक कथा-विस्तार लैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

५१०. (C) खण्डकाव्य सीमित प्रसंग पर केन्द्रित रहैत अछि, महाकाव्य व्यापक कथा-विस्तार लैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

५११. (A) खण्डकाव्य विस्तार कम राखि भाव, संकट वा चरित्रक एक बिन्दु गाढ़ करैत अछि — “एक प्रसंगक गहनता” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

५१२. (D) खण्डकाव्य विस्तार कम राखि भाव, संकट वा चरित्रक एक बिन्दु गाढ़ करैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

५१३. (C) खण्डकाव्य विस्तार कम राखि भाव, संकट वा चरित्रक एक बिन्दु गाढ़ करैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

५१४. (B) खण्डकाव्य विस्तार कम राखि भाव, संकट वा चरित्रक एक बिन्दु गाढ़ करैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

५१५. (B) खण्डकाव्य विस्तार कम राखि भाव, संकट वा चरित्रक एक बिन्दु गाढ़ करैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

५१६. (D) संक्षिप्त कथ्यक कारण खण्डकाव्यमे घटना, मोड़ वा मनोस्थिति तीव्र बनैत अछि — “नाटकीय केन्द्र” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

५१७. (C) संक्षिप्त कथ्यक कारण खण्डकाव्यमे घटना, मोड़ वा मनोस्थिति तीव्र बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

५१८. (B) संक्षिप्त कथ्यक कारण खण्डकाव्यमे घटना, मोड़ वा मनोस्थिति तीव्र बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

५१९. (A) संक्षिप्त कथ्यक कारण खण्डकाव्यमे घटना, मोड़ वा मनोस्थिति तीव्र बनैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

५२०. (A) संक्षिप्त कथ्यक कारण खण्डकाव्यमे घटना, मोड़ वा मनोस्थिति तीव्र बनैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

५२१. (B) छोट फलक पर करुण, वीर, शृङ्गार वा चिन्तनक तीव्रता व्यक्त होइत अछि — “भाव-सघनता” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

५२२. (A) छोट फलक पर करुण, वीर, शृङ्गार वा चिन्तनक तीव्रता व्यक्त होइत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

५२३. (D) छोट फलक पर करुण, वीर, शृङ्गार वा चिन्तनक तीव्रता व्यक्त होइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

५२४. (C) छोट फलक पर करुण, वीर, शृङ्गार वा चिन्तनक तीव्रता व्यक्त होइत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

५२५. (C) छोट फलक पर करुण, वीर, शृङ्गार वा चिन्तनक तीव्रता व्यक्त होइत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

५२६. (A) पात्रक जीवनक निर्णायक क्षण खण्डकाव्यक केन्द्र बनि सकैत अछि — “चरित्र-क्षण” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

५२७. (D) पात्रक जीवनक निर्णायक क्षण खण्डकाव्यक केन्द्र बनि सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

५२८. (C) पात्रक जीवनक निर्णायक क्षण खण्डकाव्यक केन्द्र बनि सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

५२९. (B) पात्रक जीवनक निर्णायक क्षण खण्डकाव्यक केन्द्र बनि सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

५३०. (B) पात्रक जीवनक निर्णायक क्षण खण्डकाव्यक केन्द्र बनि सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

५३१. (C) सीमित प्रसंग व्यापक मानवीय अर्थक प्रतीक बनि सकैत अछि — “सांकेतिकता” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

५३२. (B) सीमित प्रसंग व्यापक मानवीय अर्थक प्रतीक बनि सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

५३३. (A) सीमित प्रसंग व्यापक मानवीय अर्थक प्रतीक बनि सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

५३४. (D) सीमित प्रसंग व्यापक मानवीय अर्थक प्रतीक बनि सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

५३५. (D) सीमित प्रसंग व्यापक मानवीय अर्थक प्रतीक बनि सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

५३६. (C) खण्डकाव्यमे अनावश्यक विस्तार छोड़ि सघन भाषा अपेक्षित होइत अछि — “भाषिक कसावट” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

५३७. (B) खण्डकाव्यमे अनावश्यक विस्तार छोड़ि सघन भाषा अपेक्षित होइत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

५३८. (A) खण्डकाव्यमे अनावश्यक विस्तार छोड़ि सघन भाषा अपेक्षित होइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

५३९. (D) खण्डकाव्यमे अनावश्यक विस्तार छोड़ि सघन भाषा अपेक्षित होइत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

५४०. (D) खण्डकाव्यमे अनावश्यक विस्तार छोड़ि सघन भाषा अपेक्षित होइत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

५४१. (C) शकुन्तला, भारती, पतन, उत्तरा, उत्सर्ग, एकलव्य, नोर—सभ अलग भाव-क्षेत्र खोलैत अछि — "विषय-विविधता" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

५४२. (B) शकुन्तला, भारती, पतन, उत्तरा, उत्सर्ग, एकलव्य, नोर—सभ अलग भाव-क्षेत्र खोलैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

५४३. (A) शकुन्तला, भारती, पतन, उत्तरा, उत्सर्ग, एकलव्य, नोर—सभ अलग भाव-क्षेत्र खोलैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

५४४. (D) शकुन्तला, भारती, पतन, उत्तरा, उत्सर्ग, एकलव्य, नोर—सभ अलग भाव-क्षेत्र खोलैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

५४५. (D) शकुन्तला, भारती, पतन, उत्तरा, उत्सर्ग, एकलव्य, नोर—सभ अलग भाव-क्षेत्र खोलैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

५४६. (A) खण्डकाव्यक प्रभाव ओकर केन्द्र, भाव आ संरचनाक एकतासँ बनैत अछि — "काव्यात्मक एकता" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

५४७. (D) खण्डकाव्यक प्रभाव ओकर केन्द्र, भाव आ संरचनाक एकतासँ बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

५४८. (C) खण्डकाव्यक प्रभाव ओकर केन्द्र, भाव आ संरचनाक एकतासँ बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

५४९. (B) खण्डकाव्यक प्रभाव ओकर केन्द्र, भाव आ संरचनाक एकतासँ बनैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

५५०. (B) खण्डकाव्यक प्रभाव ओकर केन्द्र, भाव आ संरचनाक एकतासँ बनैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

५५१. (A) खण्डकाव्यक शीर्षक प्रायः पात्र, घटना, भाव वा प्रतीकक संकेत दैत अछि — "शीर्षकक अर्थ" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

५५२. (D) खण्डकाव्यक शीर्षक प्रायः पात्र, घटना, भाव वा प्रतीकक संकेत दैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

५५३. (C) खण्डकाव्यक शीर्षक प्रायः पात्र, घटना, भाव वा प्रतीकक संकेत दैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

५५४. (B) खण्डकाव्यक शीर्षक प्रायः पात्र, घटना, भाव वा प्रतीकक संकेत दैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

५५५. (B) खण्डकाव्यक शीर्षक प्रायः पात्र, घटना, भाव वा प्रतीकक संकेत दैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

५५६. (D) किछु खण्डकाव्य पुरान कथा वा प्रतीकद्वारा आधुनिक प्रश्न उठबैत अछि — "आधुनिक संवेदना" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

५५७. (C) किछु खण्डकाव्य पुरान कथा वा प्रतीकद्वारा आधुनिक प्रश्न उठबैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

५५८. (B) किछु खण्डकाव्य पुरान कथा वा प्रतीकद्वारा आधुनिक प्रश्न उठबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

५५९. (A) किछु खण्डकाव्य पुरान कथा वा प्रतीकद्वारा आधुनिक प्रश्न उठबैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

५६०. (A) किछु खण्डकाव्य पुरान कथा वा प्रतीकद्वारा आधुनिक प्रश्न उठबैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

५६१. (D) उत्तरा, पतन, नोर जकाँ शीर्षक करुण भावक सम्भावना खोलि सकैत अछि — "करुण रस" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

५६२. (C) उत्तरा, पतन, नोर जकाँ शीर्षक करुण भावक सम्भावना खोलि सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

५६३. (B) उत्तरा, पतन, नोर जकाँ शीर्षक करुण भावक सम्भावना खोलि सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

५६४. (A) उत्तरा, पतन, नोर जकाँ शीर्षक करुण भावक सम्भावना खोलि सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

५६५. (A) उत्तरा, पतन, नोर जकाँ शीर्षक करुण भावक सम्भावना खोलि सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

५६६. (B) एकलव्य वा प्रतिज्ञा-जकाँ प्रसंग संघर्ष, स्वाभिमान आ साहसक भाव दैत अछि — "वीर प्रसंग" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

५६७. (A) एकलव्य वा प्रतिज्ञा-जकाँ प्रसंग संघर्ष, स्वाभिमान आ साहसक भाव दैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

५६८. (D) एकलव्य वा प्रतिज्ञा-जकाँ प्रसंग संघर्ष, स्वाभिमान आ साहसक भाव दैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

५६९. (C) एकलव्य वा प्रतिज्ञा-जकाँ प्रसंग संघर्ष, स्वाभिमान आ साहसक भाव दैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

५७०. (C) एकलव्य वा प्रतिज्ञा-जकाँ प्रसंग संघर्ष, स्वाभिमान आ साहसक भाव दैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

५७१. (B) भारती वा उत्सर्ग जकाँ शीर्षक सामूहिक समर्पण, भाषा वा देश-भावक संकेत दऽ सकैत अछि — "राष्ट्र वा जन-चेतना" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

५७२. (A) भारती वा उत्सर्ग जकाँ शीर्षक सामूहिक समर्पण, भाषा वा देश-भावक संकेत दऽ सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

५७३. (D) भारती वा उत्सर्ग जकाँ शीर्षक सामूहिक समर्पण, भाषा वा देश-भावक संकेत दऽ सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

५७४. (C) भारती वा उत्सर्ग जकाँ शीर्षक सामूहिक समर्पण, भाषा वा देश-भावक संकेत दऽ सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

५७५. (C) भारती वा उत्सर्ग जकाँ शीर्षक सामूहिक समर्पण, भाषा वा देश-भावक संकेत दऽ सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

५७६. (D) सीमित कथावस्तु पात्रक भीतरक द्वन्द्व आ भावोच्छ्वास खोलबाक अवसर दैत अछि — "मनोवैज्ञानिकता" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

५७७. (C) सीमित कथावस्तु पात्रक भीतरक द्वन्द्व आ भावोच्छ्वास खोलबाक अवसर दैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

५७८. (B) सीमित कथावस्तु पात्रक भीतरक द्वन्द्व आ भावोच्छ्वास खोलबाक अवसर दैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

५७९. (A) सीमित कथावस्तु पात्रक भीतरक द्वन्द्व आ भावोच्छ्वास खोलबाक अवसर दैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

५८०. (A) सीमित कथावस्तु पात्रक भीतरक द्वन्द्व आ भावोच्छ्वास खोलबाक अवसर दैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

५८१. (B) प्रत्येक खण्डकाव्यकेँ शीर्षक, कथ्य, भाव, पात्र, प्रतीक आ भाषा सँ पढ़ब चाही — “अध्ययन-पद्धति” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

५८२. (A) प्रत्येक खण्डकाव्यकेँ शीर्षक, कथ्य, भाव, पात्र, प्रतीक आ भाषा सँ पढ़ब चाही — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

५८३. (D) प्रत्येक खण्डकाव्यकेँ शीर्षक, कथ्य, भाव, पात्र, प्रतीक आ भाषा सँ पढ़ब चाही — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

५८४. (C) प्रत्येक खण्डकाव्यकेँ शीर्षक, कथ्य, भाव, पात्र, प्रतीक आ भाषा सँ पढ़ब चाही — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

५८५. (C) प्रत्येक खण्डकाव्यकेँ शीर्षक, कथ्य, भाव, पात्र, प्रतीक आ भाषा सँ पढ़ब चाही — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

५८६. (A) खण्डकाव्य-सूची मैथिली आधुनिक काव्य-विकास आ विधा-विस्तार बुझबामे सहायक अछि — “पाठ्यक्रमीय महत्त्व” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

५८७. (D) खण्डकाव्य-सूची मैथिली आधुनिक काव्य-विकास आ विधा-विस्तार बुझबामे सहायक अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

५८८. (C) खण्डकाव्य-सूची मैथिली आधुनिक काव्य-विकास आ विधा-विस्तार बुझबामे सहायक अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

५८९. (B) खण्डकाव्य-सूची मैथिली आधुनिक काव्य-विकास आ विधा-विस्तार बुझबामे सहायक अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

५९०. (B) खण्डकाव्य-सूची मैथिली आधुनिक काव्य-विकास आ विधा-विस्तार बुझबामे सहायक अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

५९१. (A) उत्तर लिखैत खण्डकाव्यक सीमा, केन्द्र, प्रतीक आ प्रभाव साफ करब जरूरी अछि — “आलोचनात्मक उत्तर” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

५९२. (D) उत्तर लिखैत खण्डकाव्यक सीमा, केन्द्र, प्रतीक आ प्रभाव साफ करब जरूरी अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

५९३. (C) उत्तर लिखैत खण्डकाव्यक सीमा, केन्द्र, प्रतीक आ प्रभाव साफ करब जरूरी अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

५९४. (B) उत्तर लिखैत खण्डकाव्यक सीमा, केन्द्र, प्रतीक आ प्रभाव साफ करब जरूरी अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

५९५. (B) उत्तर लिखैत खण्डकाव्यक सीमा, केन्द्र, प्रतीक आ प्रभाव साफ करब जरूरी अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

५९६. (B) महाकाव्य आ खण्डकाव्य दूनूकेँ एकहि तराजूमे नहि, अलग रचना-दृष्टिसँ पढ़ब चाही — “विधा-सूझ” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

५९७. (A) महाकाव्य आ खण्डकाव्य दूनूकेँ एकहि तराजूमे नहि, अलग रचना-दृष्टिसँ पढ़ब चाही — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

५९८. (D) महाकाव्य आ खण्डकाव्य दूनूकेँ एकहि तराजूमे नहि, अलग रचना-दृष्टिसँ पढ़ब चाही — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

५९९. (C) महाकाव्य आ खण्डकाव्य दूनूकेँ एकहि तराजूमे नहि, अलग रचना-दृष्टिसँ पढ़ब चाही — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

६००. (C) महाकाव्य आ खण्डकाव्य दूनूकेँ एकहि तराजूमे नहि, अलग रचना-दृष्टिसँ पढ़ब चाही — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

६०१. (D) शकुन्तला-प्रसंगक खण्डकाव्यात्मक रूप, जे प्रेम, विस्मृति, पहचान आ करुणा पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि — “शकुन्तला दामोदर लालदास” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

६०२. (C) शकुन्तला-प्रसंगक खण्डकाव्यात्मक रूप, जे प्रेम, विस्मृति, पहचान आ करुणा पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

६०३. (C) शकुन्तला-प्रसंगक खण्डकाव्यात्मक रूप, जे प्रेम, विस्मृति, पहचान आ करुणा पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

६०४. (B) शकुन्तला-प्रसंगक खण्डकाव्यात्मक रूप, जे प्रेम, विस्मृति, पहचान आ करुणा पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

६०५. (B) शकुन्तला-प्रसंगक खण्डकाव्यात्मक रूप, जे प्रेम, विस्मृति, पहचान आ करुणा पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

६०६. (A) दामोदर लालदासक शकुन्तला खण्डकाव्य-सूचीमे, चन्द्रभानु सिंहक शकुन्तला महाकाव्य-सूचीमे राखल गेल अछि — “शकुन्तला चन्द्रभानु सिंहसँ भेद” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

६०७. (D) दामोदर लालदासक शकुन्तला खण्डकाव्य-सूचीमे, चन्द्रभानु सिंहक शकुन्तला महाकाव्य-सूचीमे राखल गेल अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

६०८. (D) दामोदर लालदासक शकुन्तला खण्डकाव्य-सूचीमे, चन्द्रभानु सिंहक शकुन्तला महाकाव्य-सूचीमे राखल गेल अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

६०९. (C) दामोदर लालदासक शकुन्तला खण्डकाव्य-सूचीमे, चन्द्रभानु सिंहक शकुन्तला महाकाव्य-सूचीमे राखल गेल अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

६१०. (C) दामोदर लालदासक शकुन्तला खण्डकाव्य-सूचीमे, चन्द्रभानु सिंहक शकुन्तला महाकाव्य-सूचीमे राखल गेल अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

६११. (D) शकुन्तला कथा प्रेम, विश्वास, विरह आ स्मृति-स्वीकृतिक गहन भाव खोलैत अछि — “प्रेम-प्रसंग” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

६१२. (C) शकुन्तला कथा प्रेम, विश्वास, विरह आ स्मृति-स्वीकृतिक गहन भाव खोलैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

६१३. (C) शकुन्तला कथा प्रेम, विश्वास, विरह आ स्मृति-स्वीकृतिक गहन भाव खोलैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

६१४. (B) शकुन्तला कथा प्रेम, विश्वास, विरह आ स्मृति-स्वीकृतिक गहन भाव खोलैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

६१५. (B) शकुन्तला कथा प्रेम, विश्वास, विरह आ स्मृति-स्वीकृतिक गहन भाव खोलैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

६१६. (A) दुष्यन्तक माध्यमे राजधर्म, स्मृति-विस्मृति आ स्वीकृतिक प्रश्न उठैत अछि — “दुष्यन्त” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

६१७. (D) दुष्यन्तक माध्यमे राजधर्म, स्मृति-विस्मृति आ स्वीकृतिक प्रश्न उठैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

६१८. (D) दुष्यन्तक माध्यमे राजधर्म, स्मृति-विस्मृति आ स्वीकृतिक प्रश्न उठैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

६१९. (C) दुष्यन्तक माध्यमे राजधर्म, स्मृति-विस्मृति आ स्वीकृतिक प्रश्न उठैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

६२०. (C) दुष्यन्तक माध्यमे राजधर्म, स्मृति-विस्मृति आ स्वीकृतिक प्रश्न उठैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

६२१. (B) पहचानक संकेत कथामे सत्य, स्मृति आ सम्बन्धक पुनर्स्थापन करैत अछि — “अभिज्ञान” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

६२२. (A) पहचानक संकेत कथामे सत्य, स्मृति आ सम्बन्धक पुनर्स्थापन करैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

६२३. (A) पहचानक संकेत कथामे सत्य, स्मृति आ सम्बन्धक पुनर्स्थापन करैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

६२४. (D) पहचानक संकेत कथामे सत्य, स्मृति आ सम्बन्धक पुनर्स्थापन करैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

६२५. (D) पहचानक संकेत कथामे सत्य, स्मृति आ सम्बन्धक पुनर्स्थापन करैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

६२६. (C) शकुन्तला-प्रसंग विरह, प्रतीक्षा, अपमान आ आशाक करुण धरातल दैत अछि — “विरह आ प्रतीक्षा” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

६२७. (B) शकुन्तला-प्रसंग विरह, प्रतीक्षा, अपमान आ आशाक करुण धरातल दैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

६२८. (B) शकुन्तला-प्रसंग विरह, प्रतीक्षा, अपमान आ आशाक करुण धरातल दैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

६२९. (A) शकुन्तला-प्रसंग विरह, प्रतीक्षा, अपमान आ आशाक करुण धरातल दैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

६३०. (A) शकुन्तला-प्रसंग विरह, प्रतीक्षा, अपमान आ आशाक करुण धरातल दैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

६३१. (B) आश्रम, वन, ऋतु आ जीव-जगत शकुन्तलाक भावजगतक सहचर बनैत अछि — “प्रकृति-परिवेश” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

६३२. (A) आश्रम, वन, ऋतु आ जीव-जगत शकुन्तलाक भावजगतक सहचर बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

६३३. (A) आश्रम, वन, ऋतु आ जीव-जगत शकुन्तलाक भावजगतक सहचर बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

६३४. (D) आश्रम, वन, ऋतु आ जीव-जगत शकुन्तलाक भावजगतक सहचर बनैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

६३५. (D) आश्रम, वन, ऋतु आ जीव-जगत शकुन्तलाक भावजगतक सहचर बनैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

६३६. (C) शकुन्तलाक स्थिति प्रेम, मातृत्व, स्वाभिमान आ सामाजिक स्वीकृतिक प्रश्न उठबैत अछि — “स्त्री-मर्यादा” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

६३७. (B) शकुन्तलाक स्थिति प्रेम, मातृत्व, स्वाभिमान आ सामाजिक स्वीकृतिक प्रश्न उठबैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

६३८. (B) शकुन्तलाक स्थिति प्रेम, मातृत्व, स्वाभिमान आ सामाजिक स्वीकृतिक प्रश्न उठबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

६३९. (A) शकुन्तलाक स्थिति प्रेम, मातृत्व, स्वाभिमान आ सामाजिक स्वीकृतिक प्रश्न उठबैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

६४०. (A) शकुन्तलाक स्थिति प्रेम, मातृत्व, स्वाभिमान आ सामाजिक स्वीकृतिक प्रश्न उठबैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

६४१. (B) शकुन्तला-कथा सँ चुनल निर्णायक प्रसंग भाव-सघन रूपमे प्रस्तुत भऽ सकैत अछि — “खण्डकाव्यात्मक कसावट” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

६४२. (A) शकुन्तला-कथा सँ चुनल निर्णायक प्रसंग भाव-सघन रूपमे प्रस्तुत भऽ सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

६४३. (A) शकुन्तला-कथा सँ चुनल निर्णायक प्रसंग भाव-सघन रूपमे प्रस्तुत भऽ सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

६४४. (D) शकुन्तला-कथा सँ चुनल निर्णायक प्रसंग भाव-सघन रूपमे प्रस्तुत भऽ सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

६४५. (D) शकुन्तला-कथा सँ चुनल निर्णायक प्रसंग भाव-सघन रूपमे प्रस्तुत भऽ सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

६४६. (B) शीर्षक भाषा, विद्या, देश, जन-चेतना वा सांस्कृतिक मातृ-रूपक संकेत दऽ सकैत अछि — "भारती" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

६४७. (A) शीर्षक भाषा, विद्या, देश, जन-चेतना वा सांस्कृतिक मातृ-रूपक संकेत दऽ सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

६४८. (A) शीर्षक भाषा, विद्या, देश, जन-चेतना वा सांस्कृतिक मातृ-रूपक संकेत दऽ सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

६४९. (D) शीर्षक भाषा, विद्या, देश, जन-चेतना वा सांस्कृतिक मातृ-रूपक संकेत दऽ सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

६५०. (D) शीर्षक भाषा, विद्या, देश, जन-चेतना वा सांस्कृतिक मातृ-रूपक संकेत दऽ सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

६५१. (C) भारती ज्ञान, भाषा, संस्कार आ सामूहिक चेतनाक स्त्री-प्रतीक बनि सकैत अछि — "भारतीक प्रतीक" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

६५२. (B) भारती ज्ञान, भाषा, संस्कार आ सामूहिक चेतनाक स्त्री-प्रतीक बनि सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

६५३. (B) भारती ज्ञान, भाषा, संस्कार आ सामूहिक चेतनाक स्त्री-प्रतीक बनि सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

६५४. (A) भारती ज्ञान, भाषा, संस्कार आ सामूहिक चेतनाक स्त्री-प्रतीक बनि सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

६५५. (A) भारती ज्ञान, भाषा, संस्कार आ सामूहिक चेतनाक स्त्री-प्रतीक बनि सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

६५६. (C) भारती शीर्षक मैथिली भाषा, साहित्य आ सांस्कृतिक अस्मिताक प्रश्नसँ जोड़ल जा सकैत अछि — "भाषा-चेतना" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

६५७. (B) भारती शीर्षक मैथिली भाषा, साहित्य आ सांस्कृतिक अस्मिताक प्रश्नसँ जोड़ल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

६५८. (B) भारती शीर्षक मैथिली भाषा, साहित्य आ सांस्कृतिक अस्मिताक प्रश्नसँ जोड़ल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

६५९. (A) भारती शीर्षक मैथिली भाषा, साहित्य आ सांस्कृतिक अस्मिताक प्रश्नसँ जोड़ल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

६६०. (A) भारती शीर्षक मैथिली भाषा, साहित्य आ सांस्कृतिक अस्मिताक प्रश्नसँ जोड़ल जा सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

६६१. (D) भारती-जकाँ खण्डकाव्य नव चेतना, जागरण आ आत्मगौरवक स्वर देबाक सामर्थ्य रखैत अछि — "उत्साह आ जागरण" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

६६२. (C) भारती-जकाँ खण्डकाव्य नव चेतना, जागरण आ आत्मगौरवक स्वर देबाक सामर्थ्य रखैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

६६३. (C) भारती-जकाँ खण्डकाव्य नव चेतना, जागरण आ आत्मगौरवक स्वर देबाक सामर्थ्य रखैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

६६४. (B) भारती-जकाँ खण्डकाव्य नव चेतना, जागरण आ आत्मगौरवक स्वर देबाक सामर्थ्य रखैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

६६५. (B) भारती-जकाँ खण्डकाव्य नव चेतना, जागरण आ आत्मगौरवक स्वर देबाक सामर्थ्य रखैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

६६६. (D) एकटा प्रेम-करुणा-प्रकृति केन्द्रित, दोसर सामूहिक भाषा/विद्या प्रतीकक दिशा खोलैत अछि — "शकुन्तला बनाम भारती" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

६६७. (C) एकटा प्रेम-करुणा-प्रकृति केन्द्रित, दोसर सामूहिक भाषा/विद्या प्रतीकक दिशा खोलैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

६६८. (C) एकटा प्रेम-करुणा-प्रकृति केन्द्रित, दोसर सामूहिक भाषा/विद्या प्रतीकक दिशा खोलैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

६६९. (B) एकटा प्रेम-करुणा-प्रकृति केन्द्रित, दोसर सामूहिक भाषा/विद्या प्रतीकक दिशा खोलैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

६७०. (B) एकटा प्रेम-करुणा-प्रकृति केन्द्रित, दोसर सामूहिक भाषा/विद्या प्रतीकक दिशा खोलैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

६७१. (B) शकुन्तलाक मूल प्रभाव करुणा, स्मृति आ पहचानक द्वन्द्वसँ बनैत अछि — "करुणा आ स्मृति" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

६७२. (A) शकुन्तलाक मूल प्रभाव करुणा, स्मृति आ पहचानक द्वन्द्वसँ बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

६७३. (A) शकुन्तलाक मूल प्रभाव करुणा, स्मृति आ पहचानक द्वन्द्वसँ बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

६७४. (D) शकुन्तलाक मूल प्रभाव करुणा, स्मृति आ पहचानक द्वन्द्वसँ बनैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

६७५. (D) शकुन्तलाक मूल प्रभाव करुणा, स्मृति आ पहचानक द्वन्द्वसँ बनैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

६७६. (C) भारती शीर्षक भाषामाता, विद्यादायिनी वा संस्कृतिक पोषण-शक्ति रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि — "सांस्कृतिक मातृत्व" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

६७७. (B) भारती शीर्षक भाषामाता, विद्यादायिनी वा संस्कृतिक पोषण-शक्ति रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

६७८. (B) भारती शीर्षक भाषामाता, विद्यादायिनी वा संस्कृतिक पोषण-शक्ति रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

६७९. (A) भारती शीर्षक भाषामाता, विद्यादायिनी वा संस्कृतिक पोषण-शक्ति रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

६८०. (A) भारती शीर्षक भाषामाता, विद्यादायिनी वा संस्कृतिक पोषण-शक्ति रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

६८१. (D) शकुन्तला मे कोमलता, भारतीमे उद्बोधन वा गौरव-स्वरक सम्भावना रहैत अछि — "काव्य-स्वर" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

६८२. (C) शकुन्तला मे कोमलता, भारतीमे उद्बोधन वा गौरव-स्वरक सम्भावना रहैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

६८३. (C) शकुन्तला मे कोमलता, भारतीमे उद्बोधन वा गौरव-स्वरक सम्भावना रहैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

६८४. (B) शकुन्तला मे कोमलता, भारतीमे उद्बोधन वा गौरव-स्वरक सम्भावना रहैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

६८५. (B) शकुन्तला मे कोमलता, भारतीमे उद्बोधन वा गौरव-स्वरक सम्भावना रहैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

६८६. (A) शकुन्तला पात्र-केंद्रित, भारती अधिक प्रतीक-केंद्रित पठनक माँग करैत अछि — "पात्र आ प्रतीक" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

६८७. (D) शकुन्तला पात्र-केंद्रित, भारती अधिक प्रतीक-केंद्रित पठनक माँग करैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

६८८. (D) शकुन्तला पात्र-केंद्रित, भारती अधिक प्रतीक-केंद्रित पठनक माँग करैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

६८९. (C) शकुन्तला पात्र-केंद्रित, भारती अधिक प्रतीक-केंद्रित पठनक माँग करैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

६९०. (C) शकुन्तला पात्र-केंद्रित, भारती अधिक प्रतीक-केंद्रित पठनक माँग करैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

६९१. (C) शकुन्तला आ भारती पर उत्तरमे कथ्य-भेद, रस-भेद आ प्रतीक-भेद जरूर लिखब चाही — "परीक्षा तुलना" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

६९२. (B) शकुन्तला आ भारती पर उत्तरमे कथ्य-भेद, रस-भेद आ प्रतीक-भेद जरूर लिखब चाही — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

६९३. (B) शकुन्तला आ भारती पर उत्तरमे कथ्य-भेद, रस-भेद आ प्रतीक-भेद जरूर लिखब चाही — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

६९४. (A) शकुन्तला आ भारती पर उत्तरमे कथ्य-भेद, रस-भेद आ प्रतीक-भेद जरूर लिखब चाही — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

६९५. (A) शकुन्तला आ भारती पर उत्तरमे कथ्य-भेद, रस-भेद आ प्रतीक-भेद जरूर लिखब चाही — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

६९६. (B) ई दुनू खण्डकाव्य मैथिली काव्य-विकासक अलग-अलग संवेदनात्मक दिशा देखबैत अछि — "साहित्यिक स्थान" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

६९७. (A) ई दुनू खण्डकाव्य मैथिली काव्य-विकासक अलग-अलग संवेदनात्मक दिशा देखबैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

६९८. (A) ई दुनू खण्डकाव्य मैथिली काव्य-विकासक अलग-अलग संवेदनात्मक दिशा देखबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

६९९. (D) ई दुनू खण्डकाव्य मैथिली काव्य-विकासक अलग-अलग संवेदनात्मक दिशा देखबैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

७००. (D) ई दुनू खण्डकाव्य मैथिली काव्य-विकासक अलग-अलग संवेदनात्मक दिशा देखबैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

७०१. (C) शीर्षक नैतिक, सामाजिक, राजनीतिक वा मानवीय अवनतिक काव्य-प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — "पतन" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

७०२. (B) शीर्षक नैतिक, सामाजिक, राजनीतिक वा मानवीय अवनतिक काव्य-प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

७०३. (B) शीर्षक नैतिक, सामाजिक, राजनीतिक वा मानवीय अवनतिक काव्य-प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

७०४. (A) शीर्षक नैतिक, सामाजिक, राजनीतिक वा मानवीय अवनतिक काव्य-प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

७०५. (A) शीर्षक नैतिक, सामाजिक, राजनीतिक वा मानवीय अवनतिक काव्य-प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

७०६. (A) पतन काव्यमे मूल्य-भंग, हानि, संकट वा चरित्रक गिरावट चित्रित होएबाक सम्भावना अछि — "अवनतिक भाव" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

७०७. (D) पतन काव्यमे मूल्य-भंग, हानि, संकट वा चरित्रक गिरावट चित्रित होएबाक सम्भावना अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

७०८. (D) पतन काव्यमे मूल्य-भंग, हानि, संकट वा चरित्रक गिरावट चित्रित होएबाक सम्भावना अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

७०९. (C) पतन काव्यमे मूल्य-भंग, हानि, संकट वा चरित्रक गिरावट चित्रित होएबाक सम्भावना अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

७१०. (C) पतन काव्यमे मूल्य-भंग, हानि, संकट वा चरित्रक गिरावट चित्रित होएबाक सम्भावना अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

७११. (A) पतनक कथ्य करुणा, चेतावनी आ आत्मनिरीक्षणक भाव जगाबैत अछि — "करुण दृष्टि" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

७१२. (D) पतनक कथ्य करुणा, चेतावनी आ आत्मनिरीक्षणक भाव जगाबैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

७१३. (D) पतनक कथ्य करुणा, चेतावनी आ आत्मनिरीक्षणक भाव जगाबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

७१४. (C) पतनक कथ्य करुणा, चेतावनी आ आत्मनिरीक्षणक भाव जगाबैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

७१५. (C) पतनक कथ्य करुणा, चेतावनी आ आत्मनिरीक्षणक भाव जगाबैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

७१६. (D) पतन शीर्षक समाजक विघटन, अन्याय वा नैतिक संकटक संकेत दऽ सकैत अछि — "सामाजिक संकेत" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

७१७. (C) पतन शीर्षक समाजक विघटन, अन्याय वा नैतिक संकटक संकेत दऽ सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

७१८. (C) पतन शीर्षक समाजक विघटन, अन्याय वा नैतिक संकटक संकेत दऽ सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

७१९. (B) पतन शीर्षक समाजक विघटन, अन्याय वा नैतिक संकटक संकेत दऽ सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

७२०. (B) पतन शीर्षक समाजक विघटन, अन्याय वा नैतिक संकटक संकेत दऽ सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

७२१. (B) पतन कथ्य मनुष्यक निर्णय, दोष, लोभ वा दुर्बलताक परिणाम देखबैत अछि — "नैतिक प्रश्न" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

७२२. (A) पतन कथ्य मनुष्यक निर्णय, दोष, लोभ वा दुर्बलताक परिणाम देखबैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

७२३. (A) पतन कथ्य मनुष्यक निर्णय, दोष, लोभ वा दुर्बलताक परिणाम देखबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

७२४. (D) पतन कथ्य मनुष्यक निर्णय, दोष, लोभ वा दुर्बलताक परिणाम देखबैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

७२५. (D) पतन कथ्य मनुष्यक निर्णय, दोष, लोभ वा दुर्बलताक परिणाम देखबैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

७२६. (A) महाभारत-सम्बद्ध स्त्री-पात्र, जकर माध्यमे युद्धोत्तर पीड़ा, मातृत्व आ आशाक भाव उभरैत अछि — "उत्तरा" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

७२७. (D) महाभारत-सम्बद्ध स्त्री-पात्र, जकर माध्यमे युद्धोत्तर पीड़ा, मातृत्व आ आशाक भाव उभरैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

७२८. (D) महाभारत-सम्बद्ध स्त्री-पात्र, जकर माध्यमे युद्धोत्तर पीड़ा, मातृत्व आ आशाक भाव उभरैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

७२९. (C) महाभारत-सम्बद्ध स्त्री-पात्र, जकर माध्यमे युद्धोत्तर पीड़ा, मातृत्व आ आशाक भाव उभरैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

७३०. (C) महाभारत-सम्बद्ध स्त्री-पात्र, जकर माध्यमे युद्धोत्तर पीड़ा, मातृत्व आ आशाक भाव उभरैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

७३१. (D) उत्तरा प्रसंग युद्धक विनाश, विधवापन, अजन्म बालक आ आशा-रक्षा पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि — "युद्धोत्तर करुणा" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

७३२. (C) उत्तरा प्रसंग युद्धक विनाश, विधवापन, अजन्म बालक आ आशा-रक्षा पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

७३३. (C) उत्तरा प्रसंग युद्धक विनाश, विधवापन, अजन्म बालक आ आशा-रक्षा पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

७३४. (B) उत्तरा प्रसंग युद्धक विनाश, विधवापन, अजन्म बालक आ आशा-रक्षा पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

७३५. (B) उत्तरा प्रसंग युद्धक विनाश, विधवापन, अजन्म बालक आ आशा-रक्षा पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

७३६. (B) उत्तरा कथा अभिमन्युक वीरता आ मृत्यु-स्मृतिक करुण संदर्भ खोलैत अछि — "अभिमन्यु-स्मृति" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

७३७. (A) उत्तरा कथा अभिमन्युक वीरता आ मृत्यु-स्मृतिक करुण संदर्भ खोलैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

७३८. (A) उत्तरा कथा अभिमन्युक वीरता आ मृत्यु-स्मृतिक करुण संदर्भ खोलैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

७३९. (D) उत्तरा कथा अभिमन्युक वीरता आ मृत्यु-स्मृतिक करुण संदर्भ खोलैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

७४०. (D) उत्तरा कथा अभिमन्युक वीरता आ मृत्यु-स्मृतिक करुण संदर्भ खोलैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

७४१. (C) उत्तरा प्रसंग मातृत्व, वंश-रक्षा आ भविष्यक आशा कैँ केन्द्रीय बना सकैत अछि — "मातृत्व" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

७४२. (B) उत्तरा प्रसंग मातृत्व, वंश-रक्षा आ भविष्यक आशा कैँ केन्द्रीय बना सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

७४३. (B) उत्तरा प्रसंग मातृत्व, वंश-रक्षा आ भविष्यक आशा कैँ केन्द्रीय बना सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

७४४. (A) उत्तरा प्रसंग मातृत्व, वंश-रक्षा आ भविष्यक आशा कैँ केन्द्रीय बना सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

७४५. (A) उत्तरा प्रसंग मातृत्व, वंश-रक्षा आ भविष्यक आशा कैँ केन्द्रीय बना सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

७४६. (A) उत्तरा सन्दर्भमे अजन्म बालक आ वंश-निरन्तरताक आशा महत्त्वपूर्ण होइत अछि — “परीक्षित संकेत” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

७४७. (D) उत्तरा सन्दर्भमे अजन्म बालक आ वंश-निरन्तरताक आशा महत्त्वपूर्ण होइत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

७४८. (D) उत्तरा सन्दर्भमे अजन्म बालक आ वंश-निरन्तरताक आशा महत्त्वपूर्ण होइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

७४९. (C) उत्तरा सन्दर्भमे अजन्म बालक आ वंश-निरन्तरताक आशा महत्त्वपूर्ण होइत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

७५०. (C) उत्तरा सन्दर्भमे अजन्म बालक आ वंश-निरन्तरताक आशा महत्त्वपूर्ण होइत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

७५१. (A) पतन अवनति/संकटक प्रतीक, उत्तरा विनाशोपरान्त आशा आ मातृत्वक प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — “पतन बनाम उत्तरा” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

७५२. (D) पतन अवनति/संकटक प्रतीक, उत्तरा विनाशोपरान्त आशा आ मातृत्वक प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

७५३. (D) पतन अवनति/संकटक प्रतीक, उत्तरा विनाशोपरान्त आशा आ मातृत्वक प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

७५४. (C) पतन अवनति/संकटक प्रतीक, उत्तरा विनाशोपरान्त आशा आ मातृत्वक प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

७५५. (C) पतन अवनति/संकटक प्रतीक, उत्तरा विनाशोपरान्त आशा आ मातृत्वक प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

७५६. (B) उत्तरा प्रसंग अभिमन्युक वीरता आ उत्तराक करुणा कैँ जोड़ैत अछि — “करुण-वीर समन्वय” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

७५७. (A) उत्तरा प्रसंग अभिमन्युक वीरता आ उत्तराक करुणा कैँ जोड़ैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

७५८. (A) उत्तरा प्रसंग अभिमन्युक वीरता आ उत्तराक करुणा कैँ जोड़ैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

७५९. (D) उत्तरा प्रसंग अभिमन्युक वीरता आ उत्तराक करुणा कैँ जोड़ैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

७६०. (D) उत्तरा प्रसंग अभिमन्युक वीरता आ उत्तराक करुणा कैँ जोड़ैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

७६१. (D) उत्तरा युद्धक परिणाम स्त्री-दृष्टिसँ देखबैत अछि — “स्त्री-साक्ष्य” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

७६२. (C) उत्तरा युद्धक परिणाम स्त्री-दृष्टिसँ देखबैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

७६३. (C) उत्तरा युद्धक परिणाम स्त्री-दृष्टिसँ देखबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

७६४. (B) उत्तरा युद्धक परिणाम स्त्री-दृष्टिसँ देखबैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

७६५. (B) उत्तरा युद्धक परिणाम स्त्री-दृष्टिसँ देखबैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

७६६. (B) उत्तरा कथा अतीतक हानि सँ आगाँ भविष्य बचाबयक भाव उठबैत अछि — “भविष्य-चिन्ता” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

७६७. (A) उत्तरा कथा अतीतक हानि सँ आगाँ भविष्य बचाबयक भाव उठबैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

७६८. (A) उत्तरा कथा अतीतक हानि सँ आगाँ भविष्य बचाबयक भाव उठबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

७६९. (D) उत्तरा कथा अतीतक हानि सँ आगाँ भविष्य बचाबयक भाव उठबैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

७७०. (D) उत्तरा कथा अतीतक हानि सँ आगाँ भविष्य बचाबयक भाव उठबैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

७७१. (A) पतन आ उत्तरा दुनू दुःखक अलग रूप, चेतना आ प्रतिरोधक सम्भावना खोलैत अछि — "दुःख आ प्रतिरोध" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

७७२. (D) पतन आ उत्तरा दुनू दुःखक अलग रूप, चेतना आ प्रतिरोधक सम्भावना खोलैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

७७३. (D) पतन आ उत्तरा दुनू दुःखक अलग रूप, चेतना आ प्रतिरोधक सम्भावना खोलैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

७७४. (C) पतन आ उत्तरा दुनू दुःखक अलग रूप, चेतना आ प्रतिरोधक सम्भावना खोलैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

७७५. (C) पतन आ उत्तरा दुनू दुःखक अलग रूप, चेतना आ प्रतिरोधक सम्भावना खोलैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

७७६. (C) पतन आ उत्तरा शीर्षकहि सँ काव्यक भावदिशा अनुमानित कएल जा सकैत अछि — "शीर्षक-पठन" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

७७७. (B) पतन आ उत्तरा शीर्षकहि सँ काव्यक भावदिशा अनुमानित कएल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

७७८. (B) पतन आ उत्तरा शीर्षकहि सँ काव्यक भावदिशा अनुमानित कएल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

७७९. (A) पतन आ उत्तरा शीर्षकहि सँ काव्यक भावदिशा अनुमानित कएल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

७८०. (A) पतन आ उत्तरा शीर्षकहि सँ काव्यक भावदिशा अनुमानित कएल जा सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

७८१. (D) पतन घटना सँ अधिक व्यापक मूल्य-संकटक प्रतीक बनि सकैत अछि — "प्रतीक-धर्मिता" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

७८२. (C) पतन घटना सँ अधिक व्यापक मूल्य-संकटक प्रतीक बनि सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

७८३. (C) पतन घटना सँ अधिक व्यापक मूल्य-संकटक प्रतीक बनि सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

७८४. (B) पतन घटना सँ अधिक व्यापक मूल्य-संकटक प्रतीक बनि सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

७८५. (B) पतन घटना सँ अधिक व्यापक मूल्य-संकटक प्रतीक बनि सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

७८६. (D) उत्तरा महाभारतक युद्धोत्तर वातावरण, वंश आ करुणाक सन्दर्भमे पढ़ल जाएत अछि — "महाभारतीय पृष्ठभूमि" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

७८७. (C) उत्तरा महाभारतक युद्धोत्तर वातावरण, वंश आ करुणाक सन्दर्भमे पढ़ल जाएत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

७८८. (C) उत्तरा महाभारतक युद्धोत्तर वातावरण, वंश आ करुणाक सन्दर्भमे पढ़ल जाएत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

७८९. (B) उत्तरा महाभारतक युद्धोत्तर वातावरण, वंश आ करुणाक सन्दर्भमे पढ़ल जाएत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

७९०. (B) उत्तरा महाभारतक युद्धोत्तर वातावरण, वंश आ करुणाक सन्दर्भमे पढ़ल जाएत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

७९१. (D) सीमित प्रसंगक कारण पतन आ उत्तरा दुनू तीव्र भावोच्छ्वास देबाक सामर्थ्य रखैत अछि — "खण्डकाव्य प्रभाव" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

७९२. (C) सीमित प्रसंगक कारण पतन आ उत्तरा दुनू तीव्र भावोच्छ्वास देबाक सामर्थ्य रखैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

७९३. (C) सीमित प्रसंगक कारण पतन आ उत्तरा दुनू तीव्र भावोच्छ्वास देबाक सामर्थ्य रखैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

७९४. (B) सीमित प्रसंगक कारण पतन आ उत्तरा दुनू तीव्र भावोच्छ्वास देबाक सामर्थ्य रखैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

७९५. (B) सीमित प्रसंगक कारण पतन आ उत्तरा दुनू तीव्र भावोच्छ्वास देबाक सामर्थ्य रखैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

७९६. (C) एहि खण्डमे शीर्षक, प्रतीक, रस, पात्र आ सामाजिक अर्थ जोड़ि उत्तर देब चाही — "उत्तर लेखन" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

७९७. (B) एहि खण्डमे शीर्षक, प्रतीक, रस, पात्र आ सामाजिक अर्थ जोड़ि उत्तर देब चाही — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

७९८. (B) एहि खण्डमे शीर्षक, प्रतीक, रस, पात्र आ सामाजिक अर्थ जोड़ि उत्तर देब चाही — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

७९९. (A) एहि खण्डमे शीर्षक, प्रतीक, रस, पात्र आ सामाजिक अर्थ जोड़ि उत्तर देब चाही — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

८००. (A) एहि खण्डमे शीर्षक, प्रतीक, रस, पात्र आ सामाजिक अर्थ जोड़ि उत्तर देब चाही — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

८०१. (B) समर्पण, त्याग, लोकहित, देश-भाव वा उच्च मूल्य लेल अपनेकैँ अर्पित करबाक भाव-संकेत — "उत्सर्ग" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

८०२. (A) समर्पण, त्याग, लोकहित, देश-भाव वा उच्च मूल्य लेल अपनेकैँ अर्पित करबाक भाव-संकेत — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

८०३. (B) समर्पण, त्याग, लोकहित, देश-भाव वा उच्च मूल्य लेल अपनेकैँ अर्पित करबाक भाव-संकेत — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

८०४. (A) समर्पण, त्याग, लोकहित, देश-भाव वा उच्च मूल्य लेल अपनेकैँ अर्पित करबाक भाव-संकेत — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

८०५. (A) समर्पण, त्याग, लोकहित, देश-भाव वा उच्च मूल्य लेल अपनेकैँ अर्पित करबाक भाव-संकेत — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

८०६. (D) उत्सर्ग शीर्षक व्यक्तिगत स्वार्थसँ ऊपर उठि व्यापक लक्ष्यक लेल त्यागक प्रतीक बनैत अछि — "समर्पण-भाव" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

८०७. (C) उत्सर्ग शीर्षक व्यक्तिगत स्वार्थसँ ऊपर उठि व्यापक लक्ष्यक लेल त्यागक प्रतीक बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

८०८. (D) उत्सर्ग शीर्षक व्यक्तिगत स्वार्थसँ ऊपर उठि व्यापक लक्ष्यक लेल त्यागक प्रतीक बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

८०९. (C) उत्सर्ग शीर्षक व्यक्तिगत स्वार्थसँ ऊपर उठि व्यापक लक्ष्यक लेल त्यागक प्रतीक बनैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

८१०. (C) उत्सर्ग शीर्षक व्यक्तिगत स्वार्थसँ ऊपर उठि व्यापक लक्ष्यक लेल त्यागक प्रतीक बनैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

८११. (A) उत्सर्गक भाव समाज, भाषा, देश वा मानवता लेल सेवा-संकल्पसँ जुड़ि सकैत अछि — "लोकहित" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

८१२. (D) उत्सर्गक भाव समाज, भाषा, देश वा मानवता लेल सेवा-संकल्पसँ जुड़ि सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

८१३. (A) उत्सर्गक भाव समाज, भाषा, देश वा मानवता लेल सेवा-संकल्पसँ जुड़ि सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

८१४. (D) उत्सर्गक भाव समाज, भाषा, देश वा मानवता लेल सेवा-संकल्पसँ जुड़ि सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

८१५. (D) उत्सर्गक भाव समाज, भाषा, देश वा मानवता लेल सेवा-संकल्पसँ जुड़ि सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

८१६. (C) उत्सर्गमे साहसक संग शान्त स्वीकृति आ उच्च आदर्शक भाव सम्भव अछि — "वीर-शान्त भाव" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

८१७. (B) उत्सर्गमे साहसक संग शान्त स्वीकृति आ उच्च आदर्शक भाव सम्भव अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

८१८. (C) उत्सर्गमे साहसक संग शान्त स्वीकृति आ उच्च आदर्शक भाव सम्भव अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

८१९. (B) उत्सर्गमे साहसक संग शान्त स्वीकृति आ उच्च आदर्शक भाव सम्भव अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

८२०. (B) उत्सर्गमे साहसक संग शान्त स्वीकृति आ उच्च आदर्शक भाव सम्भव अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

८२१. (C) महाभारतक वनवासी/शिष्य पात्र, जकर कथा गुरु-भक्ति, प्रतिभा, अन्याय आ स्वाभिमानक प्रश्न उठबैत अछि — "एकलव्य" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

८२२. (B) महाभारतक वनवासी/शिष्य पात्र, जकर कथा गुरु-भक्ति, प्रतिभा, अन्याय आ स्वाभिमानक प्रश्न उठबैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

८२३. (C) महाभारतक वनवासी/शिष्य पात्र, जकर कथा गुरु-भक्ति, प्रतिभा, अन्याय आ स्वाभिमानक प्रश्न उठबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

८२४. (B) महाभारतक वनवासी/शिष्य पात्र, जकर कथा गुरु-भक्ति, प्रतिभा, अन्याय आ स्वाभिमानक प्रश्न उठबैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

८२५. (B) महाभारतक वनवासी/शिष्य पात्र, जकर कथा गुरु-भक्ति, प्रतिभा, अन्याय आ स्वाभिमानक प्रश्न उठबैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

८२६. (B) एकलव्य कथा गुरु-दक्षिणा, जाति-व्यवस्था, प्रतिभा आ न्याय पर गम्भीर प्रश्न उठबैत अछि — "गुरु-दक्षिणा" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

८२७. (A) एकलव्य कथा गुरु-दक्षिणा, जाति-व्यवस्था, प्रतिभा आ न्याय पर गम्भीर प्रश्न उठबैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

८२८. (B) एकलव्य कथा गुरु-दक्षिणा, जाति-व्यवस्था, प्रतिभा आ न्याय पर गम्भीर प्रश्न उठबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

८२९. (A) एकलव्य कथा गुरु-दक्षिणा, जाति-व्यवस्था, प्रतिभा आ न्याय पर गम्भीर प्रश्न उठबैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

८३०. (A) एकलव्य कथा गुरु-दक्षिणा, जाति-व्यवस्था, प्रतिभा आ न्याय पर गम्भीर प्रश्न उठबैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

८३१. (B) एकलव्य अपन अभ्यास, लगन आ आत्मबलसँ साधना करैत पात्र रूपमे पढ़ल जाइत अछि — "स्वाध्याय" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

८३२. (A) एकलव्य अपन अभ्यास, लगन आ आत्मबलसँ साधना करैत पात्र रूपमे पढ़ल जाइत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

८३३. (B) एकलव्य अपन अभ्यास, लगन आ आत्मबलसँ साधना करैत पात्र रूपमे पढ़ल जाइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

८३४. (A) एकलव्य अपन अभ्यास, लगन आ आत्मबलसँ साधना करैत पात्र रूपमे पढ़ल जाइत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

८३५. (A) एकलव्य अपन अभ्यास, लगन आ आत्मबलसँ साधना करैत पात्र रूपमे पढ़ल जाइत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

८३६. (B) एकलव्य प्रसंग ज्ञानक अधिकार, वंचना आ व्यवस्था-विमर्शक प्रतीक बनैत अछि — "सामाजिक अन्याय" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

८३७. (A) एकलव्य प्रसंग ज्ञानक अधिकार, वंचना आ व्यवस्था-विमर्शक प्रतीक बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

८३८. (B) एकलव्य प्रसंग ज्ञानक अधिकार, वंचना आ व्यवस्था-विमर्शक प्रतीक बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

८३९. (A) एकलव्य प्रसंग ज्ञानक अधिकार, वंचना आ व्यवस्था-विमर्शक प्रतीक बनैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

८४०. (A) एकलव्य प्रसंग ज्ञानक अधिकार, वंचना आ व्यवस्था-विमर्शक प्रतीक बनैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

८४१. (B) एकलव्यक प्रतिभा सामाजिक अवरोधसँ टकरबैत अछि, जे काव्यक करुण-वीर आधार बनैत अछि — "प्रतिभा आ वंचना" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

८४२. (A) एकलव्यक प्रतिभा सामाजिक अवरोधसँ टकरबैत अछि, जे काव्यक करुण-वीर आधार बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

८४३. (B) एकलव्यक प्रतिभा सामाजिक अवरोधसँ टकरबैत अछि, जे काव्यक करुण-वीर आधार बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

८४४. (A) एकलव्यक प्रतिभा सामाजिक अवरोधसँ टकरबैत अछि, जे काव्यक करुण-वीर आधार बनैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

८४५. (A) एकलव्यक प्रतिभा सामाजिक अवरोधसँ टकरबैत अछि, जे काव्यक करुण-वीर आधार बनैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

८४६. (C) शीर्षक आँसू, पीड़ा, करुणा, स्मृति वा लोकदुःखक भाव-प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — "नोर" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

८४७. (B) शीर्षक आँसू, पीड़ा, करुणा, स्मृति वा लोकदुःखक भाव-प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

८४८. (C) शीर्षक आँसू, पीड़ा, करुणा, स्मृति वा लोकदुःखक भाव-प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

८४९. (B) शीर्षक आँसू, पीड़ा, करुणा, स्मृति वा लोकदुःखक भाव-प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

८५०. (B) शीर्षक आँसू, पीड़ा, करुणा, स्मृति वा लोकदुःखक भाव-प्रतीक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

८५१. (D) नोर काव्यमे व्यक्तिगत वा सामूहिक पीड़ाकेँ संक्षिप्त, तीव्र प्रतीकमे व्यक्त कएल जा सकैत अछि — "करुण प्रतीक" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

८५२. (C) नोर काव्यमे व्यक्तिगत वा सामूहिक पीड़ाकेँ संक्षिप्त, तीव्र प्रतीकमे व्यक्त कएल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

८५३. (D) नोर काव्यमे व्यक्तिगत वा सामूहिक पीड़ाकेँ संक्षिप्त, तीव्र प्रतीकमे व्यक्त कएल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

८५४. (C) नोर काव्यमे व्यक्तिगत वा सामूहिक पीड़ाकेँ संक्षिप्त, तीव्र प्रतीकमे व्यक्त कएल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

८५५. (C) नोर काव्यमे व्यक्तिगत वा सामूहिक पीड़ाकेँ संक्षिप्त, तीव्र प्रतीकमे व्यक्त कएल जा सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

८५६. (B) नोरक भाव स्मरण, हानि, वियोग आ मनुष्यक आन्तरिक टूटनसँ जुड़ल होइत अछि — "स्मृति आ क्षति" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

८५७. (A) नोरक भाव स्मरण, हानि, वियोग आ मनुष्यक आन्तरिक टूटनसँ जुड़ल होइत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

८५८. (B) नोरक भाव स्मरण, हानि, वियोग आ मनुष्यक आन्तरिक टूटनसँ जुड़ल होइत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

८५९. (A) नोरक भाव स्मरण, हानि, वियोग आ मनुष्यक आन्तरिक टूटनसँ जुड़ल होइत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

८६०. (A) नोरक भाव स्मरण, हानि, वियोग आ मनुष्यक आन्तरिक टूटनसँ जुड़ल होइत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

८६१. (A) उत्सर्ग सक्रिय समर्पणक, नोर करुण अनुभवक प्रतीक रूपमे अलग भावदिशा दैत अछि — "उत्सर्ग बनाम नोर" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

८६२. (D) उत्सर्ग सक्रिय समर्पणक, नोर करुण अनुभवक प्रतीक रूपमे अलग भावदिशा दैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

८६३. (A) उत्सर्ग सक्रिय समर्पणक, नोर करुण अनुभवक प्रतीक रूपमे अलग भावदिशा दैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

८६४. (D) उत्सर्ग सक्रिय समर्पणक, नोर करुण अनुभवक प्रतीक रूपमे अलग भावदिशा दैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

८६५. (D) उत्सर्ग सक्रिय समर्पणक, नोर करुण अनुभवक प्रतीक रूपमे अलग भावदिशा दैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

८६६. (C) एकलव्यक त्याग प्रश्नाकुल अन्यायसँ जुड़ैत अछि, उत्सर्ग व्यापक स्वैच्छिक समर्पणक स्वर लैत अछि — "एकलव्य बनाम उत्सर्ग" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

८६७. (B) एकलव्यक त्याग प्रश्नाकुल अन्यायसँ जुड़ैत अछि, उत्सर्ग व्यापक स्वैच्छिक समर्पणक स्वर लैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

८६८. (C) एकलव्यक त्याग प्रश्नाकुल अन्यायसँ जुड़ैत अछि, उत्सर्ग व्यापक स्वैच्छिक समर्पणक स्वर लैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

८६९. (B) एकलव्यक त्याग प्रश्नाकुल अन्यायसँ जुड़ैत अछि, उत्सर्ग व्यापक स्वैच्छिक समर्पणक स्वर लैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

८७०. (B) एकलव्यक त्याग प्रश्नाकुल अन्यायसँ जुड़ैत अछि, उत्सर्ग व्यापक स्वैच्छिक समर्पणक स्वर लैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

८७१. (A) एकलव्य काव्य शोषित, वंचित आ प्रतिभाशाली व्यक्तिक आवाज बनि सकैत अछि — "शोषित स्वर" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

८७२. (D) एकलव्य काव्य शोषित, वंचित आ प्रतिभाशाली व्यक्तिक आवाज बनि सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

८७३. (A) एकलव्य काव्य शोषित, वंचित आ प्रतिभाशाली व्यक्तिक आवाज बनि सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

८७४. (D) एकलव्य काव्य शोषित, वंचित आ प्रतिभाशाली व्यक्तिक आवाज बनि सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

८७५. (D) एकलव्य काव्य शोषित, वंचित आ प्रतिभाशाली व्यक्तिक आवाज बनि सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

८७६. (D) एकलव्य प्रसंग गुरु-भक्ति आ अन्याय दुनूक बीच जटिल प्रश्न उठबैत अछि — "नैतिक जटिलता" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

८७७. (C) एकलव्य प्रसंग गुरु-भक्ति आ अन्याय दुनूक बीच जटिल प्रश्न उठबैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

८७८. (D) एकलव्य प्रसंग गुरु-भक्ति आ अन्याय दुनूक बीच जटिल प्रश्न उठबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

८७९. (C) एकलव्य प्रसंग गुरु-भक्ति आ अन्याय दुनूक बीच जटिल प्रश्न उठबैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

८८०. (C) एकलव्य प्रसंग गुरु-भक्ति आ अन्याय दुनूक बीच जटिल प्रश्न उठबैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

८८१. (C) एकलव्य आ नोर जकाँ शीर्षक आधुनिक सामाजिक न्याय आ मानवीय पीड़ाक प्रश्नसँ जोड़ल जा सकैत अछि — "आधुनिक प्रासंगिकता" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

८८२. (B) एकलव्य आ नोर जकाँ शीर्षक आधुनिक सामाजिक न्याय आ मानवीय पीड़ाक प्रश्नसँ जोड़ल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

८८३. (C) एकलव्य आ नोर जकाँ शीर्षक आधुनिक सामाजिक न्याय आ मानवीय पीड़ाक प्रश्नसँ जोड़ल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

८८४. (B) एकलव्य आ नोर जकाँ शीर्षक आधुनिक सामाजिक न्याय आ मानवीय पीड़ाक प्रश्नसँ जोड़ल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

८८५. (B) एकलव्य आ नोर जकाँ शीर्षक आधुनिक सामाजिक न्याय आ मानवीय पीड़ाक प्रश्नसँ जोड़ल जा सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

८८६. (A) उत्सर्गक अर्थ केवल प्रशंसा नहि, त्यागक कारण आ परिणामक आलोचनात्मक पठन सेहो सम्भव अछि — "त्यागक आलोचना" एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

८८७. (D) उत्सर्गक अर्थ केवल प्रशंसा नहि, त्यागक कारण आ परिणामक आलोचनात्मक पठन सेहो सम्भव अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

८८८. (A) उत्सर्गक अर्थ केवल प्रशंसा नहि, त्यागक कारण आ परिणामक आलोचनात्मक पठन सेहो सम्भव अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैं कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

८८९. (D) उत्सर्गक अर्थ केवल प्रशंसा नहि, त्यागक कारण आ परिणामक आलोचनात्मक पठन सेहो सम्भव अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

८९०. (D) उत्सर्गक अर्थ केवल प्रशंसा नहि, त्यागक कारण आ परिणामक आलोचनात्मक पठन सेहो सम्भव अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

८९१. (D) एहि तीनू कृतिमे सीमित शीर्षक भीतर व्यापक भावार्थ समेटबाक सम्भावना अछि — “खण्डकाव्य-सघनता” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

८९२. (C) एहि तीनू कृतिमे सीमित शीर्षक भीतर व्यापक भावार्थ समेटबाक सम्भावना अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

८९३. (D) एहि तीनू कृतिमे सीमित शीर्षक भीतर व्यापक भावार्थ समेटबाक सम्भावना अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

८९४. (C) एहि तीनू कृतिमे सीमित शीर्षक भीतर व्यापक भावार्थ समेटबाक सम्भावना अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

८९५. (C) एहि तीनू कृतिमे सीमित शीर्षक भीतर व्यापक भावार्थ समेटबाक सम्भावना अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

८९६. (C) उत्सर्ग, एकलव्य आ नोर पर उत्तरमे प्रतीक, सामाजिक अर्थ, रस आ नैतिक प्रश्न जोड़ब जरूरी अछि — “परीक्षा-उत्तर” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

८९७. (B) उत्सर्ग, एकलव्य आ नोर पर उत्तरमे प्रतीक, सामाजिक अर्थ, रस आ नैतिक प्रश्न जोड़ब जरूरी अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

८९८. (C) उत्सर्ग, एकलव्य आ नोर पर उत्तरमे प्रतीक, सामाजिक अर्थ, रस आ नैतिक प्रश्न जोड़ब जरूरी अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

८९९. (B) उत्सर्ग, एकलव्य आ नोर पर उत्तरमे प्रतीक, सामाजिक अर्थ, रस आ नैतिक प्रश्न जोड़ब जरूरी अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

९००. (B) उत्सर्ग, एकलव्य आ नोर पर उत्तरमे प्रतीक, सामाजिक अर्थ, रस आ नैतिक प्रश्न जोड़ब जरूरी अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

९०१. (C) महाकाव्य विस्तृत कथा-विश्व बनबैत अछि, खण्डकाव्य सीमित प्रसंगक गहन अर्थ पर केन्द्रित रहैत अछि — “महाकाव्य बनाम खण्डकाव्य” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

९०२. (B) महाकाव्य विस्तृत कथा-विश्व बनबैत अछि, खण्डकाव्य सीमित प्रसंगक गहन अर्थ पर केन्द्रित रहैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

९०३. (B) महाकाव्य विस्तृत कथा-विश्व बनबैत अछि, खण्डकाव्य सीमित प्रसंगक गहन अर्थ पर केन्द्रित रहैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

९०४. (A) महाकाव्य विस्तृत कथा-विश्व बनबैत अछि, खण्डकाव्य सीमित प्रसंगक गहन अर्थ पर केन्द्रित रहैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

९०५. (A) महाकाव्य विस्तृत कथा-विश्व बनबैत अछि, खण्डकाव्य सीमित प्रसंगक गहन अर्थ पर केन्द्रित रहैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

९०६. (A) मिथिलाभाषा रामायण आ रमेश्वरचरित मिथिला रामायणकैँ रामकथा-आधारित महाकाव्य परम्पराक दृष्टिसँ पढ़ब चाही — “रामकाव्य तुलना” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

९०७. (D) मिथिलाभाषा रामायण आ रमेश्वरचरित मिथिला रामायणकैँ रामकथा-आधारित महाकाव्य परम्पराक दृष्टिसँ पढ़ब चाही — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

९०८. (D) मिथिलाभाषा रामायण आ रमेश्वरचरित मिथिला रामायणकैँ रामकथा-आधारित महाकाव्य परम्पराक दृष्टिसँ पढ़ब चाही — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

९०९. (C) मिथिलाभाषा रामायण आ रमेश्वरचरित मिथिला रामायणकैँ रामकथा-आधारित महाकाव्य परम्पराक दृष्टिसँ पढ़ब चाही — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

९१०. (C) मिथिलाभाषा रामायण आ रमेश्वरचरित मिथिला रामायणकैँ रामकथा-आधारित महाकाव्य परम्पराक दृष्टिसँ पढ़ब चाही — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

९११. (A) सुभद्रा-हरण, अम्बचरित, प्रतिज्ञा पाण्डव, उत्तरा, एकलव्य आदि कृति महाभारतीय प्रसंगक विविध रूप खोलैत अछि — “महाभारत सामग्री” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

९१२. (D) सुभद्रा-हरण, अम्बचरित, प्रतिज्ञा पाण्डव, उत्तरा, एकलव्य आदि कृति महाभारतीय प्रसंगक विविध रूप खोलैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

९१३. (D) सुभद्रा-हरण, अम्बचरित, प्रतिज्ञा पाण्डव, उत्तरा, एकलव्य आदि कृति महाभारतीय प्रसंगक विविध रूप खोलैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

९१४. (C) सुभद्रा-हरण, अम्बचरित, प्रतिज्ञा पाण्डव, उत्तरा, एकलव्य आदि कृति महाभारतीय प्रसंगक विविध रूप खोलैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

९१५. (C) सुभद्रा-हरण, अम्बचरित, प्रतिज्ञा पाण्डव, उत्तरा, एकलव्य आदि कृति महाभारतीय प्रसंगक विविध रूप खोलैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

९१६. (A) चाणक्य, कृष्णचरित आ अम्बचरित जकाँ कृति व्यक्तित्व, आदर्श आ संघर्षक चरित रूप विकसित करैत अछि — “चरित-केन्द्र” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

९१७. (D) चाणक्य, कृष्णचरित आ अम्बचरित जकाँ कृति व्यक्तित्व, आदर्श आ संघर्षक चरित रूप विकसित करैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

९१८. (D) चाणक्य, कृष्णचरित आ अम्बचरित जकाँ कृति व्यक्तित्व, आदर्श आ संघर्षक चरित रूप विकसित करैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

९१९. (C) चाणक्य, कृष्णचरित आ अम्बचरित जकाँ कृति व्यक्तित्व, आदर्श आ संघर्षक चरित रूप विकसित करैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

९२०. (C) चाणक्य, कृष्णचरित आ अम्बचरित जकाँ कृति व्यक्तित्व, आदर्श आ संघर्षक चरित रूप विकसित करैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

९२१. (D) सीता, शकुन्तला, उत्तरा, अम्बा/अम्ब प्रसंग स्त्री-धैर्य, पीड़ा, प्रतिरोध आ मर्यादाक अलग रूप देखबैत अछि — “स्त्री-पात्र तुलना” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

९२२. (C) सीता, शकुन्तला, उत्तरा, अम्बा/अम्ब प्रसंग स्त्री-धैर्य, पीड़ा, प्रतिरोध आ मर्यादाक अलग रूप देखबैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

९२३. (C) सीता, शकुन्तला, उत्तरा, अम्बा/अम्ब प्रसंग स्त्री-धैर्य, पीड़ा, प्रतिरोध आ मर्यादाक अलग रूप देखबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

९२४. (B) सीता, शकुन्तला, उत्तरा, अम्बा/अम्ब प्रसंग स्त्री-धैर्य, पीड़ा, प्रतिरोध आ मर्यादाक अलग रूप देखबैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

९२५. (B) सीता, शकुन्तला, उत्तरा, अम्बा/अम्ब प्रसंग स्त्री-धैर्य, पीड़ा, प्रतिरोध आ मर्यादाक अलग रूप देखबैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

९२६. (D) सुभद्रा-हरण, प्रतिज्ञा पाण्डव, एकलव्य आ युद्ध-प्रसंग वीरता, साहस वा प्रतिरोधक अलग रूप प्रस्तुत करैत अछि — “वीरता तुलना” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

९२७. (C) सुभद्रा-हरण, प्रतिज्ञा पाण्डव, एकलव्य आ युद्ध-प्रसंग वीरता, साहस वा प्रतिरोधक अलग रूप प्रस्तुत करैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

९२८. (C) सुभद्रा-हरण, प्रतिज्ञा पाण्डव, एकलव्य आ युद्ध-प्रसंग वीरता, साहस वा प्रतिरोधक अलग रूप प्रस्तुत करैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

९२९. (B) सुभद्रा-हरण, प्रतिज्ञा पाण्डव, एकलव्य आ युद्ध-प्रसंग वीरता, साहस वा प्रतिरोधक अलग रूप प्रस्तुत करैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

९३०. (B) सुभद्रा-हरण, प्रतिज्ञा पाण्डव, एकलव्य आ युद्ध-प्रसंग वीरता, साहस वा प्रतिरोधक अलग रूप प्रस्तुत करैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

९३१. (A) उत्तरा, नोर, पतन, शकुन्तला आ सीता-प्रसंग करुण भावक भिन्न रूप खोलैत अछि — “करुणा तुलना” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

९३२. (D) उत्तरा, नोर, पतन, शकुन्तला आ सीता-प्रसंग करुण भावक भिन्न रूप खोलैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

९३३. (D) उत्तरा, नोर, पतन, शकुन्तला आ सीता-प्रसंग करुण भावक भिन्न रूप खोलैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

९३४. (C) उत्तरा, नोर, पतन, शकुन्तला आ सीता-प्रसंग करुण भावक भिन्न रूप खोलैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

९३५. (C) उत्तरा, नोर, पतन, शकुन्तला आ सीता-प्रसंग करुण भावक भिन्न रूप खोलैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

९३६. (A) रामकाव्य आ कृष्णचरितमे भक्ति, धर्म, मर्यादा आ दिव्य-मानवीय सम्बन्धक चर्चा महत्त्वपूर्ण अछि — “भक्ति आ धर्म” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

९३७. (D) रामकाव्य आ कृष्णचरितमे भक्ति, धर्म, मर्यादा आ दिव्य-मानवीय सम्बन्धक चर्चा महत्त्वपूर्ण अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

९३८. (D) रामकाव्य आ कृष्णचरितमे भक्ति, धर्म, मर्यादा आ दिव्य-मानवीय सम्बन्धक चर्चा महत्त्वपूर्ण अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

९३९. (C) रामकाव्य आ कृष्णचरितमे भक्ति, धर्म, मर्यादा आ दिव्य-मानवीय सम्बन्धक चर्चा महत्त्वपूर्ण अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

९४०. (C) रामकाव्य आ कृष्णचरितमे भक्ति, धर्म, मर्यादा आ दिव्य-मानवीय सम्बन्धक चर्चा महत्त्वपूर्ण अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

९४१. (B) चाणक्यक नीति, कृष्णक युक्ति, रामक मर्यादा आ पाण्डवक प्रतिज्ञा काव्यमे नैतिक प्रश्न खोलैत अछि — “नीति-चेतना तुलना” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

९४२. (A) चाणक्यक नीति, कृष्णक युक्ति, रामक मर्यादा आ पाण्डवक प्रतिज्ञा काव्यमे नैतिक प्रश्न खोलैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

९४३. (A) चाणक्यक नीति, कृष्णक युक्ति, रामक मर्यादा आ पाण्डवक प्रतिज्ञा काव्यमे नैतिक प्रश्न खोलैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

९४४. (D) चाणक्यक नीति, कृष्णक युक्ति, रामक मर्यादा आ पाण्डवक प्रतिज्ञा काव्यमे नैतिक प्रश्न खोलैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

९४५. (D) चाणक्यक नीति, कृष्णक युक्ति, रामक मर्यादा आ पाण्डवक प्रतिज्ञा काव्यमे नैतिक प्रश्न खोलैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

९४६. (B) मैथिली काव्यरूप लोकभाषिक माधुर्य, कथात्मक प्रवाह, छन्द आ सांस्कृतिक शब्दावलीसँ विशिष्ट बनैत अछि — “भाषा-शैली” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

९४७. (A) मैथिली काव्यरूप लोकभाषिक माधुर्य, कथात्मक प्रवाह, छन्द आ सांस्कृतिक शब्दावलीसँ विशिष्ट बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

९४८. (A) मैथिली काव्यरूप लोकभाषिक माधुर्य, कथात्मक प्रवाह, छन्द आ सांस्कृतिक शब्दावलीसँ विशिष्ट बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

९४९. (D) मैथिली काव्यरूप लोकभाषिक माधुर्य, कथात्मक प्रवाह, छन्द आ सांस्कृतिक शब्दावलीसँ विशिष्ट बनैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

९५०. (D) मैथिली काव्यरूप लोकभाषिक माधुर्य, कथात्मक प्रवाह, छन्द आ सांस्कृतिक शब्दावलीसँ विशिष्ट बनैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

९५१. (B) महाकाव्य आ खण्डकाव्य दुनूमे लय आ छन्द भाव-संप्रेषणक साधन बनैत अछि — “छन्द-विधान” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

९५२. (A) महाकाव्य आ खण्डकाव्य दुनूमे लय आ छन्द भाव-संप्रेषणक साधन बनैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

९५३. (A) महाकाव्य आ खण्डकाव्य दुनूमे लय आ छन्द भाव-संप्रेषणक साधन बनैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

९५४. (D) महाकाव्य आ खण्डकाव्य दुनूमे लय आ छन्द भाव-संप्रेषणक साधन बनैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

९५५. (D) महाकाव्य आ खण्डकाव्य दुनूमे लय आ छन्द भाव-संप्रेषणक साधन बनैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

९५६. (C) भारती, पतन, उत्सर्ग, नोर जकाँ शीर्षक प्रतीकात्मक व्याख्याक माँग करैत अछि — “प्रतीक-पठन” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

९५७. (B) भारती, पतन, उत्सर्ग, नोर जकाँ शीर्षक प्रतीकात्मक व्याख्याक माँग करैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

९५८. (B) भारती, पतन, उत्सर्ग, नोर जकाँ शीर्षक प्रतीकात्मक व्याख्याक माँग करैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

९५९. (A) भारती, पतन, उत्सर्ग, नोर जकाँ शीर्षक प्रतीकात्मक व्याख्याक माँग करैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

९६०. (A) भारती, पतन, उत्सर्ग, नोर जकाँ शीर्षक प्रतीकात्मक व्याख्याक माँग करैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

९६१. (B) रामायण, महाभारत, पुराण, लोक-संस्कार आ आधुनिक चेतना काव्यक कथास्रोत बनि सकैत अछि — “कथास्रोत” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

९६२. (A) रामायण, महाभारत, पुराण, लोक-संस्कार आ आधुनिक चेतना काव्यक कथास्रोत बनि सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

९६३. (A) रामायण, महाभारत, पुराण, लोक-संस्कार आ आधुनिक चेतना काव्यक कथास्रोत बनि सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

९६४. (D) रामायण, महाभारत, पुराण, लोक-संस्कार आ आधुनिक चेतना काव्यक कथास्रोत बनि सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

९६५. (D) रामायण, महाभारत, पुराण, लोक-संस्कार आ आधुनिक चेतना काव्यक कथास्रोत बनि सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

९६६. (D) पुरान कथाकेँ आधुनिक सामाजिक, नैतिक आ मानवीय प्रश्नक प्रकाशमे पढ़ल जा सकैत अछि — “आधुनिक पुनर्पाठ” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

९६७. (C) पुरान कथाकेँ आधुनिक सामाजिक, नैतिक आ मानवीय प्रश्नक प्रकाशमे पढ़ल जा सकैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

९६८. (C) पुरान कथाकेँ आधुनिक सामाजिक, नैतिक आ मानवीय प्रश्नक प्रकाशमे पढ़ल जा सकैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक केँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

९६९. (B) पुरान कथाकेँ आधुनिक सामाजिक, नैतिक आ मानवीय प्रश्नक प्रकाशमे पढ़ल जा सकैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

९७०. (B) पुरान कथाकेँ आधुनिक सामाजिक, नैतिक आ मानवीय प्रश्नक प्रकाशमे पढ़ल जा सकैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

९७१. (D) उत्तरमे परिभाषा, कृति-सूची, उदाहरण, रस, भाषा, शैली आ निष्कर्ष क्रमबद्ध देब चाही — “परीक्षा-लेखन” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

९७२. (C) उत्तरमे परिभाषा, कृति-सूची, उदाहरण, रस, भाषा, शैली आ निष्कर्ष क्रमबद्ध देब चाही — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

९७३. (C) उत्तरमे परिभाषा, कृति-सूची, उदाहरण, रस, भाषा, शैली आ निष्कर्ष क्रमबद्ध देब चाही — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

९७४. (B) उत्तरमे परिभाषा, कृति-सूची, उदाहरण, रस, भाषा, शैली आ निष्कर्ष क्रमबद्ध देब चाही — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

९७५. (B) उत्तरमे परिभाषा, कृति-सूची, उदाहरण, रस, भाषा, शैली आ निष्कर्ष क्रमबद्ध देब चाही — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

९७६. (A) देल कृतिसभकैँ महाकाव्य आ खण्डकाव्य खण्डमे ठीक-ठीक अलग करब प्रथम अभ्यास अछि — “वर्गीकरण” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

९७७. (D) देल कृतिसभकैँ महाकाव्य आ खण्डकाव्य खण्डमे ठीक-ठीक अलग करब प्रथम अभ्यास अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

९७८. (D) देल कृतिसभकैँ महाकाव्य आ खण्डकाव्य खण्डमे ठीक-ठीक अलग करब प्रथम अभ्यास अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

९७९. (C) देल कृतिसभकैँ महाकाव्य आ खण्डकाव्य खण्डमे ठीक-ठीक अलग करब प्रथम अभ्यास अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

९८०. (C) देल कृतिसभकैँ महाकाव्य आ खण्डकाव्य खण्डमे ठीक-ठीक अलग करब प्रथम अभ्यास अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

९८१. (B) मैथिली महाकाव्य-खण्डकाव्य मिथिला, रामायण-महाभारत, भक्ति, नीति आ लोक-संस्कारक संयुक्त धरातल पर उभरैत अछि — “सांस्कृतिक धरातल” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

९८२. (A) मैथिली महाकाव्य-खण्डकाव्य मिथिला, रामायण-महाभारत, भक्ति, नीति आ लोक-संस्कारक संयुक्त धरातल पर उभरैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

९८३. (A) मैथिली महाकाव्य-खण्डकाव्य मिथिला, रामायण-महाभारत, भक्ति, नीति आ लोक-संस्कारक संयुक्त धरातल पर उभरैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

९८४. (D) मैथिली महाकाव्य-खण्डकाव्य मिथिला, रामायण-महाभारत, भक्ति, नीति आ लोक-संस्कारक संयुक्त धरातल पर उभरैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

९८५. (D) मैथिली महाकाव्य-खण्डकाव्य मिथिला, रामायण-महाभारत, भक्ति, नीति आ लोक-संस्कारक संयुक्त धरातल पर उभरैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

९८६. (D) महाकाव्य विस्तार-दृष्टि आ खण्डकाव्य चयन-दृष्टि द्वारा अपन प्रभाव बनबैत अछि — “रचना-दृष्टि” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

९८७. (C) महाकाव्य विस्तार-दृष्टि आ खण्डकाव्य चयन-दृष्टि द्वारा अपन प्रभाव बनबैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

९८८. (C) महाकाव्य विस्तार-दृष्टि आ खण्डकाव्य चयन-दृष्टि द्वारा अपन प्रभाव बनबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

९८९. (B) महाकाव्य विस्तार-दृष्टि आ खण्डकाव्य चयन-दृष्टि द्वारा अपन प्रभाव बनबैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

९९०. (B) महाकाव्य विस्तार-दृष्टि आ खण्डकाव्य चयन-दृष्टि द्वारा अपन प्रभाव बनबैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

९९१. (C) कृति पढ़ैत समय केवल कथानक नहि, मूल्य, पात्र, भाषा, छन्द, प्रतीक आ इतिहासक संकेत देखब जरूरी अछि — “आलोचना-दृष्टि” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

९९२. (B) कृति पढ़ैत समय केवल कथानक नहि, मूल्य, पात्र, भाषा, छन्द, प्रतीक आ इतिहासक संकेत देखब जरूरी अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

९९३. (B) कृति पढ़ैत समय केवल कथानक नहि, मूल्य, पात्र, भाषा, छन्द, प्रतीक आ इतिहासक संकेत देखब जरूरी अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

९९४. (A) कृति पढ़ैत समय केवल कथानक नहि, मूल्य, पात्र, भाषा, छन्द, प्रतीक आ इतिहासक संकेत देखब जरूरी अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

९९५. (A) कृति पढ़ैत समय केवल कथानक नहि, मूल्य, पात्र, भाषा, छन्द, प्रतीक आ इतिहासक संकेत देखब जरूरी अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।

९९६. (C) महाकाव्य आ खण्डकाव्य मैथिली काव्यक कथात्मक शक्ति, सांस्कृतिक स्मृति आ आधुनिक अर्थ-क्षमता देखबैत अछि — “समग्र निष्कर्ष” एहि विषयक मुख्य अध्ययन-बिन्दु अछि; सही उत्तर काव्यक रूप, कथा, भाव आ संरचनासँ मेल खाइत अछि।

९९७. (B) महाकाव्य आ खण्डकाव्य मैथिली काव्यक कथात्मक शक्ति, सांस्कृतिक स्मृति आ आधुनिक अर्थ-क्षमता देखबैत अछि — एहि बिन्दुसँ कृति वा विधाक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

९९८. (B) महाकाव्य आ खण्डकाव्य मैथिली काव्यक कथात्मक शक्ति, सांस्कृतिक स्मृति आ आधुनिक अर्थ-क्षमता देखबैत अछि — उपयुक्त व्याख्या ओ अछि जे पाठक कैँ कथ्य, भाव, शैली आ परम्परा दिस लऽ जाइत अछि।

९९९. (A) महाकाव्य आ खण्डकाव्य मैथिली काव्यक कथात्मक शक्ति, सांस्कृतिक स्मृति आ आधुनिक अर्थ-क्षमता देखबैत अछि — परीक्षामे केवल नाम नहि, कृति-स्वरूप आ साहित्यिक भूमिका बुझब आवश्यक अछि।

१०००. (A) महाकाव्य आ खण्डकाव्य मैथिली काव्यक कथात्मक शक्ति, सांस्कृतिक स्मृति आ आधुनिक अर्थ-क्षमता देखबैत अछि — साहित्यिक उपयोगिता काव्य-रचना, पात्र, भाव, भाषा आ सांस्कृतिक सन्दर्भसँ चिन्हल जाइत अछि।